जस्टिस मौलाना मुफ़्ती
मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

इस्लाही ख़ुतबात

(7)

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती

मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

अनुवादक

मुहम्मद इमरान क़ासमी एम०ए० (अलीग)

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली 6

फ़ोन आफ़िस, 3289786,3289159, आवास, 3262486

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब	इस्लाही ख़ुतबात जिल्द (7)
ख़िताब	मौलाना मुहम्मद तक़ी उस्मानी
अनुवादक	मुहम्मद इमरान क़ासमी
संयोजक	मुहम्मद नासिर ख़ान
तायदाद	2100
प्रकाशन वर्ष	अप्रैल 2002
कम्पोज़िंग	इमरान कम्प्यूटर्स मुज़फ़्फ़र नगर (0131-442408)

>>>>>>>>>>>

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली 6

फ़ोन आफ़िस, 3289786,3289159, आवास, 3262486

मुख़्तसर फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

तफ़्सीली फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

(63) हलाल रोज़गार न छोड़ें

(65) सुन्नत का मज़ाक़ न उड़ाएं

(66) **तक़दीर पर राज़ी रहना चाहिए**

पेश लफ़्ज़

हज़रत मौलाना मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

بسم اللہ الرحمن الرحیم

الحمد للہ وکفیٰ وسلام علی عبادہ الذین اصطفیٰ، امابعد

अपने बाज़ बुज़ुर्गों के इर्शाद की तामील में अह्क़र कई साल से जुमे के दिन अ़सर के बाद जामा मस्जिद बैतुल मुकर्रम गुलशन इक़बाल कराची में अपने और सुनने वालों के फ़ायदे के लिए कुछ दीन की बातें किया करता है। इस मज्लिस में हर तब्क़ा–ए–ख़्याल के हज़रात और औरतें शरीक होते हैं। अल्हम्दु लिल्लाह! अह्क़र को ज़ाती तौर पर भी इसका फ़ायदा होता है और अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल से सुनने वालों भी फ़ायदा महसूस करते हैं। अल्लाह तआ़ला इस सिलसिले को हम सब की इस्लाह का ज़रिया बनाएं, आमीन।

अह्क़र के ख़ुसूसी मददगार मौलाना अ़ब्दुल्लाह मेमन साहिब सल्ल–महू ने कुछ मुद्दत से अह्क़र के उन बयानात को टेप रिकार्डर के ज़रिये महफ़ूज़ करके उनके कैसिट तैयार करने और उनको शाया करने का एहतिमाम किया, जिसके बारे में दोस्तों से मालूम हुआ के अल्लाह के फ़ज़्ल से उनसे भी मुसलमानों को फ़ायदा पहुंच रहा है।

उन कैसिटों की तायदाद अब दो सौ से ज़ायद हो गयी है, उन्हीं में से कुछ कैसिटों की तक़रीरें मौलाना अ़ब्दुल्लाह मेमन साहिब सल्ल–महू ने क़लम बन्द भी फ़रमा लीं, और उनको छोटे छोटे रिसालों की शक्ल में शाया किया। अब वह उन तक़रीरों का मजमूआ़ "इस्लाही ख़ुतबात" के नाम से शाया कर रहे हैं।

इनमें से बाज़ तक़रीरों को अह्क़र ने देखा भी है, और मौसूफ़ ने उन पर एक मुफ़ीद काम भी किया है, कि तक़रीरों में जो हदीसें आती हैं उनको असल किताबों से निकाल करके उनके हवाले भी

दर्ज कर दिए हैं, और इस तरह उनका फ़ायदा और ज़्यादा बढ़ गया है।

इस किताब के मुताले के वक़्त यह बात ज़ेहन में रहनी चाहिए कि यह कोई बाक़ायदा तसनीफ़ नहीं है, बल्कि तक़रीरों का ख़ुलासा है जो कैसिटों की मदद से तैयार किया गया है। इसलिये इसका अन्दाज़ तहरीरी नहीं बल्कि ख़िताबी है। अगर किसी मुसलमान को इन बातों से फ़ायदा पहुंचे तो यह महज़ अल्लाह तआ़ला का करम है, जिस पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करना चाहिए, और अगर कोई बात ग़ैर मोह्तात या ग़ैर मुफ़ीद है तो वह यक़ीनन अह्क़र की किसी ग़लती या कोताही की वजह से है। लेकिन अल्हम्दु लिल्लाह! इन बयानात का मक़सद तक़रीर बराय तक़रीर नहीं, बल्कि सब से पहले अपने आपको और फिर सुनने वालों को अपनी इस्लाह की तरफ़ मुतवज्जह करना है।

अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल व करम से इन ख़ुतबात को ख़ुद अह्क़र की और तमाम पढ़ने वालों की इस्लाह का ज़रिया बनायें, और ये हम सब के लिए ज़ख़ीरा–ए–आख़िरत साबित हों। अल्लाह तआ़ला से मज़ीद दुआ है कि वह इन ख़ुतबात के मुरत्तिब और नाशिर को भी इस ख़िदमत का बेहतरीन सिला अ़ता फ़रमाएं, आमीन।

मुहम्मद तक़ी उस्मानी

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

अर्ज़े नाशिर

अल्हम्दु लिल्लाह "इस्लाही ख़ुतबात" की सातवीं जिल्द आप तक पहुंचाने की हम सआदत हासिल कर रहे हैं। छठी जिल्द की मक़बूलियत और इफ़ादियत के बाद मुख़्तलिफ़ हज़रात की तरफ़ से सातवीं जिल्द को जल्द से जल्द शाया करने का शदीद तक़ाज़ा हुआ, और अब अल्हम्दु लिल्लाह, दिन रात की मेहनत और कोशिश के नतीजे में सिर्फ़ चन्द माह के अन्दर यह जिल्द तैयार होकर सामने आ गयी। इस जिल्द की तैयारी में बिरादरे मुकर्रम मौलाना अ़ब्दुल्लाह मेमन साहिब ने अपनी मसरूफ़ियात के साथ साथ इस काम के लिए अपना क़ीमती वक़्त निकाला, और दिन रात की अंथक मेहनत और कोशिश करके सातवीं जिल्द के लिए मवाद तैयार किया। अल्लाह तआ़ला उनकी सेहत और उम्र में बर्कत अ़ता फ़रमाए, और मज़ीद आगे काम जारी रखने की हिम्मत और तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, आमीन।

हम जामिया दारुल उलूम कराची के उस्तादे हदीस जनाब मौलाना मह्मूद अशरफ़ उस्मानी साहिब मद्दज़िल्लहुम और मौलाना अ़ज़ीज़ुर्रह्मान साहिब मद्दज़िल्लहुम के भी शुक्रगुज़ार हैं, जिन्होंने अपना क़ीमती वक़्त निकाल कर इस पर नज़रे सानी फ़रमाई, और मुफ़ीद मश्विरे दिए, अल्लाह तआ़ला दुनिया व आख़िरत में उन हज़रात को बेहतरीन अज्र अ़ता फ़रमाए, आमीन।

तमाम पढ़ने वालों से दुआ़ की दरख़्वास्त है कि अल्लाह तआ़ला इस सिलसिले को और आगे जारी रखने की हिम्मत और तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, और इसके लिए वसाइल और अस्बाब में आसानी पैदा फ़रमाए। इस काम को इख़्लास के साथ जारी रखने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

नाशिर

गुनाहों की लज़्ज़त, एक धोखा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَاوَسَنَدَنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا، اَمَّا بَعْدُ:

"عن ابی ہریرة رضی اللّٰه عنه ان رسول اللّٰه صلی اللّٰه علیه وسلم قال: حجبت النار بالشهوات وحجبت الجنة بالمكاره"

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः दोज़ख़ पर ख़्वाहिशाते नफ़सानी का पर्दा पड़ा हुआ है और जन्नत पर उन चीज़ों का पर्दा पड़ा हुआ है जिनको इन्सान दुनिया के अन्दर मुश्किल और पुर मशक़्क़त महसूस करता है, और ना पसन्दीदा समझता है।

जन्नत और जहन्नम पर्दे में

इस दुनिया को अल्लाह तआ़ला ने इम्तिहान और आज़माइश का घर का बनाया है, इस आज़माइश का तक़ाज़ा यह है कि इन्सान अपनी अ़क़्ल और समझ इस्तेमाल करके इस इम्तिहान में कामयाबी हासिल करे। अगर दोज़ख़ सामने कर दी जाती कि देखो यह दोज़ख़ है और इसमें आग भड़क रही है और उसका अ़ज़ाब दिखा दिया जाता, और दूसरी तरफ़ जन्नत सामने कर दी जाती कि उस जन्नत की नेमतें और उसके सुखद मनाज़िर सामने होते, और फिर इन्सान से कहा जाता कि तुम उन दोनों मक़ामात में से एक मक़ाम को अपने लिए इख़्तियार कर लो और उसके रास्ते पर चल पड़ो। फिर तो यह इम्तिहान न होता। यह इम्तिहान इस तरह रखा कि अल्लाह तआ़ला ने जन्नत भी पैदा फ़रमाई और जहन्नम भी पैदा फ़रमाई। लेकिन जहन्नम पर नफ़सानी ख़्वाहिशों का पर्दा डाल दिया और वे

नफ़सानी ख़्वाहिशात इन्सान को जहन्नम की तरफ़ ले जाना चाहती हैं। जैसे दिल चाहता है कि फ़लां काम कर लूं हालांकि वह काम दोज़ख़ में ले जाने वाला है। और दूसरी तरफ़ जन्नत पर ना पसन्दीदा चीज़ों का पर्दा डाल दिया, और ऐसी चीज़ों का पर्दा डाल दिया जिनको इन्सान का नफ़्स बुरा समझता है। जैसे यह कि सुबह सवेरे उठो, और अपनी नींद को छोड़ दो, मस्जिद की तरफ़ जाओ, फ़जर की नमाज़ अदा करो, ज़िक्र करो, गुनाहों को छोड़ दो। अब इन्सान का नफ़्स इन बातों को बज़ाहिर बुरा समझता है लेकिन जन्नत को इनके पीछे छुपा दिया गया है, और उस पर इनका पर्दा डाल दिया है।

जहन्नम के अंगारे ख़रीदने वाला

जितनी चीज़ें नफ़सानी शहवतों से मुताल्लिक़ हैं, अगर इन्सान उनके पीछे इस तरह चल पड़े कि जो जी में आए कर गुज़रे और यह न देखे कि यह काम हलाल है या हराम है, जायज़ है या ना जायज़ है, तो इस सूरत में यह रास्ता सीधा जहन्नम की तरफ़ ले जायेगा। जैसे इन्सान का दिल खेल तमाशों की तरफ़ माइल होता है। पहले ज़माने में तो खेल तमाशों के लिए बाक़ायदा जगहें मुक़र्रर होती थीं। वहां जाना पड़ता था। टिकट ख़रीदना पड़ता था। लेकिन अब तो घर घर में खेल तमाशे हो रहे हैं। ये सब शहवतें हैं और नफ़सानी ख़्वाहिशात हैं। जिनको पूरा करने के लिए इन्सान पैसे ख़र्च कर रहा है। और पैसे ख़र्च करके बाज़ार जाकर दौड़ धूप करके मेहनत और मशक़्क़त बर्दाश्त करके खेल तमाशों का सामान ख़रीद रहा है। गोया अपने घर के अन्दर, अपने ड्राइंगरूम में, अपने बैडरूम में और अपने बच्चों के लिए दोज़ख़ के अंगारे ख़रीद कर ला रहा है। जन्नत का सामान करने के बजाए जहन्नम का सामान कर रहा है। यह सब कुछ इसलिए कर रहा है कि ख़्वहिशात का पर्दा पड़ा हुआ है। अगर यह पर्दा उठ जाए और हक़ीक़त पहचानने वाली निगाह पैदा हो जाए तो उस वक़्त मालूम होगा कि मैं ये सारे काम जो कर

रहा हूं हक़ीक़त में जहन्नम में ले जाने वाले काम हैं।

जन्नत की तरफ़ जाने वाला रास्ता

दूसरी तरफ़ जन्नत के ऊपर ना पसन्दीदा चीज़ों का पर्दा पड़ा हुआ है। इन्सान का नफ़्स यह नहीं चाहता कि इबादतों और नेकियों की तरफ़ चले, अल्लाह तआ़ला के हुक्मों को माने, लेकिन यही रास्ता जन्नत की तरफ़ ले जाने वाला है। जो आदमी एक मर्तबा हिम्मत करके शहवतों के रास्ते से अपने आपको बचा ले, और उस पर चल पड़े जो बज़ाहिर पुर मशक़्क़त नज़र आ रहा है लेकिन इन्सान सीधा जन्नत में चला जायेगा।

हर ख़्वाहिश को पूरा करने की फ़िक्र

इस हदीस से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इस तरफ़ तवज्जोह दिला रहे हैं कि कभी ख़्वाहिशाते नफ़्स के धोखे में मत पड़ना, इसलिये कि ये नफ़्स की ख़्वाहिशें ऐसी चीज़ है कि जिसकी कोई इन्तिहा नहीं। और दुनिया के अन्दर कोई इन्सान ऐसा नहीं है जो यह कहे कि मैं जो कुछ ख़्वाहिश करता हूं वह पूरी हो जाती है। दुनिया में कोई इन्सान चाहे वह बड़े से बड़ा सरमायेदार हो, बड़े से बड़ा बादशाह हो, बड़े से बड़ा ओहदे और हुकूमत वाला हो, वह यह नहीं कह सकता कि जो कुछ दुनिया में हो रहा है वह मेरी मर्ज़ी के मुताबिक़ हो रहा है। उसको भी तक्लीफ़ और सदमा पहुंचता है। यह दुनिया मुस्तक़िल राहत की जगह नहीं है, इसलिये इस दुनिया में तक्लीफ़ तो पहुंचती है। अब तुम्हारी मर्ज़ी है कि चाहो तो ज़बरदस्ती अपने नफ़्स को तक्लीफ़ पहुंचा लो या अल्लाह को राज़ी करने के लिए अपने नफ़्स को तक्लीफ़ पहुंचाओ, और यह इरादा कर लो कि चूंकि अल्लाह तआ़ला ने मुझे इस काम से मना किया है इसलिये मैं अपने नफ़्स को इस काम से बाज़ रखूंगा। पहला रास्ता जहन्नम की तरफ़ ले जाने वाला है और दूसरा रास्ता जन्नत की तरफ़ ले जाने वाला है। इसलिये यह आ़दत जो पड़ गयी है कि

जो ख़्वाहिश भी पैदा हो वह ज़रूर पूरी हो जाए और उस ख़्वाहिश के पूरा न होने की सूरत में वह ग़मगीन और परेशान हो रहा है, यह आदत ख़त्म करो। इस लिये कि यह आदत जहन्नम की तरफ़ ले जाने वाली है।

इन्सान का नफ़्स लज़्ज़तों का आदी है

हमारा और आपका नफ़्स यानी वह कुव्वत जो इन्सान को किसी काम के करने की तरफ़ उभारती है, वह नफ़्स दुनियावी लज़्ज़तों का आदी बना हुआ है, इसलिये जिस काम में उसको ज़ाहिरी लज़्ज़त और मज़ा आता है, उसकी तरफ़ यह दौड़ता है, यह उसकी फ़ितरत और आदत है, कि ऐसे कामों की तरफ़ इन्सान को माइल करे, यह इन्सान से कहता है कि यह काम कर लो तो मज़ा आ जायेगा, यह काम कर लो तो लज़्ज़त हासिल हो जायेगी, इसलिये यह नफ़्स इन्सान के दिल में ख़्वाहिशों के तक़ाज़े पैदा करता रहता है, अब अगर इन्सान अपने नफ़्स को बेलगाम और बेमुहार छोड़ दे, और जो भी मज़े के हासिल करने का तक़ाज़ा पैदा हो, उस पर अ़मल करता जाये, और नफ़्स की हर बात मानता जाये, तो उसके नतीजे में फिर वह इन्सान इन्सान नहीं रहता, बल्कि वह जानवर बन जाता है।

नफ़्सानी ख़्वाहिशों में सुकून नहीं

नफ़्सानी ख़्वाहिशों का उसूल यह है कि अगर उनकी पैरवी करते जाओगे, और उनके पीछे चलते जाओगे, और उसकी बातें मानते जाओगे, तो फिर किसी हद पर जाकर क़रार नहीं आयेगा। इन्सान का नफ़्स कभी यह नहीं कहेगा कि अब सारी ख़्वाहिशें पूरी हो गयीं, अब मुझे कुछ नहीं चाहिये, यह कभी ज़िन्दगी भर नहीं होगा, इसलिये कि किसी इन्सान की सारी ख़्वाहिशें इस ज़िन्दगी में पूरी नहीं हो सकतीं, और इसके ज़रिये कभी क़रार और सुकून नसीब नहीं होगा। यह क़ायदा कि अगर कोई शख़्स यह चाहे कि मैं नफ़्स के हर तक़ाज़े पर अ़मल करता जाऊं, और हर ख़्वाहिश पूरी करता जाऊं,

तो कभी उस शख़्स को क़रार नहीं आयेगा। क्यों? इसलिये कि इस नफ़्स की ख़ासियत यह है कि एक लुत्फ़ उठाने के बाद और एक मर्तबा लज़्ज़त हासिल करने के बाद यह फ़ौरन दूसरी लज़्ज़त की तरफ़ बढ़ता है। इसलिये अगर तुम चाहते हो कि नफ़्सानी ख़्वाहिशों के पीछे चल चल कर सुकून हासिल कर लें, तो सारी उम्र कभी सुकून नहीं मिलेगा। तजुर्बा करके देख लो।

लुत्फ़ और लज़्ज़त की कोई हद नहीं है

आज जिनको तरक़्क़ी याफ़्ता (विकसित) क़ौमें कहा जाता है उन्होंने यही कहा है कि इन्सान की पराईवेट ज़िन्दगी में कोई दख़ल अन्दाज़ी न करो, जिसकी मर्ज़ी में जो कुछ आ रहा है वह उसको करने दो, और जिस शख़्स को जिस काम में मज़ा आ रहा है, वह उसे करने दो, न उसका हाथ रोको और न उस पर कोई पाबन्दी लगाओ, और उसके रास्ते में कोई रुकावट खड़ी न करो, चुनांचे आप देख लें कि आज इन्सान को लुत्फ़ हासिल करने और मज़ा हासिल करने में कोई रुकावट नहीं, न क़ानून की रुकावट, न मज़हब की रुकावट, न अख़्लाक़ की रुकावट, न समाज की रुकावट, कोई पाबन्दी नहीं है, और हर शख़्स वह काम कर रहा है जो उसकी मर्ज़ी में आ रहा है, और अगर उस शख़्स से कोई पूछे कि तुम्हारा मक़सद हासिल हो गया? तुम जितना लुत्फ़ इस दुनिया से हासिल करना चाहते थे, क्या लुत्फ़ की वह आख़री मन्ज़िल और मज़े का वह आख़री दर्जा तुम्हें हासिल हो गया? जिसके बाद तुम्हें और कुछ नहीं चाहिये? कोई शख़्स भी इस सवाल का "हां" में जवाब नहीं देगा, बल्कि हर शख़्स यही कहेगा कि मुझे और मिल जाये, मुझे और मिल जाये, अगे बढ़ता चला जाऊं। इसलिये कि एक ख़्वाहिश दूसरी ख़्वाहिश को उभारती रहती है।

खुलेआम ज़िनाकारी

पश्चिमी समाज में एक मर्द और एक औरत आपस में एक दूसरे

से जिन्सी लज़्ज़त हासिल करना चाहें तो एक सिरे से दूसरे सिरे तक चले जाओ, कोई रुकावट नहीं, कोई हाथ पकड़ने वाला नहीं, हद यह है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो इरशाद फ़रमाया था, वह आंखों ने देख लिया, आपने फ़रमाया था कि एक ज़माना आयेगा कि ज़िना इस क़द्र आम हो जायेगा कि दुनिया में सब से नेक शख़्स वह होगा कि दो आदमी एक सड़क के चौराहे पर बदकारी कर रहे होंगे, वह शख़्स आकर उनसे कहेगा कि इस पेड़ की ओट में कर लो, वह उनको उस काम से मना नहीं करेगा कि यह काम बुरा है, बल्कि वह यह कहेगा कि यहां सब के सामने करने के बजाये इस पेड़ की ओट में जाकर कर लो, वह कहने वाला शख़्स सब से नेक आदमी होगा, आज वह ज़माना लगभग आ चुका है। आज खुल्लम खुल्ला बग़ैर किसी रुकावट और पर्दे के यह काम हो रहा है।

अमेरिका में "बलात्कार" की कसरत क्यों?

इसलिये अगर कोई शख़्स अपने जिन्सी जज़्बात को सुकून देने के लिये हराम तरीक़ा इख़्तियार करना चाहे तो उसके लिये दरवाज़े खुले हुए हैं, लेकिन इसके बावजूद "बलात्कार" के वाक़िए जितने अमेरिका में होते हैं दुनिया में और कहीं नहीं होते, हालांकि रज़ामन्दी के साथ यह काम करने के लिये कोई रुकावट नहीं, जो आदमी जिस तरह चाहे अपने जज़्बात को सुकून दे सकता है। वजह इसकी यह है कि रज़ामन्दी के साथ ज़िना करके देख लिया, उसमें जो मज़ा था वह हासिल कर लिया, लेकिन उसके बाद उसमें भी क़रार न आया तो अब बाक़ायदा यह जज़्बा पैदा हुआ कि यह काम ज़बरदस्ती करो, ताकि ज़बरदस्ती करने का जो मज़ा है वह भी हासिल हो जाये। इसलिये ये इन्सानी ख़्वाहिशें किसी मर्हले पर जाकर रुकती नहीं हैं, बल्कि और आगे बढ़ती चली जाती हैं। और यह हवस कभी ख़त्म होने वाली नहीं।

यह प्यास बुझने वाली नहीं

आपने एक बीमारी का नाम सुना होगा जिसको "जूउल बक़र" कहते हैं। इस बीमारी की यह ख़ासियत है कि इन्सान को भूख लगती रहती है, जो दिल चाहे खा ले, जितना चाहे खा ले, मगर भूख नहीं मिटती। इसी तरह एक और बीमारी है जिसको "इस्तिसक़ा" कहा जाता है, इस बीमारी में इन्सान को प्यास लगती रहती है। घड़े के घड़े पी जाये, कुएं भी ख़त्म कर जाये, मगर प्यास नहीं बुझती। यही हाल इन्सान की ख़्वाहिशों का है, अगर उनको क़ाबू में न किया जाये, और उन पर कन्ट्रोल न किया जाये, और जब तक उनको शरीअ़त और अख़्लाक़ के बन्धन में न बांधा जाये, उस वक़्त तक उसको "इस्तिसक़ा" की बीमारी की तरह लुत्फ़ व लज़्ज़त के किसी भी मर्हले पर जाकर क़रार नसीब नहीं होता, बल्कि लज़्ज़त की वह हवस बढ़ती ही चली जाती है।

गुनाहों की लज़्ज़त की मिसाल

और फिर गुनाहों के अन्दर बेशक लज़्ज़त मौजूद है, गुनाह करना बड़ा मज़ेदार मालूम होता है और इस दुनिया के अन्दर यही तो आज़माइश है कि गुनाह देखने में अच्छा लगता है और दिल उसकी तरफ़ खिंचता है। उसमें लज़्ज़त महसूस होती है, मज़ा आता है। लेकिन हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि गुनाह की लज़्ज़त की मिसाल ऐसी है जैसे एक खुजली के मरीज़ को खुजलाने में मज़ा आता है। उसमें लज़्ज़त महसूस होती है। अगर उसको उस खुजलाने से रोका जाए तो वह बाज़ नहीं आता। लेकिन जितना खुजलाओगे उतना ही उस खुजली की बीमारी में इज़ाफ़ा होगा। अब बज़ाहिर तो ख़ुजलाने में लज़्ज़त महसूस हो रही है, मज़ा आ रहा है, लेकिन खुजला कर फ़ारिग़ होने के बाद उस जगह पर जो जलन होगी और तक्लीफ़ होगी उसके मुक़ाबले में वह वक़्ती लज़्ज़त कुछ नहीं है। इसी तरह गुनाह की लज़्ज़त भी एक वक़्ती

और अस्थायी और ज़ाहिरी लज़्ज़त है हक़ीक़ी लज़्ज़त नहीं। और जब अल्लाह तआला अपने ज़िक्र व फ़िक्र की लज़्ज़त अता फ़रमा दें और अपनी याद की लज़्ज़त अता फ़रमा दें और उसमें लगा दें तो वह ऐसी हमेशा रहने वाली और पायदार लज़्ज़त है कि उसके मुक़ाबले में गुनाह की लज़्ज़त कोई हक़ीक़त नहीं रखती, बल्कि बिल्कुल बे हक़ीक़त है।

थोड़ी सी मशक़्क़त बर्दाश्त कर लो

इसी लिये अल्लाह तबारक व तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि नफ़सानी ख़्वाहिशों के पीछे मत चलो, उनका इत्तिबा मत करो, इसलिये कि ये तुम्हें हलाकत के गढ़े में लेजा कर डाल देंगी, बल्कि उसको ज़रा क़ाबू में रखो और उसको कन्ट्रोल करके शरीअत की बताई हुई हदों के अन्दर रखो, और अगर तुम रखना चाहोगे तो शुरू शुरू में यह नफ़्स तुम्हें ज़रा तंग करेगा, तक्लीफ़ होगी, सदमा होगा, दुख होगा, एक काम को दिल चाह रहा है मगर उसको रोक रहे हैं, दिल चाह रहा है कि टी०वी० देखें और उसमें जो ख़राब ख़राब फ़िल्में आ रही हैं वे देखें, यह नफ़्स का तक़ाज़ा हो रहा है। अब जो आदमी इसका आदी है, उस से कहो कि इसको मत देख, और नफ़्सानी तक़ाज़े पर अमल न कर, अगर वह नहीं देखेगा और आंख उस से रोकेगा तो शुरू में उसको दिक़्क़त और मशक़्क़त होगी, बुरा लगेगा, इसलिये कि वह देखने का आदी है, उसको देखे बग़ैर चैन नहीं आता, लुत्फ़ नहीं आता।

यह नफ़्स कमज़ोर पर शेर है

लेकिन साथ में अल्लाह तआला ने इस नफ़्स की ख़ासियत यह रखी है कि अगर कोई शख़्स इस मशक़्क़त और तक्लीफ़ के बावजूद एक मर्तबा डट जाये कि चाहे मशक़्क़त हो या तक्लीफ़ हो, चाहे दिल

पर आरे चल जायें तब भी यह काम नहीं करूंगा, जिस दिन यह शख़्स नफ़्स के सामने इस तरह डट गया, बस उस दिन से ये नफ़्सानी ख़्वाहिशें ख़ुद बख़ुद ढीली पड़नी शुरू हो जायेंगी, यह नफ़्स और शैतान कमज़ोर के ऊपर शेर हैं, जो इसके सामने भीगी बिल्ली बना रहे और इसके तक़ाज़ों पर चलता रहे, उसके ऊपर यह छा जाता है और ग़ालिब आ जाता है, और जो शख़्स एक मर्तबा पुख़्ता इरादा करके इसके सामने डट गया कि मैं यह काम नहीं करूंगा, चाहे कितना तक़ाज़ा हो, चाहे दिल पर आरे चल जायें, फिर यह नफ़्स ढीला पड़ जाता है, और उस काम के न करने पर पहले दिन जितनी तक्लीफ़ हुई थी, दूसरे दिन उस से कम होगी, और तीसरे दिन उस से कम, और होते होते वह तक्लीफ़ एक दिन बिल्कुल ख़त्म हो जायेगी।

नफ़्स दूध पीते बच्चे की तरह है

अ़ल्लामा बूसेरी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि एक बहुत बड़े बुज़ुर्ग गुज़रे हैं जिनका "क़सीदा-ए-बुर्दा" बहुत मश्हूर है, जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शान में एक नातीया क़सीदा है, उसमें एक अ़जीब व ग़रीब हकीमाना शेर कहा है:

النفس كالطفل ان تمهله شب على

حب الرضاع وان تفطمه ينفطم

यह इन्सान का नफ़्स एक छोटे बच्चे की तरह है, जो मां का दूध पीता है और वह बच्चा दूध पीने का आ़दी बन गया, अब अगर उस से दूध छुड़ाने की कोशिश करो तो वह बच्चा क्या करेगा? रोएगा, चिल्लाएगा, शोर करेगा, अब अगर मां बाप यह सोचें कि दूध छुड़ाने से बच्चे को बड़ी तक्लीफ़ हो रही है, चलो छोड़ो इसे दूध पीने दो, दूध पीता रहे, तो अ़ल्लामा बूसेरी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि अगर उस बच्चे को इस दूध पीने की हालत में छोड़ दिया तो नतीजा यह होगा कि वह जवान हो जायेगा, और उससे दूध नहीं छूट पायेगा,

इसलिये कि तुम उसकी तक्लीफ़, उसकी फ़रियाद और उसकी चीख़ पुकार से डर गये, जिसका नतीजा यह निकला कि उस से दूध नहीं छुड़ा सके, अब अगर उसके सामने रोटी लाते हैं तो वह कहता है कि मैं तो नहीं खाऊंगा, मैं तो दूध ही पियूंगा, लेकिन दुनिया में कोई मां बाप ऐसे नहीं होंगे जो यह कहें कि चूंकि बच्चे को दूध छुड़ाने से तक्लीफ़ हो रही है इसलिये दूध नहीं छुड़ाते, मां बाप जानते हैं कि दूध छुड़ाने से रोएगा, चिल्लाएगा, रात को नींद नहीं आयेगी, ख़ुद भी जागेगा और हमें भी जगायेगा, लेकिन फिर भी दूध छुड़ाते हैं, इसलिये कि वे जानते हैं कि बच्चे की भलाई इसी में है, अगर आज इसका दूध न छुड़ाया गया तो सारी उम्र यह रोटी खाने के लायक़ नहीं होगा।

उसको गुनाहों की चाट लगी हुई है

अ़ल्लामा बूसेरी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि यह इन्सान का नफ़्स भी बच्चे की तरह है, इसके मुंह को गुनाह लगे हुए हैं, गुनाहों का ज़ायक़ा और उनकी चाट लगी हुई है, अगर तुमने इसको ऐसे ही छोड़ दिया कि चलो करने दो, गुनाह छुड़ाने से तक्लीफ़ होगी। नज़र ग़लत जगह पर पड़ती है और उसको हटाने में बड़ी तक्लीफ़ होती है, ज़बान को झूठ बोलने की आदत पड़ गई है, अगर झूठ बोलना छोड़ेंगे तो बड़ी तक्लीफ़ होगी, और इस ज़बान को मज्लिसों के अन्दर बैठ कर ग़ीबत करने की आ़दत पड़ गई है, अगर इसको रोकेंगे तो बड़ी दिक़्क़त होगी, नफ़्स इन बातों का आ़दी बन गया है, रिश्वत लेने की आ़दत पड़ गई है, अल्लाह बचाये सूद खाने की आ़दत पड़ गई, और बहुत से गुनाहों की आ़दत पड़ गई है, और अब इन आ़दतों को छुड़ाने से नफ़्स को तक्लीफ़ हो रही है, अगर नफ़्स की इस तक्लीफ़ से घबरा कर और डर कर बैठ गये, तो इसका नतीजा यह होगा कि सारी उम्र न कभी गुनाह छूटेंगे और न क़रार मिलेगा।

सुकून अल्लाह के ज़िक्र में है

याद रखो! अल्लाह तआ़ला की ना फ़रमानी में क़रार और सुकून नहीं है, सारी दुनिया के अस्बाब और वसाइल जमा कर लिये, लेकिन उसके बावजूद सुकून नसीब नहीं, चैन नहीं मिलता, मैंने आपको अभी पश्चिमी समाज की मिसाल दी थी कि वहां पैसे की रेल पेल, तालीम का मेयार बुलन्द, लज़्ज़त हासिल करने के सारे दरवाज़े चौपट खुले हुए कि जिस तरह चाहो लज़्ज़त हासिल कर लो, लेकिन इसके बावजूद यह हाल है कि नींद की गोलियां खा खाकर उसकी मदद से सो रहे हैं, क्यों! दिल में सुकून व क़रार नहीं, सुकून क्यों नहीं मिला? इसलिये कि गुनाहों में सुकून कहां तलाश करते फिर रहे हो, याद रखो! इन गुनाहों और ना फ़रमानियों और मुसीबतों में सुकून नहीं, सुकून तो सिर्फ़ एक चीज़ में है, और वह है:

"اَلَا بِذِکْرِ اللّٰہِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ" (سورة الرعد:۲۸)

अल्लाह की याद में इत्मीनान और सुकून है। इस वासते यह समझना धोखा है कि ना फ़रमानियां करते जायेंगे और सुकून मिलता जायेगा। याद रखो! ज़िन्दगी भर नहीं मिलेगा, इस दुनिया से तड़प तड़प कर जाओग, अगर ना फ़रमानियों को न छोड़ा तो सुकून की मन्ज़िल हासिल न होगी।

सुकून अल्लाह तआ़ला उन्हीं लोगों को देते हैं जिनके दिल में उसकी मुहब्बत हो, जिनके दिल में उसकी याद हो, जिनका दिल उसके ज़िक्र से आबाद हो, उनके सुकून और इत्मीनान को देखो कि ज़ाहिरी तौर पर परेशान हाल भी हैं, फ़क्र है, फ़ाक़े भी गुज़र रहे हैं, लेकिन दिल को सुकून और क़रार की नेमत मयस्सर है। इसलिये अगर दुनिया का भी सुकून हासिल करना चाहते हो तो इन ना फ़रमानियों और गुनाहों को तो छोड़ना पड़ेगा, और गुनाहों को छोड़ने के लिये ज़रा सा मुजाहदा करना पड़ेगा, नफ़्स के मुक़ाबले में ज़रा सा डटना पड़ेगा।

अल्लाह का वायदा झूठा नहीं हो सकता

और साथ ही अल्लाह तआ़ला ने यह वायदा भी फ़र्मा लिया किः

"وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا"

जो लोग हमारे रास्ते में यह मुजाहदा और मेहनत करते हैं कि माहौल का, समाज का, नफ़्स का, शैतान का और ख़्वाहिशों का तक़ाज़ा छोड़ कर वे हमारे हुक्म पर चलना चाहते हैं, तो हम क्या करते हैं:

"لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا"

हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि इसका तर्जुमा फ़रमाते हैं कि "हम उनके हाथ पकड़ कर ले चलेंगे" यह नहीं कि दूर से दिखा दिया कि "यह रास्ता है" बल्कि फ़रमाया! कि हम उसका हाथ पकड़ कर ले जायेंगे, लेकिन ज़रा कोई क़दम तो बढ़ाये, ज़रा कोई इरादा तो करे, ज़रा कोई अपने इस नफ़्स के मुक़ाबले में एक मर्तबा डटे तो सही, फिर अल्लाह तआ़ला की मदद आती है। यह अल्लाह तआ़ला का वायदा है, जो कभी झूठा नहीं हो सकता।

इसलिये "मुजाहदा" इसी का नाम है कि एक मर्तबा आदमी डट कर इरादा कर ले कि यह काम नहीं करूंगा, दिल पर आरे चल जायेंगे, ख़्वाहिशें पामाल हो जायेंगी, दिल व दिमाग़ पर क़ियामत गुज़र जायेगी लेकिन यह गुनाह का काम नहीं करूंगा, जिस दिन नफ़्स के सामने डट गया, अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि उस दिन से हमारा महबूब हो गया, अब हम ख़ुद उसका हाथ पकड़ कर अपने रास्ते पर ले जाएंगे।

अब तो इस दिल को तेरे क़ाबिल बनाना है मुझे

इसलिये इस्लाह के रास्ते में सब से पहला क़दम "मुजाहदा" है। इसका पक्का इरादा करना होगा। हमारे हज़रत डॉक्टर अ़ब्दुल हई साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि यह शेर पढ़ा करते थे किः

आरज़ूएं ख़ून हों या हसरतें पामाल हों
अब तो इस दिल को बनाना है तेरे क़ाबिल मुझे

जो आरज़ूएं दिल में पैदा हो रही हैं वे चाहे बर्बाद हो जायें, चाहे उनका ख़ून हो जाये, अब मैंने तो इरादा कर लिया है कि अब इसको तेरे क़ाबिल बनाना है मुझे, अब इस दिल में अल्लाह जल्ल जलालुहू के अनवार का नुज़ूल होगा, अब इस दिल में अल्लाह की मुहब्बत क़रार पायेगी, अब ये गुनाह नहीं होंगे। फिर देखो कि अल्लाह तआला की तरफ़ से कैसी रहमतें नाज़िल होती हैं, और आदमी इस राह पर चल पड़ता है।

याद रखोः शुरू शुरू में तो यह काम करने में बड़ी दिक़्क़त होती है कि दिल तो कुछ चाह रहा है और अल्लाह की ख़ातिर उस काम को छोड़ रहे हैं, इसमें बड़ी तक्लीफ़ होती है कि मैं नफ़्स को जो कुचल रहा हूं और आरज़ूओं का जो ख़ून कर रहा हूं, यह अपने मालिक और ख़ालिक़ की ख़ातिर कर रहा हूं, और इसमें जो मज़ा और ख़ुशी है आप अभी उसका तसव्वुर भी नहीं कर सकते।

मां यह तक्लीफ़ क्यों बर्दाश्त करती है?

मां को देखिये कि उसकी क्या हालत होती है कि सख़्त सर्दी का आलम है और कड़—कड़ाते जाड़े की रात है, लिहाफ़ में लेटी हुई है और बच्चा पास पड़ा है, इस हालत में बच्चे ने पेशाब कर दिया, अब नफ़्स का तक़ाज़ा यह है कि यह गर्म गर्म बिस्तर छोड़ कर कहां जाऊं, यह तो जाड़े का मौसम है, गर्म गर्म बिस्तर को छोड़ कर जाना तो बड़ा मुश्किल काम है, लेकिन मां यह सोचती है कि अगर मैं न गई तो बच्चा गीला पड़ा रहेगा, उसके कपड़े गीले हैं, इस तरह गीला पड़ा रहेगा तो कहीं उसको बुख़ार न हो जाये, उसकी तबीयत न ख़राब हो जाये, वह बेचारी अपने नफ़्स का तक़ाज़ा छोड़ कर सख़्त कड़ाके के जाड़े में बाहर जाकर ठन्डे पानी से उसके कपड़े धो रही है, और उसके कपड़े बदल रही है, यह कोई मामूली मशक़्क़त

है? कोई मामूली तक्लीफ़ है? लेकिन मां यह तक्लीफ़ बर्दाश्त कर रही है, क्यों? इसलिये कि बच्चे की भलाई और उसकी सेहत मां के सामने है, इसलिये वह सख़्त जाड़े में अपने नफ़्स के तक़ाज़े को पामाल करके ये सारे काम कर रही है।

मुहब्बत तक्लीफ़ को ख़त्म कर देती है

एक औरत का कोई बच्चा नहीं है, कोई औलाद नहीं, वह कहती है भाई: किसी तरह मेरा इलाज कराओ ताकि बच्चा हो जाये, औलाद हो जाये, और उसके लिये दुआएं कराती फिरती है कि दुआ करो अल्लाह मियां से कि मुझे औलाद दे दे, और इसके लिये तावीज़, गन्डे और ख़ुदा जाने क्या क्या कराती फिर रही है, एक दूसरी औरत उस से कहती है कि अरे! तू किस चक्कर में पड़ी है? बच्चा पैदा होगा तो तुझे बहुत मशक़्क़तें उठानी पड़ेंगी, जाड़े की रातों में उठ कर ठन्डे पानी से कपड़े धोने होंगे, तो वह औरत जवाब देती है कि मेरे एक बच्चे पर हज़ार जाड़ों की रातें क़ुरबान हैं, इसलिये कि बच्चे की क़द्र व क़ीमत और उसके दौलत होने का एहसास उसके दिल में है, इस वास्ते उस मां के लिये सारी तक्लीफ़ें राहत बन गयीं, वह मां जो अल्लाह से दुआ मांग रही है कि या अल्लाह! मुझे औलाद दे दे, इसके मायने यह हैं कि औलाद की जितनी ज़िम्मेदारियां हैं, जितनी तक्लीफ़ें हैं, वे दे दे, लेकिन वे तक्लीफ़ें उसकी नज़र में तक्लीफ़ें ही नहीं, बल्कि राहत ही राहत हैं। अब जो मां जाड़े की रात में उठ कर कपड़े धो रही है उसको तबई तौर पर तक्लीफ़ तो ज़रूर हो रही है, लेकिन अक़्ली तौर पर उसे इत्मीनान है कि मैं ये काम अपने बच्चे की भलाई की ख़ातिर कर रही हूं, जब यह इत्मीनान होता है तो उस वक़्त उसे अपनी आरज़ूओं को कुचलने में भी लुत्फ़ आने लगता है।

इसी बात को मौलाना रूमी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि इस तरह फ़रमाते हैं:

"अज़ मुहब्बत तल्ख़–हा शीरीं शवद"

कि जब मुहब्बत पैदा हो जाती है कड़वी से कड़वी चीज़ें भी मीठी मालूम होने लगती हैं, जिन कामों में तक्लीफ़ हो रही थी, मुहब्बत की ख़ातिर उनमें भी मज़ा आने लगता है, लुत्फ़ आने लगता है, कि मैं यह काम मुहब्बत की वजह से कर रहा हूं, मुहब्बत की ख़ातिर कर रहा हूं।

मौला की मुहब्बत लैला से कम न हो

मौलाना रूमी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने मस्नवी में मुहब्बत की बड़ी अ़जीब हिकायतें लिखी हैं। लैला मजनूं का क़िस्सा लिखा है कि मजनूं लैला की ख़ातिर किस तरह दीवाना बना, और क्या क्या मशक़्क़तें उठायीं, दूध की नहर निकालने के इरादे से चल खड़ा हुआ और काम भी शुरू कर दिया, ये सारी मशक़्क़तें उठा रहा है, कोई उस से कहे कि तू यह जो काम कर रहा है यह बड़ी मशक़्क़त का काम है, इसे छोड़ दे, तो वह कहता है कि हज़ार मशक़्क़तें क़ुरबान, जिसकी ख़ातिर यह काम कर रहा हूं उसकी मुहब्बत में कर रहा हूं, मुझे तो इसी नहर खोदने में मज़ा आ रहा है, इसलिये कि यह मैं अपनी महबूबा की ख़ातिर कर रहा हूं, मौलाना रूमी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं:

इश्क़े मौला के कम अज़ लैला बुवद
गोये गश्तन बहरे ऊ औला बुवद

मौला का इश्क़े हक़ीक़ी कब लैला के इश्क़ से कम हो सकता है, मौला के लिये गेंद बन जाना ज़्यादा औला है, इसलिये जब आदमी मुहब्बत की ख़ातिर ये तक्लीफ़ें उठाता है तो फिर बड़ा लुत्फ़ आने लगता है।

तन्ख़्वाह से मुहब्बत है

एक आदमी नौकरी करता है, जिसके लिये सुबह को सवेरे उठना पड़ता है, अच्छी ख़ासी सर्दी में बिस्तर पर लेटा हुआ है, और जाने का वक़्त आ गया तो बिस्तर छोड़ कर जा रहा है, नफ़्स का तक़ाज़ा

तो यह था कि गर्म गर्म बिस्तर में पड़ा रहता, लेकिन घर छोड़ कर, बीवी बच्चों को छोड़ कर जा रहा है और सारा दिन मेहनत की चक्की पीसने के बाद रात को किसी वक़्त घर वापस आता है, और बेशुमार लोग ऐसे भी हैं जो सुबह अपने बच्चों को सोता हुआ छोड़ कर जाते हैं और रात को वापस आकर सोता हुआ पाते हैं। ग़र्ज़ वह शख़्स ये सब तक्लीफ़ें बर्दाश्त कर रहा है, अब अगर कोई शख़्स उस से कहे कि अरे भाई! तुम नौकरी में बहुत तक्लीफ़ उठा रहे हो, चलो मैं तुम्हारी नौकरी छुड़ा देता हूं, वह जवाब देगाः नहीं भाई, बड़ी मुश्किल से यह नौकरी लगी है, इसको मत छुड़वाना, उसको सुबह सवेरे उठ कर जाने में ही मज़ा आ रहा है, और औलाद को, बीवी को छोड़ कर जाने में भी मज़ा आ रहा है, क्यों? इसलिये कि उसको उस तन्ख़्वाह से मुहब्बत हो गयी है जो महीने के आख़िर में मिलने वाली है, उस मुहब्बत के नतीजे में ये सारी तक्लीफ़ें शीरीं (मज़ेदार) बन गयीं, अब अगर किसी वक़्त नौकरी छूट गयी तो रोता फिर रहा है कि हाय वे दिन कहां गये, जब सुबह सवेरे उठ कर जाया करता था, और लोगों से सिफ़ारिशें कराता फिर रहा है कि मुझे नौकरी पर दोबारा बहाल कर दिया जाये, अगर मुहब्बत किसी चीज़ से हो जाये तो उस रास्ते की सारी तक्लीफ़ें आसान और मज़ेदार हो जाती हैं, उसी में लुत्फ़ आने लगता है।

इसी तरह गुनाहों को छोड़ने में तक्लीफ़ ज़रूर है, शुरू में परेशानी होगी, लेकिन जब एक मर्तबा डट गये, और उसके मुताबिक़ अ़मल शुरू कर दिया तो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से मदद भी होगी, और फिर इन्शा अल्लाह तआ़ला उस तक्लीफ़ में मज़ा आने लगेगा, अल्लाह तआ़ला की इताअ़त में मज़ा आने लगेगा।

इबादत की लज़्ज़त से वाक़िफ़ कर दो

हमारे हज़रत डॉक्टर अ़ब्दुल हई साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने एक मर्तबा बड़ी अ़जीब व ग़रीब बात इरशाद फ़रमाई, फ़रमाया कि इन्सान के इस नफ़्स को लज़्ज़त और मज़ा चाहिये, इसकी ख़ुराक

लज़्ज़त और मज़ा है, लेकिन लज़्ज़त की कोई ख़ास शक्ल इसको मतलूब नहीं कि फ़लां क़िस्म का मज़ा चाहिये और फ़लां क़िस्म का नहीं चाहिये, बस इसको तो मज़ा चाहिये, अब तुमने इसको ख़राब क़िस्म के मज़े का आदी बना दिया है, ख़राब क़िस्म की लज़्ज़तों का आदी बना दिया है, एक मर्तबा इसको अल्लाह तआ़ला की इताअ़त और इबादत की लज़्ज़त से आशना (वाक़िफ़) कर दो, और अल्लाह तआ़ला के हुक्म के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की लज़्ज़त से आशना कर दो फिर यह नफ़्स उसी में लज़्ज़त और मज़ा लेने लगेगा।

हज़रत सुफ़ियान सौरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि का फ़रमान

हज़रत सुफ़ियान सौरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि जो बड़े दर्जे के मुहद्दिसीन और औलिया अल्लाह में से हैं। वह फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने हम लोगों को महज़ अपने फ़ज़्ल व करम से इल्म की, इबादत की और अल्लाह की याद और ज़िक्र की जो लज़्ज़त अ़ता फ़रमाई हुई है अगर इस लज़्ज़त की इत्तिला और ख़बर इन बड़े बड़े बादशाहों और सरमायेदारों को हो जाए तो वे तलवारें सूंत कर हमारे पास आ जाएं कि यह लज़्ज़त हमें भी दो। लेकिन चूंकि उनको पता नहीं कि हम लोग लज़्ज़त के किस आ़लम में हैं और किस कैफ़ में ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं इस लज़्ज़त की हवा भी उनको नहीं लगी, इसलिये वे यह समझ रहे हैं कि इन गुनाहों के अन्दर भी मज़ा है। लेकिन हक़ीक़ी लज़्ज़त अल्लाह तआ़ला ने हमको अ़ता फ़रमाई है।

मुझे तो दिन रात बेख़ुदी चाहिये

ग़ालिब का एक शेर मशहूर है, ख़ुदा जाने लोग इसका क्या मतलब लेते होंगे, लेकिन हमारे हज़रत रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने इसका बड़ा अच्छा मतलब निकाला है, वह शेर है:

मय से ग़र्ज़े निशात है किस रू सियाह को
एक गोना बेख़ुदी मुझे दिन रात चाहिये

यानी शराब से मुझको कोई ताल्लुक़ नहीं, मुझे तो दिन रात

लज़्ज़त की बेख़ुदी चाहिये, तुमने मुझे शराब का आदी बना दिया तो मुझे शराब में बेख़ुदी हासिल हो गयी, शराब में लज़्ज़त आने लगी, अगर तुम मुझे अल्लाह तआ़ला की याद और उसके ज़िक्र और उस की इताअ़त का आ़दी बना देते तो यह बेख़ुदी मुझे अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र में हासिल हो जाती, मैं तो उसी में ख़ुश हो जाता, लेकिन यह तुम्हारी ग़लती है कि तुमने मुझे इन चीज़ों के बजाये शराब का आ़दी बना दिया।

नफ़्स को कुचलने में मज़ा आयेगा

इसी तरह यह मुजाहदा शुरू में तो बड़ा मुश्किल लगता है कि बड़ा कठिन सबक़ दिया जा रहा है कि अपने नफ़्स की मुख़ालफ़त करो, अपने नफ़्स की ख़्वाहिशों की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करो, नफ़्स तो चाह रहा है कि ग़ीबत करूं, मज्लिस में ग़ीबत करने का मौज़ू चढ़ गया, अब जी चाह रहा है कि उसमें बढ़ चढ़ कर हिस्सा लूं, अब उस वक़्त इसको लगाम देना कि नहीं यह काम मत करो, यह बड़ा मुश्किल काम लगता है, लेकिन याद रखिये कि दूर दूर से यह मुश्किल नज़र आता है, जब आदमी ने यह पुख़्ता इरादा कर लिया कि यह काम नहीं करूंगा तो उसके बाद अल्लाह की रहमत और फ़ज़्ल व करम से मदद भी होगी, और फिर तुमने इस लज़्ज़त और ख़्वाहिश को जो कुचला है, उस कुचलने में जो मज़ा आयेगा, इन्शा अल्लाह सुम्म इन्शा अल्लाह उसकी मिठास उस ग़ीबत की लज़्ज़त से कहीं ज़्यादा होगी।

ईमान की मिठास हासिल कर लो

हदीस में आता है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया किः एक शख़्स के दिल में तक़ाज़ा पैदा हुआ कि निगाह ग़लत जगह पर डालूं। और कौन शख़्स है जिसके दिल में यह तक़ाज़ा नहीं होता। अब दिल बड़ा कसमसा रहा है कि उसको देख ही लूं, आपने अल्लाह तआ़ला के डर और ख़ौफ़ के

ख़्याल से नज़र बचा ली और निगाह नहीं डाली, बड़ी तक्लीफ़ हुई, दिल पर आरे चल गये लेकिन उसी तक्लीफ़ के बदले में अल्लाह तआ़ला ईमान की ऐसी हलावत (मिठास) अ़ता फ़रमायेंगे कि उसके आगे देखने की लज़्ज़त कुछ नहीं है। यह नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का वायदा है, और हदीस में मौजूद है।(मुस्नद अहमद)

यह वायदा सिर्फ़ निगाह के गुनाह के साथ मख़्सूस नहीं बल्कि हर गुनाह छोड़ने पर यह वायदा है। जैसे ग़ीबत में बड़ा मज़ा आ रहा है, लेकिन एक मर्तबा आपने अल्लाह जल्ल जलालुहू के ख़्याल से ग़ीबत छोड़ दी, और ग़ीबत करते करते रुक गये, अल्लाह के डर के ख़्याल से ग़ीबत की बात ज़बान पर आते आते रुक गयी, फिर देखो कैसी लज़्ज़त हासिल होती है, और जब इन्सान गुनाहों की लज़्ज़तों के मुक़ाबले में उस लज़्ज़त का आ़दी होता चला जाता है तो फिर अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत और उसके साथ ताल्लुक़ पैदा हो जाता है।

तसव्वुफ़ का हासिल

हज़रत हकीमुल उम्मत रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने क्या अच्छी बात इरशाद फ़रमाई, याद रखने के लायक़ है, फ़रमायाः "वह ज़रा सी बात जो हासिल है तसव्वुफ़ का, यह है कि जब दिल में किसी नेकी और अच्छे काम के करने में सुस्ती पैदा हो, जैसे नमाज़ का वक़्त हो गया लेकिन नमाज़ को जाने में सुस्ती हो रही है, उस सुस्ती का मुक़ाबला करके उस नेकी को करे, और जब गुनाह से बचने में दिल सुस्ती करे तो उस सुस्ती का मुक़ाबला करके उस गुनाह से बचे" फिर फ़रमाया किः "बस! इसी से अल्लाह के साथ ताल्लुक़ पैदा होता है, इसी से अल्लाह के साथ ताल्लुक़ में तरक़्क़ी होती है, और जिस शख़्स को यह बात हासिल हो जाये, उसको फिर किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं" इसलिये नफ़्सानी ख़्वाहिशों पर आरे चला चला कर और हथोड़े मार मार कर जब उसको कुचल दिया, तो अब वह नफ़्स कुचलने के नतीजे में अल्लाह जल्ल जलालुहू की तजल्ली का मक़ाम

बन गया।

दिल तो है ही टूटने के लिये

हमारे वालिद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि एक मिसाल दिया करते थे कि अब तो वह ज़माना चला गया, पहले ज़माने में यूनानी हकीम हुआ करते थे, वे कुश्ता बनाया करते थे, सोने का कुश्ता, चांदी का कुश्ता, संखिया का कुश्ता, और न जाने क्या क्या कुश्ते तैयार करते थे, और कुश्ते बनाने के लिये वे सोने को जलाते थे, इतना जलाते थे कि वह सोना राख बन जाता था, और कहते थे कि सोने को जितना ज़्यादा जलाया जायेगा, उतना ही उसकी ताक़त में इज़ाफ़ा होगा, जला जला कर जब कुश्ता तैयार किया तो वह कुश्ता–ए–तिला तैयार हो गया। कोई उसको ज़रा सा खा ले तो पता नहीं कहां की कुव्वत आ जायेगी। तो जब सोने को जला जला कर, मिटा मिटा कर, पामाल कर कर के राख बना दिया तो अब यह कुश्ता तैयार हो गया। हमारे हज़रत वालिद साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि इन नफ़्स की ख़्वाहिशों को जब कुचलोगे, और कुचल कुचल कर पीस पीस कर राख बनाकर फ़ना कर दोगे तब यह कुश्ता बन जायेगा, इसमें अल्लाह जल्ल जलालुहू के साथ ताल्लुक़ की कुव्वत आ जायेगी और अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत आ जायेगी, अब दिल अल्लाह तआ़ला की तजल्ली का मक़ाम बन जायेगा, इस दिल को जितना तोड़ोगे उतना ही यह अल्लाह तआ़ला की निगाह में महबूब बनेगाः

तू बचा बचा के न रख इसे, कि यह आईना है वह आईना
जो शिकस्ता हो तो अज़ीज़ तर है निगाहे आईना साज़ में

तुम इस पर जितनी चोटें लगाओगे उतना ही यह बनाने वाले की निगाह में महबूब होगा, बनाने वाले ने इसको इसी लिये बनाया है कि इसे तोड़ा जाये, उसकी ख़ातिर इसकी ख़्वाहिशों को कुचला जाये, और जब वह कुचल जाता है तो क्या से क्या बन जाता है। हमारे

हज़रत डॉक्टर साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि क्या अच्छा शेर पढ़ा करते थे कि:

यह कह के कासा साज़ ने प्याला पटक दिया
अब और कुछ बनायेंगे इसको बिगाड़ के

और कुछ बनायेंगे, यानी जो वह जो चाहेंगे वह बनायेंगे। इस लिये यह न समझो कि नफ़्स की ख़्वाहिशों को कुचलने से जो चोटें लग रही हैं और जो तक्लीफ़ें हो रही हैं वे बेकार जा रही हैं, बल्कि उसके बाद जब यह दिल अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत का महल बनेगा, और अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र और उसकी याद का मक़ाम बनेगा। उस वक़्त इसको जो मिठास नसीब होगी, ख़ुदा की क़सम उसके मुक़ाबले में गुनाहों की ये सारी लज़्ज़तें ख़ाक दर ख़ाक हैं, इनकी कोई हक़ीक़त नहीं। अल्लाह तआ़ला यह दौलत हम सब को नसीब फ़रमाएं। और हमारी समझ को दुरुस्त फ़रमाएं और इन बातों पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाएं, आमीन।

وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين

अपनी फ़िक्र करें

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَاوَسَنَدَنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا، اَمَّا بَعْدُ:

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ.

يَآ اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ لَا يَضُرُّكُمْ مَنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ، اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (سورة المآئدة: ١٠٥)

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمُ وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ وَنَحْنُ عَلٰى ذَالِكَ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ وَالشَّاكِرِيْنَ. وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ.

एक आयत पर अ़मल

यह कुअराने करीम की एक मुख़्तसर सी आयत है। कुरआने करीम का यह अ़जीब व ग़रीब कमाल है कि इसकी कोई आयत मुख़्तसर ही क्यों न हो, अगर इन्सान उसको ठीक तरह समझ कर उस पर अ़मल कर ले तो उसकी ज़िन्दगी को दुरुस्त करने के लिए तन्हा एक आयत भी काफ़ी हो जाती है। यह आयत भी इसी क़िस्म की है, इस आयत में एक अ़जीब व ग़रीब हक़ीक़त का बयान फ़रमाया गया है, और पूरी मुस्लिम उम्मत को एक अ़जीब हिदायत दी गयी है। अगर यह हिदायत हमारे दिलों में उतर जाए और हम उस पर अ़मल करने का अ़हद कर लें तो मैं यक़ीन से कह सकता हूं कि उसके ज़रिए हमारी तमाम मुसीबतों और परेशानियों का ख़ात्मा हो जाए।

मुसलमानों की बदहाली का सबब

इस से पहले कि इस आयत का तर्जुमा और इसका मतलब आप हज़रात की ख़िदमत में पेश करूं, एक अहम सवाल की तरफ़ आपकी तवज्जोह दिलाना चाहता हूं, जो अक्सर हम में से बहुत से लोगों के दिलों में पैदा होता है। आप देख रहे हैं कि इस वक़्त पूरी उम्मते मुस्लिमा जहां कहीं आबाद है वह मसाइल का शिकार है। मुसीबतों और परेशानियों से घिरी है।

कहीं बोसिनिया के मुसलमानों पर ज़ुल्म व सितम हो रहा है। कहीं कश्मीर में मुसलान ज़ुल्म व सितम बर्दाश्त कर रहे हैं। सोमालिया के मुसलमान ख़ाना जंगी (गृह युद्ध) का शिकार हैं। अफ़ग़ानिस्तान में मुसलमान आपस में एक दूसरे से लड़ रहे हैं। ये सारे मसाइल जो पूरी उम्मते मुस्लिमा को के सामने हैं। इनके सबब पर जब ग़ौर करने की नौबत आती है तो जिन लोगों के दिलों में ईमान की ज़र्रा बराबर भी रमक़ है, वे लोग ग़ौर करने के बाद यह कहते हैं कि इन मुसीबतों और परेशानियों का बुनियादी सबब यह है कि हम दीन को छोड़ बैठ हैं। नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीमात पर अ़मल करना छोड़ दिया है। अल्लाह की बन्दगी करनी छोड़ दी है। आपकी सुन्नतों की इत्तिबा करना छोड़ दिया है और बुरे आमाल में मुब्तला हो गये हैं। इसके नतीजे में ये आफ़तें हमारे ऊपर आ रही हैं। और यह बात बिल्कुल दुरुस्त है। इसलिये कि कुरआने करीम का इर्शाद है:

"مَآ اَصَابَكُمْ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ" (سورۃالشوریٰ:۳۰)

यानी जो कुछ मुसीबत तुम्हें पहुंचती है वह सब तुम्हारे हाथों के करतूत का नतीजा होती है। और बहुत से तुम्हारे बुरे आमाल ऐसे हैं कि अल्लाह तआ़ला उनको माफ़ फ़रमा देते हैं। उनकी सज़ा तुम्हें नहीं देते। लेकिन बाज़ बुरे आमाल ऐसे होते हैं कि उनकी सज़ा इस दुनिया के अन्दर इन मुसीबतों की शक्ल में दे दी जाती है। इसका

नतीजा यह है कि जब हम आपस में बैठ कर उम्मते मुस्लिमा की इन मुसीबतों का तज़्किरा करते हैं और उनके अस्बाब का जायज़ा लेते हैं तो मुश्किल ही से शायद हमारी कोई मज्लिस इस तज़्किरे से ख़ाली जताी होगी कि हम सब बुरे आमाल का शिकार हैं। बद उन्वानियों का शिकार हैं। गुनाहों के अन्दर मुब्तला हैं। नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीमात को छोड़ा हुआ है। ये सारी मुसीबतें उन बुसे आमाल का नतीजा हैं।

कोशिशें बेकार क्यों?

लेकिन यह सारा तज़्किरा होने के बावजूद यह नज़र आता है कि परनाला वहीं गिर रहा है और हालात में कोई बेहतरी नज़र नहीं आती। बहुत सी जमाअतें, अन्जुमनें और इदारे इस मक़सद के तहत क़ायम हैं कि हालात की इस्लाह करें, लेकिन हालात जूं के तूं हैं। ऐसा मालूम होता है कि बेदीनी का जो सैलाब उमड रहा है उसकी रफ़्तार में इज़ाफ़ा हो रहा है, उसमें कमी नहीं आ रही है। किसी शायर ने कहा था:

यह कैसी मन्ज़िल है कैसी राहें
कि थक गये पांव चलते चलते
मगर वही फ़ासला है क़ायम
जो फ़ासला था सफ़र से पहले

यानी जो फ़ासल सफ़र से पहले था वह फ़ासला अब भी क़ायम है, हज़ारों कुरबानियां भी दी जा रही हैं, लोग जानें भी दे रहे हैं। अन्जुमनें, जमाअतें और इदारे हालात के सुधार में लगे हुए हैं, मेहनत हो रही है, लेकिन आलमे वजूद के अन्दर इनका कोई वाज़ेह फ़ायदा नज़र नहीं आता। ऐसा क्यों है?

सुधार की शुरूआत दूसरों से

यह आयत जो मैंने आपके सामने तिलावत की है, इसमें इस सवाल का तसल्ली बख़्श जवाब अता फ़रमाया है। कुरआने करीम

इस आयत में हमें इस तरफ़ तवज्जोह दिला रहा है कि जब तुम हालात का सुधार करने की फ़िक्र लेकर उठते हो तो तुम हमेशा सुधार की शुरूआत दूसरों से करना चाहते हो। यानी तुम्हारे दिलों में यह बात होती है कि लोग ख़राब हो गये हैं, लोग बुरे आमाल में मुब्तला हैं, लोग धोखा, फ़रेब कर रहे हैं, बद उन्वानियों में मुब्तला हैं, रिश्वत ले रहे हैं, सूद खा रहे हैं, नंगेपन और अश्लीलता का बाज़ार गर्म है। इन सब बातों के तज़्किरे के वक़्त तुम्हारे ज़ेहन में यह होता है कि ये सब काम दूसरे लोग कर रहे हैं, उन लोगों को इन कामों से रोकना है और उनकी इस्लाह व सुधार करना है।

अपने सुधार की फ़िक्र नहीं

लेकिन यह ख़्याल बहुत ही कम किसी अल्लाह के बन्दे के दिल में आता है कि मैं भी किसी ख़राबी के अन्दर मुब्तला हूं। मेरे अन्दर भी कुछ ऐब और ख़राबियां पाई जाती हैं और उन ख़राबियों की इस्लाह (सुधार) करना मेरा सब से पहला फ़र्ज़ है। मैं दूसरों की तरफ़ बाद में देखूंगा पहले अपना जायज़ा लूं और अपनी इस्लाह की फ़िक्र करूं। आज हमारा हाल यह है कि जब इस्लाह के लिए कोई जमाअत, कोई संगठन या इदारा क़ायम होता है तो उस इदारे के चलाने वालों और उस संगठन को क़ायम करने वालों में से हर शख़्स के ज़ेहन में यह होता है कि मैं अ़वाम की इस्लाह करूं। लेकिन मैं अपनी इस्लाह करूं और अपने ऐबों को दूर करूं, यह ख़्याल शायद ही किसी अल्लाह के बन्दे के दिल में आता होगा।

बात में वज़न नहीं

इस अ़मल का नतीजा यह है कि जब मैं अपने ऐबों से बेख़बर हूं अपनी ख़राबियों की इस्लाह और सुधार की तो मुझे फ़िक्र नहीं है। मेरे अपने आमाल अल्लाह की रिज़ा के मुताबिक़ नहीं हैं और मैं दूसरों की इस्लाह की फ़िक्र में लगा हुआ हूं तो इसका नतीजा यह होता है कि मेरी बात में न तो कोई असर और वज़न होता है और न

उसके अन्दर बर्कत और नूर होता है, कि वह बात दूसरों के दिलों में उतर जाए और वे उसको मानने पर तैयार हो जाएं। बल्कि वह एक लच्छेदार तक़रीर होती है जो कानों से टकरा कर हवा में घुलमिल जाती है।

हर शख़्स को अपने आमाल का जवाब देना है

कुरआने करीम का इर्शाद यह है कि ऐ ईमान वालो! तुम अपनी इस्लाह और अपने सुधार की फ़िक्र करो। अगर तुमने अपनी इस्लाह कर ली और हिदायत के रास्ते पर आ गये तो फिर जो लोग गुमराही की तरफ़ जा रहे हैं और गुमराहियों का जुर्म कर रहे हैं, उनकी बुराई और गुमराही तुम्हें नुक़सान नहीं पहुंचायेगी। इसलिये कि तुम सब को अल्लाह की तरफ़ लौट कर जाना है। वहां अल्लाह तआ़ला तुमको बतायेगा जो कुछ तुम इस दुनिया में किया करते थे। इस आयत में यह बता दिया कि हर शख़्स को अल्लाह तआ़ला के पास अपने आमाल का जवाब देना है, यह नहीं होगा कि बद अ़मली दूसरा शख़्स करे और जवाब मुझ से तलब किया जाए कि वह शख़्स बद अ़मली के अन्दर क्यों मुब्तला था, या मैं कोई बुरा अ़मल करूं और जवाब दूसरे से तलब किया जाए। ऐसा नहीं होगा, बल्कि हर शख़्स से उसके अपने अ़मल का सवाल होगा। इसलिये तुम पहले अपनी फ़िक्र करो कि तुम्हारे आमल कैसे हैं? तुम जब अल्लाह तआ़ला के सामने हाज़री दोगे तो तुम अपनी ज़िन्दगी के आमाल के बारे में क्या जवाब दोगे? इसलिये दूसरों की फ़िक्र से पहले अपनी ख़बर लो। और हर शख़्स अपने आमाल और अख़्लाक़ का जायज़ा लेकर देखे कि वह किस गुमराही और किस ग़लती के अन्दर मुब्तला है, और फिर उन ग़लतियों को दूर करने की कोशिश करे। यह न हो कि दूसरों के ऐबों और बुराइयों को तो तलाश करता फिरे और अपने ऐबों से ग़ाफ़िल हो जाए।

एक हदीस शरीफ़ में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"مَنْ قَالَ: هَلَكَ النَّاسُ فَهُوَ اَهْلَكُهُمْ" (مسلم شريف)

जो शख़्स यह कहे कि सारे लोग हलाक और बर्बाद हो गये, इसलिये कि उनके आमाल ख़राब, उनके अ़क़ायद ख़राब, उनकी इबादतें ख़राब, इसके नतीजे में वे लोग तबाह बर्बाद हो गये। तो सब से ज़्यादा हलाक होने वाला शख़्स वह ख़ुद है जो दूसरों की बुराइयां तो बयान कर रहा है लेकिन अपनी हालत से बेख़बर है। अगर अपने आमाल और अपनी इस्लाह की फ़िक्र में लग जाए और दिल में यह तड़प लग जाए कि मैं अल्लाह तआ़ला के सामने क्या जवाब दूंगा? तो यक़ीनन इस सूरत में वह शख़्स अपने आपको सब से बुरा महसूस करेगा और उस वक़्त दूसरे लोग बुरे नज़र नहीं आयेंगे।

हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रह्मतुल्लाहि अ़लैहि

हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रह्मतुल्लाहि अ़लैहि बड़े दर्जे के औलिया अल्लाह में से हैं। यह इतने बड़े बुज़ुर्ग हैं कि हम लोग उसका तसव्वुर भी नहीं कर सकते। उनके बारे में एक वाक़िआ़ लिखा है कि एक बार उनके शहर में क़हत पड़ गया और बारिश बन्द हो गयी। लोग परेशान थे और बारिश की दुआ़यें कर रहे थे। कुछ लोग हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रह्मतुल्लाहि अ़लैहि की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि हज़रत आप देख रहे हैं कि पूरी क़ौम क़हत साली (अकाल) के अन्दर मुब्तला है, ज़बानें और गले तक सूख गये हैं। जानवरों को पिलाने के लिए पानी नहीं है। खेतों को सींचने के लिये पानी नहीं है। आप अल्लाह तआ़ला से दुआ़ फ़रमाइये कि अल्लाह तआ़ला हमें बारिश अ़ता फ़रमाए। हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाया कि दुआ़ तो मैं करूंगा इन्शा अल्लाह, लेकिन एक बात सुन लो? वह यह कि कुरआने करीम का इर्शाद है कि जो कुछ तुम्हें दुनिया में कोई मुसीबत या परेशानी आती है वह लोगों के बुरे कामों और गुनाहों की वजह से आती है। इसलिये अगर बारिश नहीं हो रही है तो इसका मतलब यह है कि हम बुरे आमाल

में मुब्तला हैं और उन बुरे आमालों की वजह से अल्लाह तआला ने हम से बारिश को रोक दिया है। इसलिये सब से पहले यह देखना चाहिए कि हम में से कौन सा शख़्स सब से ज़्यादा बद आमाली में मुब्तला है। और जब मैं अपना जायज़ा लेता हूं तो यह नज़र आता है कि पूरी बस्ती में मुझ से ज़्यादा ख़राब आदमी कोई नहीं है। मुझ से ज़्यादा गुनाहगार कोई नहीं है। मेरा ग़ालिब गुमान यह है कि बारिश इस वजह से रुकी हुई है कि मैं इस बस्ती के अन्दर ठहरा हुआ हूं, जब मैं इस बस्ती से निकल जाऊंगा तो अल्लाह तआला की रहमत इस बस्ती पर नाज़िल हो जायेगी, इन्शा अल्लाह। इसलिये बारिश होने का इलाज यह है कि मैं इस बस्ती से चला जाता हूं कि अल्लाह तआला तुम्हें अमन व सुकून के साथ रखे और तुम पर बारिश नाज़िल फ़रमाए।

अपने गुनाहों की तरफ़ नज़र थी

देखिए: हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रह्मतुल्लाहि अ़लैहि जैसा अल्लाह का वली, अल्लाह का नेक बन्दा यह समझ रहा है कि इस रूए ज़मीन पर मुझ से बड़ा गुनाहगार कोई नहीं। इसलिये अगर मैं इस बस्ती से निकल जाऊंगा तो अल्लाह तआला इस बस्ती पर बारिश नाज़िल फ़रमा देंगे। अब बताइये कि क्या वह झूठ बोल रहे थे? और वह तवाज़ो के तौर पर ऐसा कह रहे थे? हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रह्मतुल्लाहि अ़लैहि जैसे कामिल वली की ज़बान से झूठ नहीं निकल सकता, बल्कि हक़ीक़त में वह अपने आपको यह समझते थे कि सब से ज़्यादा गुनाहगार और ऐबदार मैं हूं। ऐसा क्यों मसझते थे? इसलिये कि हर वक़्त उनकी निगाह इस पर थी कि मेरे अन्दर क्या ख़राबियां हैं और उनको कैसे दूर करूं?

निगाह में कोई बुरा न रहा

हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि को इस दौर में अल्लाह तआला ने अ़मल और तक़्वा का नमूना

बनाया था। उनके एक ख़लीफ़ा बयान करते हैं कि एक बार मैंने उनसे ज़िक्र किया कि जब आप बयान फ़रमाते हैं और आपकी मज्लिस में होता हूं तो मुझे ऐसा महसूस होता है कि इस मजमे में सब से ज़्यादा बुरे हाल वाला और सब से ज़्यादा गुनाहगार मैं हूं। और दूसरे लोगों के मुक़ाबले में मैं अपने आपको जानवर महसूस करता हूं। जवाब में हज़रत मौलाना थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाया कि भाई तुम यह जो अपनी हालत बयान कर रहे हो, सच पूछो तो मेरी भी हालत यही होती है। जब मैं वाज़ और बयान कर रहा होता हूं तो ऐसा लगता है कि सब लोग मुझ से अच्छे हैं, मैं सब से ज़्यादा ख़राब हूं।

ऐसा क्यों था? इसलिये कि हर वक़्त उनको यह फ़िक्र लगी हुई थी कि मेरे अन्दर कौन सा ऐब है? कौन सा गुनाह है? मैं उसको किस तरह दूर करूं? और अल्लाह तआ़ला की रिज़ा कैसे हासिल करूं? अगर इन्सान अपने ऐबों का जायज़ा लेना शुरू करे तो फिर दूसरों के ऐब नज़र नहीं आते। उस वक़्त अपनी फ़िक्र में इन्सान लग जाता है। बहादुर शाह ज़फ़र मरहूम ने कहा था किः

थे जो अपनी बुराई से बेख़बर
रहे औरों के ढूंढते ऐब व हुनर
पड़ी अपनी बुराइयों पर जो नज़र
तो निगाह में कोई बुरा न रहा

यानी जब तक दूसरों को देखते रहे तो यह मालूम होता था कि फ़लां के अन्दर यह बुराई है और फ़लां के अन्दर यह बुराई है। लेकिन जब अपनी बुराइयों पर नज़र की तो मालूम हुआ कि कोई भी इतना बुरा नहीं है जितना बुरा मैं ख़ुद हूं। इसलिये कि जब अपने आमाल का जायज़ा लेने की तौफ़ीक़ हुई तो सारी गन्दगियां और बुराइयां सामने आ गयीं।

याद रखिए! कोई इन्सान दूसरों की बुराई से इतना वाक़िफ़ नहीं हो सकता जितना इन्सान अपनी बुराई से वाक़िफ़ होता है। इन्सान

अपने बारे में जानता है कि मैं क्या सोचता हूं और मेरे दिल में क्या ख़्यालात पैदा होते हैं? कैसे कैसे इरादे मेरे दिल में आते हैं? लेकिन चूंकि अपनी तरफ़ नज़र नहीं, अपने ऐबों से बेख़बर है। इसलिये दूसरों के ऐब उसको नज़र आते हैं। उसको अपनी परवाह नहीं होती।

अपनी बीमारी की फ़िक्र कैसी होती है

जैसे एक शख़्स के पेट में सख़्त दर्द है और उस दर्द की वजह से बेचैन है, किसी करवट क़रार नहीं आ रहा है! क्या वह शख़्स दूसरों को देखता फिरेगा कि किस शख़्स को नज़्ला हो रहा है। किसको खांसी है, किस को ज़ुकाम है? बल्कि वह शख़्स अपने दर्द को लेकर बैठ जायेगा, दूसरों की बीमारियों की परवाह भी नहीं करेगा बल्कि अगर कोई शख़्स उस से यह कहे कि मुझे नज़्ला और खांसी हो रही है तो जवाब में कहेगा कि तुम्हारा नज़्ला खांसी अपनी जगह, लेकिन मैं तो अपने पेट के दर्द में मुब्तला हूं, मैं अपने दर्द का पहले इलाज करूं या तुम्हारे नज़्ले खांसी को देखूं। दुनिया में कोई इन्सान ऐसा नहीं होगा जो अपने दर्द से बेचैन होने की हालत में दूसरों की मामूली बीमारियों को देखता फिरे।

एक औरत का नसीहत भरा वाक़िआ

मेरी अज़ीज़ों में एक औरत थीं, एक बार उनके पेट में रियाही तक्लीफ़ हो गयी और उसकी वजह से वह बेचैन हो गयीं और नफ़्सियाती तौर पर उनके दिमाग़ में यह बात बैठ गयी कि मैं बहुत ज़्यादा बीमार हूं। मैं डाक्टर को दिखाने के लिए उनको एक अस्पताल ले गया। जब लिफ़्ट के ज़रिये ऊपर जाने लगे तो वहां एक और औरत व्हील चेयर के ऊपर बैठी हुई थी और उसका सारा जिस्म आग से जला हुआ था, और बाज़ जगह की हड्डियां भी टूटी हुई थीं। खाल जली हुई थी। मेरे दिल में यह ख़्याल आया कि मैं अपनी अज़ीज़ा औरत से कहूं कि यह तुमसे ज़्यादा और सख़्त

तक्लीफ़ के अन्दर मुब्तला है ताकि उनको अपनी बीमारी का एहसास कम हो जाए। चुनांचे मैंने उनसे कहा कि देखो, यह औरत कितनी मुसीबत में है और कितनी सख़्त तक्लीफ़ के अन्दर मुब्तला है। मेरी अज़ीज़ा ने उस औरत पर एक उचटती नज़र डालते हुए कहा कि हां यह तक्लीफ़ के अन्दर तो मुब्तला है, लेकन इसके पेट में दर्द तो नहीं हो रहा है। देखिए! जिसका सारा जिस्म जला हुआ है और हड्डी टूटी हुई है, उसकी बीमारी का इतना एहसास नहीं जितना अपनी बीमारी का एहसास है।

इस वाक़िए के ज़रिए अल्लाह तआ़ला ने मेरे दिल में यह बात डाली कि काश दीन के मामले में हमारे दिलों में ऐसी फ़िक्र पैदा हो जाए। अल्लाह तआ़ला दीन की बीमारियों और बातिन की बीमारियों में यह फ़िक्र पैदा कर दे कि मेरे अन्दर जो बीमारी है मुझे उसकी फ़िक्र लग जाए और उसके नतीजे में दूसरों की बीमारियों पर नज़र जाने के बजाए मैं अपनी बीमारियों की इस्लाह की फ़िक्र करूं।

हज़रत हन्ज़ला रज़ि० को अपने निफ़ाक़ का शुबह

एक बार हज़रत हन्ज़ला रज़ियल्लाहु अ़न्हु हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में पहुंचे और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मैं तबाह व बर्बाद हो गया। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पूछा कि क्या बात है? उन्होंने फ़रमाया कि मैं मुनाफ़िक़ हो गया। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पूछा कि कैसे मुनाफ़िक़ हो गये? जवाब में फ़रमाया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब मैं आपकी ख़िदमत में बैठता हूं तो दिल में नेक जज़्बात और नेक ख़्यालात पैदा होते हैं। अल्लाह की याद दिल में ताज़ा होती है, अपनी इस्लाह की फ़िक्र होती है, आख़िरत की नेमतें याद आती हैं। लेकिन जब ज़िन्दगी के कारोबार में जाता हूं और बीवी बच्चों के पास जाता हूं तो वह कैफ़ियत बाक़ी नहीं रहती। अल्लाह की तरफ़ ध्यान,

अपनी इस्लाह की फ़िक्र और आख़िरत और जन्नत का ख़्याल बाक़ी नहीं रहता और यह तो मुनाफ़िक़ होने की बात है कि ज़ाहिर में तो मुसलमान हैं और दिल के अन्दर बुरे बुरे ख़्यालात पैदा हो रहे हैं। इसलिये या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मैं तो मुनाफ़िक़ हो गया। अब आप मुझे बताइये कि किस तरह इस मुनाफ़क़त से निकलूं?

देखिए: हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सहाबी यह बात कर रहे हैं और सहाबा के बारे में पूरी उम्मत का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि "अस्सहाबतु कुल्लुहुम अ़दूल" तमाम सहाबा आ़दिल हैं। उनमें कोई फ़ासिक़ नहीं हो सकता। उनको यह शुबह पैदा हो रहा है कि कहीं मैं मुनाफ़िक़ तो नहीं हो गया? सरवरे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनको तसल्ली देते हुए फ़रमाया कि घर में जाकर तुम्हें जो ख़्यालात बदले हुए मालूम होते हैं और कैफ़ियत बदली हुई महसूस होती है उस से परेशान न हों। इसलिये कि इस से आदमी मुनाफ़िक़ नहीं होता, यह तो वक़्त वक़्त की बात है। किसी वक़्त इन्सान के दिल पर अल्लाह की याद ज़्यादा हो जाती है और उसकी वजह से नर्मी ज़्यादा हो जाती है, और किसी वक़्त में इतनी ज़्यादा नहीं होती। इसलिये इन कैफ़ियतों के बदलने से आदमी मुनाफ़िक़ नहीं होता।(मुस्लिम शरीफ़)

हज़रत उमर रज़ि० को निफ़ाक़ का शुबह

हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु जो मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा थे। जिनके बारे में सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि:

"لوکان بعدی نبیّا لکان عمرو لکن لا نبی بعدی"

"अगर मेरे बाद कोई नबी आने वाला होता तो वह उमर होते, लेकिन मेरे बाद कोई नबी नहीं"।

इतना ऊंचा मक़ाम अल्लाह तआ़ला ने उनको अ़ता फ़रमाया था।

उनका हाल सुनिए: सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के एक सहाबी थे जिनका नाम हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहु अ़न्हु है, जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के राज़दार मश्हूर थे। इसलिये कि सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनको मदीना मुनव्वरा में रहने वाले मुनाफ़िक़ों के नाम बता दिए थे कि फ़लां फ़लां शख़्स मुनाफ़िक़ है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अल्लाह तआ़ला ने बता दिया था कि मदीना मुनव्वरा में फ़लां फ़लां मुनाफ़िक़ है। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी हिक्मत के तहत वे नाम हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहु अ़न्हु के अ़लावा किसी और को नहीं बताए थे। यहां तक कि जब किसी शख़्स का इन्तिक़ाल हो जाता तो लोग यह देखा करते कि हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु उस शख़्स की नमाज़े जनाज़ा में शरीक हैं या नहीं? इसलिये कि हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु का शरीक होना इस बात की निशानी थी कि उसका नाम मुनाफ़क़ों में शामिल नहीं। और अगर शरीक न होते तो पता चल जाता कि इसका नाम मुनाफ़क़ों में शामिल है, इसलिए हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु शरीक नहीं हुए। तो हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु हज़रत हुज़ैफ़ा के पास जाते हैं और उनसे इल्तिजा (निवेदन) करके पूछते हैं कि ऐ हुज़ैफ़ा! ख़ुदा के लिए मुझे यह बता दो कि तुम्हारे पास मुनाफ़िक़ों की जो सूची है उसमें "उमर" का नाम तो नहीं है? वह शख़्स यह बात पूछ रहे हैं जिन्होंने अपने कानों से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़बान से सुन लिया है कि "उमर फ़िल जन्नति" यानी उमर जन्नत में जायेगा। और जिनके बारे में सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह फ़रमा दिया कि अगर मेरे बाद कोई नबी होता तो वह उमर होते। उनको यह फ़िक्र लगी हुई है कि कहीं मैं मुनाफ़िक़ तो नहीं हूं। यह फ़िक्र इसलिये थी कि बेशक हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह फ़रमा दिया कि "उमर जन्नत में जायेगा"

लेकिन हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी तो फ़रमा दिया है कि जो शख़्स भी कलिमा "ला इला–ह इल्लल्लाह" पढ़ लेगा वह जन्नत में जायेगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को यह ख़्याल हुआ कि कलिमा पढ़ने वाला बेशक जन्नत में जायेगा लेकिन अगर मरने से पहले किसी के आमाल ख़राब हो गये तो फिर वह शख़्स इस ख़ुशख़बरी में दाख़िल नहीं हो सकता। इसलिये मुझे यह डर है कि कहीं मेरे आमाल ख़राब हो गये हों और मैं मुनाफ़िक़ों में दाख़िल हो गया हूं। हक़ीक़त यह है कि जब इन्सान अपने ऐबों का जायज़ा लेता है और जब उसको अपनी फ़िक्र सवार हो जाती है कि मेरी इस्लाह कैसे हो? तो उसके बाद उसको दूसरे लोग इतने बुरे नज़र नहीं आते जितना वह अपने आपको बुरा नज़र आता है।

(अलबिदाया वन्निहाया)

दीन से ना वाक़िफ़ होने की इन्तिहा

आज हमारा मामला उल्टा हो गया है। आज अगर हम दीन की कोई बात करते हैं तो उसमें आम तौर पर इस्लाह वाली बातें नहीं होती हैं, बल्कि आम तौर पर उन बातों में या तो फ़िरक़ा वारियत के अन्दर मुब्तला हो जाते हैं। कभी सियासत पर गुफ़्तगू छेड़ दी जाती है या कभी ऐसे नज़रियाती मसाइल पर गुफ़्तगू शुरू हो जाती है जिनका अमली ज़िन्दगी से कोई ताल्लुक़ नहीं है। इसका नतीजा यह होता है कि आज हमारे समाज में दीन से ना वाक़फ़ियत इतनी आम हो गयी है कि पहले दीन की जो बातें छोटे बच्चों को मालूम होती थीं आज बड़े बड़े पढ़े लिखे और तालीम याफ़्ता लोगों को मालूम नहीं हैं। और अगर उनको बताया जाए कि यह दीन की बात है तो अजनबियत और हैरत से पूछते हैं कि अच्छा यह भी दीन की बात है। हमें तो मालूम ही नहीं है कि यह भी दीन का हिस्सा है। वजह इसकी यह है कि आज हमारे अन्दर से अपनी इस्लाह की फ़िक्र ख़त्म हो गयी है। क़ुरआने करीम साफ़ साफ़ यह कह रहा है कि जब तक मैं तुम से हर शख़्स अपनी इस्लाह की फ़िक्र अपने दिल में पैदा नहीं

करेगा, याद रखोः समाज का सुधार कभी नहीं होगा। चाहे सुधार की जितनी अन्जुमनें बना लो, जितने इदारे क़ायम कर लो।

हमारा यह हाल है

जैसे अब अगर मैं झण्डे लगा कर और बैनर लगा कर समाज को सुधारने के नारे लगाता फिरता हूं लेकिन ख़ुद मेरा यह हाल है कि जब रिश्वत लेने का मौक़ा आता है तो किसी से पीछे नहीं रहता। और जब दूसरे को धोखा देकर उस से पैसे बटोरने का मौक़ा मिल जाए तो उस से नहीं चूकता। और सूदी निज़ाम के ख़िलाफ़ नारे लगाने में आगे आगे हूं लेकिन जब सूदी मामला करने का वक़्त आता है तो चुप चाप वह मामला कर लेता हूं। बताइयेः फिर समाज की इस्लाह और सुधार कहां से हो? सारी दुनिया को बुरा भला कहता हूं कि आज लोग झूठे हो गये हैं, धोखा और फ़रेब फैल गया है। धोखे बाज़ी आ़म हो गयी है, बुराइयों और बुरे आमाल का बाज़ार गर्म है, लकिन जब झूठ बोलने का मौक़ा आ जाता है यह छुट्टी बढ़ाने के लिए झूठा और जाली मैडिकल प्रमाण पत्र बनाने का मौक़ा आ जाता है तो क्या कभी मैं यह सोचता हूं कि यह झूठा मैडिकल प्रमाण पत्र ले रहा हूं यह झूठ है और अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब को दावत देने वाली बात है। बताइये! जब मैं ये सारे बुरे काम नहीं छोड़ता तो फिर मेरे समाज सुधार के नारे लगाने से, जलसे और जुलूस निकालने से क्या हासिल है? इसी तरह अगर मैं दूसरें को तो यह ताने देता हूं कि वे दीन से दूर चले गये हैं और दीन के अहकाम पर अ़मल नहीं कर रहे हैं, लेकिन मेरी कोई मज्लिस ग़ीबत से ख़ाली नहीं होती। कभी उसकी बुराई करता हूं, कभी इसकी बुराई करता हूं। और इस तरह कुरआने करीम के बताने के मुताबिक़ हर वक़्त, हर रोज़ अपने मुर्दार भाई का गोश्त खाता हूं। बताइये! फिर समाज को सुधार कहां से हो?

सुधार का यह तरीक़ा है

समाज का सुधार तो उस वक़्त होगा जब यह सोचूंगा कि मैं झूठ

बोलता हूं तो किस तरह मैं झूठ बोलना छोड़ दूं? मैं दूसरों की ग़ीबत करता हूं तो इस ग़ीबत को छोड़ दूं। मैं धोखेबाज़ी करता हूं तो इसको छोड़ दूं। अगर मैं रिश्वत लेता हूं तो रिश्वत लेना छोड़ दूं। अगर सूद खाता हूं तो उसको छोड़ दूं। अगर मैं बेपर्दगी और नंगेपन व अश्लीलता में मुब्तला हूं तो उसको छोड़ दूं। जब तक मेरे अन्दर यह फ़िक्र पैदा नहीं होगी, याद रखें: उस वक़्त तक मैं इस्लाह की यह फ़िक्र दूसरे के अन्दर मुन्तक़िल (हस्तांतरित) नहीं कर सकता। इसलिये कुरआने करीम ने फ़रमा दिया कि:

"عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ لَا يَضُرُّكُمْ مَنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ"

अपनी जानों की फ़िक्र करो, अगर दूसरे लोग गुमराह हो रहे हैं तो उनकी गुमराही तुमको कोई नुक़सान नहीं पहुंचा सकती। बशर्तेकि तुम सही रास्ते पर हो।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कैसी तर्बियत की?

देखिए: हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इस दुनिया में तशरीफ़ लाए। नुबुव्वत के बाद २३ साल इस दुनिया में क़ियाम फ़रमाया। ऐसे वक़्त में तशरीफ़ लाये जिस वक़्त पूरा अ़रब का इलाक़ा गुमराही और जहालत के अन्धेरे में डूबा हुआ था। उम्मीद की कोई किरन नहीं नज़र आ रही थी। हिदायत की कोई रोशनी मौजूद नहीं थी। ऐसे वक़्त में आप अकेले तशरीफ़ लाये और आपको यह हुक्म दिया गया कि इस पूरे समाज को बदलना है। इसके अन्दर इन्क़िलाब लाना है। लेकिन २३ साल के बाद जब इस दुनिया से वापस तशरीफ़ ले जाते हैं तो उस वक़्त पूरे अ़रब इलाक़े से कुफ़्र और शिर्क का नाम मिट चुका था। और वही क़ौम जो गुमराही और जहालत के अन्दर डूबी हुई थी, २३ साल के बाद वह क़ौम पूरी दुनिया के लिए एक मिसाल और नमूना बन कर उभरती है। यह इन्क़िलाब कैसे आया?

उन २३ साल में से १३ साल मक्का मुकर्रमा में गुज़रे, उन १३

साल में न जिहाद का हुक्म है न कोई रियासत और हुकूमत है और न कोई क़ानून है। बल्कि उस वक़्त हुक्म यह है कि अगर तुम्हें कोई मारे तो उसका बदला भी मत लो बल्कि मार खा लोः

"وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ"

हाथ उठाने की इजाज़त नहीं, हालांकि अगर दूसरा शख़्स दस हाथ मार सकता था तो एक हाथ यह भी मार सकते थे। लेकिन हज़रत बिलाल हब्शी रज़ियल्लाहु अ़न्हु को तपती हुई रेत पर लिटाया जा रहा है और सीने पर पत्थर की सिलें रखी जा रही हैं, और यह मुतालबा किया जा रहा है कि कलिमा "ला इला–ह इल्लल्लाह" का इन्कार कर दो। जिस वक़्त हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अ़न्हु पर यह ज़ुल्म किया जा रहा था तो उसके जवाब में हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अ़न्हु एक थप्पड़ तो मार सकते थे। लेकिन उस वक़्त हुक्म यह था कि मार खाये जाओ, तुम्हें तलवार उठाने की या हाथ उठाने की इजाज़त नहीं।

सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम कुन्दन बन गए

यह सब क्यों था? इसलिये कि आज़माइश की इस भट्टी से गुज़ार कर कुन्दन बनाना मक़सूद था, कि मार खायें और उस पर सब्र करें। कौन इन्सान ऐसा है जिसको दूसरा इन्सान मारे और उसको ग़ुस्सा न आए। लेकिन हुक्म यह दिया जा रहा है कि इस ग़ुस्से को दबाओ। इसलिये कि जब इस ग़ुस्से को अल्लाह के लिए दबाओगे तो अपनी नफ़सानी ख़्वाहिशों को अल्लाह के हुक्म के आगे क़ुर्बान करने का जज़्बा पैदा होगा। इसलिये मक्की ज़िन्दगी के १३ साल इस तरह गुज़रे कि उसमें यह हुक्म था कि दूसरे से बदला लेने के लिए हाथ मत उठाओ बल्कि इबादत में लगे रहो। अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजू करो, अल्लाह को याद करो, आख़िरत का तसव्वुर करो। जन्नत और दोज़ख़ का तसव्वुर करो और अपने आमाल व अख़्लाक़ की इस्लाह करो। जब १३ साल की मुद्दत में

सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की जमाअ़त इस सब्र और आज़माइश से गुज़र कर कुन्दन बन कर तैयार हो गयी तो उसके बाद मदीना तैयबा की ज़िन्दगी का आग़ाज़ हुआ। फिर आपने वहां ऐसी हुंकूमत और निज़ाम क़ायम फ़रमाया कि दुनिया ने ऐसा निज़ाम न उस से पहले देखा था और न उसके बाद कभी देखा। इसलिये कि हर शख़्स अपनी इस्लाह की फ़िक्र लग कर अपने आपको कुन्दन बना चुका था। इसलिये पहला काम यह है कि अपनी इस्लाह की फ़िक्र करो। अपनी इस्लाह के बाद जब इन्सान आगे दूसरों की इस्लाह की तरफ़ क़दम बढ़ायेगा तो इन्शा अल्लाह उसमें कामयाब होगा। चुनांचे सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम जिस जगह पर भी पहुंचे, फ़तह व कामयाबी को अल्लाह तआ़ला ने उनका मुक़द्दर बना दिया। इसलिये कि अपनी इस्लाह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से करा चुके थे।

आज ऐसा लगता है कि इस्लाह की कोशिशें कुल मिला कर नाकाम हो रही हैं और समाज पर उनका कोई नुमायां असर नज़र नहीं आता। इसकी वजह यह है कि हम लोग अपनी इस्लाह की फ़िक्र से ग़ाफ़िल हो गये हैं। आज हमारे अन्दर से यह फ़िक्र ख़त्म हो गयी कि मुझे अल्लाह के सामने हाज़िर होकर जवाब देना है और मेरे अन्दर क्या क्या ख़राबियां हैं, मैं उनको किस तरह दूर करूं?

अपना जायज़ा लें

मेरी आजकी गुज़ारिश का हासिल यह है कि हर शख़्स रोज़ाना यह जायज़ा ले कि सुबह से लेकर शाम तक की ज़िन्दगी में किस जगह पर मैं अल्लाह के हुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी (अवहेलना) कर रहा हूं। इस्लाम पांच क़िस्म के आमाल का मजमूआ़ है।

१ अ़क़ायद दुरुस्त होने चाहिएं।

२ इबादतें यानी नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात वग़ैरह दुरुस्त होनी चाहिएं।

३ मामलात यानी ख़रीद व बेच हलाल तरीक़े से हो, आमदनी हलाल हो, कोई आमदनी हराम की न हो।

४ मुआ़शरत (समाजी ज़िन्दगी) यानी आपस में रहने सहने के आदाब में अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के अहकाम की इताअ़त और उनकी पाबन्दी करे।

५ अख़्लाक़ यानी इन्सान के अख़्लाक़ दुरुस्त हों। बुरे अख़्लाक़ जैसे बुग्ज़, तकब्बुर, हसद, दुश्मनी और बैर वग़ैरह इन्सान के अन्दर न हों और अच्छे अख़्लाक़ हों। जैसे तवाज़ो हो, तवक्कुल हो, शुक्र और सब्र हो।

इन पांच शोबों पर इन्सान अ़मल करे तब इन्सान का दीन कामिल होता है। वह शख़्स सही मायने में मुसलमान बनता है। हर शख़्स इन पांच शोबों को सामने रख कर अपना जायज़ा ले। जैसे मेरे अ़क़ायद दुरुस्त हैं या नहीं? मेरे ज़िम्मे पांच वक़्त की नमाज़ जमाअ़त के साथ फ़र्ज़ है, मैं उनमें से कितनी अदा कर लेता हूं और कितनी नमाज़ें छोड़ता हूं। मेरी आमदनी हलाल हो रही है या हराम हो रही है? बाज़ार में जब मैं मामलात करता हूं तो वे मामलात दुरुस्त होते हैं या नहीं? मेरे अख़्लाक़ दुरुस्त हैं या नहीं? दूसरों के साथ मेरा बर्ताव दुरुस्त है या नहीं? मैं झूठ तो नहीं बोलता। मैं ग़ीबत तो नहीं करता। मैं किसी का दिल तो नहीं दुखाता। मैं किसी को परेशान तो नहीं करता। अपने अन्दर इन बातों का जायज़ा ले। और अगर कहीं कोई बुराई है तो उसको दूर करने की कोशिश करे। अगर बिल्कुल नहीं छोड़ सकता तो उसको कम करने की कोशिश करे।

जैस यह देखे कि मैं दिन में कितनी मर्तबा झूठ बोलता हूं। फिर देखे कि उनमें से कितनी मर्तबा झूठ बोलने को मैं छोड़ सकता हूं उनको फ़ौरन छोड़ दे। मज्लिस के अन्दर कितनी मर्तबा ग़ीबत करता हूं उसको किस हद तक छोड़ सकता हूं और उसको छोड़ दे। इस तरह जायज़ा लेकर गुनाहों को छोड़ना शुरू कर दे और अपनी

इस्लाह की फ़िक्र पैदा कर ले। अगर एक मर्तबा इस्लाह की फ़िक्र की शमा तुम्हारे दिल में रोशन हो गयी तो इन्शा अल्लाह यह शमा तुम्हारी ज़िन्दगी को रोशन कर देगी। यह मत सोचो कि अगर एक आदमी दुरुस्त हो गया तो इस से क्या असर पड़ेगा।

चिराग़ से चिराग़ जलता है

याद रखिएः "समाज" मेरा, तुम्हारा और अफ़राद का नाम है। अगर एक आदमी की इस्लाह हो गयी और उसने कुछ गुनाह छोड़ दिए और अल्लाह के अहकाम की इताअ़त शुरू कर दी तो कम से कम एक चिराग़ तो जल गया। चिराग़ चाहे छोटा ही क्यों न हो वह अपने माहौल के अन्दर अन्धेरे को नहीं रहने देता, बल्कि अपने माहौल को ज़रूर रोशन कर देगा। क्या मुश्किल है कि एक जलते हुए चिराग़ को देख कर दूसरा शख़्स उस से अपना चिराग़ जला ले, दूसरे से तीसरा चिराग़ जल जाए और इस तरह पूरा माहौल रोशन और मुनव्वर हो जाए। लेकिन अगर आदमी यह सोचता रहे कि मैं अपने चिराग़ को तो ठन्डा रखूं और उस ठन्डे चिराग़ से दूसरे लोगों के चिराग़ जलाऊं और उनको रोशन करूं, याद रखिए ऐसा नहीं हो सकता। इसलिये कि जो चिराग़ ख़ुद बुझा हुआ हो वह दूसरे चिराग़ रोशन नहीं कर सकता। बिल्कुल इसी तरह अगर मैं अपनी इस्लाह की फ़िक्र किए बग़ैर दूसरों की इस्लाह करना शुरू कर दूं तो यह ऐसा है जैसे मैं अपने ठन्डे चिराग़ से दूसरों के चिराग़ रोशन करने की कोशिश कर रहा हूं और ऐसा मुम्किन नहीं। अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से अपनी इस्लाह (सुधार) की फ़िक्र हमारे दिलों में पैदा फ़रमा दे, आमीन।

यह फ़िक्र कैसे पैदा हो?

अब सवाल यह है कि अपनी इस्लाह की फ़िक्र कैसे पैदा हो? इसका तरीक़ा यह है कि जिस तरह इस वक़्त यहां बैठ कर अपनी इस्लाह की फ़िक्र की बातें हमने कीं और सुनीं तो इसके नतीजे में

हमारे दिलों में इस्लाह की फ़िक्र की थोड़ी बहुत हर्कत पैदा हुई। अब यही तज़्किरा बार बार सुना जाए और मुख़्तलिफ़ जलसों में सुना जाए तो बार बार सुनने के नतीजे में यह फ़िक्र इन्शा अल्लाह हमारे दिलों में पैदा हो जायेगी। देखिएः कुरआने करीम में "व अक़ीमुस्सला–त" (यानी नमाज़ क़ायम करो) के अलफ़ाज़ बासठ मर्तबा आये हैं। हालांकि अगर अल्लाह तआ़ला एक मर्तबा भी यह हुक्म दे देते कि नमाज़ क़ायम करो तो वह भी काफ़ी था। लेकिन अल्लाह तआ़ला ने बार बार दोहराया, क्यों? इसलिये कि इन्सान की फ़ितरत यह है कि जब कोई बात बार बार कही जाती है तो उसका असर दिल पर होता है। इसलिये इस फ़िक्र को पैदा करने के लिए ऐसी मज्लिसों में जाने की पाबन्दी करें जहां इस्लाह का तज़्किरा होता हो।

दारुल उलूम में होने वाली इस्लाही मज्लिसें

आपके क़रीब दारुल उलूम कराची मौजूद है। जहां हर हफ़्ते तीन मज्लिसें होती हैं। हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद रफ़ी उस्मानी साहिब मद्दज़िल्लुहुम जो दारुल उलूम के सदर हैं, उनका बयान बुध के दिन अ़स्र से मग़रिब तक होता है। जिसमें मर्दों के लिए भी इन्तिज़ाम होता है और औ़रतों के लिए भी। हज़रत मौलाना सुब्हान महमूद साहिब मद्दज़िल्लुहुम जो दारुल उलूम कराची के शैख़ुल हदीस हैं, हमारे उस्ताद हैं और बुज़ुर्ग हैं। उनका बयान हर इतवार को अ़स्र और मग़रिब के दरमियान होता है। हज़रत मौलाना अ़ब्दुर्रऊफ़ साहिब मद्दज़िल्लुहुम जो दारुल उलूम के उस्ताद हैं और हज़रत मुफ़्ती साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के ख़लीफ़ा हैं। उनका बयान हर मंगल को अ़स्र से मग़रिब तक होता है। इस तरह हर हफ़्ते में तीन मज्लिसें दारुल उलूम में होती हैं। उन मज्लिसों का मक़सद भी यही है कि उनके ज़रिये अपनी इस्लाह की फ़िक्र पैदा की जाए।

देखिएः जलसे और तक़रीरें तो बहुत होती रहती हैं। लेकिन उन मज्लिसों का मक़सद यह है कि हमारे अन्दर अपने आपको दुरुस्त

करने की और इस्लाह करने की फ़िक्र पैदा हो। अगर हफ़्ते में आप अ़स्र से मग़रिब तक का एक घन्टा इस मक़सद के लिए फ़ारिग़ कर लें और उन मजालिस में से किसी एक में भी शिर्कत फ़रमा लें तो उसका नतीजा यह निकलेगा कि दिल में अपनी इस्लाह की फ़िक्र पैदा होगी और यह भी पता चल जायेगा कि ग़लतियां और कोताहियां कहां कहां हो रही हैं। इसलिए कि अभी तो हमें यह भी मालूम नहीं कि ग़लतियां कहां कहां हो रही हैं। और फिर उन ग़लतियों की इस्लाह करने का तरीक़ा भी मालूम हो जायेगा। अल्लाह तआ़ला मुझे भी और आपको भी अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, और हम सब को अपनी इस्लाह की फ़िक्र अ़ता फ़रमाये, आमीन।

وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين

गुनाहगारों से नफ़रत मत कीजिए

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَاوَسَنَدَنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا، اَمَّا بَعْدُ:

قال رسو ل اللّٰه صلى اللّٰه عليه وسلم: من عير اخاه بذنب قد تاب منه لم يمت حتى يعمله۔ (ترمذی شریف)

किसी गुनाह पर शर्म दिलाने का वबाल

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स अपने मुसलमान भाई को ऐसे गुनाह पर शर्म दिलाए और उस गुनाह का ताना दे जिस गुनाह से वह तौबा कर चुका है तो यह ताना देने वाला शख़्स उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक वह ख़ुद उस गुनाह के अन्दर मुब्तला नहीं हो जायेगा। जैसे एक शख़्स के बारे में आपको पता चल गया कि यह फ़लां गुनाह के अन्दर मुब्तला था या मुब्तला हुआ है, और आपको यह भी पता है कि उसने तौबा भी कर ली है तो जिस गुनाह से वह तौबा कर चुका है उस गुनाह की वजह से उसको हक़ीर समझना या उसको शर्म दिलाना या उसको ताना देना कि तुम तो फ़लां शख़्स हो और फ़लां हर्कत किया करते थे, ऐसा ताना देना ख़ुद गुनाह की बात है, इसलिये कि जब उस शख़्स ने तौबा के ज़रिये अल्लाह तआला से अपना मामला साफ़ कर लिया और तौबा करने से गुनाह सिर्फ़ माफ़ नहीं होता बल्कि नामा–ए–आमाल से वह अमल मिटा दिया जाता है, तो अब अल्लाह तआला ने तो उसका गुनाह नामा–ए–आमाल से वह अमल मिटा दिया लेकिन तुम उसको उस गुनाह की वजह से हक़ीर

और ज़लील समझ रहे हो या उसको ताना दे रहे हो और उसको बुरा भला कह रहे हो, यह अ़मल अल्लाह तआ़ला को बहुत सख़्त नागवार है।

गुनाहगार एक बीमार की तरह है

यह तो उस शख़्स के बारे में है जिसके बारे में आपको मालूम है कि उसने गुनाह से तौबा कर ली है, और अगर पता नहीं है कि उसने तौबा की है या नहीं, लेकिन एक मोमिन के बारे में एहतिमाल तो है कि उसने तौबा कर ली होगी या आईन्दा कर लेगा, इसलिये अगर किसी ने गुनाह कर लिया और आपको तौबा करने का इल्म भी नहीं है, तब भी उसको हक़ीर समझने का कोई हक़ नहीं है, क्या पता कि उसने तौबा कर ली हो। याद रखिएः नफ़रत गुनाह से होनी चाहिए गुनाहगार से नहीं, नफ़रत नाफ़रमानी से है, लेकिन जिस शख़्स ने नाफ़रमानी की है उस से नफ़रत करना हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने नहीं सिखाया। बल्कि वह गुनाहगार तरस खाने और रहम के क़ाबिल है कि वह बेचारा एक बीमारी के अन्दर मुब्तला है, जैसे कोई किसी जिस्मानी बीमारी के अन्दर मुब्तला हो तो अब उस शख़्स की बीमारी से तो नफ़रत होगी, लेकिन क्या उस बीमार से भी नफ़रत करोगे कि चूंकि यह शख़्स बीमार है इसलिये नफ़रत के क़ाबिल है? ज़ाहिर है कि बीमार की ज़ात क़ाबिले नफ़रत नहीं है, बल्कि उसकी बीमारी से नफ़रत करो। उसको दूर करने की फ़िक्र करो, उसके लिए दुआ़ करो, लेकिन बीमार नफ़रत के लायक़ नहीं, वह तो तरस खाने के लायक़ है कि यह बेचारा अल्लाह का बन्दा किस मुसीबत के अन्दर मुब्तला हो गया।

कुफ़्र नफ़रत के क़ाबिल है, न कि काफ़िर

यहां तक कि अगर कोई शख़्स काफ़िर है तो उसके कुफ़्र से नफ़रत करो, उसकी ज़ात से नफ़रत मत करो, बल्कि उसके हक़ में दुआ़ करो कि अल्लाह तआ़ला उसको हिदायत अ़ता फ़रमाए, आमीन।

देखिए: हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को काफ़िर कितनी तक्लीफ़ें पहुंचाया करते थे, आप पर तीर बरसाए जा रहे हैं, पत्थर बरसाए जा रहे हैं, आपके जिस्म के कई हिस्से ख़ून से लहू लुहान हो रहे हैं, उसके बावजूद उस वक़्त ज़बान पर जो कलिमात आए, वे ये थे कि:

"اللّٰهم اهد قومی فإنهم لا یعلمون"

यानी ऐ अल्लाह मेरी क़ौम को हिदायत अ़ता फ़रमा कि उनको हक़ीक़त का पता ही नहीं है। यह देखिए कि उनकी नाफ़रमानी, कुफ़्र, शिर्क, ज़ुल्म और ज़्यादती के बावजूद उनसे नफ़रत का इज़्हार नहीं फ़रमाया, बल्कि शफ़्क़त का इज़्हार फ़रमाते हुए यह फ़रमाया कि या अल्लाह ये नावाक़िफ़ लोग हैं, इनको हक़ीक़ते हाल का पता नहीं है, इसलिये मेरे साथ ये लोग ऐसा बर्ताव कर रहे हैं, ऐ अल्लाह इनको हिदायत अ़ता फ़रमा। इसलिये जब किसी को गुनाह में मुब्तला देखो तो उस पर तरस खाओ और उसके लिए दुआ़ करो और कोशिश करो कि वह उस गुनाह से बच जाए, उसको तब्लीग़ व दावत करो, लेकिन उसको हक़ीर न जानो, क्या पता कि अल्लाह तआ़ला उसको तौबा की तौफ़ीक़ देदें और फिर वह तुम से भी आगे निकल जाए।

हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि का दूसरों को अफ़ज़ल समझना

हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि का यह इर्शाद मैंने अपने वालिद माजिद मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि से भी सुना और हज़रत डा० अ़ब्दुल हई साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि से भी सुना है, वह यह कि मैं हर मुसलमान को अपने से मौजूदा तौर पर और हर काफ़िर को अपने आप से एहतिमाल के तौर पर अफ़ज़ल समझता हूं "एहतिमाल का मतलब यह है कि अगरचे वह इस वक़्त कुफ़्र के

अन्दर मुब्तला है, लेकिन क्या पता कि अल्लाह तआला उसको तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे और वह कुफ़्र के गुनाह से निकल जाए, और फिर अल्लाह तआला उसके दरजों को इतना बुलन्द कर दे कि वह मुझ से भी आगे बढ़ जाए। और जो शख़्स मुसलमान है, ईमान वाला है, अल्लाह तआला ने उसको ईमान की दौलत अता फ़रमाई है, क्या पता कि अल्लाह तआला के साथ उसके क्या मामलात हैं, क्योंकि हर इन्सान के अल्लाह तआला के साथ मुख़्तलिफ़ मामलात होते हैं, किसी के बारे में हम क्या राय ज़ाहिर करें कि वह ऐसा है, इसलिये मैं हर मुसलमान को अपने से बेहतर समझता हूं। ज़ाहिर है कि इसमें झूठ और ग़लत बयानी का शुबह तो नहीं है कि वैसे ही मुरव्वत के तौर पर यह कह दिया कि "मैं हर मुसलमान को अपने से अफ़ज़ल समझता हूं"। यक़ीनन ऐसा समझते होंगे तभी तो फ़रमाया। बहर हाल किसी को भी हक़ीर नहीं समझना, चाहे वह गुनाह और बुराई की वजह से हो, जायज़ नहीं।

यह बीमारी किन लोगों में पाई जाती है

यह हक़ीर समझने की बात उन लोगों में ख़ास तौर से पैदा हो जाती है जो लोग दीन की तरफ़ पलटते हैं, जैसे शुरू में उनके हालात दीन के एतिबार से ठीक नहीं थे, बाद में दीन की तरफ़ आए और नमाज़ रोज़े के पाबन्द हो गए, और शक्ल व सूरत और लिबास और पहनावा शरीअत के मुताबिक़ बना लिया, मस्जिद में आने लगे, जमाअत की नमाज़ के पाबन्द हो गए। ऐसे लोगों के दिलों में शैतान यह बात डालता है कि तुम तो अब सीधे रास्ते पर आ गए, और यह सब मख़्लूक़ जो गुनाहों में मुन्हमिक है यह सब तबाह हाल हैं। और फिर उसके नतीजे में ये लोग उसको हक़ीर और कमतर समझने लगते हैं, और हक़ारत से उनको देखते हैं, और उन पर दिल दुखाने वाले अन्दाज़ में एतिराज़ करने लगते हैं। फिर उसके नतीजे में शैतान उनको घमण्ड, बड़ाई, तकब्बुर और ख़ुद पसन्दी में मुब्तला कर देता है, और जब इन्सान के अन्दर अपनी बड़ाई और ख़ुद पसन्दी

आ जाए तो यह चीज़ इन्सान के सारे आमाल को ज़ाया करने वाली है, इसलिये कि जब इन्सान की नज़र इस तरफ़ जाने लगे कि मैं बड़ा नेक हूं और दूसरे लोग बुरे हैं तो बस इन्सान घमण्ड में मुब्तला हो गया और घमण्ड के नतीजे में उसके सारे आमाल बेकार हो गये। इसलिये अमल वह मक़बूल है जो इख़्लास के साथ अल्लाह के लिए किया जाए और जिस अमल के बाद इन्सान अल्लाह तआला का शुक्र अदा करे कि उसने मुझे इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। इसलिये किसी के साथ हक़ारत का मामला नहीं करना चाहिए और किसी काफ़िर और बुरे कामों में फंसे आदमी को भी हक़ीर नहीं समझना चाहिए।

किसी को बीमार देखे तो यह दुआ पढ़े

हदीस शरीफ़ में आता है कि जब इन्सान दूसरे को किसी बीमारी के अन्दर मुब्तला देखे तो यह दुआ पढ़े:

"الحمد لله الذی عافانی مما ابتلاہ به، وفضّلنی علی کثیر ممّن خلق تفضیلًا" (ترمذی شریف)

"ऐ अल्लाह! आपका शुक्र है कि आपने मुझे इस बीमारी से आफ़ियत अता फ़रमाई जिस बीमारी में यह मुब्तला है, और बहुत से लोगों पर आपने मुझे फ़ज़ीलत अता फ़रमाई"

यानी बहुत से लोग बीमारियों में मुब्तला हैं, लेकिन आपने मुझे सेहत अता फ़रमाई है। किसी बीमार को देख कर यह दुआ पढ़ना सुन्नत है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसकी तलक़ीन फ़रमाई है। हमारे हज़रत डा० अब्दुल हई साहिब रह्मतुल्लाहि अलैहि फ़रमाया करते थे कि जब किसी अस्पताल के पास से गुज़रता हूं तो अल्हम्दु लिल्लाह यह दुआ पढ़ लेता हूं, और साथ में यह दुआ भी करता हूं कि या अल्लाह! इन बीमारों को सेहत अता फ़रमा दीजिए।

किसी को गुनाह में मुब्तला देखे तो यह दुआ पढ़े

हमारे एक उस्ताद फ़रमाया करते थे कि यह दुआ जो हुज़ूरे

अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बीमार को देख कर पढ़ने की तलक़ीन फ़रमाई है, मैं जब किसी को किसी गुनाह या नाफ़रमानी में मुब्तला देखता हूं तो उस वक़्त भी यही दुआ़ पढ़ लेता हूं। जैसे रास्ते में गुज़रते हुए कभी कभी देखता हूं कि लोग सिनेमा देखने के लिए या उसका टिकट ख़रीदने के लिए लाइन में खड़े हैं, उनको देख कर यही दुआ़ पढ़ लेता हूं और अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करता हूं कि उसने मुझे इस गुनाह से महफ़ूज़ रखा। इस दुआ़ के पढ़ने की वजह यह है कि जिस तरह बीमार तरस खाने के क़ाबिल है इसी तरह जो शख़्स गुनाह में मुब्तला है वह भी तरस खाने के क़ाबिल है कि वह उस मुसीबत में मुब्तला है, और उसके लिए भी दुआ़ करनी चाहिए कि या अल्लाह! उसको उस गुनाह और नाफ़रमानी से निकाल दें। क्या मालूम कि आज जो लोग लाइन में लगे हुए हैं और आप उनको हक़ीर और ज़लील समझ रहे हैं, अल्लाह तआ़ला उनको तौबा की तौफ़ीक़ दे दें और फिर वह तुम से आगे निकल जायें। इसलिये किस बात पर तुम इतराते हो? इसलिये जब अल्लाह तआ़ला ने तुमको गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ दे दी है तो उस पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करो, अगर उनको गुनाह से बचने की तौफ़ीक़ नहीं हुई तो तुम उनके हक़ में दुआ़ करो, कि या अल्लाह! उनको हिदायत अ़ता फ़रमा दे और उनको इस बीमारी से नजात अ़ता फ़रमा दे, आमीन। बहर हाल कुफ़्र से नफ़रत हो, गुनाह से, बुराई और नाफ़रमानी से नफ़रत हो, लेकिन आदमी से नफ़रत मत करो, बल्कि उसके साथ मुहब्बत और शफ़क़त का मामला करो, और जब उस से कोई बात कहनी हो तो नर्मी और शफ़क़त से कहो, हमदर्दी और मुहब्बत से कहो, ताकि उस पर असर अन्दाज़ भी हो, हमारे सारे बुज़ुर्गों का यही मामूल रहा है।

हज़रत जुनैद बग़दादी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि का चोर के पांव को चूमना

मैंने अपने वालिद माजिद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब

रहमतुल्लाहि अ़लैहि से हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अ़लैहि का यह वाकिआ सुना कि हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अ़लैहि कहीं से गुज़र रहे थे, एक जगह पर देखा कि एक आदमी को सूली पर लटकाया हुआ है और उसका एक हाथ कटा हुआ है, और एक पांव कटा हुआ है, आपने लोगों से पूछा कि क्या क़िस्सा है? लोगों ने बताया कि यह शख़्स आ़दी क़िस्म का चोर है, जब पहली बार पकड़ा गया तो इसका हाथ काट दिया गया, और जब दूसरी बार पकड़ा गया तो इसका पावं काट दिया गया। जब तीसरी बार फिर पकड़ा गया तो अब इसको सूली पर लटका दिया गया। हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाहि अ़लैहि आगे बढ़े और उसके पांव चूम लिए। लोगों ने कहा कि हज़रत! यह इतना बड़ा चोर है और आ़दी चोर है, आप इसका पांव चूम रहे हैं? आपने जवाब में फ़रमाया कि अगरचे इसने बहुत बड़ा जुर्म और गुनाह का काम किया, जिसकी वजह से इसको सज़ा दी गयी, लेकिन इस शख़्स के अन्दर एक बेहतरीन ख़ूबी है, वह है "साबित क़दम रहना और जमे रहना" अगरचे इस ख़ूबी को इसने ग़लत जगह पर इस्तेमाल किया, इसलिये कि जिस काम को इसने अपना मश्ग़ला बनाया उस पर डटा रहा। इसका हाथ काट दिया गया फिर भी उस काम को नहीं छोड़ा। पांव काट दिया गया फिर भी उस काम को नहीं छोड़ा, यहां तक कि मौत की सज़ा हो गयी लेकिन अपने काम पर लगा रहा। इस से पता चला कि इसके अन्दर जमे रहने की सिफ़त थी और इसी सिफ़त की वजह से मैंने इसके पांव चूम लिए। अल्लाह तआ़ला हमें अपनी इबादत और ताआ़त के अन्दर यह सिफ़त अ़ता फ़रमा दे, आमीन।

बहर हाल, जो अल्लाह के नेक बन्दे होते हैं वे आदमी से नफ़रत नहीं करते, उसकी बुराइयों से नफ़रत करते हैं, और वे फ़रमाते हैं कि अगर किसी बुरे आदमी के अन्दर अच्छाईयां हैं तो वे हासिल करने के लायक़ हैं, और उसके अन्दर जो बुराईयां हैं उनको दूर करने की फ़िक्र करो। और उसको मुहब्बत और प्यार से समझाओ,

और उसी से जाकर बताओ दूसरों से उसकी बुराईयां बयान करते मत फिरो।

"एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिए आईना है" का मतलब

हदीस शरीफ़ में आता है किः

"المؤمن مرآة المؤمن" (ابو داؤد شریف)

एक मोमिन दूसरे मोमिन का आईना है। अगर आदमी के चेहरे पर कोई दाग़ धब्बा लग जाए और वह आदमी जाकर आईने के सामने खड़ा हो जाए तो वह आईना बता देता है कि तुम्हारे चेहरे पर यह दाग़ लगा हुआ है, गोया आईना इन्सान के ऐब बयान कर देता है, इसी तरह एक मोमिन भी दूसरे मोमिन का आईना है, यानी जब एक मोमिन दूसरे मोमिन के अन्दर कोई ऐब देखे तो उसको प्यार से मुहब्बत से बता दे कि यह ऐब तुम्हारे अन्दर मौजूद है, इसको दूर कर लो। जैसे अगर किसी इन्सान के जिस्म पर कोई कीड़ा या चींवटा चल रहा हो, और आप उस कीड़े को उसके जिस्म और या कपड़ों पर चलता हुआ देख रहे हैं तो मुहब्बत का तक़ाज़ा यह है कि तुम उसको बता दो कि देखो भाई! तुम्हारे जिस्म पर यह कीड़ा चल रहा है, इसको दूर कर लो। इसी तरह अगर किसी मुसलमान भाई के अन्दर कोई दीनी ख़राबी है तो प्यार व मुहब्बत से उसको बता देना चाहिए कि तुम्हारे अन्दर यह ख़राबी है, इसलिये कि एक मोमिन दूसरे मोमिन का आईना है।

एक के ऐब दूसरों को मत बताओ

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली साहिब थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि इस हदीस से यह बात मालूम हुई कि जब तुम किसी दूसरे के अन्दर कोई ऐब देखो तो सिर्फ़ उसी को बताओ कि तुम्हारे अन्दर यह ऐब है, दूसरों से कहते मत फिरो कि फ़लां के अन्दर यह ऐब है। इसलिये कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने

मोमिन को आईने से तश्बीह दी है, और आईना सिर्फ़ उस शख़्स को चेहरे के दाग़ धब्बे बताता है जो शख़्स उसके सामने खड़ा होता है, वह आईना दूसरों को नहीं बताता कि फ़लां शख़्स के चेहरे पर दाग़ धब्बे लगे हुए हैं। इसलिये एक मोमिन का काम यह है कि जिसके अन्दर कोई बुराई या ऐब देखे तो सिर्फ़ उसी से कहे, दूसरों से उसका तज़्किरा न करे कि फ़लां के अन्दर यह ऐब और यह बुराई है, क्योंकि अगर दूसरों को उसके ऐबों के बारे में बताओगे तो इसका मतलब यह है कि उस काम में तुम्हारी नफ़्सानियत शामिल है, फिर वह दीन का काम नहीं होगा। और अगर सिर्फ़ उसी से तन्हाई में मुहब्बत और शफ़्क़त से उसके ऐब पर तंबीह करोगे तो यह भाईचारे और ईमान का तक़ाज़ा है, लेकिन उसको हक़ीर और ज़लील समझना किसी हाल में भी जायज़ नहीं।

अल्लाह तआला हम सब को समझने और इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, आमीन।

واٰخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين

अर्ज़े नाशिर

ख़त्मे बुख़ारी के मौक़े पर दारुल उलूम कराची में बड़ा पुर रौनक़ इज्तिमा होता है जिसमें बाहर से भी उलमा तालिब इल्म और इन मदरसों से ताल्लुक़ रखने वाले शहर के मुअ़ज़्ज़ज़ हज़रात बड़ी तायदाद में शरीक होते हैं। यह मज़्मून हज़रत मौलाना मुहम्मद तक़ी साहिब मद्दज़िल्लुहुम का वह क़ीमती ख़िताब है जो शाबान 1415 हिजरी में उस बर्कत वाले मौक़े पर उन्होंने हाज़िरीन के सामने फ़रमाया था। जिसमें अ़र्बी मदरसों से मुताल्लिक़ बहुत से उमूर पर हज़रत मौलाना ने बड़े दिलनशीं और असरदार अन्दाज़ में रोशनी डाली है, मौलाना मुनीबुर्रहमान साहिब उस्ताज़ दारुल उलूम कराची ने इसे टेपरिकार्डर की मदद से नक़ल किया ताकि पढ़ने वाले भी "मुख़ातब" होने का शर्फ़ हासिल कर सकें, मौज़ू की अहमियत को देखते हुए यह ख़िताब अलग किताब की शक्ल में ख़िदमत में पेश है।

नाशिर

दीनी मदरसे

दीन की हिफ़ाज़त के क़िले

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَنَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَنَشْھَدُ اَنَّ سَیِّدَنَاوَسَنَدَنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَ اَصْحَابِہٖ وَبَارَکَ وَسَلَّمَ تَسْلِیْمًا کَثِیْرًا کَثِیْرًا، اَمَّا بَعْدُ:

हज़रात उलमा–ए–किराम, मेरे अज़ीज़ तालिब इल्म साथियो और मुअज़्ज़ज़ हाज़िरीन!

अस्सलामु अलैकुम व रह्मतुल्लाहि व ब–रकातुहू

तम्हीद

मेरे मोहतरम उस्ताज़ मुकर्रम शैख़ुल हदीस हज़रत मौलाना सुब्हान महमूद साहिब दामत ब–रकातुहुम के दर्स के बाद मेरा कुछ कहना यों तो मुनासिब नहीं था, इसलिये कि हज़रत के दर्स के बाद किसी और बात की गुन्जाइश नहीं। लेकिन फिर हज़रत ने ही हुक्म फ़रमाया कि कुछ कलिमात अर्ज़ करूं, और मामूल भी यही रहा है कि मेरे बड़े भाई सदरे दारुल उलूम हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद रफ़ी साहिब उस्मानी मद्दज़िल्लुहुमल आली कुछ बयान फ़रमाया करते हैं, वह इस वक़्त सफ़र पर हैं, इसलिए हज़रत का इर्शाद हुआ कि उनकी जगह मैं कुछ गुज़ारिशात आप हज़रात की ख़िदमत में पेश करूं:

गन्दुम अगर बहम न रसद जौ ग़नीमत अस्त

यानी अगर गेहूं न मिले तो जौ को ग़नीमत समझो।

इसलिये हज़रत की तामीले इर्शाद मैं आपके सामने हाज़िर हूं।

अल्लाह जल्ल जलालुहू का बेइन्तिहा करम और इनाम है जिसका शुक्र किसी तरह भी अदा नहीं हो सकता कि आज उसने अपने फ़ज़्ल व करम से दारुल उलूम की तालीमी मसरूफ़ियात तक्मील तक पहुंचाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। यह आख़री मुबारक सबक़ जिसमें अभी अल्लाह तआला ने हम सब को शिरीक होने की सआदत बख़्शी। यह सही बुख़ारी का आख़री सबक़ था। अल्लाह तआला की किताब के बाद इस रूए ज़मीन पर सब से ज़्यादा सही किताब इमाम बुख़ारी रह्मतुल्लाहि अलैहि की यह किताब है, और हज़रते वाला ने सारे साल अव्वल से आख़िर तक इस दर्स से तालिब इल्मों को फ़ैज़ पहुंचाया है। आज अल्हम्दु लिल्लाह यह मुबारक सिलसिला तक्मील को पहुंचा, और इसके साथ साथ दारुल उलूम के तालीमी साल का भी समापन हुआ। साल के शुरू में जब तालीम का आग़ाज़ हुआ था तो उस वक़्त यक़ीन के साथ नहीं कहा जा सकता था कि कौन इसकी तक्मील में शरीक हो सकेगा और कौन शरीक नहीं होगा। अल्लाह तबारक व तआला ने अपने फ़ज़्ल व करम से हमें यह मौक़ा अता फ़रमाया और इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। इस पर जितना भी शुक्र अदा किया जाए कम है।

अल्लाह की नेमतें बेशुमार हैं

इन्सान पर कायनात को पैदा करने वाले की नेमतें बेहिसाब हैं, तन्हा सांस ही की नेमत देखिए कि यह कितनी अज़ीम नेमत है। शैख़ सअदी ने निहायत आसान तरीक़े पर इस बात को यों समझाया है कि:

"हर इन्सान जब एक सांस लेता है तो एक सांस के अन्दर दो नेमतें अल्लाह तबारक व तआला की जमा हैं। सांस का अन्दर जाना एक नेमत है और बाहर आना दूसरी नेमत है। अगर सांस अन्दर न जाए तो मौत है, और अन्दर जाने के बाद बाहर न आए तो मौत है। इस तरह एक सांस में दो नेमतें जमा हैं। और हर नेमत पर शुक्र

अदा करना वाजिब है तो एक सांस में अल्लाह तबारक व तआला के दो शुक्र वाजिब हुए। अगर इन्सान सिर्फ़ सांस की नेमत पर शुक्र अदा करना चाहे तो अदा नहीं कर सकता, दूसरी नेमतों की बात तो दूसरी है। अल्लाह तबारक व तआला की रहमतें बारिश की तरह बरस रही हैं और इनका शुमार भी मुम्किन नहीं"।

सब से अज़ीम नेमत

लेकिन इन तमाम नेमतों में सब से बड़े रुतबे वाली नेमत, सब से अज़ीमुश्शान नेमत जिसके बराबर कोई और नेमत नहीं हो सकती, वह ईमान की नेमत है। अल्लाह तबारक व तआला ने हमें अपने फ़ज़्ल व करम से ईमान की नेमत से नवाज़ा, इसकी क़द्र व क़ीमत का एहसास हमको इसलिए नहीं है कि यह नेमत हमको मां बाप से मुफ़्त में मिल गई, इसे हासिल करने के लिए कोई दौड़ धूप नहीं करनी पड़ी, कोई कुर्बानी नहीं देनी पड़ी। इस वास्ते इसकी क़द्र व क़ीमत का एहसास नहीं है। इसकी क़द्र व क़ीमत पूछिए बिलाल हब्शी रज़ियल्लाहु अन्हु से, सुहैब रूमी रज़ियल्लाहु अन्हु से, ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु से, जिन्होंने इस कलिमा ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह के हासिल करने के लिए तरह तरह की तक्लीफ़ें बर्दाश्त कीं, कुर्बानियां झेलीं, तब जाकर उन्हें यह नेमत हासिल हुई। चूंकि अल्लाह जल्ल जलालुहु ने हमें मुसलमान घराने में पैदा किया, और बग़ैर किसी मशक़्क़त के यह नेमत हासिल हो गयी इसलिये इसकी क़द्र व क़ीमत का सही अन्दाज़ा नहीं होता। वर्ना सारी नेमतों पर सब से ज़्यादा बरतरी रखने वाली यही ईमान की नेमत है। ईमान के बाद इस कायनात की सब से अज़ीम नेमत ईमान के तक़ाज़ों के इल्म की नेमत है कि ईमान क्या तक़ाज़ा करता है? क्या मुतालबात रखता है? इसके नतीजे में इन्सान के ऊपर क्या फ़राइज़ व वाजिबात लागू होते हैं? यह इल्म ईमान के बाद सब से बड़ी नेमत है।

दीनी मदरसे और प्रोपैगन्डा

यह इदारा दारुल उलूम जिसके तालीमी साल का आज समापन हो रहा है, अल्हम्दु लिल्लाह इसी इल्मे दीन की ख़िदमत के लिए और इसी इल्म के पहुंचाने और फैलाने के लिए कुछ अल्लाह वालों ने अपने इख़्लास के साथ क़ायम फ़रमाया था, और इसी रास्ते पर चलने की कोशिश कर रहा है। आज फ़िज़ा में तरह तरह के नारे, तरह तरह के प्रोपैगन्डे, तरह तरह के एतिराज़ात, इन दीनी मदरसों पर किए जा रहे हैं। एतिराज़ और तानों का सैलाब है, जो दीन के दुश्मन, इस्लाम के दुश्मन और इस ज़मीन पर अल्लाह के कलिमे के ग़लबे के दुश्मन हैं। वे इन मदरसों के ख़िलाफ़ प्रोपैगन्डा करते हैं। लेकिन कभी कभी अच्छे ख़ासे पढ़े लिखे और दीन से ताल्लुक़ रखने वाले भी इस प्रोपैगन्डे का शिकार हो जाते हैं। जान बूझ कर या अनजाने में इन दीनी मदरसों के बारे में तरह तरह के ख़्यालात उनके दिलों में पैदा हो जाते हैं।

मौलवी के हर काम पर एतिराज़

मेरे वालिद माजिद रह्मतुल्लाहि अलैहि कभी कभी हंसी में फ़रमाया करते थे कि "यह मौलवी मलामती फ़िर्क़ा है" यानी जब कहीं दुनिया में कोई ख़राबी होगी तो लोग उसको मौलवी की तरफ़ मोड़ने की कोशिश करते हैं। मौलवी कोई भी काम करे, उसमें कोई न कोई एतिराज़ का पहलू ज़रूर निकाल लेते हैं। मौलवी अगर बेचारा एक कोने में बैठा है और अल्लाह अल्लाह कर रहा है, क़ालल्लाह व क़ालर्रसूल का दर्स दे रहा है तो एतिराज़ यह है कि यह मौलवी तो दुनिया से बेख़बर हैं, दुनिया कहां जा रही है, इनको अपने बिस्मिल्लाह के गुंबद से निकलने की फ़ुर्सत नहीं। अगर कोई मौलवी बेचारा इस्लाह के लिए या किसी इज्तिमा के लिए अपने एकांत से बाहर निकल आए तो लोग एतिराज़ करते हैं कि मौलवी साहिब का तो काम था मदर्से में बैठ कर अल्लाह अल्लाह करना और

आज ये सियासत में और हुकूमत के मामलात में दख़ल अन्दाज़ हो रहे हैं।

अगर मौलवी बेचारा ऐसा हो कि उसके पास माली वसाइल न हों, फ़क्र व तंगदस्ती का शिकार हो तो लोग एतिराज़ करते हैं कि इन्होंने अपने तालिब इल्मों के लिए माली वसाइल का इन्तिज़ाम नहीं कर रखा है, यह मदर्से से निकल कर कहां जायेंगे? कहां से रोटी खायेंगे? कहां से गुज़ारा होगा? और अगर किसी मौलवी के पास पैसे ज़्यादा आ गये तो कहते हैं कि लीजिए यह मौलाना साहिब हैं? यह तो लखपती और करोड़पती बन गये, इनके पास तो दौलत आ गयी। तो इस बेचारे मौलवी की किसी हालत में माफ़ी नहीं, यह मलामती फ़िर्क़ा है।

यह जमाअत इस्लाम के लिए ढाल है

एक क़ौम तो वह है जो बाक़ायदा एहतिमाम के साथ, प्रोपैगन्डा करके अहले इल्म और तुलबा के ख़िलाफ़ बद गुमानियां फैला रही है। ख़ूब समझ लें, यह इस्लाम के साथ दुश्मनी है, इसलिये कि इस्लाम के दुश्मन इस हक़ीक़त से वाक़िफ़ हैं कि इस रूए ज़मीन के ऊपर जो तब्क़ा अल्हम्दु लिल्लाह इस्लाम के लिए ढाल बना हुआ है वह यही बोरिये पर बैठने वाले लोगों की जमाअत है, इन्हीं बोरिये पर बैठने वालों ने अल्हम्दु लिल्लाह इस्लाम के लिए ढाल का काम किया है। ये लोग जानते हैं कि जब तक मौलवी इस रूए ज़मीन पर मौजूद है, इन्शा अल्लाह सुम्म इन्शा अल्लाह इस ज़मीन से इस्लाम का निशान नहीं मिटाया जा सकता, और यह एक आम दिखाई देनी वाली बात है कि जिस जगह पर बोरिये पर बैठने वाले मौलवी ख़त्म हो गये, वहां इस्लाम का किस तरह हुलिया बिगाड़ा गया, और इस्लाम को मिटाने की साज़िशें किस तरह कामयाब हुईं।

अल्लाह तआला ने बहुत दुनिया दिखाई है, और इस्लाम के ऐसे ऐसे इलाक़ों में जाने का इत्तिफ़ाक़ हुआ जहां अब इन मदरसों का

बीज मार दिया गया है, लेकिन उसका नतीजा खुली आंखों से यों नज़र आता है कि जैसे किसी चरवाहे को क़त्ल कर देने के बाद भेड़ों का कोई ज़िम्मेदार नहीं होता और भेड़िये उन्हें फाड़ फाड़ कर खा जाते हैं। आज बहुत से इलाक़ों में आम मुसलमानों का दीनी एतिबार से यही हाल है।

बग़दाद में दीनी मदरसे की तलाश

मेरा बग़दाद जाना हुआ, बग़दाद वह शहर है जो सदियों तक इस्लामी दुनिया की राजधानी रहा है, वहां ख़िलाफ़ते अ़ब्बासिया की शान व शौकत दुनिया ने देखी, और उलूम और फ़ुनून के बाज़ार गर्म हुए। जब मैं वहां पहुंचा तो किसी से मालूम किया कि यहां कोई मदरसा है? इल्मे दीन का कोई मर्कज़ है? जहां इल्मे दीन की तालीम दी जाती हो? मैं उसकी ज़ियारत करना चाहता हूं।

किसी ने बताया कि यहां ऐसे मदरसे का कोई नाम व निशान नहीं है, अब तो सारे मदारिस स्कूलों और कालिजों में तब्दील हो चुके हैं। अब दीन की तालीम के लिए यूनिवर्सिटियों की फ़ेकल्टीज़ हैं, उनमें दीनियात की तालीम दी जाती है, उनके उस्ताज़ को देख कर यह पता चलाना मुश्किल होता है कि आ़लिम तो क्या, ये मुसलमान भी हैं या नहीं? उन इदारों में लड़के लड़कियों की मिली जुली तालीम राइज है, मर्द औ़रतें एक साथ ज़ेरे तालीम हैं, और इस्लाम महज़ एक नज़रिया होकर रह गया है, जिसको तारीख़ी फ़लसफ़े के तौर पर पढ़ा पढ़ाया जा रहा है। ज़िन्दगियों में उसका कोई असर नहीं आता। जिस तरह मुस्तश्रिक़ीन (यानी वे अंग्रेज़ जो इस्लामी उलूम और ज़बानों के माहिर हों) पढ़ते हैं। आज अमेरिका, कनाडा और योरप की यूनिवर्सिटियों में भी इस्लामी तालीम हो रही है, इस्लाम पढ़ाया जा रहा है। वहां पर भी हदीस फ़िक़्ह और तफ़सीर की तालीम इन्तिज़ाम है, उनके मक़ाले अगर आप पढ़ें तो ऐसी ऐसी किताबों के नाम नज़र आयेंगे जिनका हमारे सीधे सादे मौलवियों को

भी पता नहीं होता। बज़ाहिर बड़ी तहक़ीक़त के साथ काम हो रहा है। लेकिन वह दीन की क्या तालीम हुई जो इन्सान को ईमान की दौलत भी अ़ता न कर सके। सुबह से शाम तक इस्लामी उलूम के समुद्र में ग़ोते लगाने के बावजूद नाकाम ही लौटते हैं। और उस क़तरे से हलक़ भी तर नहीं करते, पश्चिम के उन तालीमी इदारों में शरीअ़त के कालिज भी हैं, उसूले दीन कालिज भी हैं। लेकिन उसका कोई असर ज़िन्दगी में नज़र नहीं आता। इन उलूम की रूह फ़ना कर दी गयी है।

फिर मैंने उनसे अर्ज़ किया कि कोई मदरसा न सही, कोई आ़लिम जो पुराने तरीक़ों के हों, मुझे उनका पता बतला दिया जाए, मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर होना चाहता हूं। तो उन्होंने बताया कि शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के मज़ार मुबारक के क़रीब एक मस्जिद में मकतब क़ायम है, उस मकतब में एक पुराने उस्ताद रहते हैं, जिन्होंने पुराने तरीक़े से पढ़ा है। मैं तलाश करता हुआ उनकी ख़िदमत में पहुंच गया, देख कर मालूम हुआ कि वाक़ई पुराने तर्ज़ के बुज़ुर्ग हैं, और उन्हें देख कर एहसास हुआ कि किसी मुत्तक़ी आ़लिम अल्लाह वाले की ज़ियारत की है। उन्होंने भी बोरिये पर बैठ कर पढ़ा था, यही रूखी सूखी खाकर, मोटा झोटा पहन कर तालीम हासिल की थी, चेहरे पर अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से उलूमे शरीअ़त के अन्वार नज़र आए, और उनकी ख़िदमत में थोड़ी देर बैठ कर अन्दाज़ा हुआ कि मैं जन्नत की फ़िज़ा में आ गया।

मदरसों के ख़ात्मे को बर्दाश्त न करना

सलाम और दुआ़ के बाद उन्होंने पूछा: आप कहां से आए हैं? मैंने बताया कि मैं पाकिस्तान से आया हूं, फिर उन्होंने मुझ से दारुल उलूम के बारे में कुछ सवालात किए कि जिस मदर्से में आप पढ़ते पढ़ाते हैं वह कैसा मदरसा है? मैंने उन्हें तफ़सील बतला दी, पूछने लगे वहां क्या पंढ़ाया जाता है? कौन कौन सी किताबें पढ़ाई जाती

हैं? मैंने इन किताबों के नाम ज़िक्र किए जो हमारे यहां पढाई जाती हैं तो उनकी चीख़ निकल गयी, और रो पड़े, आंखों से आंसू जारी हो गये। कहने लगे अब तक ये किताबें तुम्हारे यहां पढ़ाई जाती हैं? मैंने कहा अल्हम्दु लिल्लाह पढ़ाई जाती हैं। फ़रमाया कि हम तो आज इन किताबों का नाम सुनने से भी महरूम हो गये और आज इनका नाम सुन कर मुझे रोना आ गया। यह किताबें अल्लाह वाले पैदा किया करती थीं। ये सही मुसलमान पैदा किया करती थीं। हमारे मुल्क से तो इनका ख़ात्मा हो गया, मैं आपको नसीहत करता हूं, मेरा यह पैग़ाम आप अपने मुल्क के अहले इल्म और अवाम तक पहुंचा दीजिए कि अल्लाह के लिए हर चीज़ को बर्दाश्त कर लेना मगर इस तरह के मदरसों को ख़त्म करने को हरगिज़ बर्दाश्त न करना, इस्लाम के दुश्मन इस राज़ से वाक़िफ़ हैं कि जब तक यह सीधा सादा बोरिये पर बैठने वाला मौलवी इस समाज में मौजूद है, मुसलमानों के दिलों से ईमान को खुरचा नहीं जा सकता, इसलिये इस्लाम के दुश्मनों ने इसके ख़िलाफ़ प्रोपैगन्डे के ऊपर अपनी पूरी मशीनरी लगाई हुई है।

दीनी ग़ैरत के ख़ात्मे का एक इलाज

शायरे मश्रिक़ इक़बाल मरहूम के बारे में यह बात बड़ी मश्हूर है कि उन्होंने मुल्ला के बारे में तन्ज़ भरे कलिमात कहे हैं। लेकिन जगह जगह उन्होंने ऐसी बातें भी कह दी हैं जो इन्सान को हक़ीक़त तक पहुंचाने वाली हैं। एक जगह उन्होंने अंग्रेज़ों और इस्लाम के दुश्मनों की तर्जुमानी करते हुए अफ़ग़ानिस्तान के बारे में एक शेर कहा है:

अफ़ग़ानियों की ग़ैरते दीं का है यह इलाज
मुल्ला को उनके कोह व दमन से निकाल दो

अफ़ग़ानियों की दीनी ग़ैरत को अगर तबाह करना चाहते हो और उसको ख़त्म करना चाहते हो तो इसका एकमात्र रास्ता यह है कि मुल्ला को उस समाज से निकाल दो, जब तक यह मुल्ला बैठा हुआ

है उस वक़्त तक उनके दिलों में से ईमान की ग़ैरत को नहीं निकाला जा सकता।

मदरसों पर एतिराज़ात

ग़र्ज़ मदरसों के बारे में तरह तरह के प्रोपैगन्डे फैलाए जा रहे हैं कि ये चौदह सौ साल पुराने लोग हैं, दक़ियानूसी लोग हैं। ये कट्टरपंथी लोग हैं। इनको दुनिया के हालात के बारे में ख़बर नहीं है, इनको दुनिया में रहने का सलीक़ा नहीं है। इनके पास दुनियावी उलूम व फुनून नहीं हैं। ये उम्मते मुस्लिमा का पहिया उल्टा चलाने की कोशिश में हैं। ये नारे मुख़्तलिफ़ वक़्तों में लगाये जाते रहे हैं। और आज फिर पूरी शिद्दत से इनकी ज़ोरदार आवाज़ हमारे मुल्क में सुनाई दे रही है।

यह एतिराज़ भी हो रहा है कि दीनी मदरसे दहशत गर्द बन गये हैं, ये तरक़्क़ी के दुश्मन हैं। दहशत गर्दी का ताना इनके ऊपर, बुनियाद परस्ती का भी ताना इनके ऊपर, तंग नज़री का भी ताना इनके ऊपर, तरक़्क़ी के दुश्मन होने का भी ताना इनके ऊपर, सारी दुनिया के तानों की बारिश इस बेचारे मौलवी के ऊपर है, लेकिन यह मौलवी बहुत पक्का है।

मौलवी बड़ा सख़्त जान है

मेरे वालिद माजिद रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि यह मौलवी बड़ा सख़्त जान है। इस पर तानों की कितनी ही बारिश कर दो, यह हर तरह के हालात बर्दाश्त कर लेता है, इसलिये कि जब कोई आदमी इस कूचे में दाख़िल होता है तो अल्हम्दु लिल्लाह कमर मज़बूत करके दाख़िल होता है, उसको पता है कि ये सारे ताने मुझे बर्दाश्त करने पड़ेंगे। दुनिया मुझे बुरा कहेगी, वह इन सब तानों का स्वागत करते हुए और ख़ुश आमदीद कहते हुए इसमें दाख़िल होता है:

जिसको हो जान व दिल अ़ज़ीज़ उसकी गली में जाए क्यों?

इस गली में तो आता ही वह है जिसको मालूम है कि ये सब ताने बर्दाश्त करने पड़ेंगे। अल्लाह तआ़ला हक़ीक़त देखने वाली निगाह अ़ता करे तो ये ताने एक हक़ की दावत देने वाले के गले का ज़ेवर हैं, उसके सर का ताज हैं। ये वे ताने हैं जो हज़रात अंबीया–ए–किराम अ़लैमुस्सलाम ने भी सुने, और अंबिया–ए–किराम के वारिसों ने भी सुने, और क़ियामत तक ये ताने दिए जाते रहेंगे। अल्लाह तआ़ला अपने सीधे रास्ते पर रखे, इख़्लास अ़ता फ़रमाए, अपनी रिज़ा जोई की फ़िक्र अ़ता फ़रमाए, आमीन। ये ताने बे हक़ीक़त हैं। एक दिन वह आयेगा कि जब यह मौलवी इन्शा अल्लाह तआ़ला यह कहने की पोज़ीशन में होगाः

"فاليوم الذين آمنوا من الكفّار يضحكون" (المطففين:٢٤)

वह वक़्त आयेगा, जब ताने देने वालों के गले बैठ जायेंगे, उनकी आवाज़ धीमी पड़ जायेगी। अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल व करम से इस तब्क़े को इज़्ज़त व शान अ़ता फ़रमायेंगे जिस तब्क़े को आज बे हक़ीक़त समझा जाता है।

"ولله العزة ولرسوله وللمؤمنين" (المنافقون:٨)

इज़्ज़त हक़ीक़त में अल्लाह तबारक व तआ़ला ही अ़ता फ़रमाता है, अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम से ये दीनी मदरसे इन तानों के तूफ़ान में अल्हम्दु लिल्लाह चल रहे हैं और जब तक अल्लाह जल्ल जलालुहू को इस दीने हक़ का बाक़ी रखना मन्ज़ूर है, उस वक़्त तक इन्शा अल्लाह ये मदरसे मौजूद रहेंगे, लोग हज़ार ताने दिया करें, उनके तानों की कोई परवाह नहीं।

मौलवी की रोटी की फ़िक्र छोड़ दो

आज हमारे माहौल के अन्दर बार बार ये आवाज़ें उठती हैं कि इन दीनी मदरसों को बन्द कर दिया जाए, इनको ख़त्म कर दिया जाए, बहुत से लोग ऐसे भी हैं जो अगरचे दुश्मनी की वजह से नहीं, लेकिन हमदर्दी ही के अन्दाज़ में इन नारों के साथ आवाज़ मिला

लेते हैं। और कभी कभी अपने जानने में सुधार ही की ग़र्ज़ से मश्विरे देते हैं।

कभी कोई यह कह देता है कि मौलवियों के खाने, कमाने का कोई बन्दोबस्त नहीं है। इसलिये इनको कोई हुनर सिखाना चाहिए। बढ़ई का काम सिखा दो, कुछ लुहार का काम सिखा दो, कुछ ऐसे कारीगरी काम सिखा दो कि ये अपनी रोटी कमा सकें, लोग तरह तरह के प्रस्ताव लेकर आते हैं कि एक दस्तकारी सिखाने वाला इदारा क़ायम कर दो, ताकि इन मौलवियों की रोटी का बन्दोबस्त हो जाए।

मेरे वालिद माजिद रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि अल्लाह के लिए मौविलयों की रोटी की फ़िक्र छोड़ दो, यह अपनी रोटी ख़ुद खा कमा लेगा, इसकी फ़िक्र छोड़ दो। मुझे कुछ मिसालें दे दो कि किसी मौलवी ने तंगी व फ़ाक़े की वजह से ख़ुदकुशी की हो। बहुत से पी० एच० डी० और मास्टर डिग्री रखने वालों की मिसालें मैं दे देता हूं जिन्होंने ख़ुदकुशी की, और हालात से तंग आकर अपने आपको ख़त्म कर डाला। और बहुत से ऐसे मिलेंगे जो इन डिग्रियों को लिए जूतियां चटख़ाते फिरते हैं लेकिन नौकरी नहीं मिलती, लेकिन एक मौलवी ऐसा नहीं बता सकते जिसने हालात से तंग आकर ख़ुदकुशी की हो, या उसके बारे में यह कहा गया हो कि वह बेकार बैठा हुआ है। अल्लाह तबारक व तआ़ला अपनी रहमत से मौलवी का भी इन्तिज़ाम कर देते हैं। दूसरों से बहुत अच्छा इन्तिज़ाम फ़रमा देते हैं।

इस दुनिया को ठुकरा दो

मेरे तालिब इल्म साथियो! अच्छी तरह समझ लो, इस दुनिया की ख़ासियत यह है कि जितना आदमी इस दुनिया के पीछे दौड़ेगा, दुनिया उस से भागेगी, और जितना इस दुनिया से भागेगा, दुनिया उसके पीछे भागेगी। किसी ने इसकी मिसाल साए से दी है, अगर

कोई साए के पीछे भागना शुरू कर दे तो साया उस से आगे आगे बढ़ता रहेगा, और वह साये को पकड़ नहीं सकेगा, और अगर कोई शख़्स पीठ मोड़ कर भागना शुरू कर दे तो साया उसके पीछे भागना शुरू कर देगा। इसी तरह इन्सान जितना इस दुनिया का तालिब होगा, दुनिया उस से दूर भागेगी और जितना उस से दूर भागेगा और उस से सच्चे दिल से मुंह मोड़ेगा तो दुनिया उसके आगे ज़लील होकर आयेगी, वह ठोकरें मारेगा, मगर दुनिया उसके क़दमों पर आकर गिरेगी। और आ़म तौर पर देख लो, अल्लाह के जिन बन्दों ने अल्लाह पर भरोसा करके अल्लाह के दीन के लिए अपनी ज़िन्दगियों को वक़्फ़ कर दिया और उसकी ख़ातिर दुनिया को एक मर्तबा ठोकर मार दी तो अल्लाह ने उनके क़दमों में दुनिया को इस तरह भेज दिया कि दूसरे रश्क करते हैं। अल्लाह तबारक व तआ़ला ऐसा इन्तिज़ाम करते हैं और आंखों से दिखाते हैं कि अल्लाह वालों की इज़्ज़त क्या है? रब्बे करीम हमें अपने फ़ज़्ल व करम से इख़्लास अ़ता फ़रमाए, और अपना बना ले। और हमारे दिलों के अन्दर यह जज़्बा पैदा फ़रमा दे और हमें अपनी ज़िन्दगियां अपने दीन की ख़ातिर वक़्फ़ करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा दे, आमीन। और फिर इन्शा अल्लाह दुनिया व आख़िरत में कहीं घाटा नहीं। इसलिये मौलवी की रोटी की फ़िक्र आप छोड़ दें, अल्लाह तबारक व तआ़ला बेहतरीन कफ़ील है। हज़रत वालिद साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि कायनात का पैदा करने वाला कुत्तों को रोज़ी देता है, गधों को देता है, सुअरों को देता है। वह अपने दीन का काम करने वालों को क्यों नहीं देगा? इसलिये तुम यह फ़िक्र छोड़ दो।

मौलवी को लुहार और बढ़ई मत बनाओ

एक दीन के उठाने वाले को दीन का पैग़ाम असरदार अन्दाज़ में पहुंचाने के लिए और इसको दुनिया में फैलाने के लिए बाज़ दुनियावी उलूम और फुनून की भी ज़रूरत है, और फ़क़ीह वह है जो हालाते

ज़माना से वाक़िफ़ हो, इस नियत से वह जो कुछ पढ़े और पढ़ाए, वह दीन का ही हिस्सा है। लेकिन याद रखो, अगर एक बार आपने मौलवी को बढ़ई या लुहार बना दिया तो फिर वह बढ़ई या लुहार ही हो जायेगा। मेरे वालिद माजिद फ़रमाया करते थे कि मन्तिक़ का क़ायदा है कि नतीजा हमेशा कमज़ोर और घटिया के ताबे होता है, एक मौलवी है उसने बढ़ई या लुहार का काम भी सीख लिया और उसने यह सोचा कि सारा वक़्त तो बढ़ई या लुहार के काम में लगाऊंगा और अल्लाह तआला मौक़ा देगा तो बग़ैर तन्ख़्वाह (वेतन) के दीन की ख़िदमत करूंगा तो ऐसा मौलवी बढ़ई या लुहार ही बन जायेगा, लेकिन दीन का काम नहीं कर सकेगा।

एक सबक़ लेने वाला वाक़िआ

मेरे वालिद माजिद रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने एक वाक़िआ सुनाया था कि: हमारे एक बुज़ुर्ग दारुल उलूम देवबन्द के नामी ग्रामी उस्ताद मौलाना मुहम्मद सहूल साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि थे, यह शैख़ुल हिन्द हज़रत मौलाना महमूदुल हसन साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के ख़ास शागिर्द थे, इल्म व अदब में बहुत आगे थे। दारुल उलूम देवबन्द में पढ़ाया करते थे, पढ़ाते पढ़ाते ख़्याल आया कि हम मदरसे में पढ़ा कर तन्ख़्वाह लेते हैं, यह तो मज़दूरी हुई, दीन की ख़िदमत न हुई, दीन की ख़िदमत तो वह है जो बग़ैर तन्ख़्वाह के की जाए, हम जो तन्ख़्वाह लेकर पढ़ाते हैं मालूम नहीं इसका अज्र भी मिलेगा या नहीं? इस वास्ते अपने लिए कोई ऐसा रोज़गार का ज़रिया तलाश करें कि अपना गुज़ारा उसी में हो जाए और फ़ारिग़ वक़्त में अल्लाह के दीन की ख़िदमत बग़ैर मुआवज़े के करें। जैसे कहीं वाज़ कर दिया, कहीं तक़रीर कर दी, कभी फ़तवा लिख दिया, चुनांचे उसी दौरान एक सरकारी कालिज से एक पेशकश आ गयी कि आप हमारे यहां आकर पढ़ायें, इतनी तन्ख़्वाह आपको दी जायेगी। (यह आप जानते हैं कि सरकारी इदारों के अन्दर उस्ताद का काम बड़ा हल्का

होता है, सारे दिन में घन्टा दो घन्टा पढ़ाने के होते हैं और पढ़ाने में भी ऐसा मज़मून नहीं होता कि उसके हल करने में कोई मुश्किल पैदा हो, यह तो दीनी मदरसे ही हैं कि मौलवी पांच घन्टे पढ़ाता है और पांच घन्टे पढ़ाने के लिए दस घन्टे उस पढ़ाने की तैयारी करता है। कोल्हू के बैल की तरह काम करता है, (कालिजों और यूनिवर्सिटियों में यह कोल्हू का बैल नहीं पाया जाता) बहर हाल, मौलाना ने सोचा कि दीन की ख़िदमत करने का यह अच्छा मौक़ा है, वहां दो घन्टे पढ़ाऊंगा बाक़ी वक़्त बग़ैर उज्रत व मुआवज़े के दीन की ख़िदमत अन्जाम दूंगा। इसी जज़्बे के तहत हज़रत शैख़ुल हिन्द से अर्ज़ किया कि हज़रत मुझे यह पेशकश आई है और इस ग़र्ज़ से जाना चाहता हूं, हज़रत शैख़ुल हिन्द ने फ़रमाया कि: अच्छा भाई तुम्हारे दिल में यह जज़्बा है तो जाकर देख लो। हज़रत ने सोचा कि इनके दिल में जज़्बा और तक़ाज़ा क़वी है, और इस वक़्त रोकना मुनासिब नहीं, इसलिए इजाज़त दे दी, और वह चले गये। छह महीने गुज़र गये, छह महीने के बाद छुट्टियों में देवबन्द आए तो शैख़ुल हिन्द रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने पहली मुलाक़ात में पूछा कि मौलाना सहूल साहिब! आप इस ख़्याल से गये थे कि सरकारी मदरसे में पढ़ाने के वक़्तों के अ़लावा दीन की ख़िदमत अन्जाम देंगे, यह बताओ कि इस मुद्दत में कितनी किताबें लिखीं? कितने फ़तवे लिखे? और कितने वाज़ कहे? इसका हिसाब तो दे दो, तो मौलाना रो पड़े, और फ़रमाया कि हज़रत यह शैतानी धोखा था, इसलिये कि दारुल उलूम में रह कर अल्लाह तआ़ला दीन की ख़िदमत की जो तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाते थे, वहां जाकर उसकी आधी भी तौफ़ीक़ नहीं रही। हालांकि फ़ारिग़ वक़्त कई गुना ज़्यादा था।

यह वाक़िआ सुनाने के बाद मेरे वालिद साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि अल्लाह तआ़ला ने इन मदरसों की फ़िज़ा में एक ख़ास बर्कत और नूर रखा है और इनमें रह कर

अल्लाह तबरक व तआला दीनी ख़िदमत की यह तौफ़ीक़ अता फ़रमा देते हैं। बस अल्लाह तआला इख़्लास अता फ़रमाए, और यह तन्ख़्वाह जो मिल रही है यह तन्ख़्वाह नहीं है, यह हकीकत में ख़र्चा है, और इस ख़र्चे पर रहते हुए काम करो तो अल्लाह तबारक व तआला दीन की ख़िदमत की तौफ़ीक़ अता फ़रमा देते हैं, इन्शा अल्लाह।

पढ़ने पढ़ाने की बर्कत

मैं अपना ज़ाती तजुर्बा अर्ज़ करता हूं और शायद मेरे सारे साथी इसकी ताईद फ़रमायेंगे कि जिस ज़माने में दारुल उलूम में दर्स जारी रहता है उस ज़माने का मुक़ाबला छुट्टी के ज़माने से करके देख लो, जब छुट्टी का ज़माना आता है तो हम पहले से मन्सूबे बनाते हैं कि फ़लां फ़लां काम करेंगे, लेकिन जितना काम दर्स के ज़माने में हो जाता है छुट्टी के ज़माने में नहीं होता। अल्लाह तआला दर्स की वजह से बर्कत अता फ़रमा देते हैं।

तलबा का कैरियर आख़िरत संवारना है

इस साल दारुल उलूम में तालीम हासिल करने वालों की तायदाद दो हज़ार आठ सौ पचास है। और कुरआने करीम के जो मक्तब शहर में क़ायम हैं उनमें तलबा की तायदाद पांच छह हज़ार से ज़्यादा है। दौरा–ए–हदीस में एक सौ अट्ठावन तालिब इल्म थे जो इस साल आलिम बनकर निकल रहे हैं। अल्हम्दु लिल्लाह आलिम बन रहे हैं। लोग पूछते हैं कि इतनी सारी तायदाद कहां खपेगी, एक लफ़्ज़ ज़बानों पर है कि इनका कैरियर क्या है? इनका मुस्तक़बिल क्या है? इस पर मुझे एक वाक़िआ याद आ गया:

हज़रत मारूफ़ करख़ी का एक वाक़िआ

हज़रत मारूफ़ करख़ी बड़े दर्जे के औलिया अल्लाह में से हैं। बग़दाद में उनका मज़ार है, मैं भी अल्हम्दु लिल्लाह उनके मज़ार पर हाज़िर हुआ हूं। एक बार दजला दरिया के किनारे अपने साथियों के साथ जा रहे थे। इसी दौरान दरिया–ए–दजला में एक कश्ती गुज़री

जिसमें कुछ आज़ाद मन्श नौजवान सवार थे, और गाते बजाते जा रहे थे। शोख़ियों और रंगरलियों में मस्त थे, कश्ती जब हज़रत मारूफ़ करख़ी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के पास से गुज़री तो उनको देख कर उन नौजवानों की दिल्लगी की रग ज़रा फड़क उठी, कोई जुम्ला भी चुस्त कर दिया, रंगरलियों के दरमियान कोई मौलवी आ जाए और उस पर कोई जुम्ला कस दिया जाए, इस से अच्छी क्या बात है? हज़रत मारूफ़ करख़ी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के बराबर में जो साहिब थे, उन्होंने अ़र्ज़ किया किः हज़रत यह औबाश लोग जो ख़ुद तो गुनाहों और बुराइयों में मुब्तला हैं ही, ये अल्लाह वालों की शान में भी गुस्ताख़ी करते हैं। आप इनके लिए बद दुआ़ कर दीजिए। हज़रत मारूफ़ करख़ी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने हाथ उठाए और बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ किया:

"या अल्लाह! आपने इन नौजवानों को दुनियावी ख़ुशियां अ़ता फ़रमाई हैं, या अल्लाह इनको आख़िरत की भी ख़ुशियां अ़ता फ़रमा"।

आपका साथी कहने लगा कि हज़रतः आपने तो इनके हक़ में बद दुआ़ करने के बजाए दुआ़ कर दी। हज़रत करख़ी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने जवाब दिया कि मेरा क्या नुक़सान हुआ? मैंने तो इनके लिए आख़िरत की ख़ुशियों की दुआ की है, और आख़िरत में ख़ुशियां तब ही हासिल हो सकती हैं जब ये सही मायने में मुसलमान और नेक बनें।

बहर हाल, जो आदमी मदरसे में दीनी तालीम हासिल करने के लिए आया है वह हक़ीक़त में हज़रत मारूफ़ करख़ी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि की इस बात पर अ़मल करता है कि मेरे दूसरे मुसलमान भाईयों की जिस तरह दुनिया बेहतर है, अल्लाह तआ़ला उनकी आख़िरत को भी बेहतर बना दे। ये तालिब इल्म अपनी और दूसरों की आख़िरत बेहतर बनाने के लिए यहां आते हैं। यही इनका कैरियर और यही इनका मुस्तक़बिल है। अल्लाह तआ़ला इनके मुस्तक़बिल को ख़राब नहीं करते। किसी को इनकी फ़िक्र की ज़रूरत नहीं, फ़िक्र

की बात यह है कि अल्लाह तआला हमें अपने फ़ज़्ल व करम से ईमान पर क़ायम रखे और दीन के तक़ाज़ों पर अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

मदरसों की आमदनी और ख़र्चे

इस दारुल उलूम का माहाना ख़र्च लाखों रुपये में है, और इसका कोई बजट नहीं बनता, इतने बड़े ख़र्च का कोई इदारा दीनी मदरसों के अलावा आप मुझे दिखा दीजिए जिसका बजट न बनता हो, बजट वहां बनता है जहां आमदनी के ज़रिये (सूत्र) मुताय्यन हों, आमदनी ही के दायरे में ख़र्चों का बजट बनाया जाता है, जब कि हमें नहीं मालूम कि आईन्दा कितनी आमदनी होगी? आज तक कभी बजट की बुनियाद पर कोई काम नहीं हुआ। और अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से ज़रूरत के सब काम हो जाते हैं। लोग पूछते हैं कि सालाना इतना बड़ा ख़र्चा है तो आमदनी क्या है? मुस्तक़िल आमदनी जिसके बारे में यक़ीन से मैं बतला सकूं कुछ नहीं है, लेकिन कुछ मकानात वक़्फ़ हैं उनके किराये की कुल आमदनी पचास साठ हज़ार के क़रीब होगी, लोग पूछते हैं कि फिर और ख़र्चा कहां से आता है? मैं जवाब में अर्ज़ किया करता हूं कि मुझे नहीं मालूम कि कहां से आता है। हक़ीक़त भी यह है और इसमें कोई बढ़ा चढ़ा कर करने वाली बात भी नहीं, बाक़ी कहां से आ रहा है और किस तरह आ रहा हैं, मुझे नहीं मालूम।

दारुल उलूम की तरफ़ से न कोई इश्तिहार है, न कोई ऐलान है न अपील की जाती है कि दारुल उलूम के अन्दर इतना ख़र्चा होता है आप उसमें चन्दा दें। फ़ोन उठा कर किसी से ज़िक्र करने का भी मामूल नहीं है। आज से पन्द्रह दिन पहले जब मैं सफ़र पर जा रहा था तो उस वक़्त पता चला कि शाबान के महीने के लिये ख़र्च मौजूद नहीं है। जो बाक़ी है वह शाबान के ख़र्चों के लिये भी काफ़ी नहीं। उस वक़्त भी किसी से ज़िक्र नहीं किया, लेकिन एक दोस्त इत्तिफ़ाक़ से आ गये, उनसे बातों बातों में ज़िक्र आ गया, फिर मालूम नहीं कि

क्या क्या हुआ?

अल्लाह से मांग लेते हैं

लेकिन मेरे वालिद माजिद रह्मतुल्लाहि अ़लैहि एक बात सिखा गये हैं कि जब कभी ऐसा मौक़ा आए तो हाथ उठा कर अल्लाह तबारक व तआ़ला से मांग लिया करो, तो अल्हम्दु लिल्लाह इसकी तौफ़ीक़ हुई। अल्लाह तबारक व तआ़ला के सामने हाथ फैला दिए और मांग लिया। मैंने आने के बाद अभी तक पूछा भी नहीं कि सूरते हाल क्या है? अभी तक मालूम नहीं, लेकिन अल्हम्दु लिल्लाह ज़रूरत का कोई काम अल्लाह तबारक व तआ़ला रोकते नहीं। यह हमारे वालिद माजिद के इख़्लास का और उनके रातों को गिड़गिड़ाने का, और मेरे शैख़ हज़रत डा० अ़ब्दुल हई की दुआ़ओं का और उनके इख़्लास का सदक़ा है।

इसमें हमारा कोई कमाल नहीं है। अगर हमारे ज़ोरे बाज़ू पर छोड़ा जाता तो इतना बड़ा इदारा नहीं चल सकता था। अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल व करम से उन बुज़ुर्गों की दुआ़ओं और इख़्लास के नतीजे में अल्हम्दु लिल्लाह इसको चला रहे हैं। अल्लाह तबारक व तआ़ला ख़ुद इसके कफ़ील हैं।

यह मदरसा है कोई दुकान नहीं है

मेरे वालिद माजिद ने यह बात फ़रमा दी थी कि हमने कोई दुकान नहीं खोली है, जिसका हर दम हर आन चलता रहना ज़रूरी हो, जब तक सही उसूलों से इसको चला सको चलाओ? जब यह ख़्याल हो कि उसूल को पामाल करना पड़ेगा और दीन की बेइज़्ज़ती करनी पड़ेगी, इसे ताला डाल देना और बन्द कर देना। यह वसीयत करके तशरीफ़ ले गये। अल्हम्दु लिल्लाह आज तक अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल व करम से, अपनी रहमत से इसको चला रहे हैं। यह मिसाल दुनिया के किसी इदारे में नहीं मिलेगी। यह अल्लाह जल्ल जलालुहू की कुदरत का करिश्मा है, जिसको हर इन्सान अपनी आंखों

से देख सकता है। बेशक कोई आदमी इसमें सुधारों की ग़र्ज़ से कोई प्रस्ताव पेश करे तो उसका स्वागत करने के लिए हम तैयार हैं।

लेकिन कोई शख़्स यह चाहे कि यह दीनी मदरसा अपनी रविश से हट कर किसी और तरीक़े में तब्दील हो जाए। यह इन्शा अल्लाह कभी नहीं होगा। जब तक हमारे दम में दम है, जब तक सांस में सांस है, यह अपनी रविश से नहीं हटेगा, इन्शा अल्लाह। और जिस दिन इसको हटाना पड़ा, उस दिन इसको बन्द कर दिया जायेगा। अल्लाह तआ़ला इसको इस मिजाज़ के साथ क़ियामत तक क़ायम रखे और इसको अपनी रिज़ा के मुताबिक़ चलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। मैंने आपका वक़्त ले लिया, लेकिन यह एक ज़रूरी बात थी जो कहनी ज़रूरी थी।

तुम अपनी क़द्र पहचानो

मेरे तालिब इल्म साथियो!

आप यहां से फ़ारिग़ होने के बाद उस दुनिया में जाओगे जिसमें लोग तानों और एतिराज़ों के तीर कमानों में चढ़ाए हुए हैं, जहां पहुंचोगे वहां उन तीरों और तानों की बारिश होगी, लेकिन यह अच्छी तरह ज़ेहन में बैठा लो कि तुम मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की जमाअ़त के सिपाही हो।

मेरे बुज़ुर्ग शैख़ुल हदीस हज़रत मौलाना मुहम्मद ज़करिया साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि एक मर्तबा इसी मस्जिद में बैठ कर एक जुम्ला फ़रमा गये थे। वह अपने दिल पर नक़्श कर लो, वह जुम्ला यह हैः

"तालिब इल्मो! अपनी क़द्र पहचानो"

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने तुमको इल्म की दौलत से नवाज़ा है, अल्लाह तआ़ला ने तुमको अपने दीन की ख़िदमत के लिए चुना है। यह नेमत और यह इ़ज़्ज़त तमाम दुनिया पर भारी है, चाहे यह दुनिया वाले कितने ही एतिराज़ करें। तुम्हारे दिल के अन्दर अपने दीन की इ़ज़्ज़त होगी तो इसको कोई नहीं मिटा सकेगा। जब तुम

इस यक़ीन के साथ दुनिया में जाओगे तो इन्शा अल्लाह तुम हर जगह सर बुलन्द रहोगे। बशर्ते कि तुमने जो इल्म हासिल किया है उसको अपनी ज़िन्दगी में अपनाओ और उसको दुनिया में फैलाने और पहुंचाने की कोशिश करो, अल्लाह तआला तुम्हें क़दम क़दम पर अपनी मदद से नवाज़े, तुम्हारे लिए क़दम क़दम पर कामयाबियों के दरवाज़े खोले, और अल्लाह तआला हम सब को हमेशा अपने दीन पर क़ायम रहने और इस इल्म की क़द्र पहचानने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, अल्लाह तआला तुम्हारा हामी और मददगार हो, आमीन।

واٰخردعواناان الحمدللہ رب العالمین

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

बीमारी और परेशानी एक नेमत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَاوَسَنَدَنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا، اَمَّا بَعْدُ:

"فَقَدْ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ:اَشَدُّ النَّاسِ بَلَاءً اَنْبِيَآءُ ثُمَّ الْاَمْثَلُ فَالْاَمْثَلُ"

परेशान हाल के लिये ख़ुशख़बरी

इस हदीस में उस शख़्स के लिये ख़ुशख़बरी है जो मुख़्तलिफ़ परेशानियों और तक्लीफ़ों में मुब्तला हो और उन परेशानियों के बावजूद उसका ताल्लुक़ अल्लाह तआ़ला के साथ क़ायम हो, और वह दुआ़ के ज़रिये अपनी उस तक्लीफ़ और परेशानी को दूर करने की फ़िक्र कर रहा हो। ऐसे शख़्स के लिये इस हदीस में बशारत (ख़ुशख़बरी) यह है कि अल्लाह तआ़ला ने अपनी मुहब्बत में और अपने फ़ज़्ल व करम से यह तक्लीफ़ दी है और इस तक्लीफ़ का मन्शा अल्लाह तआ़ला की नाराज़गी नहीं है।

परेशानियों की दो क़िस्में

जब इन्सान किसी परेशानी में हो, या किसी बीमारी या किसी तक्लीफ़ में हो, या ग़ुर्बत और तंगदस्ती में हो, या क़र्ज़ की परेशानी

या बेरोज़गारी की परेशानी में हो, या घर की तरफ़ से परेशानी में हो, इस क़िस्म की जितनी परेशानियां जो इन्सान को दुनिया में पेश आती हैं ये दो क़िस्म की होती हैं, पहली क़िस्म की परेशानियां वे हैं जो अल्लाह तआला की तरफ़ से क़हर और अज़ाब होता है। गुनाहों की असल सज़ा तो इन्सान को आख़िरत में मिलनी है, लेकिन कभी कभी अल्लाह तआला इन्सान को दुनिया में भी अज़ाब का मज़ा चखा देते हैं। जैसे कुरआने करीम में इरशाद है:

"وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِنَ الْعَذَابِ الْاَدْنٰى دُوْنَ الْعَذَابِ الْاَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ"

यानी आख़िरत में जो बड़ा अज़ाब आने वाला है हम उस से पहले भी दुनिया में थोड़ा सा अज़ाब चखा देते हैं। ताकि ये लोग अपनी बद आमालियों से बाज़ आ जायें। और दूसरी क़िस्म की तक्लीफ़ें और परेशानियां वे होती हैं जिनके ज़रिये बन्दे के दर्जे बुलन्द क़रने होते हैं, और उसको दरजों की बुलन्दी और अज्र व सवाब देने के लिये उसको तक्लीफ़ें दी जाती हैं।

तक्लीफ़ें अल्लाह का अज़ाब भी हैं

लेकिन दोनों क़िस्म की परेशानियों और तक्लीफ़ों में फ़र्क़ किस तरह करेंगे कि यह पहली क़िस्म की परेशानी है या दूसरी क़िस्म की परेशानी है? इन दोनों क़िस्मों की परेशानियों और तक्लीफ़ों की निशानियां अलग अलग हैं। वे ये कि अगर इन्सान उन तक्लीफ़ों के अन्दर अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू करना छोड़ दे और उस तक्लीफ़ के नतीजे में वह अल्लाह तआला की तक़दीर का शिकवा करने लगे, जैसे यह कहने लगे (अल्लाह हमें अपनी पनाह में रखे) इस तक्लीफ़ और परेशानी के लिये मैं ही रह गया था, मेरे ऊपर यह तक्लीफ़ क्यों आ रही है? यह परेशानी मुझे क्यों दी जा रही है? वग़ैरह, और अल्लाह तआला की तरफ़ से दिये हुए अहकाम छोड़ दे, जैसे पहले नमाज़ पढ़ता था तक्लीफ़ की वजह से नमाज़ पढ़ना छोड़ दिया, या पहले ज़िक्र व तसबीहात के मामूलात का पाबन्द था, अब वे

मामूलात छोड़ दिये और उस तक्लीफ़ को दूर करने के लिए दूसरे ज़ाहिरी असबाब तो इख़्तियार कर रहा है लेकिन अल्लाह तआ़ला से तौबा व इस्तिग़फ़ार नहीं करता, दुआ नहीं करता, ये इस बात की अ़लामतें (निशानियां) हैं कि जो तक्लीफ़ उस पर आई है यह अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उस इन्सान पर क़हर और अ़ज़ाब है और सज़ा है, अल्लाह तआ़ला हर मोमिन को इस से महफ़ूज़ रखे। आमीन

"तक्लीफ़ें" अल्लाह की रह्मत भी हैं

और अगर तक्लीफ़ें आने के बावजूद अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजू कर रहा है, और दुआ कर रहा है, कि या अल्लाह! मैं कमज़ोर हूँ, इस तक्लीफ़ को बर्दाश्त नहीं कर सकता। या अल्लाह! मुझे इस तक्लीफ़ से अपनी रहमत से नजात दे दीजिये। और दिल के अन्दर उस तक्लीफ़ पर शिकवा नहीं है, वह उस तक्लीफ़ का एहसास तो कर रहा है, रो भी रहा है, रंज और ग़म का इज़्हार भी कर रहा है, लेकिन अल्लाह तआ़ला की तक़दीर पर शिकवा नहीं कर रहा है, बल्कि उस तक्लीफ़ में वह पहले से ज़्यादा अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजू कर रहा है। पहले से ज़्यादा नमाज़ें पढ़ रहा है। पहले से ज़्यादा अल्लाह तआ़ला से दुआयें मांग रहा है। तो यह इस बात की अ़लामत (निशानी) है कि यह तक्लीफ़ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से बतौर दरजात की तरक़्क़ी के है, और यह तक्लीफ़ उसके लिए अज्र व सवाब का सबब है। और यह तक्लीफ़ भी उसके लिये रहमत है। और यह उस इन्सान के साथ अल्लाह की मुहब्बत की दलील और अ़लामत है।

कोई शख़्स भी परेशानी से ख़ाली नहीं

अब सवाल यह पैदा होता है कि जब किसी को दूसरे से मुहब्बत होती है तो मुहब्बत में तो उसको आराम पहुंचाया जाता है, राहत दी जाती है, तो जब अल्लाह तआ़ला को इस बन्दे से मुहब्बत है तो इस बन्दे को आराम पहुंचाना चाहिए। फिर अल्लाह तआ़ला इसको

तक्लीफ़ क्यों दे रहे हैं? इसका जवाब यह है कि इस दुनिया में कोई इन्सान ऐसा नहीं है जिसको कभी न कभी कोई न कोई तक्लीफ़ न पहुंचे। कोई न कोई सदमा और परेशानी न हो। चाहे वह बड़े से बड़ा नबी और पैग़म्बर हो, वली और सूफ़ी हो, या बादशाह हो या सरमायेदार हो, ऐसा नहीं हो सकता कि वह दुनिया में तक्लीफ़ के बग़ैर ज़िन्दगी गुज़ारे। इसलिये कि यह आलम यानी दुनिया अल्लाह तआ़ला ने ऐसी बनाई है कि इसमें ग़म और ख़ुशी, राहत और तक्लीफ़ सब साथ साथ चलते हैं। ख़ालिस ख़ुशी और राहत का मक़ाम दुनिया नहीं है, बल्कि वह आलमे जन्नत है। जिसके बारे में फ़रमाया कि:

"لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ"

यानी "वहां न कोई ख़ौफ़ है और न कोई ग़म है। असली ख़ुशी और राहत का मक़ाम तो वह है। दुनिया तो अल्लाह तआ़ला ने बनायी ही ऐसी है कि इसमें कभी ख़ुशी होगी और कभी ग़म होगा, कभी सर्दी होगी कभी गर्मी होगी, कभी धूप होगी कभी छांव होगी, कभी एक हालत होगी कभी दूसरी हालत होगी। इसलिए यह मुमकिन नहीं कि कोई शख़्स इस दुनिया में बेग़म होकर बैठ जाये।

एक नसीहत भरा क़िस्सा

हज़रत हकीमुल उम्मत रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने अपने मवाइज़ में एक क़िस्सा लिखा है, कि एक शख़्स की हज़रत ख़ाज़िर अ़लैहिस्सलाम से मुलाक़ात हो गई। उस शख़्स ने हज़रत ख़ज़िर अ़लैहिस्सलाम से कहा कि हज़रत! मेरे लिये यह दुआ़ फ़रमा दें कि मुझे ज़िन्दगी में कोई ग़म और कोई तक्लीफ़ न आये और सारी ज़िन्दगी बग़ैर ग़म गुज़र जाये। हज़रत ख़ज़िर अ़लैहिस्सलाम ने कहा कि यह दुआ़ तो मैं नहीं कर सकता। इसलिये की इस दुनिया में ग़म और तक्लीफ़ तो आयेगी। अलबत्ता एक काम कर सकता हूं वो यह

कि तुम दुनिया में एक ऐसा आदमी तलाश करो जो तुम्हें सब से ज़्यादा बग़ैर ग़म या कम ग़म वाला नज़र आये, फिर मुझे उस शख़्स का पता बता देना, मैं अल्लाह तआ़ला से यह दुआ़ करूंगा कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें उस जैसा बना दे। यह शख़्स बहुत ख़ुश हुआ कि चलो ऐसा आदमी तो मिल जायेगा जो बहुत ज़्यादा आराम और राहत में होगा और में उस जैसा बनने की दुआ़ करा लूंगा। अब तलाश करने के लिए निकला, कभी एक आदमी के बारे में फ़ैसला करता कि इस जैसा बनने की दुआ़ कराऊंगा। फिर दूसरा आदमी उस से ज़्यादा दौलत वाला नज़र आता तो फिर यह फ़ैसला बदल देता कि नहीं, इस जैसा बनने की दुआ़ कराऊंगा। ग़र्ज़ काफ़ी मुद्दत तक तलाश करने के बाद उसको एक जोहरी और सुनार नज़र आया जो सोना चाँदी जवाहरात और क़ीमती पत्थर की तिजारत करता था। बहुत बड़ी और सजी हुई उसकी दुकान थी, उसका महल बड़ा आ़लीशान था। बड़ी क़ीमती और आ़ला क़िस्म की सवारी थी, नौकर चाकर ख़िदमत में लगे हुए थे, उसके बेटे बड़े ख़ूबसूरत और नौजवान थे। ज़ाहिरी हालात देख कर उसने अन्दाज़ा लगा लिया कि यह शख़्स बड़े ऐशो आराम में है। उसने फ़ैसला कर लिया कि इस जैसा बनने की दुआ़ कराऊंगा। जब वापस जाने लगा तो ख़्याल आया कि इस शख़्स की ज़ाहिरी हालत तो बहुत अच्छी है कहीं ऐसा न हो कि अन्दर से किसी बीमारी या परेशानी में मुब्तला हो, जिसकी वजह से मेरी मौजूदा हालत भी ख़त्म हो जाये। इसलिये इस जोहरी से जाकर पूछना चाहिये कि वह किस हालत में है। चुनांचे यह शख़्स उस जोहरी के पास गया और उस से जाकर कहा कि तुम बड़े ऐशो आराम में ज़िन्दगी गुज़ार रहे हो, दौलत की रेलपेल है, नौकर चाकर लगे हुए हैं। तो मैं तुम जैसा बनना चाहता हूँ। कहीं ऐसा तो नहीं कि अन्दरूनी तौर पर तुम्हें कोई परेशानी लगी हुई हो और किसी बीमारी और मुसीबत के अन्दर मुब्तला हो?

वह जोहरी उस शख़्स को अकेले में ले गया और उस से कहा कि तुम्हारा ख़्याल यह है कि मैं बड़े ऐशो आराम में हूँ, बड़ा दौलत मंद हूँ, बड़े नौकर चाकर ख़िदमत गुज़ारी में लगे हुए हैं। लेकिन इस दुनिया में कोई शख़्स मुझ से ज़्यादा ग़म व तक्लीफ़ में नहीं होगा, फिर उसने अपनी बीवी की अख़्लाक़ी हालत का बड़ा इब्रतनाक क़िस्सा सुनाते हुए कहा, कि ये जो ख़ूबसूरत और नौजवान बेटे तुमको नज़र आ रहे हैं ये हक़ीक़त में मेरे बेटे नहीं हैं। जिसकी वजह से मेरा कोई लम्हा तक्लीफ़ और परेशानी से ख़ाली नहीं गुज़रता और अन्दर से मेरे दिल में ग़म और सदमे की जो आग सुलग रही है तुम उस से वाक़िफ़ नहीं हो। इसलिए मेरे जैसा बनने की हरगिज़ दुआ मत कराना। अब उस शख़्स को पता चला कि जितने लोग माल व दौलत ऐशो आराम में नज़र आ रहे हैं वे किसी न किसी मुसीबत और परेशानी में गिरफ़्तार हैं। जब दोबारा हज़रत ख़ज़िर अ़लैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई तो उन्होंने पूछा कि हाँ बताओ तुम किस जैसा बनना चाहते हो? उस शख़्स ने जवाब दिया कि मुझे कोई भी शख़्स ग़म व परेशानी से ख़ाली नज़र नहीं आया जिसके जैसा बनने की दुआ कराऊं। हज़रत ख़ज़िर अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मैंने तुम से पहले ही कह दिया था कि इस दुनिया में तुम्हें कोई भी शख़्स ग़म से ख़ाली नज़र नहीं आयेगा। अलबत्ता मैं तुम्हारे लिये यह दुआ करता हूँ कि अ़ल्लाह तआ़ला तुम्हें चैन सुकून की ज़िन्दगी अ़ता फ़रमाये।

हर शख़्स को दौलत अलग अलग दी गयी है

इस दुनिया में कोई भी शख़्स सदमे, ग़म और तक्लीफ़ से ख़ाली हो ही नहीं सकता। अलबत्ता किसी को कम तक्लीफ़ है किसी को ज़्यादा है। किसी को कोई तक्लीफ़ किसी को कोई तक्लीफ़। अल्लाह तआ़ला ने इस कायनात का निज़ाम ही कुछ ऐसा बनाया है कि किसी

को कोई दौलत दे दी है और किसी से कोई दौलत ले ली है। किसी को सेहत की दौलत दे दी है लेकिन रुपये पैसे की दौलत से महरूम है। किसी को रुपये पैसे की दौलत हासिल है तो सेहत की दौलत से महरूम है। किसी के घर के हालात अच्छे हैं लेकिन मआशी (आर्थिक) हालात ख़राब हैं। किसी के मआशी हालात अच्छे हैं लेकिन घर की तरफ़ से परेशानी है। ग़र्ज़ हर शख़्स का अपना अलग हाल है। और हर शख़्स किसी न किसी तक्लीफ़ और परेशानी में घिरा हुआ है। लेकिन अगर यह परेशानी पहली क़िस्म से है तो उसके लिये अ़ज़ाब है और अगर दूसरी क़िस्म से है तो उसके लिये रहमत और अज्र व सवाब का सबब है।

महबूब बन्दे पर परेशानी क्यों?

एक हदीस शरीफ़ में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः—

"اِذَا اَحَبَّ اللّٰہُ عَبْدًا صَبَّ عَلَیْہِ الْبَلَاءَ صَبًّا"

यानी "जब अल्लाह तआ़ला किसी बन्दे से मुहब्बत फ़रमाते हैं तो उस पर मुख़्तलिफ़ क़िस्म की आज़माइशें और तक्लीफ़ें भेजते हैं। वे आज़माइशें और तक्लीफ़ें उस पर बारिश की तरह बरसती हैं। बाज़ रिवायतों में आता है कि फ़रिश्ते पूछते हैं कि या अल्लाह! यह तो आपका महबूब बन्दा है, नेक बन्दा है, आप से मुहब्बत करने वाला है, तो फिर इस बन्दे पर इतनी आज़माइशें और तक्लीफ़ें क्यों भेजी जा रही हैं? जवाब में अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि इस बन्दे को इसी हाल में रहने दो, इसलिये कि मुझे यह बात पसन्द है कि मैं इसकी दुआ़ की और इसकी आह और रोने गिड़गिड़ाने की आवाज़ सुनूं। यह हदीस अगरचे सनद के एतिबार से कमज़ोर है लेकिन इस मायने की बहुत सी हदीसें आयी हैं। जैसे एक हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों से फ़रमाते हैं कि मेरे बन्दे के पास जाओ और उसे आज़माइश में मुब्तला करो, इसलिये कि मैं उसकी आह और रोने

गिड़गिड़ाने की आवाज़ सुनना पसन्द करता हूँ। बात वही है कि दुनिया में तक्लीफ़ें और परेशानियां तो आनी हैं तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि यह मेरा महबूब बन्दा है, मैं इसके लिये तक्लीफ़ को हमेशा की राहत का ज़रिया बनाना चाहता हूँ और ताकि इसका दर्जा बुलन्द हो जाये। और जब आख़िरत में मेरे पास पहुंचे तो गुनाहों से बिल्कुल पाक व साफ़ होकर पहुंचे, इसलिये अपने महबूब और प्यारों को तक्लीफ़ें और परेशानियां अ़ता फ़रमाते हैं।

सब्र करने वालों पर इनामात

इस कायनात में अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम से ज़्यादा तो अल्लाह तआ़ला का कोई महबूब हो नहीं सकता, लेकिन उनके बारे में हदीस शरीफ़ में है कि:

"اَشَدُّ النَّاسِ بَلَاءً اَلْاَنْبِيَاءُ ثُمَّ الْاَمْثَلُ فَالْاَمْثَلُ"

यानी "इस दुनिया में सब से ज़्यादा आज़माइशें अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम पर आती हैं। फिर उसके बाद जो शख़्स अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम से जितना क़रीब होता है और जितना ताल्लुक़ रखने वाला होता है उस पर उतनी ही आज़माइशें ज़्यादा आयेंगी। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को देखिये! जिनका लक़ब है "ख़लीलुल्लाह" अल्लाह का दोस्त। लेकिन उन पर बड़ी बड़ी बलायें और बड़ी बड़ी मुसीबतें आयीं। चुनांचे आग में उनको डाला गया, बेटे को ज़िबह करने का हुक्म उनको दिया गया, बीवी बच्चे को एक वीरान और सुनसान वादी में उनको छोड़ने का हुक्म दिया गया। ग़र्ज़ कि ये बड़ी बड़ी आज़माइशें उन पर आयीं। ये तक्लीफ़ें क्यों दी गयीं? ताकि उन के दरजे बुलन्द किये जायें। चुनांचे जब तक्लीफ़ों पर क़ियामत के रोज़ अल्लाह तआ़ला लोगों को इनाम अ़ता फ़रमायेंगे तो उस वक़्त मालूम होगा कि इन तक्लीफ़ों की मच्छर के पर के बराबर भी हैसियत नहीं थी और वे उन तक्लीफ़ों को भूल जायेंगे। एक और हदीस में है कि जब अल्लाह तआ़ला तक्लीफ़ों पर सब्र करने वालों

को आख़िरत में इनाम अ़ता फ़रमायेंगे तो दूसरे लोग उन इनामों को देख कर यह तमन्ना करेंगे कि काश हमारी खालें केंचियों से काटी गयी होतीं और उस पर हम सब्र करते तो आज हम भी इन इनामों के मुस्तहिक़ (हक़दार) होते।

तक्लीफ़ों की बेहतरीन मिसाल

हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि इन तक्लीफ़ों की मिसाल ऐसी है जैसे एक आदमी के जिस्म में कोई बीमारी है जिसकी वजह से डाक्टर ने आप्रेशन करना तय किया। अब मरीज़ को मालूम है कि आपरेशन में चीर फाड़ होगी, तक्लीफ़ होगी, लेकिन इसके बावजूद डाक्टर से दरख़्वास्त करता है कि मेरा आपरेशन जल्दी करो, और दूसरों से सिफ़ारिश भी करा रहा है और डाक्टर को भारी फ़ीस भी दे रहा है, गोया कि इस मक़सद के लिये पैसे दे रहा है कि मेरे ऊपर नश्तर चलाओ। वह यह सब कुछ क्यों करा रहा है? इसलिये कि वह यह जानता है कि यह आपरेशन की और नश्तर चलाने की तक्लीफ़ मामूली और आरज़ी (अस्थाई) है। चन्द दिन के बाद ज़ख़्म ठीक हो जायेगा। लेकिन इस आपरेशन के बाद जो सेहत की नेमत मिलने वाली है वह इतनी अ़ज़ीम है कि उसके मुक़ाबले में यह तक्लीफ़ कोई हैसियत नहीं रखती। और जो डाक्टर चीर फाड़ कर रहा है अगरचे ज़ाहिर में तक्लीफ़ दे रहा है लेकिन उस मरीज़ के लिये उस वक़्त में उस से ज़्यादा मेहरबानी करने वाला और मोहसिन कोई और नहीं है। क्योंकि यह डाक्टर आपरेशन के ज़रिये उसके लिये सेहत का सामान कर रहा है।

बिल्कुल इसी तरह जब अल्लाह तआ़ला किसी बन्दे को तक्लीफ़ देते हैं तो हक़ीक़त में उसका आपरेशन हो रहा है ताकि उसके ज़रिये हम उसको पाक व साफ़ कर लें और जब यह बन्दा हमारे पास आये तो गुनाहों से पाक व साफ़ होकर और धुल कर हमारे

पास आये।

दूसरी मिसाल

या जैसे तुम्हारा एक महबूब है जिस से लम्बी मुद्दत से तुम्हारी मुलाक़ात नहीं हुई और उस से मिलने को दिल चाहता है। किसी मौक़े पर अचानक वह तुम्हारे पास आया और तुम्हें पीछे से पकड़ कर ज़ोर से दबाना शुरू कर दिया। और इतनी ज़ोर से दबाया कि पस्लियों में दर्द होने लगा। अब यह महबूब उस से कहता है कि मैं तुम्हारा फ़लां महबूब हूँ, अगर मेरे दबाने से तुम्हें तक्लीफ़ हो रही है तो मैं तुम्हें छोड़ कर किसी और को दबाना शुरू कर देता हूँ ताकि तुम्हारी तक्लीफ़ दूर हो जाये। अगर यह शख़्स अपनी मुहब्बत के दावे में सच्चा है तो उस वक़्त यही कहेगा कि तुम इस से ज़्यादा ज़ोर से दबाओ और ज़्यादा तक्लीफ़ पहुंचाओ। इसलिये कि मैं तो मुद्दतों से तुम्हारी मुलाक़ात का तालिब था, और यह शेर पढ़ेगा:

न शवद नसीबे दुश्मन के शवद हलाके तेग़त
सरे दोस्तां सलामत के तू ख़न्जर आज़माई

(यानी) "दुश्मन को यह नसीब न हो कि वह तेरी तलवार से हलाक हो जाये। दोस्तों का सर सलामत है आप अपना ख़न्जर इस पर आज़माएं",

तक्लीफ़ों पर "इन्ना लिल्लाह" पढ़ने वाले

इसी तरह अल्लाह तआला की तरफ़ से जो तक्लीफ़ें आती है हक़ीक़त में उन बन्दों के दरजात की बुलन्दी के लिये आती हैं जो अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू करने वाले हैं। कुरआने करीम में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:

"وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ
وَبَشِّرِ الصَّابِرِيْنَ، اَلَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالُوْآ اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ، اُولٰٓئِكَ
عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ" (سورة بقرة)

यानी" हम तुम्हें ज़रूर लाज़मी तौर पर आज़मायेंगे, कभी ख़ौफ़ से आज़मायेंगे, कभी भूख से, कभी तुम्हारे मालों में कमी हो जायेगी, कभी तुम्हारे अ़ज़ीज़ और क़रीबी लोगों में और मिलने वालों में कमी हो जायेगी, कभी तुम्हारे फलों में कमी हो जायेगी, फिर आगे फ़रमाया कि उन लोगों को ख़ुशख़बरी सुना दो जो इन मुश्किल आज़माइशों पर सब्र करें और यह कह दें:

اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ

"इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन"

ऐसे लोगों पर अल्लाह तआ़ला की रहमतें हैं और यही लोग हिदायत पर हैं"

बहर हाल यह अल्लाह तआ़ला का निज़ाम है कि अल्लाह तआ़ला अपने नेक बन्दों को कभी कभी इसलिये तक्लीफ़ें देते हैं ताकि उनके दरजे बुलन्द फ़रमायें।

हम दोस्त को तक्लीफ़ देते हैं

मेरे वालिद माजिद हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि कभी कभी बड़े वज्द के अन्दाज़ में यह शेर पढ़ा करते थे:

मा पर्वुरेम दुश्मन व मा मी कुशेम दोस्त
कस रा चूं व चरा न रसद दर क़ज़ा-ए-मा

यानी "कभी कभी हम अपने दुश्मन को पालते हैं और उसको दुनिया के अन्दर तरक़्क़ी देते हैं और अपने दोस्त को तक्लीफ़ देते हैं और उसको मारते हैं। हमारी क़ज़ा और तक़दीर में किसी को चूं व चरा की मजाल नहीं"। इसलिये कि हमारी हिक्मतों को कौन समझ सकता है।

एक अ़जीब व ग़रीब क़िस्सा

हज़रत हकीमुल उम्मत रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने अपने मवाइज़ में एक क़िस्सा लिखा है कि एक शहर में दो आदमी मौत के बिस्तर पर

थे। मरने के क़रीब थे। एक मुसलमान था और एक यहूदी था। उस यहूदी के दिल में मछली खाने की इच्छा पैदा हुई और मछली क़रीब में कहीं पर मिलती नहीं थी। और उस मुसलमान के दिल में रोग़ने ज़ैतून खाने की इच्छा पैदा हुई तो अल्लाह तआ़ला ने दो फ़रिश्तों को बुलाया। एक फ़रिश्ते से फ़रमाया कि फ़लां शहर में एक यहूदी मरने को है और उसका दिल मछली खाने को चाह रहा है। तुम ऐसा करो की एक मछली लेकर उसके घर के तालाब में डाल दो ताकि वह मछली खाकर अपनी इच्छा पूरी कर ले। दूसरे फ़रिश्ते से फ़रमाया कि फ़लां शहर में एक मुसलमान मरने के क़रीब है और उसका रोग़ने ज़ैतून खाने को दिल चाह रहा है और रोग़ने ज़ैतून उसकी अलमारी के अन्दर मौजूद है। तुम जाओ और उसका रोग़न निकाल कर ज़ाया कर दो ताकि वह अपनी इच्छा पूरी न कर सके। चुनांचे दोनों फ़रिश्ते अपने अपने मिशन पर चले, रास्ते में उन दोनों की मुलाक़ात हो गई। दोनों ने एक दूसरे से पूछा कि तुम किस काम पर जा रहे हो? एक फ़रिश्ते ने बताया कि मैं फ़लां यहूदी को मछली खिलाने जा रहा हूँ। दूसरे फ़रिश्ते ने कहा कि मैं फ़लां मुसलमान का रोग़ने ज़ैतून ज़ाया करने जा रहा हूँ। दोनों को ताज्जुब हुआ कि हम दोनों को अलग अलग कामों का हुक्म क्यों दिया गया? लेकिन चूंकि अल्लाह तआ़ला का हुक्म था इसलिये दोनों ने जाकर अपना अपना काम पूरा कर लिया।

जब वापस आये तो दोनों ने अ़र्ज़ किया कि या अल्लाह! हमने आपके हुक्म की तामील तो कर ली लेकिन यह बात हमारी समझ में नहीं आयी कि एक मुसलमान जो आपके हुक्म को मानने वाला था और उसके पास रोग़ने ज़ैतून मौजूद था। इसके बावजूद आपने उसका रोग़ने ज़ैतून ज़ाया करा दिया। और दूसरी तरफ़ एक यहूदी था और उसके पास मछली मौजूद भी नहीं थी लेकिन इसके बावजूद आपने उसको मछली खिला दी? इसलिये हमारी समझ में बात नहीं

आयी कि क्या क़िस्सा है? अल्लाह तआ़ला ने जवाब में फ़रमाया कि तुमको हमारे कामों की हिक्मतों का पता नहीं है, बात दर असल यह है कि हमारा मामला काफ़िरों के साथ कुछ और है और मुसलमानों के साथ कुछ और है। काफ़िरों के साथ हमारा मामला यह है कि क्योंकि काफ़िर भी दुनिया में नेक आमाल करते रहते हैं। जैसे कभी सदक़ा ख़ैरात कर दिया, कभी किसी फ़क़ीर की मदद कर दी। उसके ये नेक आमाल अगरचे हमारे यहां आख़िरत में मक़बूल नहीं हैं, लेकिन हम उनके नेक आमाल का हिसाब दुनिया में चुका देते हैं ताकि जब ये आख़िरत में हमारे पास आयें तो इनके नेक आमाल का हिसाब चुका हुआ हो, और हमारे ज़िम्मे उनकी किसी भी नेकी का बदला बाक़ी न हो। और मुसलमान के साथ हमारा मामला अलग है। वह यह कि हम यह चाहते हैं कि मुसलमानों के गुनाहों का हिसाब दुनिया के अन्दर ही चुका दें ताकि ये जब हमारे पास आयें तो गुनाहों से पाक व साफ़ होकर आयें।

इसलिए उस यहूदी ने जितने नेक आमाल किये थे उन सब का बदला हमने दे दिया, सिर्फ़ एक नेकी का बदला देना बाक़ी था। और अब यह हमारे पास आ रहा था, जब इसके दिल में मछली खाने की ख़्वाहिश पैदा हुई तो हमने उसकी इस ख़्वाहिश को पूरा करते हुए उसको मछली खिला दी ताकि जब यह हमारे पास आये तो इसकी नेकियों का बदला चुका हुआ हो। और उस मुसलमान की बीमारी के दौरान बाक़ी सारे गुनाह तो माफ़ हो चुके थे अलबत्ता एक गुनाह उसके सर बाक़ी था। और अब यह हमारे पास आने वाला था, अगर इसी हालत में हमारे पास आ जाता तो उसका यह गुनाह उसके आमाल नामे में होता। इसलिये हमने यह चाहा कि उसका रोग़ने ज़ैतून ज़ाया करके और उसकी ख़्वाहिश को तोड़ कर उसके दिल पर एक चोट और लगायें और उसके ज़रिये उसके एक गुनाह को भी साफ़ कर दें। ताकि जब यह हमारे पास आये तो बिल्कुल पाक व

साफ़ होकर आये। बहर हाल अल्लाह तआ़ला की हिक्मतों को कौन पा सकता है। क्या हमारी यह छोटी सी अ़क्ल इन हिक्मतों का इहाता कर सकती है? अल्लाह तआ़ला की हिक्मतों के तहत दुनिया का यह निज़ाम चल रहा है। उनकी हिक्मतें इस दुनिया में अपना काम कर रही हैं। इन्सान के बस का काम नहीं कि वह उनको महसूस भी कर सके। हमें क्या मालूम कि कौन से वक़्त में अल्लाह तआ़ला की कौन सी हिक्मत जारी है।

ये तक्लीफ़ें बेइख़्तियारी मुजाहदे हैं

हमारे हज़रत डाक्टर अ़ब्दुल हई साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि पहले ज़माने में लोग अपनी इस्लाह करने के लिये जब किसी शैख़ या किसी बुज़ुर्ग के पास जाते तो वह बुज़ुर्ग और शैख़ उनसे बहुत से मुजाहदे और रियाज़तें कराया करते थे। ये मुंजाहदे इख़्तियारी हुआ करते थे। अब इस दौर में वे बड़े बड़े मुजाहदे नहीं कराये जाते। लेकिन अल्लाह तआ़ला ने इन बन्दों को मुजाहदों से महरूम नहीं फ़रमाया, बल्कि कभी कभी अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से ऐसे बन्दों से बेइख़्तियारी तौर पर और ज़बरदस्ती मुजाहदा कराया जाता है। और इन बेइख़्तियारी मुजाहदों के ज़रिये इन्सान को जो तरक़्क़ी होती है वह इख़्तियारी मुजाहदों के मुक़ाबले में ज़्यादा तेज़ रफ़्तारी से होती है। चुनांचे सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की ज़िन्दगी में इख़्तियारी मुजाहदे इतने नहीं थे। जैसे उनके यहां यह नहीं था कि जान बूझ कर फ़ाक़ा किया जा रहा है। या जान बूझ कर तक्लीफ़ दी जा रही है वग़ैरह। लेकिन उनकी ज़िन्दगी में इज़्तिरारी मुजाहदे बेशुमार थे। चुनांचे कलिमा तैयबा पढ़ने के नतीजे में उनको तपती हुई रेत पर लिटाया जाता था, सीने पर पत्थर की सिल्ली रखी जाती थी, और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का साथ देने के जुर्म में उन पर न जाने कैसे कैसे ज़ुल्म किये जाते थे, ये सब मुजाहदे बेइख़्तियारी थे। और इन

बेइख़्तियारी मुजाहदों के नतीजे में सहाबा-ए-किराम के दरजात इतने बुलन्द हो गये कि अब कोई ग़ैर सहाबी उनके मक़ाम को छू नहीं सकता। इसलिये फ़रमाया कि बेइख़्तियारी मुजाहदों से दरजात ज़्यादा तेज़ रफ़्तारी से बुलन्द होते हैं। और इन्सान तेज़ रफ़्तारी से तरक़्क़ी करता है। इसलिए इन्सान को जो तक्लीफ़ें, परेशानियां और बीमारियां आ रही हैं ये सब बेइख़्तियारी मुजाहदे कराये जा रहे हैं। और जिसको हम तक्लीफ़ समझ रहे हैं हक़ीक़त में वह अल्लाह तआला की मुहब्बत का उन्वान होती है।

इन तक्लीफ़ों की तीसरी मिसाल

जैसे एक छोटा बच्चा है वह नहाने और हाथ मुंह धुलवाने से घबराता है और उसको नहाने से तक्लीफ़ होती है, लेकिन माँ ज़बरदस्ती पकड़ कर उसको नहला देती है। और उसका मेल कुचैल दूर कर देती है। अब नहाने के दौरान वह रोता भी है, चीख़ता भी है, इसके बावजूद माँ उसको नहीं छोड़ती। अब वह बच्चा तो यह समझ रहा है कि मुझ पर ज़ुल्म और ज़्यादती हो रही है। मुझे तक्लीफ़ पहुंचायी जा रही है। लेकिन माँ शफ़क़त और मुहब्बत की वजह से बच्चे को नहला रही है। और उसका मेल कुचैल दूर कर रही है, और उसका जिस्म साफ़ कर रही है। चुनांचे जब वह बच्चा बड़ा होगा, उस वक़्त उसकी समझ में आयेगा कि यह नहलाने धुलाने का काम जो मेरी माँ करती थी, वह बड़ी मुहब्बत और शफ़क़त का अमल था। जिसको मैं ज़ुल्म और ज़्यादती समझ रहा था। अगर मेरी माँ मेरा मेल कुचैल दूर न करती तो मैं गन्दा रह जाता।

चौथी मिसाल

या जैसे बच्चे को माँ बाप ने स्कूल में दाख़िल कर दिया अब रोज़ाना सुबह को माँ बाप उसको स्कूल भेज देते हैं। स्कूल जाते वक़्त बच्चा रोता चीख़ता है, चिल्लाता है और स्कूल में चार पांच घंटे

बैठने को क़ैद समझता है। लेकिन बच्चे के साथ मुहब्बत का तक़ाज़ा यह है कि उसको ज़बरदस्ती स्कूल भेजें। चुनांचे जब वह बच्चा बड़ा होगा तब उसकी समझ में आयेगा कि अगर बचपन में माँ बाप ज़बरदस्ती मुझे स्कूल न भेजते और मुझे न पढ़ाते तो आज में पढ़े लिखों की सफ़ में शामिल न होता बल्कि जाहिल रह जाता।

इसी तरह अल्लाह तआला की तरफ़ से इन्सान पर जो तक्लीफ़ें और परेशानियां आती हैं। वे भी अल्लाह तआला की मुहब्बत और शफ़्क़त का तक़ाज़ा है। और इन्सान के दरजे बुलन्द करने के लिये उसको ये तक्लीफ़ें दी जा रही हैं। शर्त यह है कि उन तक्लीफ़ों में अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू करने की तौफ़ीक़ हो जाये, तो फिर समझ लो कि ये तक्लीफ़ें अल्लाह तआला की तरफ़ से रहमत ही रहमत हैं।

हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम और तक्लीफ़ें

हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम को देखिये। कैसी सख़्त बीमारी के अन्दर मुब्तला हुए कि उस बीमारी के तसव्वुर करने से इन्सान के रूंगटे खड़े होते हैं, और फिर उस बीमारी के अन्दर शैतान उनके पास आया और उसने आपको तक्लीफ़ देने के लिये यह कहना शुरू कर दिया कि आपके गुनाहों की वजह से यह बीमारी आयी है, और अल्लाह तआला तुम से नाराज़ हैं। इसलिये आपको इस तक्लीफ़ के अन्दर मुब्तला कर दिया गया है, और अल्लाह तआला के ग़ज़ब और क़हर की वजह से ये तक्लीफ़ें आ रही हैं। और इस पर उसने अपनी दलीलें भी पेश कीं। उस मौक़े पर हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम ने शैतान से मुनाज़रा किया, बाईबल के सहीफ़ा-ए-अय्यूबी में अब भी उस मुनाज़रे के बारे में कुछ तफ़सील मौजूद है। चुनांचे हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम ने शैतान के जवाब में फ़रमाया कि तुम्हारी बात दुरुस्त नहीं कि यह बीमारी और तक्लीफ़ें मेरे गुनाहों की वजह से

अल्लाह के ग़ज़ब और क़हर के तौर पर आई हैं। बल्कि ये तक्लीफ़ें मेरे ख़ालिक़ और मेरे मालिक की तरफ़ से मुहब्बत का उन्वान हैं। और अल्लाह तआला अपनी रहमत और शफ़्क़त की वजह से ये तक्लीफ़ें दे रहे हैं। मैं अल्लाह तआला से यह दुआ ज़रूर मांगता हूँ कि या अल्लाह मुझे इस बीमारी से शिफ़ा अता फ़रमा दीजिये। लेकिन मुझे अल्लाह तआला से इस बीमारी पर गिला शिकवा नहीं है और मुझे इस बीमारी पर कोई एतिराज़ नहीं है, कि अल्लाह तआला ने मुझे यह बीमारी क्यों दी है? और अल्हम्दु लिल्लाह रोज़ाना मैं अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू करता हूँ और यह दुआ करता हूँ:

"رَبِّ أَنِّي مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ"

ऐ मेरे अल्लाह! मुझे यह तक्लीफ़ है, आप सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाले हैं, इस तक्लीफ़ को दूर फ़रमा दीजिये।

इसलिए यह मेरा अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू करना भी उनकी तरफ़ से अता है और जब वह मुझे इस तक्लीफ़ के दौरान अपनी बारगाह में रुजू करने की तौफ़ीक़ दे रहे हैं तो यह इस बात की अलामत है कि यह तक्लीफ़ भी उनकी तरफ़ से रहमत और मुहब्बत का उन्वान है। ये सारी बातें "सहीफ़ा-ए-अय्यूबी" में मौजूद हैं।

तक्लीफ़ों के रहमत होने की निशानियां

इसमें हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम ने इसकी निशानियां बता दीं कि कौन सी तक्लीफ़ अल्लाह तआला की तरफ़ से क़हर और अज़ाब होती है और कौन सी तक्लीफ़ अल्लाह तआला की तरफ़ से रहमत और इनाम होती है। वह निशानी यह है कि पहली क़िस्म की तक्लीफ़ में इन्सान अल्लाह तआला से गिला शिकवा करता है, और अल्लाह तआला की तक़दीर पर एतिराज़ करता है, और अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू नहीं करता। और दूसरी क़िस्म की तक्लीफ़ में अल्लाह

तआला से गिला शिकवा कोई नहीं होता, लेकिन दुआ करता है कि या अल्लाह मैं कमज़ोर हूँ और इस तक्लीफ़ और आज़माइश को बर्दाश्त नहीं कर सकता। अपनी रहमत से मुझे इस तक्लीफ़ और आज़माइश से निकाल दीजिये। इसलिए जब कभी सदमे के वक़्त, तक्लीफ़ और परेशानी के वक़्त, बीमारी में अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू करने की तौफ़ीक़ हो जाये तो समझ लो कि अल्हम्दु लिल्लाह यह बीमारी, यह परेशानी, यह तक्लीफ़ अल्लाह तआला की तरफ़ से रहमत है, इस सूरत में घबराने की ज़रूरत नहीं। क्योंकि यह तक्लीफ़ आख़िरकार इन्शा अल्लाह दुनिया और आख़िरत में तुम्हारे लिये ख़ैर का ज़रिया बनेगी। बस शर्त यह है कि अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू की तौफ़ीक़ हो जाये। इसलिये कि अगर यह तक्लीफ़ अल्लाह तआला की तरफ़ से क़हर और ग़ज़ब होता तो उस सूरत में अल्लाह तआला इस तक्लीफ़ के अन्दर अपना नाम लेने और अपनी तरफ़ रुजू करने की तौफ़ीक़ ही न देते। जब वह अपनी तरफ़ रुजू करने की तौफ़ीक़ दे रहे हैं तो यह इस बात की अलामत (निशानी) है कि यह तक्लीफ़ उनकी तरफ़ से रहमत है।

दुआ के क़बूल होने की निशानी

अलबत्ता यह शुबह पैदा होता है कि कभी कभी जब तक्लीफ़ के अन्दर अल्लाह तआला से दुआ करते हैं और अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू करते हैं, इसके बावजूद वह तक्लीफ़ और परेशानी नहीं जाती और दुआ क़बूल नहीं होती। इसका जवाब यह है कि अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ करने और अर्ज़ व दरख़्वास्त पेश करने की तौफ़ीक़ मिल जाना ही इस बात की अलामत है कि हमारी दुआ कुबूल हो गई। वर्ना दुआ करने की भी तौफ़ीक़ न मिलती, और अब इस सूरत में तक्लीफ़ पर अलग इनाम मिलेगा, और उस दुआ करने पर अलग इनाम हासिल होगा, और इस दुआ के बाद दोबारा जो

दुआ करने की तौफ़ीक़ होगी, उस पर अलग इनाम मिलेगा। इसलिए यह तक्लीफ़ दरजात की बुलन्दी का ज़रिया बन रही है। इसके बारे में मौलाना रूमी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं:

"गुफ़्त आं "अल्लाह" तो लब्बैके मा अस्त"

यानी जिस वक़्त तू हमारा नाम लेता है और "अल्लाह" कहता है तो यह तेरा "अल्लाह" कहना ही हमारी तरफ़ से "लब्बैक" कहना है, और तुम्हारा अल्लाह कहना ही इस बात की अ़लामत है कि हमने तुम्हारी पुकार को सुन लिया और उसको क़ुबूल भी कर लिया। इसलिए दुआ़ की तौफ़ीक़ हो जाना ही हमारी तरफ़ से दुआ़ की क़ुबूलियत की अ़लामत है। अलबत्ता यह हमारी हिक्मत का तक़ाज़ा है कि कब उस परेशानी को तुम से दूर करना है और कब तक उसको बाक़ी रखना है। तुम जल्दबाज़ हो, इसलिए जल्दी उस तक्लीफ़ को दूर कराना चाहते हो, लेकिन अगर उस तक्लीफ़ को कुछ देर के बाद दूर किया जायेगा तो इसके नतीजे में तुम्हारे दरजे बहुत ज़्यादा बुलन्द हो जायेंगे। इसलिए तक्लीफ़ में यह गिला शिकवा नहीं होना चाहिये। अलबत्ता यह दुआ़ ज़रूर करनी चाहिये कि या अल्लाह मैं कमज़ोर हूँ मुझ से बर्दाश्त नहीं हो रहा है, मुझ से यह तक्लीफ़ दूर फ़रमा दीजिये।

हज़रत हाजी इमदादुल्लाह साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि का एक वाक़िआ़

तक्लीफ़ मांगने की चीज़ नहीं कि आदमी यह दुआ़ करे कि या अल्लाह मुझे तक्लीफ़ दे दें, लेकिन जब तक्लीफ़ आ जाये तो वो सब्र करने की चीज़ है। और सब्र का मतलब यह है कि उस पर गिला शिकवा न करें। चुनांचे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तक्लीफ़ों से पनाह मांगी है। एक दुआ़ में आपने फ़रमाया या अल्लाह मैं आप से बुरी बुरी बीमारियों और बुरे बुरे मर्ज़ों से पनाह मांगता हूँ।

लेकिन जब कभी तक्लीफ़ आ गयी तो उसे भी अपने हक़ में रहमत समझा, और उसके ख़त्म करने की भी दुआ मांगी। हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने अपने मवाइज़ में यह क़िस्सा लिखा है कि एक मर्तबा हज़रत हाजी इमदादुल्लाह साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि मजलिस में यह बयान फ़रमा रहे थे कि जितनी तक्लीफ़ें होती हैं ये सब अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से रहमत और इनाम होती हैं। बशर्ते कि बन्दा उसकी क़द्र पहचाने और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजू करे, इस बयान के दौरान एक शख़्स मजलिस में आया, जो कोढ़ का मरीज़ था, और इस बीमारी की वजह से उसका सारा बदन गला हुआ था, मजलिस में आकर हाजी साहिब से कहा कि हज़रत दुआ़ फ़रमा दीजिये कि अल्लाह तआ़ला मेरी यह तक्लीफ़ दूर फ़रमा दे। मौजूद लोग यह सोचने लगे कि अभी तो हज़रत यह बयान फ़रमा रहे थे कि जितनी तक्लीफ़ें होती हैं वे सब अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से इनाम और रहमत होती हैं, और यह शख़्स इस बीमारी के ख़ात्मे की दुआ़ करा रहा है, अब क्या हज़रत हाजी साहिब यह दुआ़ फ़रमायेंगे कि या अल्लाह इस रहमत को दूर कर दीजिये? हज़रत हाजी साहिब ने दुआ़ के लिये हाथ उठाये और फ़रमाया "या अल्लाह! यह बीमारी और तक्लीफ़ जो इस बन्दे को है, अगरचे यह भी आपकी रहमत का उन्वान है, लेकिन हम अपनी कमज़ोरी की वजह से इस रहमत और नेमत के बर्दाश्त करने के क़ाबिल नहीं हैं, इसलिए ऐ अल्लाह इस बीमारी की नेमत को सेहत की नेमत से तब्दील फ़रमा दीजिये।" यह है दीन की समझ जो बुज़ुर्गों की सोहबत से हासिल की जाती है।

हदीस का ख़ुलासा

बहर हाल इस हदीस का ख़ुलासा यह है कि जब अल्लाह तआ़ला किसी बन्दे से मुहब्बत फ़रमाते है तो उसको किसी

आज़माइश में मुब्तला फ़रमा देते हैं। और यह फ़रमाते हैं कि मुझे इस बन्दे का रोना और इसका पुकारना और इसका गिड़गिड़ाना व आह करना अच्छा लगता है। इसलिये हम इसको तक्लीफ़ दे रहे हैं, ताकि यह इस तक्लीफ़ के अन्दर हमें पुकारे और फिर हम उस पुकार के नतीजे में इसके दरजे बुलन्द करें। और इसको आला मक़ाम तक पहुंचायें। अल्लाह तआला हम सब को बीमारी और तक्लीफ़ों से अपनी पनाह में रखे। और अगर तक्लीफ़ आये तो उस पर सब्र करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। उस तक्लीफ़ में अपनी तरफ़ रुजू करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये, आमीन।

तक्लीफ़ों में आजज़ी का इज़हार करना चाहिए

बाज़ बुज़ुर्गों से नक़ल किया गया है कि वे तक्लीफ़ में हाय हाय करते थे, और उस तक्लीफ़ का इज़हार करते थे। अब बज़ाहिर ऐसा मालूम होता है कि तक्लीफ़ पर हाय हाय करना और उसका इज़हार करना तो बेसब्री है, और उस तक्लीफ़ पर शिकवा है कि हमें यह तक्लीफ़ क्यों दी गयी और तक्लीफ़ पर बेसब्री या शिकवा करना दुरुस्त नहीं। इसका जवाब भी इस हदीस से मालूम हुआ कि जो अल्लाह के नेक और मक़बूल बन्दे होते हैं वे शिकायत की वजह से तक्लीफ़ का इज़हार नहीं करते, बल्कि वे फ़रमाते हैं कि मुझे तक्लीफ़ इसी वजह से दी गयी है कि मैं अल्लाह तआला के सामने अपनी शिकस्तगी और बन्दगी का इज़हार करूं, और अपनी आजज़ी का इज़हार करूं और इस तक्लीफ़ पर हाय हाय भी करूं, यह तक्लीफ़ मुझे इसलिये दी गयी है कि मेरी आहें सुनना मक़सूद है, मेरा रोना गिड़गिड़ाना सुनना मक़सूद है। इसलिये इस मौक़े पर बहादुरी का इज़हार करना ठीक नहीं है।

एक बुज़ुर्ग का वाक़िआ

मैंने अपने वालिद माजिद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब

रह्मतुल्लाहि अलैहि से सुना कि एक मर्तबा एक बुज़ुर्ग बीमार पड़ गये, एक दूसरे बुज़ुर्ग उनका हाल पूछने के लिये तशरीफ़ ले गये, उन्होंने जाकर देखा की वह बीमार बुज़ुर्ग "अल्हम्दु लिल्लाह" "अल्हम्दु लिल्लाह" का विर्द कर रहे हैं, उन्होंने फ़रमाया कि आपका यह अमल तो बहुत अच्छा है कि आप अल्लाह का शुक्र अदा कर रहे हैं, लेकिन इस मौके पर थोड़ी सी हाय हाय भी करो, और जब तक हाय हाय नहीं करोगे, शिफ़ा नहीं होगी, इसलिये कि अल्लाह तआला ने आपको यह तक्लीफ़ इसलिये दी है कि आप अल्लाह तआला के हुज़ूर आह व ज़ारी भी करें और बन्दगी का तकाज़ा भी यह है कि आदमी अल्लाह तआला के सामने बहादुर न बने, बल्कि शकिस्तगी और कमज़ोरी का इज़हार करे, और यह कहे कि या अल्लाह मैं आजिज़ और कमज़ोर हूं इस बीमारी के लायक नहीं हूं मेरी यह बीमारी दूर फ़रमा दीजिये। मेरे बड़े भाई जनाब ज़की कैफ़ी साहिब मरहूम बड़े अच्छे शेर कहा करते थे, एक शेर में उन्होंने इस मज़मून को बड़े ख़ूबसूरत अन्दाज़ में बयान किया है फ़रमायाः

इस कद्र भी ज़ब्ते ग़म अच्छा नहीं
तोड़ना है हुस्न का पिन्दार क्या?

यानी जब अल्लाह तआला तुम्हें कोई तक्लीफ़ दे रहे हैं तो उस तक्लीफ़ पर इस कद्र ज़ब्त (बर्दाश्त) करना कि आदमी के मुंह से आह भी न निकले और तक्लीफ़ का ज़र्रा बराबर भी इज़हार न हो, यह भी कोई अच्छी बात नहीं। क्या इसके ज़रिये अल्लाह तआला के सामने बहादुरी दिखाना मकसूद है, कि आपको जो करना है कर लें हम तो वैसे के वैसे ही रहेंगे "अल्लाह की पनाह" इसलिये अल्लाह तआला के सामने आजज़ी का इज़हार करना चाहिये।

एक इबरत हासिल करने वाला वाकिआ

हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अलैहि ने एक बुज़ुर्ग का वाकिआ लिखा है कि एक मर्तबा किसी हाल में उनके मुंह से यह जुम्ला

निकल गया, जिसमें अल्लाह तआला से ख़िताब करते हुए कहा कि:

لَيْسَ لِیْ فِیْ سِوَاكَ حَظٌّ
فَكَيْفَ مَاشِئْتَ فَاخْتَبِرْنِیْ

ऐ अल्लाह, आपके अ़लावा मुझे किसी की ज़ात में किसी काम में कोई मज़ा नहीं है, आप जिस तरह चाहें मुझे आज़मा कर देख लें। "अल्लाह की पनाह" गोया कि अल्लाह तआला को आज़माने की दावत दे दी, नतीजा यह हुआ कि उनका पैशाब बन्द हो गया, अब मसाना पैशाब से भरा हुआ है लेकिन निकलने का रास्ता नहीं। कई दिन इसी हालत में गुज़र गये। आख़िरकार अपनी ग़लती का एहसास हुआ कि कितनी ग़लत बात मेरे मुंह से निकल गई थी, उन बुज़ुर्ग के पास छोटे छोटे बच्चे पढ़ने आया करते थे, इस हालत में वह उन बच्चों से कहते कि

اُدْعُوْا لِعَمِّكُمُ الْكَذَّابِ

यानी अपने झूठे चचा के लिये अल्लाह तआला से दुआ़ करो, कि मुझे इस बीमारी से निकाल दे।

इसलिये कि उसने झूठा दावा कर दिया था। अल्लाह तआला ने दिखा दिया कि तुम यह दावा करते हो कि किसी चीज़ में कोई मज़ा नहीं है। अरे तुमको तो पैशाब के अन्दर मज़ा है। अल्लाह तआला के सामने बहादुरी नहीं चला करती।

तक्लीफ़ों में हुज़ूर सल्ल. का तरीक़ा

इसलिए न तो तक्लीफ़ पर शिकवा हो और न तक्लीफ़ पर बहादुरी का इज़्हार हो। बल्कि दोनों के दरमियान एतिदाल और सुन्नत का रास्ता इख़्तियार करना चाहिये। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब वफ़ात की बीमारी की तक्लीफ़ में थे, हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि उस मौक़े पर आप अपना मुबारक हाथ बार बार पानी में भिगोते और चेहरे पर मलते थे और

उस तक्लीफ़ का इज़हार फ़रमाते थे। और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने उस मौक़े पर फ़रमाया, मेरे वालिद को कितनी तक्लीफ़ हो रही है। जवाब में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया आजके दिन के बाद तेरे बाप पर कोई तक्लीफ़ नहीं होगी। देखिये इसमें आपने उस तक्लीफ़ का इज़हार फ़रमाया। लेकिन शिकवा नहीं फ़रमाया बल्कि अगली मन्ज़िल के राहत व आराम की तरफ़ इशारा फ़रमा दिया। यह है सुन्नत तरीक़ा।

जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साहबज़ादे हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु अ़न्हु का इन्तिक़ाल हुआ तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

"انا بفراقك يا ابراهيم لمحزونون"

ऐ इब्राहीम! हमें तुम्हारी जुदाई पर बड़ा सदमा है। आपकी बेटी हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अ़न्हा का बच्चा आपकी गोद में है, आपकी गोद में उसकी जान निकल रही है, आपकी आंखों से आंसू जारी हैं। इसमें बन्दगी का इज़हार है, कि ऐ अल्लाह फ़ैसला तो आपका बर्हक़ है, लेकिन आपने यह तक्लीफ़ इसलिये दी है कि मैं आपके सामने आ़जज़ी का इज़हार करूं और आंसू बहाऊं, रोना गिड़गिड़ाना करूं।

इसलिए सुन्नत यह है कि गिला शिकवा भी न हो और बहादुरी का इज़हार भी न हो, बल्कि अल्लाह तआ़ला के सामने हाज़िर होकर यह कहे कि या अल्लाह मेरी इस तक्लीफ़ को दूर फ़रमा दें, यही सुन्नत तरीक़ा है, और यही इस हदीस का मफ़हूम (मतलब) है। अल्लाह तआ़ला इसकी सही समझ हमको अ़ता फ़रमाये और इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये, आमीन।

واٰخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين

हलाल रोज़गार न छोड़ें

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَاوَسَنَدَنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا، اَمَّا بَعْدُ:

قال رسو ل الله صلى الله عليه وسلم: من رزق فى شىء فليلزمه، من جعلت معيشة فى شىء فلا ينتقل عنه حتى يتغير عليه۔ (كنزالعمال)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि: जिस शख़्स को जिस काम के ज़रिए रिज़्क़ मिल रहा हो, उसको चाहिए कि वह उस काम में लगा रहे, अपने इख़्तियार और मर्ज़ी से बिला वजह उसको न छोड़े। और जिस शख़्स का रोज़गार अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से किसी चीज़ के साथ वाबस्ता कर दिया हो तो वह शख़्स उस रोज़गार को छोड़ कर दूसरी तरफ़ मुन्तक़िल न हो, जब तक कि वह रोज़गार ख़ुद से बदल जाए, या उस रोज़गार में ख़ुद से ना मुवाफ़क़त पैदा हो जाए।

रिज़्क़ का ज़रिया अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है

जब अल्लाह तबारक व तआ़ला ने किसी शख़्स के लिए रिज़्क़ के हासिल होने का एक ज़रिया मुक़र्रर फ़रमा दिया, वह शख़्स उसमें लगा हुआ है और उसके ज़रिये उसको रिज़्क़ मिल रहा है तो अब बिला वजह उस रोज़गार को छोड़ कर अलग न हो, बल्कि उसमें लगा रहे उस वक़्त तक कि वह ख़ुद उसके हाथ से निकल जाए या ऐसी ना मुवाफ़क़त पैदा हो जाए कि अब आईन्दा उसको जारी रखना परेशानी का सबब होगा। इसलिये कि जब अल्लाह तआ़ला ने किसी ज़रिये से रिज़्क़ वाबस्ता कर दिया है तो यह अल्लाह जल्ल शानुहू

की अता है, और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से बन्दे को उस काम में लगाया गया है और उस से वाबस्ता किया गया है, क्योंकि वैसे तो रिज़्क़ के हासिल होने के हज़ारों रास्ते और तरीक़े हैं लेकिन जब अल्लाह तआला ने किसी शख़्स के लिए किसी ख़ास तरीक़े को रिज़्क़ हासिल करने का सबब बना दिया तो यह अल्लाह की जानिब से है, अब इस अल्लाह तआ़ला की जानिब के तरीक़े को अपनी तरफ़ से बिला वजह न छोड़े।

रोज़गार और रोज़ी का ख़ुदावन्दी निज़ाम

देखिए: अल्लाह तआ़ला ने इस दुनिया में रोज़गार और रोज़ी का एक अ़जीब निज़ाम बनाया है जिसको हमारी अ़क़्ल नहीं पहुंच सकती। अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है:

"نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَعِيْشَتَهُمْ فِى الْحَيَاةِ الدُّنْيَا" (الزخرف:٤٣)

यानी हमने दुनियावी ज़िन्दगी में उनकी रोज़ी तक़सीम की है। वह इस तरह कि किसी इन्सान के दिल में हाजत पैदा की और दूसरे इन्सान के दिल में उस हाजत को पूरा करने का तरीक़ा डाल दिया। ज़रा ग़ौर करें कि इन्सान की हाजतें और ज़रूरतें कितनी हैं? रोटी की इसे ज़रूरत है, कपड़े की इसे ज़रूरत है, मकान की इसे ज़रूरत है, घर के साज़ व सामान और बर्तनों की इसे ज़रूरत है। गोया कि इन्सान को ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए बेशुमार चीज़ों की ज़रूरत है। सवाल यह है कि क्या पूरी दुनिया के इन्सानों ने मिलकर कोई कान्फ़्रंस की थी और उस कान्फ़्रंस में इन्सान को पेश आने वाली ज़रूरतों को शुमार किया था। और फिर आपस में यह फ़ैसला किया था कि इतने लोग कपड़ा बनायें, और इतने इन्सान बर्तन बनायें। इतने इन्सान जूते बनायें। इतने इन्सान गेहूं पैदा करें और इतने इन्सान चावल पैदा करें वग़ैरह। अगर तमाम इन्सान मिलकर कान्फ़्रंस करके यह तय करना चाहते तब भी यह इन्सान के बस में नहीं था कि वह इन्सानों की तमाम ज़रूरतों का इहाता कर लें, और फिर

आपस में कामों की तक़सीम करें कि तुम यह करना, तुम फ़लां चीज़ की दुकान करना और तुम फ़लां चीज़ की दुकान करना। यह तो अल्लाह तआ़ला का क़ायम किया हुआ निज़ाम है कि उसने एक इन्सान के दिल में यह डाल दिया कि तुम गेहूं उगाओ, दूसरे इन्सान के दिल में यह डाल दिया कि तुम आटे की चक्की लगाओ, एक के दिल में यह डाल दिया कि चावल पैदा करो। एक इन्सान के दिल में यह डाल दिया कि तुम घी की दुकान लगाओ। इस तरह अल्लाह तआ़ला ने हर शख़्स के दिल में उन ज़रूरतों को डाल दिया जो तमाम इन्सानों की ज़रूरतें हैं। चुनांचे जब आप किसी ज़रूरत को पूरा करना चाहें और उस ज़रूरत को पूरा करने के लिए आपके पास पैसे भी हों तो बाज़ार में आपकी वह ज़रूरत इन्शा अल्लाह ज़रूर पूरी हो जायेगी।

रिज़्क़ को तक़सीम करने का आश्चर्य जनक वाक़िआ़

मेरे बड़े भाई जनाब ज़की कैफ़ी साहिब अल्लाह तआ़ला उनकी मग़फ़िरत फ़रमाए, आमीन। हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के सोहबत याफ़्ता थे। एक दिन उन्होंने फ़रमाया कि तिजारत में कभी कभी अल्लाह तआ़ला ऐसे ऐसे मन्ज़र दिखाता है कि इन्सान अल्लाह तआ़ला के रब होने और राज़िक़ होने के आगे सज्दे में गिरे बग़ैर नहीं रह सकता। लाहौर में उनकी दीनी किताबों की दुकान "इदारा-ए-इस्लामियात" के नाम से है। वहां बैठा करते थे। फ़रमाया कि एक दिन जब मैंने सुबह को घर से दुकान जाने का इरादा किया तो देखा कि शदीद बारिश शुरू हो गई। उस वक़्त मेरे दिल में ख़्याल आया कि ऐसी शदीद बारिश हो रही है, इस वक़्त सारा निज़ामे ज़िन्दगी तलपट है, ऐसे में दुकान जाकर क्या करूंगा? किताब ख़रीदने के लिए कौन दुकान पर आयेगा? इसलिये कि ऐसे वक़्त में अव्वल तो लोग घर से बाहर नहीं निकलते, अगर निकलते भी हैं तो शदीद ज़रूत के लिए निकलते हैं, किताब और ख़ास तौर

पर दीनी किताब तो ऐसी चीज़ है कि जिस से न तो भूख मिट सकती है, न कोई दूसरी ज़रूरत पूरी हो सकती है, और जब इन्सान की दुनियावी तमाम ज़रूरतें पूरी हो जाएं तब उसके बाद किताब का ख़्याल आता है। इसलिये ऐसे में कौन ग्राहक किताब ख़रीदने आयेगा? और मैं दुकान पर जाकर क्या करूंगा? लेकिन साथ ही दिल में यह ख़्याल आया कि मैंने तो अपने रोज़गार के लिए एक तरीक़ा इख़्तियार किया है और अल्लाह तआला ने इस तरीक़े को मेरे लिए रिज़्क़ के हासिल होने का एक ज़रिया बनाया है, इसलिये मेरा काम यह है कि मैं जाकर दुकान खोल कर बैठ जाऊं, चाहे कोई ग्राहक आए या न आए। बस मैंने छतरी उठाई और दुकान की तरफ़ रवाना हो गया, जाकर दुकान खोली और कुरआन शरीफ़ की तिलावत शुरू कर दी, इस ख़्याल से कि ग्राहक तो कोई आयेगा नहीं। थोड़ी देर के बाद देखा कि लोग अपने ऊपर बरसाती डाल कर आ रहे हैं और किताबें ख़रीद रहे हैं, और ऐसी किताबें ख़रीद रहे हैं कि जिनकी बज़ाहिर वक़्ती ज़रूरत भी नज़र नहीं आ रही थी। चुनांचे जितनी बिक्री और दिनों में होती थी तक़रीबन उतनी ही बिक्री उस बारिश में हुई। मैं सोचने लगा कि या अल्लाह! अगर कोई इन्सान अक़्ल से सोचे तो यह बात समझ में नहीं आती कि इस आंधी और तूफ़ान वाली तेज़ बारिश में कौन दीनी किताबें ख़रीदने आयेगा? लेकिन अल्लाह तआला ने उनके दिलों में यह बात डाली कि वे जाकर किताब ख़रीदें। और मेरे दिल में यह डाला कि तुम जाकर दुकान खोलो। मुझे पैसों की ज़रूरत थी और उनको किताब की ज़रूरत थी, और दोनों को दुकान पर जमा कर दिया। उनको किताब मिल गई और मुझे पैसे मिल गये। यह निज़ाम सिर्फ़ अल्लाह तआला बना सकते हैं, कोई शख़्स यह चाहे कि मैं मन्सूबे के ज़रिये और कान्फ़्रंस करके यह निज़ाम बना लूं, आपसी मन्सूबा बन्दी करके बना लूं तो कभी सारी उम्र नहीं बना सकता।

रात को सोने और दिन में काम करने का फ़ितरी निज़ाम

मेरे वालिद हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रह्मतुल्लाहि अलैहि फ़रमाया करते थे कि ज़रा इस बात में ग़ौर करो कि सारे इन्सान रात के वक़्त सोते हैं और दिन के वक़्त काम करते हैं। और रात के वक़्त नींद आती है और दिन के वक़्त नींद नहीं आती। तो क्या सारी दुनिया के इन्सानों ने मिलकर कोई इन्टर नेशनल कान्फ़्रेंस की थी जिसमें इन्सानों ने यह फ़ैसला किया था कि दिन के वक़्त काम करेंगे और रात के वक़्त सोया करेंगे? ज़ाहिर है कि ऐसा नहीं हुआ? बल्कि अल्लाह तआला ने हर इन्सान के दिल में यह बात डाल दी कि रात के वक़्त सो जाओ और दिन के वक़्त काम करो।

"وَجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا"

अगर यह चीज़ इन्सान के इख़्तियार में दे दी जाती कि वह जब चाहे काम करे और जिस वक़्त चाहे सो जाए तो इसका नतीजा यह होता कि कोई शख़्स कहता कि मैं दिन को सोऊंगा और रात को काम करूंगा, कोई कहता कि मैं शाम को सोऊंगा और सुबह के वक़्त काम करूंगा, कोई कहता कि मैं सुबह के वक़्त सोऊंगा और शाम के वक़्त काम करूंगा। फिर इस इख़्तिलाफ़ का नतीजा यह होता कि एक वक़्त में एक शख़्स सोना चाह रहा है और दूसरा शख़्स उसी वक़्त खट खट रहा है, और अपना काम कर रहा है, और उसकी वजह से दूसरे की नींद ख़राब होती। इस तरह दुनिया का निज़ाम ख़राब हो जाता। यह तो अल्लाह तआला का फ़ज़्ल है कि उसने हर इन्सान के दिल में यह बात डाल दी कि दिन के वक़्त काम करो और रात के वक़्त आराम करो। और इसको फ़ितरत का एक तक़ाज़ा बना दिया।

रिज़्क़ का दरवाज़ा बन्द मत करो

बिल्कुल इसी तरह अल्लाह तआ़ला ने इन्सान की रोज़ी का निज़ाम भी ख़ुद बनाया है और हर एक के दिल में यह डाल दिया कि तुम यह काम करो और तुम यह काम करो, इसलिये जब तुमको किसी काम पर लगा दिया गया और तुम्हारा रिज़्क़ एक ज़रिये से वाबस्ता कर दिया गया तो यह काम ख़ुद से नहीं हो गया बल्कि किसी करने वाले ने किया, और किसी मस्लिहत से किया, इसलिये अब बिला वजह उस रोज़ी के उस हलाल ज़रिये को छोड़ कर कोई और ज़रिया इख़्तियार करने की फ़िक्र मत करो, क्या मालूम कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे लिए उसी ज़रिये में कोई मस्लिहत रखी हो और तुम्हारे उस काम में लगने की वजह से न जाने कितने लोगों के काम निकल रहे हों, और तुम उस वक़्त पूरे रोज़ी के निज़ाम का एक हिस्सा और पुर्ज़ा बने हुए हो, इसलिये अपनी तरफ़ से उस ज़रिये को मत छोड़ो। लेकिन अगर किसी वजह से वह नौकरी या तिजारत ख़ुद ही छूट जाए या उसके अन्दर ना मुवाफ़क़त पैदा हो जाए। जैसे दुकान पर हाथ पर हाथ रख कर बैठा है और कोशिश के बावजूद आमदनी बिल्कुल नहीं हो रही है, तो इस सूरत में बेशक उस ज़रिये को छोड़ कर दूसरा ज़रिया इख़्तियार कर ले। लेकिन जब तक कोई ऐसी सूरत पैदा न हो उस वक़्त तक ख़ुद से रिज़्क़ का दरवाज़ा बन्द न करे।

यह अल्लाह की अ़ता है

हमारे हज़रत डा. अ़ब्दुल हई साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि यह शेर पढ़ा करते थे कि:

चीज़े कि बे तलब रसद आं दादा ख़ुदा अस्त
ऊरा तो रद मकुन कि फ़रिस्तादा ख़ुदा अस्त

यानी जब अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से कोई चीज़ तलब के बग़ैर मिल जाए तो उसको अल्लाह की तरफ़ से समझ कर उसको

रद्द न करो, क्योंकि वह अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से भेजी हुई है।

बहर हाल, अल्लाह तआ़ला ने जिस ज़रिये से तुम्हारा रिज़्क़ वाबस्ता किया है उस से लगे रहो, जब तक ख़ुद ही हालात न बदल जायें।

हर मामला अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है

इस हदीस के तहत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं किः

"अहले तरीक़ ने इसी पर तमाम मामलात को जो अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से बन्दे के साथ पेश आते हैं, क़्यास किया है, जिनकी पहचान, शऊर और फ़िरासत ख़ुसूसन वाक़िआत से हो जाती है, उस पहचान के बाद वे उनमें तब्दीली ख़ुद से नहीं करते, और यह बात क़ौम के नज़्दीक आम समझ में आने वाली बल्कि महसूस होने वाली है, जिसकी वे अपने हालात में रियायत रखते हैं।"

मतलब यह है कि इस हदीस में जो बात फ़रमाई गयी है वह अगरचे बराहे रास्त रिज़्क़ से मुताल्लिक़ है, लेकिन सूफ़िया–ए–किराम इस हदीस से यह मसला भी निकालते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने किसी बन्दे के साथ जो भी मामला कर रखा है, जैसे इल्म में, ख़ुदा के साथ ताल्लुक़ात में, या किसी और चीज़ में अल्लाह तआ़ला ने उसके साथ कोई और मामला कर रखा है, तो वह शख़्स उसको अपनी तरफ़ से बदलने की कोशिश न करे बल्कि उस पर क़ायम रहे।

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने ख़िलाफ़त क्यों नहीं छोड़ी?

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु की शहादत का जो मश्हूर वाक़िआ है कि उनकी ख़िलाफ़त के आख़री दौर में उनके ख़िलाफ़ एक तूफ़ान खड़ा हो गया। और उसकी वजह भी ख़ुद हज़रत उस्मान ग़नी ने बयान फ़रमाई कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम

ने मुझ से फ़रमाया था कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें एक कुर्ता पहनायेंगे, और तुम अपने इख़्तियार से उस कुर्ते को मत उतारना, इसलिये यह ख़िलाफ़त जो अल्लाह तआ़ला ने मुझे अ़ता फ़रमाई है, यह अल्लाह ने मुझे ख़िलाफ़त का कुर्ता पहनाया है, मैं इसको अपने इख़्तियार से नहीं उतारूंगा। चुनांचे आपने न तो ख़िलाफ़त छोड़ी और न ही बाग़ियों के ख़िलाफ़ तलवार उठाई, और न उनको ख़ात्मा करने का हुक्म दिया। हालांकि आप अमीरुल मोमिनीन और ख़लीफ़ा थे, आपके पास लश्कर और फ़ौज थी, आप चाहते तो बाग़ियों के ख़िलाफ़ मुक़ाबला कर सकते थे, लेकिन आपने फ़रमाया कि चूंकि ये बाग़ी और हमला करने वाले मुसलमान हैं और मैं नहीं चाहता कि मुसलमानों के ख़िलाफ़ तलवार उठाने वाला पहला शख़्स मैं हो जाऊं। चुनांचे आपने न तो ख़िलाफ़त छोड़ी और न ही बाग़ियों का मुक़ाबला किया, बल्कि अपने घर के अन्दर ही बन्दी होकर बैठ गये, यहां तक की अपनी जान कुरबान कर दी और शहादत का प्याला पी लिया। शहादत क़बूल कर ली लेकिन ख़िलाफ़त नहीं छोड़ी। यह वही बात है जिसकी तरफ़ हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने इशारा फ़रमाया कि जब अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे ज़िम्मे एक काम सुपुर्द कर दिया तो उसमें लगे रहो, अपनी तरफ़ से उसको मत छोड़ो।

मख़्लूक़ की ख़िदमत का ओहदा अल्लाह की अ़ता है

बहर हाल, अल्लाह तआ़ला ने जब दीन की ख़िदमत का कोई रास्ता तुम्हारे लिए तज्वीज़ फ़रमा दिया और वह तुम्हारी तलब के बग़ैर मिला है तो अब बिला वजह उसको न छोड़ो, उसके लिए उसमें नूर और बर्कत है। इसी तरह अहले तरीक़ के साथ अल्लाह तआ़ला के जितने हालात और मामलात होते हैं उनको चाहिए कि वे उन हालात को अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से समझ कर क़बूल कर लें, इसी तरह कभी कभी किसी शख़्स के साथ अल्लाह तआ़ला का ख़ास मामला होता है, जैसे एक शख़्स की तरफ़ लोग अपनी मदद और उसकी मदद के लिए रुजू करते हैं, या दीन के मामलात में उसकी

तरफ़ रुजू करते हैं, या दुनियावी मामलात में उस से मश्विरा लेने के लिए रुजू करते हैं, तो हक़ीक़त में यह ऐसा ओ़हदा है जो अल्लाह तआ़ला ने उसको अ़ता फ़रमाया है, इसलिये कि अल्लाह तआ़ला ने ही लोगों के दिलों में यह बात डाली कि आपस के मामलात में उस शख़्स से मश्विरा करो, या ज़रूरत के मौक़े पर उस शख़्स से मदद लो, और झगड़े हों तो उस शख़्स से जाकर फ़ैसला कराओ। लोगों के दिलों में यह बात ख़ुद से पैदा नहीं हुई, बल्कि अल्लाह तआ़ला ने लोगों के दिलों में ये बातें डाल दीं। तो यह ओ़हदा अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से उसको मिला है। अब अपनी तरफ़ से उसको ख़त्म न करे, इसलिये कि यह अल्लाह की तरफ़ से है और इस मख़्लूक़ की ख़िदमत को अल्लाह की तरफ़ से समझ कर करता रहे।

जैसे कभी कभी अल्लाह तआ़ला ख़ानदान में किसी शख़्स को यह मक़ाम और ओ़हदा अ़ता फ़रमा देते हैं कि जहां ख़ानदान में कोई झगड़ा हुआ या कोई अहम मामला करना है तो लोग फ़ौरन उस शख़्स के पास जाते हैं और उस से मश्विरा करते हैं। अब कभी कभी वह शख़्स इस बात से घबराता है कि दुनिया की सारी बातें और सारे झगड़े मेरे सर डाले जाते हैं। हक़ीक़त में यह घबराने की चीज़ नहीं है, इसलिये कि लोगों का आपकी तरफ़ रुजू करना यह इस बात की दलील है कि यह अल्लाह की तरफ़ से लोगों के दिलों में डाला गया है कि उसकी तरफ़ रुजू करो, और यह ओ़हदा अल्लाह की तरफ़ से अ़ता हुआ है।

बजा कहे जिसे आ़लम उसे बजा समझो
ज़बाने ख़ल्क़ को नक़्क़ारा-ए-ख़ुदा समझो

इसलिये उस ओ़हदे से बे परवाई मत बरतो, बल्कि उसको ख़ुशी से क़बूल कर लो कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से मुझे यह ख़िदमत सोंपी गयी है।

हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम का वाक़िआ

हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम को देखिए कि एक बार आप नहा

रहे थे, नहाने के दौरान आपके ऊपर सोने के तितलियां गिरनी शुरू हो गयीं, चुनांचे हज़रत अय्यूब अ़लै० ने नहाना छोड़ दिया और तितलियां जमा करनी शुरू कर दीं। अल्लाह तआ़ला ने पूछा कि ऐ अय्यूब (अ़लै०) क्या हमने तुमको मालदार नहीं किया, और तुम्हें दौलत नहीं दी? फिर भी तुम इस सोने को जमा करने की तरफ़ दौड़ रहे हो। जवाब में हज़रत अय्यूब अ़लै० ने फ़रमायाः या अल्लाह! बेशक आपने इतना माल व दौलत अ़ता फ़रमाया है कि मैं उसका शुक्र अदा नहीं कर सकता, लेकिन जो दौलत आपने अपनी तरफ़ से मेरे मांगने के बग़ैर अ़ता फ़रमा रहे हैं, उस से मैं कभी बेनियाज़ी का इज़हार नहीं कर सकता, आप मेरे ऊपर सोने की तितलियां बरसा रहे हैं और मैं यह कह दूं कि मुझे ज़रूरत नहीं है, जब आप दे रहे हैं तो मेरा काम यह है कि मैं मोहताज बनकर उनकी तरफ़ जाऊं और उनको हासिल करूं।

बात असल में यह है कि हज़रत अय्यूब अ़लै० की नज़र में वे तितलियां मक़सूद नहीं थीं और न वह सोना मक़सूद था जो आसमान से गिर रहा था, बल्कि उनकी नज़र उस देने वाली ज़ात पर थी कि किस हाथ से यह दौलत मिल रही है, और जब देने वाली ज़ात इतनी अ़ज़ीम हो तो इन्सान को आगे बढ़ कर और मोहताज बनकर लेना चाहिए। वर्ना उस सोने की तलब नहीं थी।

ईदी ज़्यादा मांगने का वाक़िआ़

इसकी मिसाल मैं यह दिया करता हूं कि मेरे वालिद माजिद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि सब औलादों को ईद के मौक़े पर ईदी दिया करते थे, हम सब भाई हर साल ईद के मौक़े पर जाकर उनसे मुतालबा किया करते थे कि पिछली ईद पर आपने बीस रुपये दिए थे, इस साल मंहगाई में इज़ाफ़ा हो गया है इसलिये इस साल पच्चीस रुपये दीजिए। तो हर साल बढ़ा कर मांगते थे कि बीस की जगह पच्चीस और पच्चीस की जगह तीस

रुपये और तीस के पैंतीस रुपये मांगते, जवाब में हज़रत वालिद साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते कि तुम चोर डाकू लोग हो, और हर साल तुम ज़्यादा मांगते हो। देखिए: उस वक़्त हम सब भाई रोज़गार पर थे, और हज़ारों कमाने वाले थे, लेकिन जब बाप के पास जाते तो रग़बत का इज़्हार करके उनसे मांगते, क्यों? बात हक़ीक़त में यह थी कि नज़र उन पैसों की तरफ़ नहीं थी जो बीस, पच्चीस और तीस रुपये की शक्ल में मिल रहे थे, बल्कि नज़र उस देने वाले हाथ की तरफ़ थी कि इस हाथ से जो कुछ मिलेगा उसमें जो बर्कत और नूर होगा हज़ारों और लाखों में वह बर्कत और नूर हासिल नहीं हो सकता। जब दुनिया के मामूली ताल्लुक़ात में इन्सान का यह हाल हो सकता है तो अल्लाह तआला जो तमाम हाकिमों के हाकिम हैं, उनके साथ ताल्लुक़ में क्या हाल होगा? इसलिये जब अल्लाह तआला से मांगे तो मोहताज बनकर मांगे, और जब अल्लाह तआला की तरफ़ से अता हो तो मोहताज बनकर उसको ले ले। उस वक़्त बेनियाज़ी इख़्तियार न करे।

चूं तमा ख़्वाहद ज़-मन सुलताने दीं
ख़ाक बर फ़र्क़े क़नाअत बाद अज़ीं

जब वह यह चाह रहे हैं कि उनके सामने लालच और हिर्स ज़ाहिर करूं तो ऐसे में क़नाअत के सर पर ख़ाक। उस वक़्त तो उसमें लज़्ज़त और मज़ा है कि आदमी लालची बनकर अल्लाह तआला के दरबार में हाज़िर होकर मांगे और जो मिले उसको क़ुबूल कर ले।

इसलिये जिस काम पर अल्लाह तआला ने लगा दिया, जो ओहदा अल्लाह तआला ने अता फ़रमा दिया, यह उनकी तरफ़ से अता है, उसको अपनी तरफ़ से मत छोड़ो। हां अगर हालात ऐसे पैदा हो जाएं जिनकी वजह से आदमी छोड़ने पर मजबूर हो जाए या कोई अपना बड़ा कह दे, जैसे छोड़ने के लिए किसी बड़े से मश्विरा किया और उसने यह कह दिया कि अब तुम्हारे लिए उसको छोड़

देना ही मुनासिब है तो उस वक़्त छोड़ दो।

ख़ुलासा

ख़ुलासा यह है कि अपनी ख़ास तलब के बग़ैर जो कुछ मिले वह अल्लाह की तरफ़ से है, उसकी नाक़द्री मत करो।

चीज़े कि बे तलब रसद आं दादा ख़ुदा अस्त
ऊरा तू रद्द मकुन कि फ़रिस्तादा ख़ुदा अस्त

वह चीज़ अल्लाह तआला की तरफ़ से भेजी हुई है उसको रद्द मत करो। अल्लाह तआला बचाए! कभी कभी उस रद्द करने और बेनियाज़ी का इज़हार करने से अन्जाम बहुत ख़राब हो जाता है, अल्लाह तआला अपनी पनाह में रखे। फिर अल्लाह तआला की तरफ़ से वबाल आ जाता है। इसलिये जो चीज़ तलब के बग़ैर अल्लाह तआला की तरफ़ से आ जाए या ऐसे ख़ुदा के बनाये हुए अस्बाब के ज़रिये यानी ऐसे अस्बाब के ज़रिये कोई चीज़ मिल गई जिसका पहले वहम व गुमान भी नहीं था, बशर्ते कि वह हलाल और जायज़ हो तो अल्लाह की तरफ़ से समझ कर उसको क़बूल कर लेना चाहिए। इसी तरह जिस ख़िदमत पर अल्लाह तआला किसी को लगा दे तो उसको उस ख़िदमत पर लगा रहना चाहिए, उस ख़िदमत से अपने तौर पर अलग होने की कोशिश न करे, इसलिये कि अल्लाह तआला ने तुम्हें उस ख़िदमत पर लगा दिया है और तुम से वह ख़िदमत ले रहे हैं। इसी तरह अगर तुम्हें अल्लाह तआला ने तुम्हारी तलब के बग़ैर कोई मक़ाम और ओहदा अता फ़रमा दिया, जैसे अल्लाह तआला ने तुम्हें सरदार बना दिया और लोग तुम्हें अपना लीडर समझते हैं तो समझ लो कि यह अल्लाह तआला ने एक ख़िदमत तुम्हारे ज़िम्मे सुपुर्द की है, तुम्हें उस ख़िदमत का हक़ अदा करना है। लेकिन अपने बारे में यह ख़्याल करो कि जहां तक मेरी ज़ात का ताल्लुक़ है तो मैं न तो लीडर बनने के लायक़ हूं और न सरदार बनने के लायक़ हूं, लेकिन चूंकि अल्लाह तआला ने मुझे इस ख़िदमत पर लगा दिया है इसलिये

इस ख़िदमत पर लगा हुआ हूं। अल्लाह तआ़ला हम सब को दीन की सही समझ अ़ता फ़रमाए और इन बातों पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, आमीन।

واٰخر دعوانا ان الحمد للہ رب العالمین

सूदी निज़ाम की ख़राबियां

और उसका विकल्प

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَسَنَدَنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا، اَمَّا بَعْدُ:

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ:

يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِي الصَّدَقَاتِ۔ (سورة البقرة:٢٧٦)

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمُ وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ وَنَحْنُ عَلٰى ذٰلِكَ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ وَالشَّاكِرِيْنَ۔ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔

पश्चिमी दुनिया के मुसलमानों की मुश्किलात

मेरे मोहतरम भाईयो और बहनो! आजकी मज्लिस के लिए जो मौज़ू (विषय) तज्वीज़ किया गया है वह "रिबा" से मुताल्लिक़ है। जिसको उर्दू में "सूद" और अंग्रेज़ी में Usury या Interest कहा जाता है। और ग़ालिबन इस मौज़ू को इख़्तियार करने का मक़सद यह है कि यों तो सारी दुनिया में इस वक़्त सूद का निज़ाम चला हुआ है। लेकिन ख़ास तौर पर पश्चिमी दुनिया में जहां आप हज़रात रहते हैं, वहां ज़्यादातर रोज़गार की सरगर्मियां सूद की बुनियाद पर चल रही हैं। इसलिये मुसलमानों को क़दम क़दम पर यह मसला दरपेश होता है कि वे किस तरह मामलात करें और सूद से किस तरह छुटकारा हासिल करें। और आजकल मुख़्तलिफ़ क़िस्म की ग़लत फ़हमियां भी लोगों के दरमियान फैलाई जा रही हैं कि आजकल रोज़गार की

ज़िन्दगी में जो Interest चल रहा है वह हक़ीक़त में हराम नहीं है इसलिये कि यह उस "रिबा" की तारीफ़ में दाख़िल नहीं होता जिसको क़ुरआने करीम ने हराम क़रार दिया था। इन तमाम बातों को मद्देनज़र रखते हुए मुझे इस वक़्त यह मौज़ू दिया गया है कि मैं Interest के मौज़ू पर जो बुनियादी मालूमात हैं वे क़ुरआने करीम व सुन्नत और मौजूदा हालात की रोशनी में आपके सामने पेश करूं।

सूदी मामला करने वालों के लिए ऐलाने जंग

सब से पहली बात समझने की यह है कि "सूद" को क़ुरआने करीम ने इतना बड़ा गुनाह क़रार दिया है कि शायद किसी और गुनाह को इतना बड़ा गुनाह क़रार नहीं दिया। जैसे शराब पीना, सुअर खाना, ज़िना कारी, बदकारी वग़ैरह के लिए क़ुरआने करीम में वह अल्फ़ाज़ इस्तेमाल नहीं किए गये जो "सूद" के लिए इस्तेमाल किए गए हैं, चुनाचें फ़रमाया कि:

"يايها الذين أمنوا اتقوا الله وذروا ما بقى من الربا ان كنتم مؤمنين، فان لم تفعلوا فأذنوا بحرب من الله ورسوله" (سورة البقرة:٢٧٦)

(तर्जुमा) ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला से डरो, और "सूद" का जो हिस्सा भी रह गया हो उसको छोड़ दो। अगर तुम्हारे अन्दर ईमान है। अगर तुम "सूद" को नहीं छोड़ोगे, यानी सूद के मामलात करते रहोगे तो अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से ऐलाने जंग सुन लो "यानी उनके लिए अल्लाह तआला की तरफ़ से लड़ाई का ऐलान है। यह ऐलाने जंग अल्लाह तआला की तरफ़ से किसी भी गुनाह पर नहीं किया गया। चुनांचे जो लोग शराब पीते हैं उनके बारे में यह नहीं कहा गया कि उनके ख़िलाफ़ ऐलाने जंग है, या जो सुअर खाते हैं उनके ख़िलाफ़ ऐलाने जंग है, और न यह कहा गया कि जो "ज़िना" करते हैं उनके ख़िलाफ़ ऐलाने जंग है। लेकिन "सूद" के बारे में फ़रमाया कि जो लोग सूद को नहीं छोड़ते उनके लिए ऐलाने जंग है। इतनी सख़्त वईद इस पर वारिद हुई है। अब

सवाल यह है कि इस पर इतनी संगीन और सख़्त वईद क्यों है? इसकी तफ़सील इन्शा अल्लाह आगे मालूम हो जायेगी।

सूद किसको कहते हैं?

लेकिन इस से पहले समझने की बात यह है कि "सूद" किसको कहते हैं? "सूद" क्या चीज़ है इसकी तारीफ़ क्या है? जिस वक़्त कुरआने करीम ने सूद को हराम क़रार दिया उस वक़्त अ़रब वालों में "सूद" का लेन देन परिचित और मशहूर था। और उस वक़्त "सूद" इसे कहा जाता था कि किसी शख़्स को दिए हुए क़र्ज़ पर तय करके कसी भी क़िस्म की ज़्यादा रक़म का मुतालबा किया जाए, उसे "सूद" कहा जाता था। जैसे मैंने आज एक शख़्स को सौ रुपये बतौर क़र्ज़ दिए। और मैं उस से कहूं कि मैं एक महीने के बाद यह रक़म वापस लूंगा और तुम मुझे एक सौ दो रुपये वापस करना और यह मैंने तय कर दिया कि एक माह बाद एक सौ दो रुपये वापस लूंगा। तो यह "सूद" है।

मुआ़हदे के बग़ैर ज़्यादा देना सूद नहीं

पहले से तय करने की शर्त इसलिये लगाई कि अगर पहले से कुछ तय नहीं किया है। जैसे मैंने किसी को सौ रुपये क़र्ज़ दे दिए, और मैंने उस से यह मुतालबा नहीं किया कि तुम मुझे एक सौ दो रुपये वापस करोगे, लेकिन वापसी के वक़्त उसने अपनी ख़ुशी से मुझे एक सौ दो रुपये दे दिए, और हमारे दरमियान यह एक सौ दो रुपये वापस करने की बात निर्धारित नहीं थी तो यह सूद नहीं है और हराम नहीं है बल्कि जायज़ है।

क़र्ज़ की वापसी की उम्दा शक्ल

ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से साबित है कि जब आप किसी के क़र्ज़मन्द होते तो वह क़र्ज़ वापस लेने वाला क़र्ज़ का मुतालबा करता तो आप वह क़र्ज़ कुछ ज़्यादती के साथ बढ़ता हुआ वापस फ़रमाते, ताकि उसकी दिलजोई हो जाए लेकिन यह

ज़्यादती चूंकि पहले से तयशुदा नहीं होती थी इसलिये वह "सूद" नहीं होती थी और हदीस की इस्तिलाह में इसको "हसनुल क़ज़ा" कहा जाता है, यानी अच्छे तरीक़े से क़र्ज़ की अदायेगी करना। और अदायेगी के वक़्त अच्छा मामला करना, और कुछ ज़्यादा दे देना यह "सूद" नहीं है बल्कि नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहां तक फ़रमाया किः

"ان خیارکم احسنکم قضاء" (بخاری شریف)

यानी तुम में बेहतरीन लोग वे हैं जो क़र्ज़ की अदायेगी में अच्छा मामला करने वाले हों। लेकिन अगर कोई शख़्स क़र्ज़ देते वक़्त यह तय कर ले कि मैं जब वापस लूंगा तो ज़्यादती के साथ लूंगा, इसको "सूद" कहते हैं। और कुरआने करीम ने इसी को सख़्त और संगीन अल्फ़ाज़ के साथ हराम क़रार दिया। और सूरः ब–क़रा के तक़रीबन पूरे दो रुकू इस "सूद" के हराम होने पर नाज़िल हुए हैं।

कुरआने करीम ने किस "सूद" को हराम क़रार दिया?

कभी कभी हमारे समाज में यह कहा जाता है कि जिस "सूद" को कुरआने करीम ने हराम क़रार दिया था वह हक़ीक़त में यह था कि उस ज़माने में क़र्ज़ लेने वाला ग़रीब होता था, और उसके पास रोटी और खाने के लिए पैसे नहीं होते थे, अगर वह बीमार है तो उसके पास इलाज के लिए पैसे नहीं होते थे, अगर घर में कोई मय्यित हो गई है तो उसके पास उसको कफ़नाने और दफ़नाने के पैसे नहीं होते थे, ऐसे मौक़े पर वह ग़रीब बेचारा किसी से पैसे मांगता तो वह क़र्ज़ देने वाला उस से कहता कि मैं उस वक़्त तक क़र्ज़ नहीं दूंगा जब तक मुझे इतना फ़ीसद वापस नहीं दोगे। तो चूंकि यह एक इन्सानियत के ख़िलाफ़ बात थी कि एक शख़्स को ज़ाती ज़रूरत है और वह भूखा और नंगा है, ऐसी हालत में उसको सूद के बग़ैर पैसे उपलब्ध न करना ज़ुल्म और ज़्यादती थी, इसलिये

अल्लाह तआला ने इसको हराम क़रार दिया। और सूद लेने वाले के ख़िलाफ़ ऐलाने जंग किया।

लेकिन हमारे दौर में और ख़ास तौर पर बैंकों में जो सूद के साथ रुपये का लेन देन होता है उसमें क़र्ज़ लेने वाला कोई ग़रीब और फ़कीर नहीं होता बल्कि बहुत सी बार वह बड़ा दौलत वाला और सरमायेदार होता है और वह क़र्ज़ इसलिये नहीं लेता कि उसके पास खाने को नहीं है, या उसके पास पहनने के लिए कपड़े नहीं हैं, या वह किसी बीमारी के इलाज के लिए क़र्ज़ नहीं ले रहा है, बल्कि वह इसलिए क़र्ज़ ले रहा है ताकि पैसों को अपनी तिजारत और कारोबार में लगाए और उस से नफ़ा कमाए, अब अगर क़र्ज़ देने वाला शख़्स यह कहे कि तुम मेरे पैसे अपने कारोबार में लगाओगे, और नफ़ा कमाओगे तो उस नफ़े का दस फ़ीसद बतौर नफ़े के मुझे दो। तो इसमें क्या बुराई है? और यह वह "सूद" नहीं है जिसको कुरआने करीम ने हराम क़रार दिया है, यह एतिराज़ दुनिया के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों और मुल्कों में उठाया जाता है।

तिजारती क़र्ज़ (Commercial Loan) शुरूआती ज़माने में भी थे

एक एतिराज़ यह उठाया है कि यह कारोबारी सूद (Commercial Interest) और यह तिजारती क़र्ज़ (Commercial Loan) हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में नहीं थे, बल्कि उस ज़माने में ज़ाती ख़र्चों और ज़ाती इस्तेमाल के लिए क़र्ज़े लिए जाते थे, इसलिये कुरआने करीम उसको कैसे हराम दे सकता है जिसका उस ज़माने में वजूद ही नहीं था। इसलिये बाज़ लोग यह कहते हैं कि कुरआने करीम ने जिस "सूद" को हराम क़रार दिया है, वह ग़रीबों और फ़क़ीरों वाला "सूद" था। और यह कारोबारी सूद हराम नहीं।

सूरत बदलने से हक़ीक़त नहीं बदलती

पहली बात तो यह है कि किसी चीज़ के हराम होने लिए यह

बात ज़रूरी नहीं है कि वह उस ख़ास सूरत में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में भी पाई जाए और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में उस अन्दाज़ से उसका वजूद भी हो। क़ुरआने करीम जब किसी चीज़ को हराम क़रार देता है तो उसकी एक हक़ीक़त उसके सामने आती है और उस हक़ीक़त को वह हराम क़रार देता है, चाहे उसकी कोई ख़ास सूरत हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में मौजूद हो या न हो। इसकी मिसाल यों समझिए कि क़ुरआने करीम ने शराब को हराम क़रार दिया है और शराब की हक़ीक़त यह है कि ऐसी पीने की चीज़ जिसमें नशा हो, अब आज अगर कोई शख़्स यह कहने लगे कि साहिब! आजकल की यह वहिस्की (Whisky) बियर (Beer) बरांडी (Brandy) हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में तो पाई नहीं जाती थी। इसलिये यह हराम नहीं है, तो यह बात सही नहीं है इसलिये कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में अगरचे यह इस ख़ास शक्ल में मौजूद नहीं थी, लेकिन उसकी हक़ीक़त यानी "ऐसी पी जाने वाली चीज़ जो नशा लाने वाली हो" मौजूद थी, और आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उसको हराम क़रार दे दिया था। इसलिये अब वह हमेशा के लिए हराम हो गई। अब चाहे शराब की नई शक्ल आ जाए। और उसका नाम चाहे वहिस्की (Whisky) रख दिया जाए या बरांडी (Brandy) रख लो या बियर (Beer) रख लो या कोक (Coke) रख लो, नशा लाने वाली हर पीने की चीज़ हर शक्ल और हर नाम के साथ हराम है।

इसलिये यह कहना कि "तिजारती क़र्ज़" चूंकि उस ज़माने में नहीं थे बल्कि आज पैदा हुए हैं इसलिये हराम नहीं हैं। यह ख़्याल दुरुस्त नहीं।

एक लतीफ़ा

एक लतीफ़ा याद आया, हिन्दुस्ता के अन्दर एक गवैया (गाने वाला) था। वह एक मर्तबा हज करने चला गया। हज के बाद वह

मक्का मुकर्रमा से मदीना तैयबा जा रहा था कि रास्ते में एक मन्ज़िल पर उसने क़ियाम किया, उस ज़माने में मुख़्तलिफ़ मन्ज़िलें होती थीं। लोग उन मन्ज़िलों पर रात गुज़ारते और अगले दिन सुबह आगे का सफ़र करते। इसलिये गवैये ने रास्ते में एक मन्ज़िल पर क़ियाम किया और उस मन्ज़िल पर एक अ़रब गवैया भी आ गया और उसने वहां बैठ कर अ़र्बी में गाना बजाना शुरू कर दिया, अ़रब गवैये की आवाज़ ज़रा भद्दी और ख़राब थी। अब हिन्दुस्तानी गवैये को उसकी आवाज़ बहुत बुरी लगी। और उसने उठ कर कहा कि आज यह बात मेरी समझ में आई कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने गाना बजाना क्यों हराम क़रार दिया था, इसलिये कि आपने इन बद्दुओं का गाना सुना था इसलिये हराम क़रार दे दिया, अगर आप मेरा गाना सुन लेते तो आप गाना बजाना हराम क़रार न देते।

आजकल का मिज़ाज

आजकल यह मिज़ाज बन गया है कि हर चीज़ के बारे में लोग यह कहते हैं कि साहिब! हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में यह अ़मल इस तरह होता था इसलिये आपने इसको हराम क़रार दे दिया। आज चूंकि यह अ़मल इस तरह नहीं हो रहा है इसलिये वह हराम नहीं है। कहने वाले यहां तक कह रहे हैं कि सुअरों को इसलिये हराम क़रार दिया गया था कि वे गन्दे माहौल में पड़े रहते थे, गंदगी खाते थे, गन्दे माहौल में उनकी परवरिश होती थी, अब तो बहुत साफ़ सुथरे माहौल में उनकी परवरिश होती है और उनके लिए आला दर्जे के फ़ार्म क़ायम कर दिए गये हैं। इसलिये अब उनके हराम होने की कोई वजह नहीं है।

शरीअ़त का एक उसूल

याद रखिएः कुरआने करीम जब किसी चीज़ को हराम क़रार देता है तो उसकी एक हक़ीक़त होती है, उसकी सूरतें चहे कितनी बदल जायें और उसको बनाने और तैयार करने के तरीक़े चाहे

जितने बदलते रहें लेकिन उसकी हक़ीक़त अपनी जगह बर्क़रार रहती है और वह हक़ीक़त हराम होती है। यह शरीअ़त का उसूल है।

नुबुव्वत के ज़माने के बारे में एक ग़लत फ़हमी

फिर यह कहना कि दुरुस्त नहीं है कि आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मुबारक ज़माने में तिजारती क़र्ज़ों (Commercial Loan) का रिवाज नहीं था। और सारे क़र्ज़े सिर्फ़ ज़ाती ज़रूरत के लिए लिये जाते थे। इस मौज़ू पर मेरे वालिद माजिद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने "मसला-ए-सूद" के नाम से एक किताब लिखी है, उसका दूसरा हिस्सा मैंने लिखा है। उस हिस्से में मैंने कुछ मिसालें पेश की हैं कि सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में भी तिजारती क़र्ज़ों का लेन देन होता था।

जब यह कहा जाता है कि अ़रब के लोग जंगलों में रहने वाले थे तो इसके साथ ही लोगों के ज़ेहन में यह तसव्वुर आता है कि वह समाज जिसमें हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तश्रीफ़ लाए थे, वह ऐसा सादा और मामूली समाज और माहौल होगा जिसमें तिजारत वग़ैरह तो होती नहीं होगी, और अगर तिजारत होती भी होगी तो सिर्फ़ गेहूं और जौ वग़ैरह की होती होगी। और वह भी दस बीस रुपये से ज़्यादा की नहीं होगी। इसके अ़लावा कोई बड़ी तिजारत नहीं होती होगी। आ़म तौर पर ज़ेहन में यह तसव्वुर बैठा हुआ है।

हर क़बीला जॉइन्ट स्टॉक कंपनी होता था

लेकिन याद रखिए यह बात दुरुस्त नहीं, अ़रब का वह समाज जिसमें हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तश्रीफ़ लाए उसमें भी आजकी नई तिजारत की तक़रीबन सारी बुनियादें मौजूद थीं। जैसे आजकल "जॉइन्ट स्टॉक कम्पनियां" हैं। इसके बारे में कहा जाता है कि यह चौदहवीं सदी की पैदावार है, इस से पहले "जॉइन्ट

स्टॉक कम्पनी" का तसव्वुर नहीं था। लेकिन जब हम अ़रब की तारीख़ पढ़ते हैं तो यह नज़र आता है कि अ़रब का हर क़बीला एक मुस्तक़िल "जॉइन्ट स्टॉक कम्पनी" होता था। इसलिये हर क़बीले में तिजारत का तरीक़ा यह था कि क़बीले के तमाम आदमी एक रुपया दो रुपया लाकर एक जगह जमा करते थे और वह रक़म "मुल्क शाम" भेज कर वहां से तिजारत का सामान मंगवाते, आपने तिजारती क़ाफ़िलों (Commercial Caravan) का नाम सुना होगा। वह "कारवां" यही होते थे, कि सारे क़बीले ने एक एक रुपया जमा करके दूसरी जगह भेजा और वहां से तिजारत का सामान मंगवा कर यहां बेच दिया। चुनांचे कुरआने करीम में यह जो फ़रमाया कि:

"لِإِيلَافِ قُرَيْشٍ إِلَافِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ" (سورة قريش:١)

(यानी चूंकि कुरैश आ़दी हो गये हैं, यानी जाड़े और गर्मी के सफ़र के।)

वह भी इस बिना पर कि ये अ़रब के लोग सर्दियों में यमन की तरफ़ सफ़र करते थे और गर्मियों में शाम की तरफ़ सफ़र करते थे। और गर्मियों और सर्दियों के ये सफ़र महज़ तिजारत के लिए होते थे। यहां से सामन लेकर वहां जाकर बेच दिया, वहां से सामान लाकर यहां बेच दिया। और कभी कभी एक एक आदमी अपने क़बीले से दस दस लाख दीनार क़र्ज़ लेता था। अब सवाल यह है कि क्या वह इसलिये क़र्ज़ लेता था कि उसके घर में खाने को नहीं था? या उसके पास मय्यित को कफ़न देने के लिए कपड़ा नहीं था? ज़ाहिर है कि जब वह इतना बड़ा क़र्ज़ लेता था तो वह किसी तिजारती मक़सद के लिए लेता था।

सब से पहले छोड़ा जाने वाला सूद

जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने आख़री हज के मौक़े पर सूद के हराम होने का ऐलान फ़रमाया तो आपने इर्शाद फ़रमाया कि:

"وربا الجاهلية موضوع واول ربًا اضع ربانا ربا عباس بن عبدالمطلب فانه موضوع كله" (مسلم شريف)

यानी (आजके दिन) जाहिलियत का सूद छोड़ दिया गया, और सब से पहला सूद जो मैं छोड़ता हूं वह हमारे चचा हज़रत अ़ब्बास का सूद है। वह सब का सब ख़त्म कर दिया गया। चूंकि हज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु लोगों को सूद पर क़र्ज़ दिया करते थे इसलिये आपने फ़रमाया कि आजके दिन मैं उनका सूद जो दूसरे लोगों के ज़िम्मे है वह ख़त्म करता हूं। और रिवायतों में आता है कि वह दस हज़ार मिस्क़ाल सोना था। और तक़रीबन ४ माशे का एक मिस्क़ाल होता है, और यह दस हज़ार मिस्क़ाल कोई सरमाया (Principal) नहीं था। बल्कि यह सूद था जो लोगों के ज़िम्मे असल रक़मों पर वाजिब हुआ था।

इस से अन्दाज़ा लगाइये कि वह क़र्ज़ जिस पर दस हज़ार का सूद लग गया हो, क्या वह क़र्ज़ सिर्फ़ खाने की ज़रूरत के लिये लिया गया था? ज़ाहिर है कि वह क़र्ज़ तिजारत के लिए लिया गया होगा।

सहाबा के ज़माने में बैंकारी की एक मिसाल

हज़रत ज़ुबैर बिन अ़वाम रज़ियल्लाहु अ़न्हु जो उन दस सहाबा में से हैं जिनको नबी करीम ने जन्नती होने की ख़ुशख़बरी दुनिया ही में दे दी थी। उन्होंने अपने पास बिल्कुल ऐसा निज़ाम क़ायम किया हुआ था जैसे आजकल बैंकिंग का निज़ाम होता है। लोग जब उनके पास अपनी अमानतें लाकर रखवाते तो यह उनसे कहते कि मैं यह अमानत की रक़म बतौर क़र्ज़ लेता हूं, यह रक़म मेरे ज़िम्मे क़र्ज़ है। और फिर आप उस रक़म को तिजारत में लगाते। चुनांचे जिस वक़्त आपका इन्तिक़ाल हुआ तो उस वक़्त जो क़र्ज़ उनके ज़िम्मे था उसके बारे में उनके लड़के हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि:

"فحسبت ماعليه من الديون فوجدته الفى الف ومائتى الف"

जब मैंने उनके ज़िम्मे अदा किये जाने वाले क़र्ज़ों का हिसाब लगाया तो वह बाईस लाख दीनार निकले।

(मसला-ए-सूद, तबक़ात इब्ने सअ़द के हवाले से)

इसलिये यह कहना कि उस ज़माने में तिजारती क़र्ज़ नहीं होते थे यह बिल्कुल हक़ीक़त के ख़िलाफ़ बात है, और हक़ीक़त यह है कि तिजारती क़र्ज़ भी होते थे और उस पर "सूद" का लेन देन भी होता था। और क़ुरआने करीम ने हर क़र्ज़ पर जो भी ज़्यादती वुसूल की जाए उसको हराम क़रार दिया है। इसलिये यह कहना कि तिजारती क़र्ज़ पर सूद लेना जायज़ है और ज़ाती क़र्ज़ों पर सूद लेना जायज़ नहीं, यह बिल्कुल ग़लत है।

सूद मुरक्कब और सूद मुफ़रद दोनों हराम हैं

इसके अ़लावा एक और ग़लत फ़हमी फैलाई जा रही है। वह यह कि एक सूद मुफ़रद (Simple Interest) होता है, और एक सूद मुरक्कब (Compound Interest) होता है। यानी सूद पर भी सूद लगता चला जाए, बाज़ लोग यह कहते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में मुरक्कब सूद होता था और क़ुरआने करीम ने उसको हराम क़रार दिया है, इसलिये वह तो हराम है। लेकिन सूद मुफ़रद जायज़ है, इसलिये कि वह उस ज़माने में नहीं था और न ही क़ुरआने करीम ने उसको हराम क़रार दिया है। लेकिन अभी क़ुरआने करीम की जो आयत मैंने आपके सामने तिलावत की उसमें फ़रमाया कि:

يَآ اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوااتَّقُوااللّٰهَ وَ ذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبَا (سورة البقرة:٢٧٨)

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो, और रिबा का जो हिस्सा भी रह गया हो, उसको छोड़ दो, यानी उसके कम या ज़्यादा होने का कोई सवाल नहीं। या सूद के रेट (Rate Of Interest) के कम या ज़्यादा होने की बहस नहीं, जो कुछ भी हो उसको छोड़ दो। और

उसके बाद आगे फ़रमायाः

"وَاِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ" (سورة البقرة:٢٧٩)

यानी अगर तुम रिबा से तौबा कर लो तो फिर तुम्हारा जो असल माल (Principal) है वह तुम्हारा हक़ है। और ख़ुद क़ुरआने करीम ने वाज़ेह तौर पर फ़रमा दिया कि (Principal) तो तुम्हरा हक़ है, लेकिन इसके अ़लावा थोड़ी सी ज़्यादती भी ना जायज़ है। इसलिये यह कहना बिल्कुल ग़लत है कि सूद मुरक्कब हराम है और सूद मुफ़्रद हराम नहीं। बल्कि सूद कम हो या ज़्यादा सब हराम है, और क़र्ज़ लेने वाला ग़रीब हो तब भी हराम है और क़र्ज़ लेने वाला अमीर और मालदार हो तो भी हराम है। अगर कोई शख़्स ज़ाती ज़रूरत के लिए क़र्ज़ ले रहा हो तो भी हराम है, और अगर तिजारत के लिए क़र्ज़ ले रहा हो तब भी हराम है। इसके हराम होने में कोई शुबह नहीं।

मौजूदा बैंकिंग सूद इत्तिफ़ाक़ के साथ हराम है

यहां यह बात भी अ़र्ज़ कर दूं कि तक़रीबन पचास साठ साल तक इस्लामी दुनिया में बैंकिंग सूद (Banking Interest) के बारे में सवालात उठाए जाते रहे, और जैसा कि मैंने अ़र्ज़ किया कि बाज़ लोग कहते हैं कि (Compound Interest) हराम है। (Simple Interest) हराम नहीं है, या यह कहना कि (Commercial Loan) हराम नहीं है वग़ैरह। यह इश्कालात और एतिराज़ात इस्लामी दुनिया में तक़रीबन पचास साल तक होते रहे हैं लेकिन अब यह बहस ख़त्म हो गई है, अब सारी दुनिया के न सिर्फ़ उलमा बल्कि इकनॉमिक के माहिरीन और मुस्लिम बैंकर्ज़ भी इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि बैंकिंग सूद भी इसी तरह हराम है जिस तरह आ़म क़र्ज़ के लेन देन पर सूद हराम होता है। और अब इस पर सब की राय एक हो चुकी है कि किसी क़ाबिले ज़िक्र शख़्स का इसमें इख़्तिलाफ़ नहीं। इसके बारे में आख़री फ़ैसला आज से तक़रीबन ४ साल पहले जद्दा में "मज्मा अल-फ़िक़्हुल इस्लामी" (Islamic Fiqh Academy) जिसमें तक़रीबन ४५

मुस्लिम मुल्कों के बड़े उलमा का इज्तिमा हुआ, और जिसमें मैं भी शामिल था। और उन तमाम मुल्कों के तक़रीबन २०० उलमा ने इत्तिफ़ाक़ के साथ यह फ़तवा दिया कि बैंकिंग सूद बिल्कुल हराम है। और इसके जायज़ होने का कोई रास्ता नहीं। इसलिये यह मसला तो अब ख़त्म हो चुका है कि हराम है या नहीं?

तिजारती क़र्ज़ पर सूद में क्या ख़राबी है?

अब एक बात बाक़ी रह गई है, उसको भी समझ लेना चाहिए, वह यह कि शुरू में जैसा कि अ़र्ज़ किया था कि लोग यह कहते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में सिर्फ़ ज़ाती ज़रूरत के लिए क़र्ज़ लिए जाते थे। अब अगर एक शख़्स ज़ाती ज़रूरत के लिए क़र्ज़ ले रहा है, जैसे उसके पास खाने को रोटी नहीं है या मय्यित को दफ़नाने के लिए कफ़न नहीं है, उसके लिए वह क़र्ज़ ले रहा है और आप उस से सूद का मुतालबा कर रहे हैं, यह तो एक ग़ैर इन्सानी हर्कत और ना इन्साफ़ी की बात है, लेकिन जो शख़्स मेरे पैसे को तिजारत में लगा कर नफ़ा कमायेगा अगर मैं उस से थोड़ा सा हिस्सा ले लूं तो इसमें क्या ख़राबी है?

आपको नुक़सान का ख़तरा (Risk) भी बर्दाश्त करना होगा

पहली बात तो यह है कि एक मुसलमान को अल्लाह तआ़ला के किसी हुक्म में चूं चरा की गुन्जाइश नहीं होनी चाहिए। अगर किसी चीज़ को अल्लाह तआ़ला ने हराम कर दिया, वह हराम हो गई। लेकिन ज़्यादा इत्मीनान के लिए यह बात अ़र्ज़ करता हूं ताकि यह बात अच्छी तरह दिल में उतर जाए, वह यह कि अगर आप किसी शख़्स को क़र्ज़ दे रहे हैं तो उसके बारे में इस्लाम यह कहता है कि दो बातों में से एक बात मुतअ़य्यन कर लो, यह कि तुम उसकी कुछ इम्दाद करना चाहते हो? या उसके करोबार में हिस्सेदार बनना चाहते हो? अगर क़र्ज़ के ज़रिये उसकी इम्दाद करना चाहते हो तो

वह फिर आपकी तरफ़ से इम्दाद ही होगी, फिर आपको उस क़र्ज़ पर ज़्यादती के मुतालबे का कोई हक़ नहीं। और अगर उसके कारोबार में हिस्सेदार बनना चाहते हो तो फिर जिस तरह नफ़े में हिस्सेदार बनोगे इसी तरह नुक़सान में भी उसके हिस्सेदार बनना होगा। यह नहीं हो सकता कि तुम सिर्फ़ नफ़े में हिस्सेदार बन जाओ, नफ़ा हो तो तुम्हारा, और नुक़सान हो तो वह उसका। इसलिये जिस सूरत में आप उस कारोबार के लिए पैसे दे रहे हैं तो फिर यह नहीं हो सकता कि कारोबार में नुक़सान का ख़तरा (Risk) तो वह बर्दाश्त करे और नफ़ा आपको मिल जाए। बल्कि इस सूरत में आप उसको क़र्ज़ न दें, बल्कि उसके साथ एक जॉइन्ट इन्टर प्राइज़ (Joint Enterprise) कीजिए, और उसके साथ "मुशारका" और साझेदारी (Partnership) कीजिए। यानी उसके साथ मुआहदा करें कि जिस कारोबार के लिए तुम क़र्ज़ ले रहे हो उसका इतना फ़ीसद नफ़ा मेरा होगा और इतना तुम्हारा होगा। अगर उस कारोबार में नुक़सान होगा तो वह नुक़सान भी उसी नफ़े के तनासुब से होगा। लेकिन यह बिल्कुल दुरुस्त नहीं है कि आप उसे यह कहें कि इस क़र्ज़ पर १५ फ़ीसद नफ़ा आप से लूंगा। चाहे तुम्हें कारोबार में नफ़ा हो या नुक़सान हो। यह बिल्कुल हराम है और सूद है।

आजकल के सूदी निज़ाम की ख़राबी

आजकल सूद (Interest) का जो निज़ाम राइज है उसका ख़ुलासा यह है कि कभी कभी क़र्ज़ लेने वाले को नुक़सान हो गया तो उस सूरत में क़र्ज़ देने वाला फ़ायदे में रहा, और क़र्ज़ लेने वाला नुक़सान में रहा। और कभी कभी यह होता है कि क़र्ज़ लेने वाले ने ज़्यादा दर से नफ़ा कमाया और क़र्ज़ देने वाले को उसने मामूली दर से नफ़ा दिया, अब क़र्ज़ देने वाला नुक़सान में रहा। इसको एक मिसाल के ज़रिये समझिए।

डिपॉज़ेटर हर हाल में नुक़सान में है

जैसे एक शख़्स एक करोड़ रुपया क़र्ज़ लेकर उस से तिजारत शुरू करता है। अब वह एक करोड़ रुपया कहां से उसके पास आया? वह एक करोड़ रुपया किसका है? वह पूरी क़ौम का है, कि वह रुपया उसने बैंक से लिया और बैंक के पास वह रुपया डिपाज़ेटर्स का है। गोया कि वह एक करोड़ रुपया पूरी क़ौम का है। और अब उसने क़ौम के उस एक करोड़ रुपये से तिजारत शुरू की और उस तिजारत के अन्दर उसको सौ फ़ीसद नफ़ा हुआ, और अब उसके पास दो करोड़ हो गए, जिसमें से १५ फ़ीसद यानी १५ लाख रुपये उसने बैंक को दिए और बैंक ने उसमें से अपना कमीशन और अपने ख़र्चे निकाल कर बाक़ी सात फ़ीसद या दस फ़ीसद खातेदार (Depositors) को दिए, नतीजा यह हुआ कि जिन लोगों का पैसा तिजारत में लगा था, जिसमें इतना नफ़ा हुआ, उनको तो सौ रुपये पर सिर्फ़ दस रुपये नफ़ा मिला, और यह बेचारा डिपाज़ेटर बड़ा ख़ुश है कि मेरे सौ रुपये एक सौ दस हो गए। लेकिन उसको यह मालूम नहीं कि हक़ीक़त में उसके पैसों से जो नफ़ा कमाया गया उसके लिहाज़ से एक सौ के दो सौ होने चाहिएं थे। और फिर दूसरी तरफ़ यह दस रुपये जो नफ़ा उसको मिला, क़र्ज़ लेने वाला उसको दोबारा उस से वापस वुसूल कर लेता है। वह किस तरह वापस वुसूल करता है?

सूद की रक़म ख़र्चों में शामिल होती है

वह इस तरह वुसूल करता है कि क़र्ज़ लेने वाला उन दस रुपयों को पैदावारी, ख़र्चों (Cost production) में शामिल कर लेता है। जैसे फ़र्ज़ करो कि उसने एक करोड़ रुपये बैंक से क़र्ज़ लेकर कोई फ़ैक्ट्री लगाई या कोई चीज़ तैयार की, तो तैयारी के ख़र्चों (Cost) में वे १५ फ़ीसद भी शामिल कर दिए जो उसने बैंक को अदा किए। इसलिये जब वे पन्द्रह फ़ीसद भी शामिल हो गये तो अब जो चीज़

तैयार (Produce) होगी, उसकी क़ीमत पन्द्रह फ़ीसद बढ़ जायेगी। जैसे उसने कपड़ा तैयार किया था, तो अब सूद की वजह से उस कपड़े की क़ीमत पन्द्रह फ़ीसद बढ़ गई। इसलिये डिपॉज़ेटर जिसको एक सौ के एक सौ दस रुपये मिले थे जब बाज़ार से कपड़ा ख़रीदेगा तो उसको कपड़े की क़ीमत पन्द्रह फ़ीसद ज़्यादा देनी होगी, तो नतीजा यह निकला कि डिपॉज़ेटर को जो दस फ़ीसद मुनाफ़ा दिया गया था वह दूसरे हाथ से उस से ज़्यादा करके पन्द्रह फ़ीसद वुसूल कर लिया गया। यह तो ख़ूब नफ़े का सौदा हुआ। वह डिपाज़ेटर ख़ुश है कि मुझे सौ रुपये के एक सौ दस रुपये मिल गए लेकिन हक़ीक़त में अगर देखा जाए तो उसको सौ के बदले ६५ रुपये मिले। इसलिये कि वे पन्द्रह फ़ीसद कपड़े की लागत में चले गए, और दूसरी तरफ़ ८५ फ़ीसद मुनाफ़े उस क़र्ज़ लेने वाले की जेब में चले गए।

साझेदारी का फ़ायदा

और अगर शिर्कत (साझेदारी) पर मामला होता और यह तय होता कि जैसे ५० फ़ीसद नफ़ा सरमाया लगाने वाले (Financier) का होगा, और ५० फ़ीसद काम करने वाले ताजिर का होगा। तो इस सूरत में अ़वाम को १५ फ़ीसद के बजाये ५० फ़ीसद नफ़ा मिलता, और उस सूरत में यह ५० फ़ीसद उस चीज़ की लागत (Cost) में भी शामिल न होता, इसलये कि नफ़ा तो उस पैदावार की फ़रोख़्त के बाद सामने आयेगा और फिर उसको तक़सीम किया जायेगा। इसलिये कि सूद (Interest) तो लागत में शामिल किया जाता है लेकिन नफ़ा (Profit) लागत (Cost) में शामिल नहीं किया जाता। तो यह सूरत सब के नफ़े की थी।

नफ़ा किसी का और नुक़सान किसी और का

और अगर फ़र्ज़ करो कि एक करोड़ रुपया बैंक से क़र्ज़ लेकर जो तिजारत की, उस तिजारत में उसको नुक़सान हो गया, वह बैंक उस नुक़सान के नतीजे में दिवालिया हो गया, उस बैंक के दिवालिया

होने के नतीजे में किसका रुपया गया? ज़ाहिर है कि अ़वाम का गया। तो इस निज़ाम में नुक़सान होने की सूरत में सारा नुक़सान अ़वाम पर है। और अगर नफ़ा है तो सारा का सारा क़र्ज़ लेने वाले का।

बीमा कम्पनी से कौन फ़ायदा उठा रहा है?

क़र्ज़ लेने वाले ताजिर का अगर नुक़सान हो जाए तो उसने उस नुक़सान की तलाफ़ी के लिए एक और रास्ता तलाश कर लिया है, वह है बीमा कराना (Insurance) जैसे फ़र्ज़ करो कि रूई के गोदाम में आग लग गई तो उस नुक़सान को पूरा करने का फ़रीज़ा बीमा कम्पनी पर आ़यद होता है, और बीमा कम्पनी में किसका पैसा है? वह ग़रीब अ़वाम का पैसा है, उस अ़वाम का पैसा जो अपनी गाड़ी उस वक़्त तक सड़क पर नहीं ला सकते जब तक उसका बीमा (Insured) न करा लें। और अ़वाम की गाड़ी का एक्सीडेन्ट नहीं होता, उसको आग नहीं लगती, लेकनि वे बीमा की क़िस्तें (Premium) अदा करने पर मजबूर हैं।

उन ग़रीब अ़वाम के बीमा की क़िस्तों से बीमा कम्पनी की इमारत तामीर की गई, और ग़रीब अ़वाम के डिपाज़ेट के ज़रिये ताजिर के नुक़सान की तलाफ़ी करते हैं। इसलिये यह सारा गोरख धन्धा इसलिये किया जा रहा है ताकि अगर नफ़ा हो तो सरमायेदार ताजिर का हो, और अगर नुक़सान हो तो अ़वाम का हो। इसके नतीजे में यह सूरते हाल हो रही है। बैंक में जो पूरी क़ौम का रुपया है, अगर उसको सही तरीक़े पर इस्तेमाल किया जाता तो उसके तमाम मुनाफ़े भी अ़वाम को हासिल होते। और अब मौजूदा निज़ाम में दौलत की तक़सीम (Distribution of Wealth) का जो सिस्टम है, इसके नतीजे में दौलत नीचे की तरफ़ जाने के बजाये ऊपर की तरफ़ जा रही है। इन्हीं ख़राबियों की वजह से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि सूद खाना ऐसा है जैसे अपनी मां से

ज़िनाकारी करना। इतना संगीन गुनाह इसलिये है कि इसकी वजह से पूरी क़ौम को तबाही का निशाना बनाया जाता है।

सूद की विश्व व्यापी तबाह कारी

आज से पहले हम "सूद" को सिर्फ़ इसलिये हराम मानते थे कि कुरआने करीम ने इसको हराम क़रार दिया है। हमें इसकी अ़क़्ली दलीलों से ज़्यादा बहस नहीं थी। अल्लाह तआ़ला ने जब हराम क़रार दे दिया है, बस हराम है। लेकिन आज इसके नतीजे आप ख़ुद अपनी आंखों से देख रहे हैं। आज पूरी दुनिया में सूद का निज़ाम जारी है। आप देख रहे हैं कि आपके इस मुल्क (अमेरिका) का दुनिया में तूती बोल रहा है। और अब तो इसका दूसरा हरीफ़ (मुक़ाबिल) भी दुनिया से रुख़्सत हो गया। और अब कोई इस से टक्कर लेने वाला मौजूद नहीं, लेकिन फिर भी आर्थिक मंदी का शिकार है। इसकी बुनियाद भी सूद है। इसलिये यह कहना कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में ग़रीब फ़क़ीर क़िस्म के लोग सूद पर क़र्ज़ लिया करते थे, उनसे सूद का मुतालबा करना हराम था। लेकिन आज अगर कोई शख़्स तिजारती क़र्ज़ पर सूद ले रहा है तो उसको हराम नहीं होना चाहिए। अ़क़्ली और इक्नॉमिक एतिबार से यह बात दुरुस्त नहीं है। अगर कोई निष्पक्ष होकर इस निज़ाम का मुताला करे तो उसको पता चल जायेगा कि इस निज़ाम ने दुनिया को तबाही के आख़री किनारे तक पहुंचा दिया है। और इन्शा अल्लाह एक वक़्त आयेगा कि लोगों के सामने इसकी हक़ीक़त खुल जायेगी, और उनको पता चल जायेगा कि कुरआने करीम ने सूद के ख़िलाफ़ ऐलाने जंग क्यों किया था? यह तो सूद के हराम होने का एक पहलू था, जो मैंने आपके सामने बयान किया।

सूदी तरीक़ा-ए-कार का विकल्प

एक दूसरा सवाल भी बहुत अहम है, जो आजकल लोगों के दिलों में पैदा होता है। वह यह है कि यह तो हम मानते हैं कि सूद

हराम है। लेकिन अगर सूद को ख़त्म कर दिया जाए तो फिर उसका वैकल्पिक तरीक़ा क्या होगा, जिसके ज़रिये इक्नॉमिक को चलाया जाए? इस वास्ते कि आज पूरी दुनिया में इक्नॉमिक की रूह सूद पर क़ायम है। और अगर इसकी रूह को निकाल दिया जाए तो इसको चलाने का दूसरा तरीक़ा नज़र नहीं आता। इसलिये लोग कहते हैं कि सूद के सिवा कोई दूसरा निज़ाम मौजूद नहीं है, अगर है तो मुम्किन और क़ाबिले अ़मल (Practicable) नहीं है। और अगर किसी के पास क़ाबिले अ़मल तरीक़ा मौजूद है तो वह बताए कि क्या है?

इस सवाल का जवाब तफ़सील चाहता है। और एक मिटिंग में इस मौज़ू का पूरा हक़ अदा होना मुम्किन भी नहीं है। और इसका जवाब थोड़ा सा टेक्नीकल भी है, और इसको आ़म फ़हम और आ़म अल्फ़ाज़ में बयान करना आसान भी नहीं है। लेकिन मैं इसको आ़म फ़हम अन्दाज़ में बयान करने की कोशिश करता हूं। ताकि आप हज़रात की समझ में आ जाए।

ज़रूरी चीज़ों को शरीअ़त में मना नहीं किया गया

सब से पहले तो यह समझ लीजिए कि जब अल्लाह तआ़ला ने किसी चीज़ को हराम क़रार दे दिया कि यह चीज़ हराम है, तो फिर यह मुम्किन ही नहीं है कि वह चीज़ ज़रूरी हो, इसलिये कि अगर वह चीज़ ज़रूरी और लाज़मी होती तो अल्लाह तआ़ला उसको हराम क़रार न देते। इसलिये कि क़ुरआने करीम का इर्शाद है:

"لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا" (سورة البقره:٢٨٦)

यानी अल्लाह तआ़ला इन्सान को किसी ऐसी चीज़ का हुक्म नहीं देते जो उसकी हिम्मत से बाहर हो। इसलिये एक मोमिन के लिए तो इतनी बात काफ़ी है कि जब अल्लाह तआ़ला ने एक चीज़ को हराम क़रार दे दिया तो चूंकि अल्लाह तआ़ला से ज़्यादा जानने वाला कोई नहीं है कि कौन सी चीज़ इन्सान के लिए ज़रूरी है और कौन सी चीज़ ज़रूरी नहीं है। इस लिये जब उस चीज़ को हराम क़रार दे

दिया तो यकीनन वह चीज़ ज़रूरी और लाज़मी नहीं है। उस चीज़ में कहीं ख़राबी ज़रूर है जिसकी वजह से वह ज़रूरी और लाज़मी मालूम हो रही है। तो अब उस ख़राबी को दूर करने की ज़रूरत है। लेकिन यह कहना दुरुस्त नहीं है कि इसके बग़ैर काम नहीं चलेगा, और यह चीज़ लाज़मी और ज़रूरी है।

सूदी क़र्ज़ का विकल्प क़र्ज़े हसना ही नहीं है

दूसरी बात यह है, बाज़ लोग यह समझते हैं कि सूद (Interest) जिसको कुरआने करीम हराम क़रार देता है। उसका मतलब यह है कि आईन्दा जब किसी को क़र्ज़ दिया जाए तो उसको ग़ैर सूदी क़र्ज़ (Interest-Free Loan) देना चाहिए, और उस पर किसी मुनाफ़े का मुतालबा नहीं करना चाहिए। और इस से यह नतीजा निकालते हैं कि जब सूद ख़त्म हो जायेगा तो हमें फिर ग़ैर सूदी क़र्ज़े मिला करेंगे, फिर जितना क़र्ज़ चाहें हासिल करें, और उस से कोठियां बंगले बनायें। और उस से फैक्ट्रीयां क़ायम करें। और हम से किसी सूद का मुतालबा नहीं होगा। और इसी सोच की बिना पर लोग कहते हैं कि यह सूरत क़ाबिले अमल (Practicable) नहीं है। इसलिये कि जब हर शख़्स को सूद के बग़ैर क़र्ज़ दिया जायेगा तो फिर इतना पैसा कहां से आयेगा कि सब लोगों को बग़ैर सूद के क़र्ज़ा दे दिया जाए?

सूदी क़र्ज़ का विकल्प "साझेदारी" है

याद रखिए कि सूद का विकल्प (Alternative) क़र्ज़े हसना नहीं है कि किसी को वैसे ही क़र्ज़ दे दिया जाए, बल्कि इसका विकल्प "साझेदारी" है, यानी जब कोई शख़्स कारोबार के लिए क़र्ज़ ले रहा है तो वह क़र्ज़ देने वाला यह कह सकता है कि मैं तुम्हारे कारोबार में हिस्सेदार बनना चाहता हूं। अगर तुम्हें नफ़ा होगा तो उस नफ़े का कुछ हिस्सा मुझे देना पड़ेगा, और अगर नुक़सान होगा तो उस नुक़सान में भी मैं शामिल हूंगा। तो उस कारोबार के नफ़ा और नुक़सान दोनों में क़र्ज़ देने वाला शरीक हो जायेगा, और यह

साझेदारी हो जायेगी, और यह सूद का वैकल्पिक तरीक़ा–ए–कार (Alternateve System) है।

और "साझेदारी" का नज़रियाती पहलू तो मैं आपके सामने पहले भी बयान कर चुका हूं कि सूद की सूरत में तो दौलत का बहुत मामूली हिस्सा खातेदार (Depositor) को मिलता है, लेकिन अगर "साझेदारी" की बुनियाद पर कारोबार किया जाए और सरमाया लगाने (Financing) "साझेदारी" की बुनियाद पर हो तो इस सूरत में तिजारत के अन्दर जितना नफ़ा होगा उसका एक मुतनासिब (Proportionate) हिस्सा खातेदारों की तरफ़ भी मुन्तक़िल होगा, और इस सूरत में दौलत की तक़सीम (Distribution of Wealth) का ऊपर की तरफ़ जाने के बजाए नीचे की तरफ़ आयेगा। इसलिये इस्लाम ने जो वैकल्पिक निज़ाम पेश किया वह "साझेदारी" का निज़ाम है।

साझेदारी के बेहतरीन परिणाम

लेकिन यह "साझेदारी" का निज़ाम चूंकि मौजूदा दुनिया में अभी तक कहीं जारी नहीं है और इस पर अ़मल नहीं हुआ इसलिये इसकी बरकतें भी लोगों के सामने नहीं आ रही हैं। अभी पिछले बीस पच्चीस साल के दौरान मुसलमानों ने मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर इसकी कोशिशें की हैं कि वे ऐसे मालियाती इदारे और बैंक क़ायम करें जो सूद की बुनियाद पर न हों, बल्कि उनको इस्लामी उसूलों की बुनियाद पर चलाया जाए, और शायद आपके इल्म में यह बात होगी कि इस वक़्त पूरी दुनिया में कम से कम अस्सी से लेकर सौ तक ऐसे बैंक और सरमाया कारी के इदारे क़ायम हो चुके हैं, जिनका यह दावा है कि वे इस्लामी उसूलों पर अपने कारोबार को चला रहे हैं और सूद से पाक कारोबार कर रहे हैं। मैं यह नहीं कहता कि उनका यह दावा सौ फ़ीसद सही है, बल्कि हो सकता है कि इसमें कुछ ग़लतियां और कोताहियां भी हों, लेकिन बहर हाल! यह हक़ीक़त अपनी जगह है कि इस वक़्त पूरी दुनिया में तक़रीबन एक सौ इदारे और बैंक ग़ैर सूदी निज़ाम पर काम कर रहे हैं, और यह सिर्फ़ इस्लामी मुल्कों में नहीं

बल्कि पश्चिमी और योरप मुल्कों में भी काम कर रहे हैं। उन बैंकों और इदारों ने "साझेदारी" के तरीक़े पर अ़मल करना शुरू किया है। और जहां कहीं "साझेदारी" के तरीक़े को अपनाया गया वहां उसके बेहतर परिणाम निकले हैं। हमने पाकिस्तान में एक बैंक में इसका तजुर्बा किया। और मैंने ख़ुद उसकी "मज़हबी निगरां कमेटी" के मिंबर होने की हैसियत से उसका मुआयना किया। और उसमें "साझेदारी" के अन्दर कभी कभी खातेदारों को बीस फ़ीसद नफ़ा भी दिया गया है, इसलिये अगर "साझेदारी" को बड़े पैमाने पर किया जाए तो उसके परिणाम और भी ज़्यादा बेहतर निकल सकते हैं।

"साझेदारी" में अ़मली दुश्वारी

लेकिन इसमें एक अ़मली दुश्वारी है, वह यह कि अगर कोई शख़्स साझेदारी की बुनियाद पर बैंक से पैसे ले गया और "साझेदारी" के मायने नफ़े और नुक़सान में शिर्कत (Profit and Loss Sharing) के हैं, कि अगर नफ़ा होगा तो उसमें भी शिर्कत होगी और अगर नुक़सान होगा तो उसमें भी शिर्कत होगी। अफ़सोसनाक बात यह है कि ख़ुद हमारी इस्लामी दुनिया में बद दियानती इतनी आ़म है, और बिगाड़ इतना फैला हुआ है कि अब अगर कोई शख़्स इस बुनियाद पर बैंक से पैसे लेकर गया कि अगर नफ़ा हुआ तो नफ़ा लाकर दूंगा, और अगर नुक़सान हुआ तो नुक़सान बैंक को भी बर्दाश्त करना पड़ेगा। तो वह पैसे लेकर जाने वाला शख़्स कभी पलट कर नफ़ा लेकर नहीं आयेगा। बल्कि वह हमेशा यह ज़ाहिर करेगा कि मुझे नुक़सान हुआ है। और वह बैंक से कहेगा कि बजाए इसके कि आप मुझ से नफ़े का मुतालबा करें बल्कि इस नुक़सान की तलाफ़ी के लिए मुझे और रक़म दें।

अ़मली पहलू का यह एक बहुत अहम मसला है। मगर इसका ताल्लुक़ इस "साझेदारी" के निज़ाम की ख़राबी से नहीं है और इसकी वजह से यह नहीं कहा जायेगा कि यह "साझेदारी" का निज़ाम ख़राब है। बल्कि इस मसला का ताल्लुक़ उन इन्सानों की

ख़राबी से है जो इस निज़ाम पर अ़मल कर रहे हैं। उन अ़मल करने वालों के अन्दर अच्छे अख़्लाक़, ईमान्दारी और अमानत नहीं है, और इसकी वजह से "साझेदारी" के निज़ाम में ये ख़तरे मौजूद हैं कि लोग बैंक से "साझेदारी" की बुनियाद पर पैसे ले जायेंगे और फिर कारोबार में नुक़सान दिखा कर बैंक के ज़रिये डिपाज़ेटर को नुक़सान पहुंचायेंगे।

इस मुश्किल का हल

लेकिन यह मसला ऐसा मसला नहीं जिसको हल न किया जा सके। अगर कोई मुल्क इस "साझेदारी" के निज़ाम को इख़्तियार करे तो वह आसानी से यह हल निकाल सकता है कि जिसके बारे में यह साबित हो कि उसने बद दियानती से काम लिया है और अपने खाते सही बयान (Declare) नहीं किए, तो हुकूमत एक लम्बी मुद्दत के लिए उसको ब्लैक लिस्ट (Black List) कर दे, और आईन्दा कोई बैंक उसको सरमाए की कोई सहूलत मुहैया न करे। इस सूरत में लोग बद दियानती करते हुए डरेंगे। आज भी जॉइन्ट स्टाक कम्पनियां काम कर रही हैं, और वे अपने बेलैंस शीट (Balance Sheet) शाया करती हैं। और उस बेलैंस शीट में अगरचे बद दियानती भी होती है लेकिन इसके बावजूद उसमें वे अपना नफ़ा ज़ाहिर करती हैं। इसलिये अगर "साझेदारी" को पूरे मुल्की स्तर पर इख़्तियार करें तो इस हल को इख़्तियार किया जा सकता है, लेकिन जब तक "साझेदारी के निज़ाम" को मुल्की स्तर पर इख़्तियार नहीं किया जाता उस वक़्त तक इन्फ़िरादी (Individual) इदारों को "साझेदारी के निज़ाम" पर अ़मल करना दुश्वार है। लेकिन ऐसे इन्फ़िरादी इदारे तयशुदा (Selected) बात चीत के ज़रिये साझेदारी का निज़ाम अपना सकते हैं।

दूसरी वैकल्पिक सूरत "इजारा"

इसके अ़लावा इस्लाम की सूरत में अल्लाह तआ़ला ने हमें एक

ऐसा दीन अ़ता फ़रमाया है कि उसमें "साझेदारी के निज़ाम" के अ़लावा बैंकिंग और फ़ाइनांसिंग के और भी बहुत से तरीक़े हैं। जैसे एक तरीक़ा इजारा (Leasing) का है, वह यह कि एक शख़्स बैंक से पैसा मांगने आया और बैंक ने उस से पूछा कि तुम्हें किस ज़रूरत के लिए पैसा चाहिए? उसने बताया कि मुझे अपने कारख़ाने में एक मशीनरी बाहर से मंगा कर लगानी है। तो अब बैंक उस शख़्स को पैसे न दे बल्कि ख़ुद उस मशीनरी को ख़रीद कर उस शख़्स को किराये पर दे दे। और इस अ़मल को इजारा (Leasing) कहा जाता है। लेकिन आजकल फ़ाइनांसिंग इदारों और बैंक में फ़ाइनांशल लीज़िंग का जो तरीक़ा राइज है, वह शरीअ़त के मुताबिक़ नहीं है। उस एग्रीमेन्ट में बहुत सी शिर्कें (Clauses) शरीअ़त के ख़िलाफ़ हैं। लेकिन उसको शरीअ़त के मुताबिक़ आसानी के साथ बनाया जा सकता है। पाकिस्तान में अनेक फ़ाइनांशल इदारे ऐसे क़ायम हैं जिन में लीज़िंग एग्रीमेन्ट शरीअ़त के मुताबिक़ हैं। उसको इख़्तियार करना चाहिए।

तीसरी वैकल्पिक सूरत "मुराबहा"

इसी तरह एक और तरीक़ा है, जिसका आपने नाम सुना होगा वह है "मुराबहा फ़ाइनांसिंग" यह भी किसी शख़्स से मामला करने का एक तरीक़ा है, जिसमें नफ़े पर वह चीज़ दी जाती है, फ़र्ज़ कीजिए कि एक शख़्स बैंक से इसलिये क़र्ज़ ले रहा है कि वह कच्चा माल (Raw Material) ख़रीदना चाहता है, वह बैंक उसको कच्चा माल ख़रीदने के लिए पैसे देने के बजाए वह ख़ुद कच्चा माल ख़रीद कर उसको नफ़े पर बेच दे, यह तरीक़ा भी शरीअ़त में जायज़ है।

बाज़ लोग यह समझते हैं कि मुराबहा की यह सूरत तो हाथ घुमा कर कान पकड़ने वाली बात हो गई, क्योंकि इसमें बैंक से नफ़ा लेने के बजाए दूसरे तरीक़े से नफ़ा वुसूल कर लिया। यह कहना दुरुस्त नहीं, इसलिये कि क़ुरआने करीम ने फ़रमाया कि:

"وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا" (سورة البقرة:٢٧٥)

यानी अल्लाह तआ़ला ने बै को हलाल किया है और सूद को हराम किया है, और मक्का के काफ़िर भी तो यही कहा करते थे कि बै भी तो सूद जैसी है, उसमें भी इन्सान नफ़ा कमाता है और सूद में भी इन्सान नफ़ा कमाता है। फिर दोनों में फ़र्क़ क्या है? कुरआने करीम ने उनका एक ही जवाब दिया कि यह हमारा हुक्म है कि सूद हराम है और बै हलाल है, जिसका मतलब यह है कि रुपये के ऊपर रुपया नहीं लिया जा सकता, और रुपये पर मुनाफ़ा नहीं लिया जा सकता। लेकिन अगर दरमियान में कोई चीज़ या तिजारत का माल आ जाए, और उसको फ़रोख़्त करके नफ़ा हासिल करे उसको हमने हलाल क़रार दिया है, और मुराबहा के अन्दर दरमियान में माल आ जाता है, इसलिये शरीअ़त के एतिबार से वह सौदा (Transaction) जायज़ हो जाता है।

पसन्दीदा विकल्प कौन सा है?

लेकिन जैसा कि मैंने अ़र्ज़ किया कि यह मुराबहा और "लीज़िंग (Leasing) मतलूबा और पसन्दीदा मुतबादिल (Ideal Alternateve) नहीं हैं, और इस से दौलत की तक़सीम (Distribution of Wealth) पर कोई बुनियादी असर नहीं पड़ता। अलबत्ता पसन्दीदा विकल्प "साझेदारी का निज़ाम" है। लेकिन आईन्दा जो मुन्फ़रिद (Individual) इदारे क़ायम किए जायें, उनके लिए आज़माने और तजुर्बे की मुद्दत (Transitory Period) में "मुराबहा" और "लीज़िंग" पर भी अ़मल करने की गुन्ज़ाइश मौजूद है। और उस वक़्त भी कुछ माली इदारे इन बुनियादों पर काम कर रहे हैं।

बहर हाल, यह तो "सूद" और उसके मुताल्लिक़ चीज़ों के बारे में आ़म बातें थीं जो मैंने अ़र्ज़ कर दीं।

"सूद" से मुताल्लिक़ एक मसला और है, जिसकी घूमती हुई आवाज़ बार बार सुनाई देती है। वह यह है कि बाज़ लोग यह कहते

हैं कि "दारुल हरब" जहां ग़ैर मुस्लिम हुकूमत हो वहां सूद के लेन देन में कोई बुराई नहीं, वहां ग़ैर मुस्लिम हुकूमत से सूद ले सकते हैं। इस मसले पर भी बहुत लम्बी चौड़ी बहसें हुई हैं। लेकिन हक़ीक़त यह है कि चाहे "दारुल हरब" हो या "दारुल इस्लाम" जिस तरह सूद दारुल इस्लाम में हराम है, इसी तरह दारुल हरब में भी हराम है। लेकिन इतनी बात ज़रूर है कि आदमी को चाहिए कि अपना पैसा चालू खाते में रखे, जहां पैसों पर सूद नहीं लगता। लेकिन अगर किसी शख़्स ने ग़लती से बचत खाते (Saving Account) में पैसे रख दिए हैं और उस रक़म पर सूद मिल रहा है तो पाकिस्तान में तो हम लोगों से कह देते हैं कि सूद की रक़म बैंक में छोड़ दो, लेकिन ऐसे मुल्कों में जहां ऐसी रक़म इस्लाम के ख़िलाफ़ ख़र्च होती है, वहां उस शख़्स को चाहिए कि वह सूद की रक़म बैंक से वुसूल करके किसी ग़रीब आदमी को सवाब की नियत के बग़ैर सिर्फ़ अपनी जान छुड़ान के लिए सदक़ा कर दे, और ख़ुद अपने इस्तेमाल में न लाए।

मौजूदा ज़माने में इस्लामी इक्नॉमिक्स के इदारे

एक बात और अर्ज़ कर दूं, वह यह है कि यह काम ज़रा मुश्किल लगता है, लेकिन इसके बावजूद हम मुसलमानों को इस बात की पूरी कोशिश करनी चाहिए कि हम ख़ुद ऐसे मालियाती इदारे क़ायम करें जो इस्लामी बुनियादों पर काम करें और जैसा कि मैंने अभी आपके सामने अर्ज़ किया कि "साझेदारी" "मुराबहा" और "लीज़िंग" की मुकम्मल स्कीमें मौजूद हैं। और इन बुनियादों पर मुसलमान अपने इदारे क़ायम कर सकते हैं। और यहां के मुसलमान माशा अल्लाह इस बात को समझते हैं और इसमें ख़ुद उनके मसाइल का हल भी है। उनको चाहिए कि यहां रह कर फ़ाइनांशल इदारे क़ायम करें। अमेरिका में मेरे इल्म के मुताबिक़ कम से कम हाऊसिंग की हद तक दो इदारे मौजूद हैं और वे सही इस्लामी बुनियादों पर

काम कर रहे हैं। एक टोरन्टो में और एक लॉस एंजलिस में है। अब इन इदारों के तायदाद में इज़ाफ़ा होना चाहिए और मुसलमानों को अपने तौर पर ऐसे इदारे क़ायम करने चाहिएं लेकिन इसकी बुनियादी शर्त यह है कि माहिर फ़ुक़हा और मुफ़्ती हज़रात से मश्विरा करके इस निज़ाम को क़ायम करें। और इस सिलसिले में अगर आप मुझसे भी ख़िदमत लेना चाहेंगे तो हर क़िस्म की ख़िदमत के लिए हाज़िर हूं। जैसा कि मैंने अर्ज़ किया कि इस वक़्त दुनिया में तक़रीबन सौ इदारे काम कर रहे हैं। और तक़रीबन ५ साल से मैं उन इदारों में ख़िदमत कर रहा हूं। अल्लाह तआला आप हज़रात को इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, और मुसलमानों के लिए कोई बेहतर रास्ता इख़्तियार करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

واٰخردعوانا ان الحمد للّٰہ رب العالمین

सुन्नत का मज़ाक़ न उड़ाएं

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَاوَسَنَدَنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا، اَمَّا بَعْدُ:

عن ابى اياس سلمة بن عمروبن الاكوع رضى الله عنه ان رجلا اكل عند رسول الله صلى الله عليه وسلم بشماله فقال: كل بيمينك، قال: لا استطيع، قال: لا استطعت، ما منعه الاالكبر، فما رفعه الىٰ فيه۔ (صحيح مسلم)

ज़रा से तकब्बुर का नतीजा

हज़रत सलमा बिन अक्वा रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि एक शख़्स हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सामने बायें हाथ से खाना खा रहा था, अ़रब वालों में बायें हाथ से खाना खाना आ़म था और अक्सर लोग बायें हाथ से खाना खाते थे। जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने देखा कि वह शख़्स बायें हाथ से खाना खा रहा है तो आपने उसको तंबीह फ़रमाते हुए फ़रमायाः दायें हाथ से खाओ। यह हुक्म आपने इसलिये फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से हमें ज़िन्दगी गुज़ारने के जो आदाब सिखाये गये हैं उनमें दाहिनी तरफ़ को बायीं तरफ़ पर तरजीह (वरीयता) हासिल है, इसलिये हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हर मामले में दाहिनी तरफ़ को बायीं तरफ़ पर तरजीह (वरीयता) दिया करते थे। ये अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का बताया हुआ अदब है, चाहे इसको कोई माने या न माने, चाहे किसी की अ़क़्ल इसको माने या न माने। बहर हाल, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का यह हुक्म सुनकर उस शख़्स ने जवाब में कहा

कि मैं दायें हाथ से नहीं खा सकता, और इस जवाब देने का सबब तकब्बुर था, और उसने सोचा कि मुझे इस बात पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने टोक कर मेरी तौहीन की है, इसलिये मैं हुक्म नहीं मानता। जवाब में आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि आईन्दा तुम कभी दायें हाथ से नहीं खा सकोगे। उसके बाद सारी उम्र वह शख़्स अपना दाहिना हाथ मुंह तक नहीं लेजा सका।

काश! हम सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के ज़माने में होते

इस हदीस में हमारे लिये कई अ़ज़ीमुश्शान सबक़ हैं, पहला सबक़ यह है कि बुहत सी बार नादानी और बेवक़ूफ़ी की वजह से हमारे दिलों में यह ख़्याल पैदा होता है कि अगर हम हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में पैदा होते तो कितना अच्छा होता, सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सोहबत नसीब हुई, आपका दीदार नसीब हुआ, अगर हमें भी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सोहबत और दीदार नसीब होता और हम भी सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की फेहरिस्त में शामिल होते तो कितनी अच्छी बात थी। और कभी कभी यह ख़्याल शिकवे की सूरत इख़्तियार कर लेता है कि अल्लाह तआ़ला ने हमें उस ज़माने में क्यों पैदा नहीं फ़रमाया। आज हमारे लिये पन्द्रहवीं सदी में दीन पर चलना मुश्किल हो गया है, माहौल ख़राब हो गया है, अगर उस ज़माने में होते तो चूंकि माहौल बना हुआ होता इसलिये उस माहौल में दीन पर चलना आसान होता।

अल्लाह तआ़ला ज़र्फ़ के मुताबिक़ देते हैं

हमारे दिल में यह ख़्याल तो पैदा होता है लेकिन यह नहीं सोचते कि अल्लाह तआ़ला जिस शख़्स को जो सआ़दत अ़ता फ़रमाते हैं उसके ज़र्फ़ के मुताबिक़ अ़ता फ़रमाते हैं, यह तो सहाबा –ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम का ज़र्फ़ था कि उन्होंने नबी करीम

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोहबत से फ़ायदा हासिल भी क्या और उसका हक़ भी अदा किया, वह ज़माना बेशक बड़ी सआदतों का ज़माना था, लेकिन साथ में बड़े ख़तरे का ज़माना भी था। आज हमारे पास हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जो इरशादात हैं वे वास्ता दर वास्ता होकर हम तक पहुंचे हैं, इसलिये उलमा-ए-किराम ने फ़रमाया कि जो ख़बरे वाहिद से साबित शुदा बात का इन्कार कर दे और यह कहे कि मैं इस बात को नहीं मानता तो ऐसा शख़्स सख़्त गुनाहगार होगा, लेकिन काफ़िर नहीं होगा मुनाफ़िक़ नहीं होगा। और उस ज़माने में अगर किसी शख़्स ने कोई कलिमा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़बान मुबारक से बराहे रास्त सुना और फिर उसका इन्कार किया, तो इन्कार करते ही कुफ़्र में दाख़िल हो गया। और हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को ऐसी ऐसी आज़माइशें पेश आयी हैं कि उन्हीं का ज़र्फ़ था कि उन आज़माइशों को झेल गये, ख़ुदा जाने अगर हम उनकी जगह होते तो न जाने किस शुमार में होते। उस माहौल में जिस तरह हज़रत सिद्दीक़े अक्बर, फ़ारूक़े आज़म, उस्मान ग़नी और अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु पैदा हुए, उसी माहौल में अबू जहल और अबू लहब भी पैदा हुए। अबदुल्लाह बिन उबई और दूसरे मुनाफ़िक़ीन भी पैदा हुए। इसलिए अल्लाह तआला ने जिस शख़्स के हक़ में जो चीज़ मुक़द्दर फ़रमायी है वही चीज़ उसके हक़ में बेहतर है। लिहाज़ा यह तमन्ना करना कि काश हम सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के ज़माने में पैदा होते, यह नादानी की तमन्ना है, और ख़ुदा की पनाह, यह अल्लाह तआला की हिक्मत पर एतिराज़ है। जिस शख़्स को अल्लाह तआला जितनी नेमत अता फ़रमाते हैं वह उसके ज़र्फ़ के मुताबिक़ अता फ़रमाते हैं।

आपने उसको बद्दुआ क्यों दी?

एक सवाल ज़ेहनों में यह पैदा होता है कि हुज़ूरे अक़्दस

सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के रहमतुल्लिल् आ़लमीन होने की शान तो यह थी कि किसी से अपनी ज़ात के लिये कभी इन्तिक़ाम नहीं लिया, और जहाँ तक हो सका आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने लोगों के लिये दुआ़ ही फ़रमाई, बद्-दुआ़ नहीं फ़रमाई। तो सवाल यह पैदा होता है कि जब उस शख़्स से वक़्ती तौर पर ग़लती हो गई और उसने यह कह दिया कि मैं दाँए हाथ से नहीं खा सकता तो आपने फ़ौरन उसके लिये बद्-दुआ़ क्यों फ़रमा दी, कि आईन्दा तुम्हें कभी मुँह तक हाथ उठाने की तौफ़ीक़ न हो। उलमा-ए-किराम ने फ़रमाया कि बात दर असल यह है कि उस शख़्स ने तकब्बुर की वजह से यह झूठ बोल दिया कि मैं दाँए हाथ से नहीं खा सकता, हालांकि वह खा सकता था, और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के हुक्म का इस तरह तकब्बुर की वजह से झूठ बोल कर मुक़ाबला करना अल्लाह तआ़ला के नज़दीक इतना बड़ा गुनाह है कि इसकी वजह से आदमी जहन्नम का हक़दार हो जाता है, लेकिन हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उस शख़्स पर शफ़्क़त फ़रमाते हुए और उसको जहन्नम के अ़ज़ाब से बचाने के लिये फ़ौरन उसके हक़ में बद्-दुआ़ फ़रमा दी, ताकि इस गुनाह पर जो अ़ज़ाब उसको मिलना है वो दुनिया ही के अन्दर मिल जाए, और इस दुनियावी अ़ज़ाब के नतीजे में एक तरफ़ तो वह जहन्नम के अ़ज़ाब से बच जाए और दूसरी तरफ़ उसको अ़ज़ाब के बाद नेक अ़मल की तौफ़ीक़ हो जाए। इस हिक्मत की वजह से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उसके हक़ में बद्-दुआ़ फ़रमाई।

बुज़ुर्गों की मुख़्तलिफ़ शानें

इसी तरह कई बुर्ज़ुगाने दीन और औलिया अल्लाह से नक़ल किया गया है कि उनको किसी ने तक्लीफ़ दी और सताया तो उन्होंने उस से उसी वक़्त बदला ले लिया। वे हज़रात इसी शफ़्क़त की वजह से बदला ले लेते हैं। इसलिये कि अगर वे बदला न लें तो उस सताने वाले और तक्लीफ़ देने वाले पर उस से ज़्यादा बड़ा

अज़ाब नाज़िल होने का अन्देशा है। एक साहब एक बुर्ज़ुग के मुरीद थे, एक बार उन्होंने अपने शेख़ से कहा कि हज़रत! हमने सुना है कि बुर्ज़ुगाने दीन और औलया-ए-किराम के रंग अलग अलग होते हैं, किसी की कुछ शान है किसी की कुछ शान है, मैं यह देखना चाहता हूँ कि उनकी शानें किस क़िस्म की होती हैं? उनके शेख़ ने फ़रमाया कि तुम इसके पीछे मत पड़ो, अपने काम में लगे रहो, तुम उनकी शानों को कहाँ पा सकते हो। मुरीद साहिब ने कहा, आपकी बात दुरुस्त है, लेकिन मेरा दिल चाहता है कि मुझे ज़रा यह पता लग जाए कि बुर्ज़ुगों के क्या मुख़्तलिफ़ रगं होते हैं। शेख़ ने फ़रमाया कि अगर तुम्हें देखने पर ज़िद ही है तो ऐसा करो कि फ़लां मस्जिद में चले जाओ, वहाँ तुम्हें तीन बुर्ज़ुग ज़िक्र करते हुए अल्लाह अल्लाह करते हुए मिलेगें, तुम जाकर उन तीनों की कमर में एक एक मुक्का मार देना और फिर जो कुछ वे बुर्ज़ुग करें मुझे आकर बता देना। चुनांचे यह साहिब उस मस्जिद में गये तो वहाँ देखा कि वाक़ई तीन बुर्ज़ुग ज़िक्र में मश्गूल हैं, शेख़ के हुक्म के मुताबिक़ उन्होंने जाकर एक बुर्ज़ुग को पीछे से एक मुक्का मारा तो उन्होंने पीछे मुड़ कर भी नहीं देखा कि किसने मुक्का मारा, बल्कि अपने ज़िक्र में मश्गूल रहे। उसके बाद जब दूसरे बुर्ज़ुग को मुक्का मारा तो वे पीछे मुड़े और इन मुक्का मारने वाले का हाथ सहलाने लगे और फ़रमाने लगे कि भाई! तुम्हें तक्लीफ़ तो नहीं हुई? चोट तो नहीं लगी? और जब तीसरे बुर्ज़ुग को मुक्का मारा तो उन्होंने पीछे मुड़ कर इतनी ही ज़ोर से उनको मुक्का मार दिया और फिर अपने ज़िक्र में मश्गूल हो गये।

यह साहिब अपने शेख़ के पास वापस गये और उनसे जाकर अर्ज़ किया कि हज़रत! इस तरह क़िस्सा पेश आया कि जब पहले बुर्ज़ुग को मुक्का मारा तो उन्होंने पीछे मुड़कर भी नहीं देखा। और जब दूसरे को मारा तो वे उल्टा मेरे ही हाथ को सहलाने लगे, और जब तीसरे बुर्ज़ुग को मारा तो उन्होंने मुझसे बदला लिया और मुझे भी एक मुक्का मार दिया। शैख़ ने फ़रमाया कि तुम यह पूछ रहे थे

कि बुज़ुर्गों की मुख़्तलिफ़ शानें क्या होती हैं? तो ये तीन शानें तुमने अलग अलग देख ली हैं। एक शान वो है जो पहले बुज़ुर्ग में थी। उन्होंने यह सोचा कि मैं तो अल्लाह के ज़िक्र में मश्गूल हूँ। और इस ज़िक्र में जो लज़्ज़त और मज़ा आ रहा है उसको छोड़ कर मैं पीछे क्यों देखूं कि कौन मुक्का मार रहा है, और अपना वक़्त क्यों ज़ाया करूं। दूसरे बुज़ुर्ग पर मख़्लूक़ पर शफ़्क़त और रहमत की शान ग़ालिब थी। इसलिये उन्होंने न सिर्फ़ यह कि बदला नहीं लिया बल्कि उस मारने वाले के हाथ को देख रहे हैं कि तुम्हारे हाथ में कोई चोट तो नहीं लगी। और तीसरे बुज़ुर्ग ने जल्दी से बदला इसलिये ले लिया कि कहीं ऐसा न हो कि अल्लाह तआला उनका बदला लेने के लिये उस पर अपना अज़ाब नाज़िल फ़रमा दें, और इस बदला लेने से वह आख़िरत के बदले से भी बच जाये। इसी तरह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने भी उस शख़्स के हक़ में बद्–दुआ फ़रमा कर उस शख़्स को बड़े अ़ज़ाब से बचा लिया।

हर अच्छा काम दाहिनी तरफ़ से शुरू करें

बहर हाल हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नतों की तौहीन करने से बचना चाहिये। आजकल तो लोग इस क़िस्म की सुन्नतों के बारे में तौहीन भरा अन्दाज़ इख़्तियार करते हुए कहते हैं कि मियां! इन छोटी छोटी चीज़ों में क्या रखा है, कि दाहिने हाथ से खाओ और बायें हाथ से न खाओ, याद रखें हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की कोई सुन्नत छोटी नहीं, चाहे बज़ाहिर देखने में वो छोटी मालूम होती हो। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का हर हुक्म, आपकी हर सुन्नत, आपका हर अ़मल इस दुनिया के लिये नमूना है, चुनांचे आपने हर अच्छा काम दाहिनी तरफ़ से शुरू करने का हुक्म दिया है, जैसे दाहिने हाथ से खाओ, दाहिने हाथ से पियो, अगर मजमे में कोई चीज़ बांटनी है तो दाहिनी तरफ़ से शुरू करो, और हदीस में है कि:

كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يعجبه التيمن فى تنعل ترجله وطهوره فى شانه كله (صحيح بخارى)

यानी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हर चीज़ में दाहिने हाथ से शुरूआ़त करने को पसन्द फ़रमाते थे, यहां तक कि लिबास पहनने के बारे में फ़रमाया कि पहले दाहिनी आस्तीन में हाथ डालो फिर बायीं आस्तीन में हाथ डालो, जूता पहनना है तो पहले दायां जूता पहनो और फिर बायां जूता पहनो, बालों में कंघी करनी है तो पहले दायीं तरफ़ कंघी करो और फिर बायीं तरफ़ करो, आंखों में सुर्मा डालना है तो पहले दाहिनी आंख में सुर्मा डालो फिर बायीं आंख में सुर्मा डालो, हाथ धोते वक़्त पहले दायां हाथ धोओ फिर बायां हाथ धोओ, इस तरह आपने हर चीज़ में दायीं तरफ़ से शुरू करने का हुक्म फ़रमाया।

एक वक़्त में दो सुन्नतों को इकट्ठा करना

बज़ाहिर ये मामूली सुन्नतें हैं, लेकिन अगर इन्सान इन सुन्नतों पर अ़मल कर ले तो हर अ़मल पर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से महबूबियत का परवाना मिल रहा है और उस पर अज्र व सवाब मिल रहा है। अगर इन्सान महज़ ग़फ़लतों और ला परवाही से इन सुन्नतों को छोड़ दे और इन पर अ़मल न करे तो इस से ज़्यादा नाक़द्री और क्या हो सकती है? इसलिये पाबन्दी से हर काम इन्सान दायीं तरफ़ से शुरू करे, यहाँ तक कि बुज़ुर्गों ने यहाँ तक फ़रमाया है कि देखिये कि ये दो सुन्नतें हैं, एक यह कि जब आदमी मस्जिद से बाहर निकले तो पहले बायां पैर निकाले और फिर दायां पैर निकाले और दूसरी सुन्नत यह है कि जब जूता पहने तो पहले दाएं पांव में डाले फिर बाएं पांव में डाले, तो इन दोनों सुन्नतों को इस तरह जमा करें कि मस्जिद से पहले बायां पैर निकाल कर जूते के ऊपर रख लें और फिर दायां पैर निकाल कर जूता पहनें और फिर बायें पैर में जूता पहनें, इस तरह दोनों सुन्नतों पर अ़मल हो जायेगा।

हर सुन्नत अ़ज़ीम है

हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़िवानुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम अज्मईन के यहाँ इसका फ़र्क़ नहीं था कि कौन सी सुन्नत छोटी है और कौन सी सुन्नत बड़ी है, बल्कि उनके नज़्दीक हर सुन्नत अ़ज़ीम थी, इसलिये वे तमाम सुन्नतों पर अ़मल करने का एहतिमाम करते थे। हक़ीक़त यह है कि ज़रा सी पाबन्दी करने से इंसान के आमाल नामे में नेकियों का ज़ख़ीरा जमा होता चला जाता है, इसलिये सुन्नतों पर अ़मल करने का एहतिमाम करना चाहिये।

पश्चिमी तहज़ीब की हर चीज़ उल्टी है

हज़रत क़ारी मौहम्मद तय्यिब साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि नयी पश्चिमी तहज़ीब में पहली तहज़ीब के मुक़ाबले में हर चीज़ उल्टी है और फिर मज़ाक़ में फ़रमाते कि पहले चिराग़ तले अंधेरा होता था और अब बल्ब के ऊपर अंधेरा होता है। इस पश्चिमी तहज़ीब ने हमारी क़द्रों को बाक़ायदा एहतिमाम करके बदला है, चुनांचे आजकल की तहज़ीब यह है कि खाना खाते वक़्त कांटा और छुरी दाएं हाथ में पकड़ी जाये और बाएं हाथ से खाया जाये।

आज से कई साल पहले मैं हवाई जहाज़ में सफ़र कर रहा था मेरी साथ वाली सीट पर एक और साहिब बैठे हुए थे, सफ़र के दौरान उनसे ज़रा बेतकल्लुफ़ी भी हो गई थी, जब खाना आया तो उन साहिब ने मामूल के मुताबिक़ दाएं हाथ से छुरी ली और बाएं हाथ से खाना शुरू कर दिया, मैंने उनसे कहा कि हमने हर चीज़ में अंग्रेज़ की पैरवी शुरू कर रखी है और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत यह थी कि आप दाएं हाथ से खाते थे इसलिये अगर आप दाएं हाथ से खा लें तो आपका यही अ़मल सवाब का ज़रिया बन जायेगा। वह जवाब में कहने लगे कि असल में हमारी क़ौम इसी वजह से पीछे रह गयी है कि वे इन छोटी छोटी चीज़ों के

पीछे पड़े हुए हैं, इन मौलवियों ने इन चीज़ों के अन्दर हमारी क़ौम को फंसा दिया और तरक़्क़ी का रास्ता रोक दिया, और जो बड़े बड़े काम थे उनमें हम पीछे रह गये।

पश्चिमी दुनिया फिर क्यों तरक़्क़ी कर रही है?

मैंने उनसे अ़र्ज़ किया कि माशा अल्लाह आप तो लम्बी मुद्दत से इस तरक़्क़ी याफ़्ता तरीक़े से खा रहे हैं, इस तरक़्क़ी याफ़्ता तरीक़े से आपको कितनी तरक़्क़ी हासिल हुई? और आप कितने आगे बढ़ गये? और कितने लोगों पर आपको बरतरी हासिल हो गई? इस पर वह ख़ामोश हो गये। फिर मैंने उनको समझाया कि मुसलमानों कि तरक़्क़ी और सर बुलन्दी तो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तरीक़ों पर अ़मल करने में है और दूसरे तरीक़ों पर अ़मल करने में नहीं। अगर मुसलमान दूसरे तरीक़ों को इख़्तियार करेगा तो वह सर बुलन्द नहीं हो सकता। उन साहिब ने कहा आपने अ़जीब बात कही कि तरक़्क़ी सुन्नतों पर अ़मल करने में है, यह सारी पश्चिमी क़ौमें कितनी तरक़्क़ी कर रही हैं हालांकि वे क़ौमें उल्टे हाथ से खाती हैं, सारे काम सुन्नत और शरीअ़त के ख़िलाफ़ करती हैं, गुनाहों के अ़न्दर बुरी तरह मुब्तला हैं, बुराइयों और गुनाहों के काम करती हैं और शराबें पीती हैं और जुआ खेलती हैं, इसके बावजूद वे क़ौमें तरक़्क़ी कर रही हैं, और पूरी दुनिया पर छाई हुई हैं, लिहाज़ा आप जो यह कहते हैं कि सुन्नतों पर अ़मल करने से तरक़्क़ी होती है लेकिन हमें तो नज़र आ रहा है कि सुन्नतों के ख़िलाफ़ और शरीअ़त के ख़िलाफ़ काम करने से दुनिया में तरक़्क़ी हो रही है।

बूझ बुजक्कड़ का क़िस्सा

मैंने उनसे कहा कि आपने यह जो फ़रमाया कि पश्चिमी क़ौमें सुन्नतों के छोड़ने के बावजूद तरक़्क़ी कर रही हैं, लिहाज़ा हम भी इसी तरह तरक़्क़ी कर सकते हैं। इस पर मैंने उनको एक क़िस्सा सुनाया, वह यह कि एक गांव में एक शख़्स खजूर के पेड़ पर चढ़

गया, किसी तरह चढ़ तो गया लेकिन पेड़ से उतरा नहीं जा रहा था, अब उसने ऊपर से गांव वालों को आवाज़ दी कि मुझे उतारो। अब लोग जमा हो गये और आपस में मशिवरा किया कि किस तरह इसको पेड़ से उतारें, किसी की समझ में कोई तरीक़ा नहीं आ रहा था, उस ज़माने में गांव के अन्दर एक बूझ बुजक्कड़ होता था जो सब से ज़्यादा अक़्ल-मंद समझा जाता था, गांव वाले उसके पास पहुंचे और उसको जाकर सारा क़िस्सा सुनाया कि इस तरह एक आदमी पेड़ पर चढ़ गया है उसको किस तरह उतारें? उस बूझ बुजक्कड़ ने कहा यह तो कोई मुश्किल नहीं, ऐसा करो कि एक रस्सा लाओ और जब रस्सा लाया गया तो उसने कहा कि अब रस्सा उस शख़्स की तरफ़ फेंको और उस शख़्स से कहा कि तुम इस रस्से को अपनी कमर से मज़बूती से बांध लो, उसने जब रस्सा बांध लिया तो अब लोगों से कहा कि तुम इस रस्से को ज़ोर से खींचो, जब लोगों ने रस्सा खींचा तो वह शख़्स पेड़ से नीचे गिरा और मर गया। लोगों ने उस बूझ बुजक्कड़ से कहा कि यह आपने कैसी तरकीब बताई, यह तो मर गया। उसने जवाब दिया कि मालूम नहीं क्यों मर गया, शायद इसकी मौत ही आ गई थी इसलिये मर गया, वर्ना मैंने इस तरीक़े से बेशुमार लोगों को कुएं से निकाला है और वे सही सालिम निकल आये।

मुसलमानों की तरक़्क़ी का रास्ता सिर्फ़ एक है

उस बूझ बुजक्कड़ ने खजूर के पेड़ पर चढ़े शख़्स को कुएं के अन्दर गिरे हुए शख़्स पर अंदाज़ा किया, यही अंदाज़ा यहां भी किया जा रहा है, और यह कहा जा रहा है कि चूंकि ग़ैर मुस्लिम कौमें गुनाहों और बुराइयों और ना फ़रमानी के ज़रिये तरक़्क़ी कर रही हैं इसी तरह हम भी ना फ़रमानियों के साथ तरक़्क़ी कर जायेंगे। यह अंदाज़ा दुरुस्त नहीं। याद रखें जिस क़ौम का नाम मुसलमान है, जो कलिमा तय्यिबा" ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" पर ईमान लायी है, वह अगरचे सर से लेकर पांव तक इन क़ौमों का

तरीक़ा अपना ले और अपना सब कुछ बदल दे तब भी सारी ज़िन्दगी कभी तरक़्क़ी नहीं कर सकती। हां अगर वह तरक़्क़ी करना चाहती है तो एक बार 'ख़ुदा की पनाह' इस्लाम के चोले को अपने जिस्म से उतार दे और यह कह दे कि हम मुसलमान नहीं हैं, फिर उनके तरीक़ों को इख़्तियार कर ले तो अल्लाह तआला उन्हें भी दुनिया में तरक़्क़ी दे देगें। लेकिन मुसलमान के लिये वह ज़ाबता और क़ानून नहीं है जो काफ़िरों के लिये है। मुसलमान के लिये दुनिया में भी अगर कोई तरक़्क़ी करने का रास्ता है तो सिर्फ़ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पैरवी है, इसके अ़लावा मुसलमानों की तरक़्क़ी का कोई रास्ता नहीं है।

सरकारे दो आ़लम की ग़ुलामी इख़्तियार कर लो

बात दर असल यह है कि हमारे दिल व दिमाग़ में यह बात बैठ गई है कि पश्चिमी क़ौमें जो काम कर रही हैं वे पैरवी के क़ाबिल हैं, और नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत 'ख़ुदा की पनाह' एक मामूली सी चीज़ है, और पैरवी के क़ाबिल नहीं है, बल्कि तरक़्क़ी की राह में रुकावट है। हालांकि सोचने की बात यह है कि अगर तुमने दायें हाथ से खाना खा लिया तो तुम्हारी तरक़्क़ी में कौन सी रुकावट आ जायेगी। लेकिन हमारे दिल और दिमाग़ पर ग़ुलामी मुसल्लत है। सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम कि ग़ुलामी छोड़ कर उनकी ग़ुलामी इख़्तियार कर ली है, इसका नतीजा यह है कि ग़ुलामी के अन्दर जी रहे हैं और ग़ुलामी के अन्दर मर रहे हैं, और अब इस ग़ुलामी से निकलना भी चाहते हैं तो निकला नहीं जाता, निकलने का कोई रास्ता नज़र नहीं आता, और सच्ची बात यह है कि उस वक़्त तक इस ग़ुलामी से नहीं निकल सकते और इस दुनिया में इज़्ज़त और सर बुलन्दी हासिल नहीं कर सकते जब तक एक बार सही मायने में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ग़ुलामी क़बूल नहीं कर लेंगे, और सरकारे दो आ़लम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के नक़्शे क़दम पर नहीं चलेंगे।

सुन्नत का मज़ाक़ उड़ाने से कुफ़्र का अंदेशा है

अलबत्ता यह बात ज़रूर है कि सुन्नत सिर्फ़ इन्हीं चीज़ों का नाम नहीं कि आदमी दायें हाथ से खाना खा ले और दायीं तरफ़ से कपड़ा पहन ले, बल्कि ज़िन्दगी के हर शोबे से सुन्नतों का ताल्लुक़ है। इन सुन्नतों में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के अख़्लाक़ भी दाख़िल हैं। आप लोगों के साथ किस तरह मामला फ़रमाते थे? किस तरह ख़ुशी और मुसर्रत के साथ मुलाक़ात करते थे? किस तरह लोगों की तक्लीफ़ों पर सब्र फ़रमाते थे, ये सब बातें भी इन सुन्नतों का हिस्सा हैं, लेकिन कोई सुन्नत ऐसी नहीं है जिसको छोटा समझ कर उसकी तौहीन की जाये। देखिये फ़र्ज़ करें कि अगर किसी शख़्स को किसी सुन्नत पर अ़मल की तौफ़ीक़ नहीं हो रही है तो कम से कम उस शख़्स को बेहतर समझे जिसको उस सुन्नत पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ हो रही है। लेकिन उस सुन्नत का मज़ाक़ उड़ाना, उसको हक़ीर समझना, उसको बुरा क़रार देना, उस पर आवाज़ें कसना इन कामों से उस शख़्स पर कुफ़्र का अन्देशा है। इसलिये मामूली से मामूली सुन्नत के बारे में भी कभी ज़िल्लत व हक़ारत का कलिमा ज़बान से नहीं निकालना चाहिये। अल्लाह तआ़ला हर मुसलमान को महफ़ूज़ रखे, आमीन।

अगली हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम अपनी तालीमात की एक मिसाल बयान फ़रमाते हैं कि:

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीमात और उनको कुबूल करने वालों की मिसाल

عن ابی موسیٰ رضی اللّٰہ عنہ قال: قال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم:
ان مثل مابعثنی اللّٰہ من الھدیٰ والعلم کمثل غیث اصاب ارضا، فکانت منھا
طائفۃ طیبۃ۔ الخ (صحیح بخاری)

हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मेरी मिसाल और जिन तालीमात को मैं देकर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से भेजा गया हूं उनकी मिसाल ऐसी है जैसे एक ज़मीन पर बारिश हुई और वह ज़मीन तीन क़िस्म की थी।

पहली क़िस्म की ज़मीन बड़ी उगाने वाली थी, जब उस पर बारिश हुई तो उस ज़मीन ने पानी को पी लिया और फिर उस ज़मीन में से फूल और पौधे निकल आये।

दूसरी क़िस्म की ज़मीन सख़्त थी जिसकी वजह से पानी अन्दर समा नहीं सका बल्कि ऊपर ही जमा हो गया, और फिर उस पानी से बहुत से इन्सानों और जानवरों ने फ़ायदा उठाया।

तीसरी क़िस्म की ज़मीन में न तो उगाने की सलाहियत थी और न पानी को ऊपर जमा करने की सलाहियत थी, जिसका नतीजा यह हुआ कि बारिश का पानी उस पर बरसा और वह पानी बे फ़ायदा चला गया।

लोगों की तीन क़िस्में

फिर फ़रमाया कि इसी तरह मैं जो तालीमात लेकर आया हूं वे बारिश की तरह हैं और उन तालीमात को सुनने वाले तीन तरह के लोग हैं। बाज़ लोग वे हैं जिन्होंने उन तालीमात को अपने अन्दर हज़्म करके उनसे फ़ायदा उठाया और इसके नतीजे में उनके आमाल और अख़्लाक़ दुरुस्त हो गये, और वे अच्छे इन्सान बन गये। और वे लोगों के लिये बेहतरीन नमूना बन गये। और दूसरे लोग वे हैं जिन्होंने मेरी तालीमात को हासिल किया फिर ख़ुद भी उनसे फ़ायदा उठाया और दूसरे लोगों के फ़ायदे के लिये उनको जमा कर लिया और फिर वे उन तालीमात को सीखने, सिखाने, बयान और दावत के ज़रिये दूसरों तक पहुंचा रहे हैं। तीसरी क़िस्म के लोग वे हैं जिन्होंने मेरी तालीमात को एक कान से सुना और दूसरे कान से

निकाल दिया, न उनसे ख़ुद फ़ायदा उठाया और न उनके ज़रिये दूसरों को फ़ायदा पहुंचाया।

इस हदीस के ज़रिये इस बात की तरफ़ आपने इशारा फ़रमाया कि मेरी तालीमात के बारे में दो बातों में से एक बात इख़्तियार कर लो, या तो ख़ुद उस से फ़ायदा उठाओ और दूसरों को भी उसके ज़रिये फ़ायदा पहुंचाओ, या कम से कम ख़ुद उससे फ़ायदा उठा लो। इसलिये कि तीसरा रास्ता बर्बादी का है, वह यह है कि मेरी तालीमात सुनकर पीठ पीछे डाल दो। इसी बात को एक दूसरी हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस तरह बयान फ़रमाया कि:

كن عالما او متعلما ولا تكن ثالثا فتهلك

यानी या तो तुम दीन के आ़लिम बन जाओ कि ख़ुद भी अ़मल करो और दूसरों तक पहुंचाओ, या इस इल्मे दीन के सीखने वाले बन जाओ। और कोई तीसरी सूरत इख़्तियार मत करो वर्ना तुम हलाक और बर्बाद हो जाओगे।

दूसरों को दीन की दावत दें

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नतों और तालीमात के बारे में एक मुसलमान का असल फ़रीज़ा यह है कि वह ख़ुद उस पर अ़मल करे और दूसरों तक उसको पहुंचाये। अगर ख़ुद अ़मल कर लिया और दूसरों तक नहीं पहुंचाया तो सिर्फ़ यह नहीं होगा कि नाक़िस रहेगा बल्कि उसने जो नफ़ा हासिल किया है उसके भी हाथ से जाते रहने का अंदेशा है। इसलिये कि अगर उसका अपना माहौल दुरुस्त नहीं होगा तो वह किसी भी वक़्त फिसल जायेगा। जैसे एक शख़्स दीनदार बन गया, नमाज़ पाबन्दी से पढ़ने लगा, अहकामात पर अ़मल करने लगा, गुनाहों से ख़ुद बचने लगा, लेकिन अपने घर वालों की इस्लाह की फ़िक्र न की, और घर के सब अफ़राद उसके ख़िलाफ़ हैं, इसका नतीजा यह होगा कि वह एक न

एक दिन इस रास्ते से फिसल जायेगा। इसलिये उस शख़्स के ज़िम्मे फ़र्ज़ है कि अपने घर वालों पर भी मेहनत करता रहे, उनको भी मुहब्बत, प्यार और शफ़्क़त से इस रास्ते की तरफ़ लाने की कोशिश करता रहे, और इसके साथ साथ अपने रिश्तेदारों और यार दोस्तों तक भी बात पहुंचाने की फ़िक्र करता रहे। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक हदीस में इरशाद फ़रमायाः

المؤمن مرآة المؤمن (ابوداؤد شریف)

"एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का आईना है" यानी एक मुसलमान को किसी ग़लती की तरफ़ तवज्जोह नहीं हो रही है तो दूसरा मुसलमान उसको मुहब्बत और प्यार से उस ग़लती की तरफ़ तवज्जोह दिलाये। अलबत्ता इसमें ऐसा तरीक़ा इख़्तियार न करे जो दिल दुखाने वाला हो, जिस से दिल को ठेस लगे और जिस से नफ़रत पैदा हो। बाज़ लोग यह शिकायत करते हैं कि हम बहुत समझाते हैं लेकिन फ़ायदा नहीं होता, तो याद रखिये! फ़ायदा होना या न होना यह तुम्हारा काम नहीं, तुम्हारा काम तो सिर्फ़ अपना फ़रीज़ा अन्जाम देना है। हज़रत नूह अ़लै० को देखिये, साढ़े नौ सौ साल तक तब्लीग़ करते रहे और सिर्फ़ उन्नीस आदमी मुसलमान हुए, उनका हौसला और जिगर गुर्दा देखिये कि इसके बावजूद तब्लीग़ व दावत का काम नहीं छोड़ा।

दावत से उक्ताना नहीं चाहिये

लिहाज़ा एक दावत देने वाले और तब्लीग़ करने वाले का काम यह है कि वह घबराये नहीं, उक्ताये नहीं, मायूस न हो बल्कि उनसे कहता रहे और इसके पीछे न पड़े कि मेरी बात का तो उन पर कोई असर नहीं हुआ, लिहाज़ा अब आईन्दा उनको कहने से क्या फ़ायदा? बल्कि मौक़े मौक़े पर मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ से अपनी बात पहुंचाता रहे। याद रखिये! अच्छी बात किसी न किसी वक़्त अपना असर दिखाती है और उसके असरात ज़रूर ज़ाहिर होते हैं। और अगर मान लीजिये

किसी के मुक़द्दर में हिदायत नहीं थी तो भी तुम्हारा उसको दावत देना ख़ुद तुम्हारे हक़ में फ़ायदेमंद है, और उस पर तुम्हारे लिये अज्र व सवाब लिखा जा रहा ह। और ख़ुद भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नतों और तालीमात पर अ़मल करने की कोशिश करता रहे और जो कोताही हो जाये उस पर इस्तिग़फ़ार करता रहे और माफ़ी मांगता रहे। सारी उम्र यह करता रहे तो इन्शा अल्लाह बेड़ा पार हो जायेगा। अलबत्ता ग़फ़लत बहुत बुरी चीज़ है, इस ग़फ़लत से बचने की कोशिश करता रहे। अल्लाह तआ़ला हम सब की ग़फ़लत से हिफ़ाज़त फ़रमाये और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नतों पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये आमीन।

وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين

तक़दीर पर राज़ी रहना चाहिए

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَاوَسَنَدَنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا، اَمَّا بَعْدُ:

"عن ابی ھریرۃ رضی اللّٰہ عنہ قال: قال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ و سلم : احرص علی ما ینفعك واستعن باللّٰہ ولا تعجز وان اصابك شیء فلا تقل لو انی فعلت لکان کذا وکذا ، ولکن قل : قدراللّٰہ وما شاء فعل ، فان "لو" تفتح عمل الشیطان۔" (مسلم شریف)

दुनिया की हिर्स मत करो

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि उन कामों की हिर्स करो जो तुमको नफ़ा पहुंचाने वाले हैं। मक़सद यह है कि वे आमाल और काम जो आख़िरत में नफ़े का सबब बन सकते हैं उनके अन्दर हिर्स करो। देखिये! वैसे तो हिर्स बुरी चीज़ है और उस से मना फ़रमाया गया है कि माल की हिर्स, दुनिया की हिर्स, शोहरत की हिर्स, नाम नमूद की हिर्स, दौलत की हिर्स मत करो, और इन्सान के लिये यह बहुत बड़ा ऐब है कि वह उन चीज़ों की हिर्स करे बल्कि उन तमाम चीज़ों में क़नाअ़त इख़्तियार करने का हुक्म दिया गया है।

और फ़रमाया गया है कि उनमें से जो कुछ तुम्हें जायज़ तरीक़े से कोशिश करने के नतीजे में मिल रहा है उस पर क़नाअ़त करो, और यह समझो कि मेरे लिये यही बेहतर था। ज़्यादा की हिर्स करना कि मुझे और ज़्यादा मिल जाए, यह दुरुस्त नहीं और उस हिर्स से बचो, क्योंकि दुनिया में कोई भी शख़्स अपनी सारी ख़्वाहिशें कभी पूरी नहीं कर सकता। "कारे दुनिया कसे तमाम न कर्द"। बड़े से बड़ा बादशाह, बड़े से बड़ा सरमायेदार ऐसा नहीं मिलेगा जो यह कह दे कि मेरी सारी इच्छाएं पूरी हो गई हैं। बल्कि हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर आदमी को एक वादी सोने की भर कर मिल जाए तो वह यह चाहेगा कि दो मिल जाएं। और जब दो मिल जाएंगी तो ख़्वाहिश करेगा कि तीन हो जाएं। और आदमी का पेट सिवाए मिट्टी के और कोई चीज़ नहीं भर सकती। जब क़ब्र में जाएगा तो क़ब्र की मिट्टी उसका पेट भर देगी। दुनिया के अन्दर कोई चीज़ उसका पेट नहीं भरेगी। अलबत्ता एक चीज़ जो उसका पेट भर सकती है वह है "क़नाअ़त" यानी जो कुछ उसको अल्लाह तआ़ला ने जायज़ और हलाल तरीक़े से दे दिया है, उस पर क़नाअ़त कर ले और अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करे, उसके सिवा पेट भरने का कोई ज़रिया नहीं।

दीन की हिर्स पसन्दीदा है

लिहाज़ा दुनिया की चीज़ों में हिर्स करना बुरा है और उस से बचने का हुक्म दिया गया है। लेकिन दीन के कामों में, अच्छे आमाल में, इबादतों में हिर्स करना अच्छी चीज़ है। जैसे कोई शख़्स नेक काम कर रहा है उसको देख कर यह हिर्स करना कि मैं भी यह नेक काम करूं, या फ़लां शख़्स को दीन की नेमत हासिल है मुझे भी यह नेमत हासिल हो जाए। ऐसी हिर्स मतलूब है और महबूब और पसन्दीदा है। इसलिये इस हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ऐसे कामों की हिर्स करो जो आख़िरत में

नफ़ा देने वाले हैं। और कुरआने करीम में अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ

यानी नेकी के कामों में एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करो। और आपस में दौड़ करो।

हज़राते सहाबा रज़ि० और नेक कामों की हिर्स

हज़राते सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम नेक कामों में बड़े हरीस थे, और हर वक़्त इस फ़िक्र में रहते कि किसी तरह हमारे नामा-ए-आमाल में नेकी का इज़ाफ़ा हो जाए। हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु के लड़के हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गए तो उन्होंने उनको यह हदीस सुनाई कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

"अगर कोई शख़्स किसी मुसलमान के जनाज़े की नमाज़ में शरीक हो तो उसको एक क़ीरात अज्र मिलता है। और अगर उसके दफ़न में भी शरीक रहे तो उसको दो क़ीरात मिलते हैं"।

"क़ीरात" उस ज़माने में सोने का एक मख़्सूस वज़न होता था। आपने समझाने के लिये क़ीरात का लफ़्ज़ बयान फ़रमा दिया, फिर ख़ुद ही फ़रमाया कि आख़िरत का वह क़ीरात उहद पहाड़ से बड़ा होगा। मतलब यह था कि क़ीरात से दुनिया वाला क़ीरात मत समझ लेना, बल्कि आख़िरत वाला क़ीरात मुराद है जो अपनी अज़मते शान के लिहाज़ से उहद पहाड़ से भी ज़्यादा बड़ा है। और यह भी उसका पूरा बयान नहीं है। इसलिये कि पूरा बयान तो इन्सान की कुदरत में भी नहीं है, क्योंकि इन्सान की डिक्शनरी उसके बयान के लिये नाकाफ़ी है। इस वास्ते यह अल्फ़ाज़ इस्तेमाल फ़रमाए ताकि हमारी समझ में आ जाए। बहर हाल, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब यह हदीस सुनी तो हज़रत अबू हुरैरह

रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया कि क्या वाक़ई आपने हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है? हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैंने ख़ुद यह हदीस सुनी है। उस वक़्त हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमायाः अफ़सोस! हमने अब तक बहुत से क़ीरात ज़ाया कर दिए। अगर पहले से यह हदीस सुनी होती तो ऐसे मौक़े कभी ज़ाया न करते। तो तमाम सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का यही हाल था कि वे इस बात की हिर्स में थे कि किसी तरह कोई नेकी हमारे नामा–ए–आमाल में बढ़ जाए।

यह हिर्स पैदा करें

हम और आप तक़रीरों में सुनते रहते हैं कि फ़लां अमल का यह सवाब है, फ़लां अमल का यह सवाब है। यह दर हक़ीक़त इसलिये बयान किये जाते हैं ताकि हमारे दिलों में उन आमाल को अन्जाम देने की हिर्स पैदा हो। फ़ज़ीलत वाले आमाल, नवाफ़िल, मुस्तहब्बात अगरचे फ़र्ज़ व वाजिब नहीं लेकिन एक मुसलमान के दिल में उनकी हिर्स होनी चाहिए कि वे हमें हासिल हो जाएं। जिन लोगों को अल्लाह तआला दीन की हिर्स अता फ़रमाते हैं तो उनका यह हाल हो जाता है कि वे हर वक़्त इस फ़िक्र में रहते हैं कि किसी तरह कोई नेकी हमारे नामा–ए–आमाल में बढ़ जाए।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दौड़ लगाना

हदीस शरीफ़ में है कि एक बार हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक दावत में तशरीफ़ लेजा रहे थे। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा भी साथ थीं। पैदल सफ़र था। रास्ते में एक जंगल और मैदान पड़ता था, और बे पर्दगी का एहतिमाल नहीं था, इसलिये कि वहां कोई देखने वाला नहीं था। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत आयशा से फ़रमाया कि ऐ आयशा! क्या मेरे साथ दौड़ लगाओगी? हज़रत

आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की दिलजोई मक़सूद थी, और दूसरी तरफ़ उम्मत को यह तालीम देनी थी कि बहुत ज़्यादा बुज़ुर्ग और नेक होकर एक कोने में बैठ जाना भी अच्छी बात नहीं, बल्कि दुनिया में आदमियों की तरह और इन्सानों की तरह रहना चाहिए। और एक हदीस में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरे साथ दो बार दौड़ लगायी। एक बार हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आगे निकल गए और दूसरी बार जब दौड़ लगाई तो चूंकि उस वक़्त आपका जिस्म पहले के मुक़ाबले में भारी हो गया था इसलिये मैं आगे निकल गई और आप पीछे रह गए। उस वक़्त आपने फ़रमायाः दोनों बराबर हो गए। एक बार तुम जीत गईं और एक बार मैं जीत गया। अब देखिए कि बुज़ुर्गाने दीन इस सुन्नत पर किस तरह अमल करने के लिये मौक़े की तलाश में रहते हैं।

हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अलैहि का इस सुन्नत पर अमल

एक बार हज़रत हकीमुल उम्मत मौलाना अशरफ़ अली साहिब थानवी रह्मतुल्लाहि अलैहि थाना भवन से कुछ फ़ासले पर एक गांव में दावत में तश्रीफ़ लेजा रहे थे और बीवी साहिबा साथ थीं। जंगल का पैदल सफ़र था, कोई और शख़्स साथ नहीं था। जब जंगल के दरमियान पहुंचे तो ख़्याल आया कि अल्हम्दु लिल्लाह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बहुत सी सुन्नतों पर अमल करने की तौफ़ीक़ हो गई है लेकिन बीवी के साथ दौड़ लगाने की सुन्नत पर अभी तक अमल का मौक़ा नहीं मिला। आज मौक़ा है कि इस सुन्नत पर भी अमल हो जाए। चुनांचे उस वक़्त आपने दौड़ लगा कर इस सुन्नत पर भी अमल कर लिया। अब ज़ाहिर है कि दौड़ लगाने का कोई शौक़ नहीं था लेकिन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत पर अमल करने के लिये दौड़ लगाई। यह है

इत्तिबा–ए–सुन्नत की हिर्स। नेक कामों की हिर्स। अज्र व सवाब हासिल करने की हिर्स। अल्लाह तआला हम सब के अन्दर यह हिर्स पैदा फ़रमा दे। आमीन।

हिम्मत भी अल्लाह से मांगनी चाहिए

अब कभी कभी यह होता है कि आदमी के दिल में नेक काम करने का शौक़ पैदा हुआ और दिल चाहा कि फ़लां शख़्स यह इबादत करता है, मैं भी यह इबादत अन्जाम दूं। लेकिन साथ ही यह ख़्याल भी आया कि यह इबादत और नेक काम हमारे बस में नहीं है, हम नहीं कर पाएंगे, यह तो बड़े लोगों का काम है। तो जब इस क़िस्म का ख़्याल दिल में पैदा हो तो उस वक़्त क्या करें? इसके लिये हदीस के अगले जुम्ले में इरशाद फ़रमायाः

"وَاسْتَعِنْ بِاللّٰهِ وَلَا تَعْجَزْ"

यानी ऐसे वक़्त में मायूस और आजिज़ होकर न बैठ जाए कि मुझ से यह इबादत हो ही नहीं सकती, बल्कि अल्लाह तआला से मदद तलब करे और कहे कि या अल्लाह! यह काम मेरे बस में तो नहीं है। लेकिन आपकी क़ुदरत में है। आप ही मुझे इस काम की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दें और इसके करने की हिम्मत अता फ़रमा दें।

जैसे नेक लोगों के बारे में सुना कि वे रात को उठ कर तहज्जुद पढ़ा करते हैं और रात को अल्लाह तआला की बारगाह में हाज़िर होते हैं और अल्लाह तआला से दुआएं मांगते हैं। तो अब दिल में शौक़ पैदा हुआ कि मुझे भी रात को उठ कर तहज्जुद की नमाज़ पढ़नी चाहिए। लेकिन यह ख़्याल भी आया कि रात को उठ कर तहज्जुद पढ़ना मेरे बस में नहीं। चलो छोड़ दो और मायूस हो कर बैठ गया। ऐसा नहीं करना चाहिए बल्कि अल्लाह तआला से कहे कि या अल्लाह! मेरी आंख नहीं खुलती, मेरी नींद पूरी नहीं होती। या अल्लाह! तहज्जुद पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दीजिए और इसकी फ़ज़ीलत अता फ़रमा दीजिए।

या अमल की तौफ़ीक़ या अज्र व सवाब

क्योंकि जब अल्लाह तआला से ये दुआ करेगा और तौफ़ीक़ मांगेगा तो फिर दो हाल से ख़ाली नहीं, या तो वाक़ई अल्लाह तआला उस अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमा देंगे और अगर अमल की तौफ़ीक़ हासिल न हुई तो यक़ीनन उस नेक अमल का सवाब इन्शा अल्लाह ज़रूर हासिल हो जाएगा। इसकी दलील यह है कि हदीस शरीफ़ में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स सच्चे दिल से अल्लाह तआला से शहादत तलब करे और यह कहे कि या अल्लाह! मुझे अपने रास्ते में शहादत की मौत नसीब फ़रमा, तो अल्लाह तआला उसको शहादत का मर्तबा अता फ़रमा देते हैं। चाहे बिस्तर पर ही उसका इन्तिक़ाल हो जाए।

एक लुहार का वाक़िआ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह्मतुल्लाहि अलैहि का जब इन्तिक़ाल हो गया तो किसी ने ख़्वाब में उनको देखा तो पूछा कि हज़रत कैसी गुज़री? जवाब में उन्होंने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने बड़े करम का मामला फ़रमाया और मग़फ़िरत फ़रमा दी और मुस्तहिक़ होने के बग़ैर बड़ा दर्जा अता फ़रमाया। लेकिन जो दर्जा मेरे सामने वाले मकान में रहने वाले लुहार को नसीब हुआ वह मुझे नहीं मिल सका। जब ख़्वाब देखने वाला जागा तो उसको यह खोज हुई कि यह मालूम करूं कि वह लुहार कौन था और क्या अमल करता था? जिसकी वजह से हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह्मतुल्लाहि अलैहि से भी आगे बढ़ गया। चुनांचे वह हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह्मतुल्लाहि अलैहि के मौहल्ले में गया और पूछा कि यहां कोई लुहार रहता था जिसका इन्तिक़ाल हो गया है? लोगों ने बताया कि हां, उस सामने वाले मकान में एक लुहार रहता था और चन्द दिन पहले उसका इन्तिक़ाल हुआ है। चुनांचे यह लुहार के घर गया और उसकी बीवी से अपना ख़्वाब बयान किया और पूछा

कि तुम्हारा शौहर ऐसा कौन सा अ़मल करता था जिसकी वजह से वह हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक रह्मतुल्लाहि अ़लैहि से आगे बढ़ गया? लुहार की बीवी ने बताया कि मेरा शौहर ऐसी कोई ख़ास इबादत तो नहीं करता था, सारा दिन लोहा काटता रहता था। अलबत्ता मैंने उसके अन्दर दो बातें देखीं। एक यह कि जब लोहा कूटने के दौरान अज़ान की आवाज़ "अल्लाहु अक्बर" कान में पड़ती तो फ़ौरन अपना काम बंद कर देता था। यहां तक कि अगर उसने अपना हथौड़ा कूटने के लिये ऊपर उठाया होता और इतने में अज़ान की अवाज़ आ जाती तो वह यह भी गवारा नहीं करता था कि उस हथौड़े से चोट लगा दूं। बल्कि हथौड़े को पीछे की तरफ़ फेंक देता और उठ कर नमाज़ की तैयारी में लग जाता। दूसरी बात यह देखी कि हमारे सामने वाले मकान में एक बुज़ुर्ग हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक रह्मतुल्लाहि अ़लैहि रहा करते थे। वह रात भर अपने मकान की छत पर खड़े होकर नमाज़ पढ़ा करते थे। उनको देख कर मेरा शौहर यह कहा करता था कि यह अल्लाह के नेक बन्दे सारी रात इबादत करते हैं, काश अल्लाह तआ़ला मुझे भी फ़रागत अ़ता फ़रमाते तो मैं भी इबादत करता। यह जवाब सुनकर उस शख़्स ने कहा कि बस यही हसरत है जिसने उनको हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक रह्मतुल्लाहि अ़लैहि से आगे बढ़ा दिया। मेरे वालिद माजिद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि यह क़िस्सा सुनाया करते थे कि: यह है "हसरत नायाब" जो बाज़ मर्तबा इन्सान को कहां से कहां पहुंचा देती है। इसलिये जब किसी के बारे में सुनो कि फ़लां शख़्स यह नेक अ़मल करता है तो उस नेक अ़मल के बारे में दिल में हिर्स और हसरत पैदा होनी चाहिए कि काश हमें भी इस नेक काम के करने की तौफ़ीक़ मिल जाए।

सहाबा-ए-किराम की फ़िक्र और सोच का अन्दाज़

हदीस शरीफ़ में आता है कि बाज़ सहाबा किराम रज़ियल्लाहु

अन्हुम हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आए और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह, हमें यह फ़िक्र है कि हमारे बहुत से साथी दौलत वाले और मालदार हैं। उन पर हमें रश्क आता है। इसलिये कि जिस्मानी इबादत के अलावा वे माली इबादत भी करते हैं। जैसे सदका ख़ैरात करते हैं, जिसके नतीजे में उनके गुनाह भी माफ़ होते हैं और उनके दर्जे भी बुलन्द होते हैं। लिहाज़ा आख़िरत के दरजात में वे हम से आगे बढ़ रहे हैं और हम जितनी भी कोशिश कर लें लेकिन ग़रीब होने की वजह से उनसे आगे नहीं बढ़ सकते, इसलिये कि हम सदका ख़ैरात नहीं कर सकते। देखिए। हमारी और उनकी सोच में कितना फ़र्क़ है, हम जब अपने से बड़े मालदार के बारे में सोचते हैं तो उसके सदका ख़ैरात करने पर हमें रश्क नहीं आता, बल्कि इस बात पर रश्क आता है कि उसके पास दौलत ज़्यादा है। इसलिये यह बहुत मज़े से ज़िन्दगी गुज़ार रहा है, काश हमें भी दौलत मिल जाए तो हम भी ऐशो आराम से ज़िन्दगी गुज़ारें। यह है सोच का फ़र्क़।

बहर हाल, इन सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के सवाल के जवाब में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मैं तुम्हें एक ऐसा अमल बतात हूं कि अगर तुम उस अमल को पाबन्दी से कर लोगे तो सदका ख़ैरात करने वालों से तुम्हारा सवाब बढ़ जायेगा। कोई तुम से आगे नहीं बढ़ सकेगा। वह अमल यह है कि हर नमाज़ के बाद ३३ बार सुब्हानल्लाह, ३३ बार अल्हम्दु लिल्लाह, ३४ बार अल्लाहु अक्बर पढ़ लिया करो।

नेकी की हिर्स अज़ीम नेमत है

एक सवाल यह पैदा होता है कि अगर यही ज़िक्र मालदारों ने शुरू कर दिया तो फिर उन सहाबा–ए–किराम का सवाल बर्क़रार रहेगा, क्योंकि मालदार लोग फिर उनसे आगे बढ़ जायेंगे। इसका जवाब यह है कि दर हक़ीक़त हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम यह बतलाना चाहते थे कि जब तुम्हें हिर्स और हसरत हो रही है कि हम भी मालदार होते तो हम भी इसी तरह सदक़ा ख़ैरात करते जिस तरह ये मालदार लोग करते हैं, तो अल्लाह तआ़ला इस हिर्स की बरकत से तुमको सदक़ा ख़ैरात का अज्र व सवाब भी अता फ़रमायेंगे। बहर हाल, किसी नेक काम करने की हिर्स और इरादा और उसके न कर सकने की हसरत भी बड़ी नेमत है, इसलिये जब किसी शख़्स के बारे में सुनो कि फ़लां शख़्स यह नेक अ़मल करता है तो तुम यह दुआ़ कर लो कि ऐ अल्लाह यह नेक काम मेरे बस से बाहर है, आप ही इस काम के करने में मेरी मदद फ़रमाइये और मुझे इसके करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाइये। तो फिर अल्लाह तआ़ला या तो उस नेक काम करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा देंगे या उस नेक काम का अज्र व सवाब अ़ता फ़रमा देंगे। यह नुस्ख़ा कीमिया है।

लफ़्ज़ "अगर" शैतानी अ़मल का दर्वाज़ा खोल देता है

आगे फ़रमाया कि:

"وَاِنْ اَصَابَكَ شَيْءٌ فَلَا تَقُلْ لَوْ اِنِّيْ فَعَلْتُ لَكَانَ كَذَا وَكَذَا، وَلٰكِنْ قُلْ قَدَّرَ اللّٰهُ وَمَاشَآءَ فَعَلَ، فَاِنَّ "لَوْ" تَفْتَحُ عَمَلَ الشَّيْطَانِ"

यानि अगर दुनियावी ज़िन्दगी में तुम्हें कोई मुसीबत और तक्लीफ़ पहुंचे तो यह मत कहो कि अगर यूं कर लेता तो ऐसा न होता, और अगर यूं कर लेता तो ऐसा हो जाता, यह अगर मगर मत कहो, बल्कि यह कहो कि अल्लाह तआ़ला की तक़दीर और मर्ज़ी यही थी, जो अल्लाह ने चाहा वह हो गया। इसलिये कि यह लफ़्ज़ "अगर" शैतान के अ़मल का दर्वाज़ा खोल देता है। जैसे किसी के अ़ज़ीज़ का इन्तिक़ाल हो जाये तो कहता है कि अगर फ़लां डॉक्टर से इलाज करा लेता तो यह बच जाता, या जैसे किसी के यहां चोरी हो गई या डाका पड़ गया तो यह कहता है कि अगर फ़लां तरीक़े से हिफ़ाज़त कर लेता तो चोरी न होती, वग़ैरह। ऐसी बातें मत कहो बल्कि यह कहो कि अल्लाह तआ़ला की तक़दीर में ऐसा ही होना मुक़द्दर था,

इसलिये हो गया। मैं अगर हज़ार तदबीर कर लेता तब भी ऐसा ही होता।

दुनिया राहत और तक्लीफ़ से मिली हुई है

इस हदीस में क्या अजीब व ग़रीब तालीम दी गई है, अल्लाह तआला हमारे दिलों में यह बात उतार दे, आमीन। यक़ीन रखिए कि इस दुनिया में सुकून, दिलों में आफ़ियत, आराम और इत्मीनान हासिल करने के लिये इसके सिवा कोई रास्ता नहीं कि इन्सान तक़दीर पर यक़ीन और ईमान ले आए। इसलिये कि कोई शख़्स ऐसा नहीं है जिसको इस दुनिया में कभी कोई ग़म और परेशानी न आई हो। या कभी कोई मुसीबत उसके ऊपर न आई हो। यह आ़लमे दुनिया दोनों चीज़ों से मिल कर बना है, जिसमें ख़ुशी भी है, ग़म भी है, राहत भी है और तक्लीफ़ भी है। यहां कोई ख़ुशी भी ख़ालिस नहीं, कोई ग़म भी ख़ालिस नहीं। इसलिये ग़म, तक्लीफ़ और परेशानी तो इस दुनिया में ज़रूर आएगी, अगर सारी दुनिया की दौलत ख़र्च करके यह चाहो कि कोई तक्लीफ़ न आए तो यह नहीं हो सकता।

अल्लाह के प्यारे पर तक्लीफ़ें ज़्यादा आती हैं

हमारी और तुम्हारी क्या हक़ीक़त है। अंबिया अलैहिमुस्सलाम जो अल्लाह तआ़ला की प्यारी और महबूब मख़्लूक़ है। उनके ऊपर भी तक्लीफ़ें और परेशानियां आती हैं। और आ़म लोगों से ज़्यादा आती हैं। चुनांचे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

"اَشَدُّ النَّاسِ بَلَاءً اَلْاَنْبِیَاءُ ثُمَّ الْاَمْثَلُ فَالْاَمْثَلُ" (کنز العمال)

यानी लोगों में सब से ज़्यादा तक्लीफ़ें अंबिया अ़लै० पर आती हैं, और फिर जो शख़्स अंबिया अ़लै० से जितना क़रीब होगा उसको उतना ही ज़्यादा तक्लीफ़ें और परेशानियां आयेगीं। वह आ़लम जहां कोई परेशानी और तक्लीफ़ नहीं आयेगी, वह आ़लमे जन्नत है, लिहाज़ा इस दुनिया में परेशानियां तो आयेंगी, लेकिन अगर उन

तक्लीफ़ों पर यह सोचना शुरू कर दिया कि हाए यह क्यों हुआ? अगर ऐसा कर लेते तो यह न होता। फ़लां वजह और सबब से ऐसा हो गया। ऐसा सोचने से नतीजा यह निकलता है कि इस से हसरत बढ़ती है, तक्लीफ़ और सदमा बढ़ता है और अल्लाह तआ़ला पर शिकवा पैदा होता है कि 'अल्लाह अपनी पनाह में रखे' यह सारी मुसीबतें मेरे मुक़द्दर में रह गई थीं, वग़ैरह। और वह मुसीबत वबाले जान बन जाती है, और नतीजा यह होता है कि दुनिया में भी तक्लीफ़ हुई और इस शिकवे की वजह से आख़िरत में इस पर अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ हो जाता है। और कई बार इमान भी ख़तरे में पड़ जाता है।

हक़ीर कीड़ा मस्लिहत क्या जाने?

इसलिये हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमा रहे हैं कि जब तुम्हें कोई परेशानी आए तो यह समझो कि जो कुछ पेश आया है यह अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी और इरादे से पेश आया है। मैं इसकी हिक्मत क्या जानूं, अल्लाह तआ़ला ही इसकी हिक्मत और मस्लिहत जानते हैं। एक हक़ीर कीड़ा उसकी हिक्मत और मस्लिहत को क्या जाने। अलबत्ता उस तक्लीफ़ पर रोना आये तो रोने में कोई हर्ज नहीं। बाज़ लोगों में यह बात मशहूर है कि तक्लीफ़ पर रोना नहीं चाहिये, यह बात ग़लत है। इसलिये कि तक्लीफ़ पर रोना बुरा नहीं है, बशर्ते कि अल्लाह तआ़ला से उस मुसीबत पर शिकवा न हो।

एक बुज़ुर्ग का भूख की वजह से रोना

एक बुज़ुर्ग का वाक़िआ लिखा है कि एक साहिब उनसे मिलने गये, देखा कि वह बैठे रो रहे हैं। उन साहिब ने पूछा कि हज़रत क्या तक्लीफ़ है? जिसकी वजह से आप रो रहे हैं? उन बुज़ुर्ग ने जवाब दिया कि भूख लग रही है। उस शख़्स ने कहा कि आप कोई बच्चे हैं कि भूख की वजह से रो रहे हैं, भूख की वजह से बच्चे रोते हैं, आप तो बड़े हैं, फिर भी रो रहे है? उन बुज़ुर्ग ने फ़रमायाः तुम्हें क्या

मालूम, अल्लाह तआला को मेरा रोना देखना ही मक़सूद हो। इस वजह से वह मुझे भूखा रख रहे हैं। तो कभी कभी अल्लाह तआला को रोना भी पसन्द आता है, शर्त यह है कि उसके साथ शिकवा शिकायत न हो। इसी को सूफ़िया-ए-किराम की इस्तिलाह में "तफ़वीज़" कहा जाता है। यानी मामला अल्लाह के सुपुर्द कर देना और यह कहना कि ऐ अल्लाह! मुझे ज़ाहिरी तौर पर तक्लीफ़ हो रही है लेकिन फ़ैसला आपका बरहक़ है। अगर इन्सान को इस बात का यक़ीन हासिल हो जाये कि अल्लाह तआला की मर्ज़ी और इरादे के बग़ैर एक पत्ता भी हरकत नहीं कर सकता, और तमाम फ़ैसले अल्लाह तआला की तरफ़ से होते हैं तो इस यक़ीन के बाद इत्मीनान और सुकून हासिल हो जायेगा और बीमारी और परेशानी के वक़्त जो ना क़ाबिले बर्दाश्त सदमा और तक्लीफ़ होती है वह नहीं होगी।

मुसलमान और काफ़िर का फ़र्क़

एक काफ़िर का अज़ीज़ बीमार हुआ, उसने डॉक्टर से इलाज कराया, डॉक्टर के इलाज के दौरान उसका इन्तिक़ाल हो गया, तो उस काफ़िर के पास इत्मीनान हासिल करने का कोई रास्ता नहीं है, क्योंकि वह तो यही समझेगा कि डॉक्टर ने दवा सही तजवीज़ नहीं की, सही देखभाल नहीं की, इसलिये यह मर गया। अगर इलाज सही हो जाता तो यह न मरता। लेकिन एक मुसलमान का अज़ीज़ बीमार हो गया, डॉक्टर ने इलाज किया, लेकिन उसका इन्तिक़ाल हो गया तो अब उस मुसलमान के पास इत्मीनान और सुकून हासिल करने का ज़रिया मौजूद है। वह यह कि अगरचे उसकी मौत का ज़ाहिरी सबब डॉक्टर की ग़फ़लत है, लेकिन जो कुछ हुआ, यह अल्लाह तआला की मर्ज़ी से हुआ। उनके इरादे से मौत वाक़े हुई। अगर इस डॉक्टर के अलावा दूसरे डॉक्टर के पास जाता, तब भी मौत आती। इसलिये कि होना वही था जो तक़दीर में अल्लाह तआला ने लिख दिया था। उसकी मौत का वक़्त आ चुका था। उसके दिन पूरे हो

गये थे। उसको जाना था इसलिये चला गया। अल्लाह तआला की तक़दीर बर्हक़ है।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु जो बहुत बड़े दर्जे के सहाबा में से हैं। वह फ़रमाते हैं कि मैं आग का कोई अंगारा अपनी ज़बान पर रख लूं और उसको चाटूं, यह अ़मल मुझे इस से ज़्यादा पसन्द है कि मैं किसी ऐसे वाक़िए के बारे में जो हो चुका, यह कहूं कि काश! यह वाक़िआ न होता। और किसी ऐसे वाक़िए के बारे में जो नहीं हुआ, यह कहूं कि काश! वह वाक़िआ हो जाता।

अल्लाह के फ़ैसले पर राज़ी रहो

मक़सद यह है कि जब अल्लाह तआ़ला किसी बात का फ़ैसला फ़रमा दें, और अल्लाह के फ़ैसले के मुताबिक़ कोई वाक़िआ पेश आ जाए तो अब उसके बारे में यह कहना कि यह न होता तो अच्छा था। या यह कहना कि ऐसा हो जाता, यह कहना अल्लाह तआ़ला की तक़दीर पर राज़ी होने के ख़िलाफ़ है। एक मोमिन से मुतालबा यह है कि वह अल्लाह तआ़ला की तक़दीर पर और उसके फ़ैसले पर राज़ी रहे, और उस तक़दीर के फ़ैसले पर उसके दिल में कोई शिकायत पैदा न हो, और न दिल में उसकी बुराई हो। बल्कि दिल व जान से राज़ी रहे। एक और हदीस में हज़रत अबूदर्दा रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि:

"اذا قضی اللّٰہ قضاءً احب ان یّرضیٰ بقضاءِہٖ"

यानी जब अल्लाह तआ़ला किसी काम के बारे में फ़ैसला फ़रमा देते हैं कि यह काम इस तरह अन्जाम दिया जाना है तो अल्लाह तआ़ला इस बात को पसन्द फ़रमाते हैं कि मेरा बन्दा उस फ़ैसले पर राज़ी हो और उस फ़ैसले को बे चूं व चरा माने। यह न कहे कि यूं होता तो अच्छा था। फ़र्ज़ करें कि कोई ऐसा वाक़िआ पेश आया जो तबीयत को नागवार है और वह ग़म और तक्लीफ़ का वाक़िआ है।

अब पेश आ चुकने के बाद यह कहना कि अगर यूं कर लेते तो यह वाक़िआ पेश न आता। ऐसा कहने से हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मना फ़रमाया है। इसलिये कि जो वाक़िआ पेश आया वह तो पेश आना ही था, इसलिये कि वह अल्लाह तआला का फ़ैसला और उसकी तक़दीर थी। तुम अगर हज़ार तदबीर भी कर लेते तब भी वह फ़ैसला टलने वाला नहीं था। लिहाज़ा अब फ़ुज़ूल ये बातें करना कि ऐसा कर लेते तो ऐसा न होता, ये बातें अल्लाह तआला के फ़ैसले पर राज़ी होने के ख़िलाफ़ हैं। ऐसी बातें करना मोमिन का काम नहीं।

तक़दीर पर राज़ी रहना तसल्ली का सबब है

हक़ीक़त में अगर ग़ौर करके देखा जाये तो इन्सान के पास तक़दीर पर राज़ी होने के अलावा चारा ही क्या है? इसलिये कि तुम्हारे नाराज़ होने से वह फ़ैसला बदल नहीं सकता। जो ग़म पेश आया है, तुम्हारी नाराज़गी से वह ग़म दूर नहीं हो सकता, बल्कि उस नाराज़गी से ग़म की शिद्दत और तक्लीफ़ में और इज़ाफ़ा हो जाएगा, और यह कहेगा कि हाय हमने यह न कर लिया। फ़लां तदबीर इख़्तियार न कर ली, अगर ग़ौर करके देखा जाये तो यह नज़र आयेगा कि तक़दीर पर राज़ी रहने में दर हक़ीक़त इन्सान की तसल्ली का सामान है। और एक मोमिन के लिये अल्लाह तआला ने इसको तसल्ली का ज़रिया बना दिया है।

तक़दीर "तदबीर" से नहीं रोकती

और यह "तक़दीर" अजीब व ग़रीब अक़ीदा है, जो अल्लाह तआला ने हर ईमान वाले को अता फ़रमाया है। इस अक़ीदे को सही तौर पर न समझने की वजह से लोग तरह तरह की ग़लतियों में मुब्तला हो जाते हैं। पहली बात यह है कि किसी वाक़िए के पेश आने से पहले तक़दीर का अक़ीदा किसी इन्सान को बेअमली पर आमादा न करे। जैसे एक इन्सान तक़दीर का बहाना करके हाथ पर हाथ

रख कर बैठ जाए और यह कहे कि जो तक़दीर में लिखा है वह होकर रहेगा, मैं कुछ नहीं करता। यह अ़मल हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीम के ख़िलाफ़ है। बल्कि हुक्म यह है कि जिस चीज़ के हासिल करने की जो तदबीर है उसको इख़्तियार करने में काई कसर न छोड़ो।

तदबीर के बाद फ़ैसला अल्लाह पर छोड़ दो

दूसरी बात यह है कि तक़दीर के अ़क़ीदे पर अ़मल किसी वाक़िए के पेश आने के बाद शुरू होता है। जैसे कोई वाक़िआ पेश आ चुका, तो एक मोमिन का काम यह है कि वह सोचे कि मैंने जो तदबीरें इख़्तियार करनी थीं वे कर लीं और अब जो वाक़िआ हमारी तदबीर के ख़िलाफ़ पेश आया, वह अल्लाह तआ़ला का फ़ैसला है, हम उस पर राज़ी हैं। लिहाज़ा वाक़िआ पेश आ चुकने के बाद उस पर बहुत ज़्यादा परेशानी, हसरत और तक्लीफ़ का इज़्हार करना और यह कहना कि फ़लां तदबीर इख़्तियार कर लेता तो यूं हो जाता। यह बात तक़दीर के अ़क़ीदे के ख़िलाफ़ है। इन दो हदों के दरमियान अल्लाह तआ़ला ने हमें दरमियानी राह यह बता दी कि जब तक तक़दीर पेश नहीं आई, उस वक़्त तक तुम्हारा फ़र्ज़ है कि अपनी सी पूरी कोशिश कर लो। और एहतियाती तदबीरें भी इख़्तियार कर लो, इसलिये कि हमें यह नहीं मालूम कि तक़दीर में क्या लिखा है?

हज़रत फ़ारूक़े आज़म का एक वाक़िआ

हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु एक बार शाम के दौरे पर तश्रीफ़ लेजा रहे थे, रास्ते में आपको इत्तिला मिली कि शाम के इलाक़े में ताऊन की वबा फूट पड़ी है, यह इतना सख़्त था कि इन्सान बैठे बैठे चन्द घन्टों में ख़त्म हो जाता था। उस ताऊन में हज़ारों सहाबा–ए– किराम शहीद हुए हैं। आज भी उर्दुन में हज़रत उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अ़न्हु के मज़ार के पास पूरा क़ब्रिस्तान उन सहाबा–ए–किराम की क़ब्रों से भरा हुआ है जो उस ताऊन में

शहीद हुए। बहर हाल, हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से मश्विरा किया कि वहां जाएं या न जाएं और वापस चले जायें। उस वक़्त हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने यह इरशाद फ़रमाया कि अगर किसी इलाक़े में ताऊन की वबा फूट पड़े तो जो लोग उस इलाक़े से बाहर हैं वे उस इलाक़े के अन्दर दाख़िल न हों, और जो लोग उस इलाक़े में रहते हैं वे वहां से न भागें। यह हदीस सुनकर हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि इस हदीस में आपका साफ़ साफ़ इरशाद है कि ऐसे इलाक़े में दाख़िल नहीं होना चाहिये। लिहाज़ा आपने वहां जाने का इरादा मुल्तवी कर दिया, उस वक़्त एक सहाबी ग़ालिबन हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु थे, उन्होंने हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया:

"أَتَفِرُّ مِنْ قَدَرِ اللّٰهِ"

क्या आप अल्लाह की तक़दीर से भाग रहे हैं? यानी अगर अल्लाह तआला ने उस ताऊन के ज़रिये मौत का आना लिख दिया है तो मौत आकर रहेगी, और अगर तक़दीर में मौत नहीं लिखी तो जाना और न जाना बराबर है। जवाब में हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया:

"لو غيرك قالها يا عبيدة"

ऐ अबू उबैदा आगर आपके अलावा कोई शख़्श यह बात कहता तो मैं उसको माज़ूर समझता, लेकिन आप तो पूरी हक़ीक़त से वाक़िफ़ हैं, आप यह बात कैसे कह रहे हैं कि मैं तक़दीर से भाग रहा हूं। फिर फ़रमाया:

"نعم نفر من قدر الله الى قدر الله"

"हां! हम अल्लाह की तक़दीर से अल्लाह की तक़दीर की तरफ़ भाग रहे हैं"

मतलब यह था कि जब तक वाक़िआ पेश नहीं आया, उस वक़्त तक हमें एहतियाती तदबीर इख़्तियार करने का हुक्म है। और उन

एहतियाती तदबीरों का इख़्तियार करना तक़दीर के अक़ीदे के ख़िलाफ़ नहीं, बल्कि तक़दीर के अक़ीदे के अन्दर दाख़िल है। क्योंकि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हुक्म फ़रमाया है कि एहतियाती तदबीरें इख़्तियार करो। चुनांचे इस हुक्म पर अ़मल करते हुए वापस जा रहे हैं। लेकिन इसके बावजूद अगर तक़दीर में हमारे लिये ताऊन की बीमारी में मुब्तला होना लिखा है तो उसको हम टाल नहीं सकते। लेकिन अपनी सी तदबीर हमें पूरी करनी है।

"तक़दीर" का सही मतलब

यह है एक मोमिन का अ़क़ीदा कि अपनी तरफ़ से तदबीर पूरी की लेकिन तदबीर करने के बाद मामला अल्लाह तआ़ला के हवाले कर दिया, और यह कह दिया कि या अल्लाह, हमारे हाथ में जो तदबीर थी वह तो हमने इख़्तियार कर ली, अब मामला आपके इख़्तियार में है, आपका जो फ़ैसला होगा हम उस पर राज़ी रहेंगे। हमें उस पर कोई एतिराज़ नहीं होगा। लिहाज़ा वाक़िए के पेश आने से पहले तक़दीर का अ़क़ीदा किसी को बेअ़मली पर आमादा न करे। जैसे बाज़ लोग तक़दीर के अ़क़ीदे को बेअमली का बहाना बना लेते हैं और यह कहते हैं कि जो तक़दीर में लिखा है वह तो होकर रहेगा, इसलिये हाथ पर हाथ रख कर बैठ जाएं, काम क्यों करें? यह दुरुस्त नहीं, क्योंकि इस्लाम की तालीम यह है कि अपनी तदबीर करते रहो, हाथ पावं हिलाते रहो, लेकिन सारी तदबीरें इख़्तियार करने के बाद अगर अपनी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ पेश आ जाए तो उस पर राज़ी रहो। लेकिन अगर तुम अपनी रज़ामन्दी का इज़हार न करो, बल्कि यह कह दो कि यह फ़ैसला तो बहुत ग़लत हुआ, बहुत बुरा हुआ, तो इसका नतीजा सिवाए परेशानी में इज़ाफ़े के कुछ नहीं होगा। इसलिये कि जो वाक़िआ पेश आ चुका है वह बदल नहीं सकता, और आख़िरकार तुम्हें उसके सामने सर झुकाना ही पड़ेगा। इसलिये पहले दिन ही उसको मान लेना चाहिये कि जो अल्लाह तआ़ला का फ़ैसला है हम उस पर राज़ी हैं।

ग़म और सदमा करना "तक़दीर पर राज़ी रहने" के ख़िलाफ़ नहीं

अब एक बात और समझ लेनी चाहिये, वह यह कि जैसा कि मैंने पहले अर्ज़ किया था कि अगर कोई तक्लीफ़ देने वाला वाक़िआ पेश आए या कोई ग़म और सदमा पेश आए तो उस ग़म और तक्लीफ़ पर रोना सब्र के ख़िलाफ़ नहीं, और गुनाह नहीं। अब सवाल यह पैदा होता है कि एक तरफ़ आप यह कह रहे हैं कि ग़म और सदमा करना और उसका इज़हार करना जायज़ है, रोना भी जायज़ है, और दूसरी तरफ़ आप यह कह रहे हैं कि अल्लाह के फ़ैसले पर राज़ी रहना चाहिये। ये दोनों चीज़ें कैसे जमा करें कि एक तरफ़ फ़ैसले पर राज़ी भी हों और दूसरी तरफ़ ग़म और सदमे का इज़हार करना जायज़ हो? ख़ूब समझ लेना चाहिये कि ग़म और सदमे का इज़हार अलग चीज़ है और अल्लाह के फ़ैसले पर राज़ी होना अलग चीज़ है, इसलिये कि अल्लाह तआ़ला के फ़ैसले पर राज़ी होने का मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला का फ़ैसला बिल्कुल हिक्मत पर आधारित है, और हमें उसकी हिक्मत मालूम नहीं, और हिक्मत मालूम न होने की वजह से दिल को तक्लीफ़ पहुंच रही है। हम रो भी रहे हैं, और आंखों से आंसू भी जारी हैं, लेकिन साथ साथ यह जानते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने जो फ़ैसला किया है, वह बर्हक़ है, हिक्मत पर आधारित है, लिहाज़ा "रज़ा" से मुराद रज़ा-ए-अक़्ली है , यानी अक़्ली तौर पर इन्सान यह समझे कि यह फ़ैसला सही है।

एक बेहतरीन मिसाल

जैसे एक बीमार डॉक्टर से आपरेशन कराने के लिये अस्पताल जाता है, और डॉक्टर से दरख़्वास्त करता है, और उसकी ख़ुशामद करता है कि मेरा आपरेशन कर दो। जब डॉक्टर ने आपरेशन शुरू किया तो अब यह रो रहा है, चीख़ रहा है, हाय हाय कर रहा है, और उस तक्लीफ़ की वजह से उसको रंज और सदमा भी हो रहा है,

लेकिन उसके साथ साथ वह डॉक्टर को आपरेशन की फ़ीस भी देता है और उसका शुक्रिया भी अदा करता है, क्यों? इसलिये कि वह अक़्ली तौर पर जानता है कि जो कुछ डॉक्टर कर रहा है, वह ठीक कर रहा है, और मेरे फ़ायदे के लिये कर रहा है। बिल्कुल इसी तरह एक मोमिन को इस दुनिया में जितनी तक्लीफ़ें और जितने सदमे पहुंचते हैं, ये सब अल्लाह तआला की तरफ़ से पहुंचते हैं। गोया कि अल्लाह तआला तुम्हारा आपरेशन कर रहे हैं। अब अगर उन तक्लीफ़ों के बाद अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू कर रहे हो तो उसका अंजाम तुम्हारे हक़ में बेहतर होने वाला है। लिहाज़ा अक़्ली तौर पर अगर यह बात दिल में बैठी हुई है, और फिर इन्सान उस सदमे पर और उस तक्लीफ़ पर ग़म का इज़्हार करे, रोए, चिल्लाए तो उस पर कोई पकड़ नहीं।

काम का बिगड़ना भी अल्लाह तआला की तरफ़ से है

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि कई बार एक ताजिर शख़्स इस बात की कोशिश में लगा होता है कि मेरा फ़लां सौदा हो जाये तो उसके ज़रिये मैं बहुत नफ़ा कमा लूंगा, या एक शख़्स किसी ओहदे और पद को हासिल करने की कोशिश करता है कि मुझे फ़लां ओहदा मिल जाये तो बड़ा अच्छा हो, अब सौदे के लिये या उस ओहदे के लिये भाग दौड़ और कोशिश कर रहा है, दुआयें कर रहा है, दूसरों से भी दुआयें करा रहा है, लेकिन जब सब काम मुकम्मल हो चुके और क़रीब था कि वह सौदा हो जाये, या वह ओहदा और पद उसको मिल जाये, ऐन उस वक़्त अल्लाह तआला फ़रिश्तों से फ़रमाते हैं कि मेरा यह नादान और बेवकूफ़ बन्दा उस सौदे के या पद के हासिल करने के पीछे पड़ा हुआ है, और अपनी पूरी कोशिश ख़र्च कर रहा है, लेकिन मैं जानता हूं कि अगर यह सौदा या यह पद उसको हासिल हो गया तो मुझे उसको जहन्नम में डालना पड़ेगा, इसलिये कि उस सौदे या पद के नतीजे में यह गुनाह में मुब्तला होगा और उसके नतीजे में मुझे

इसको जहन्नम में धकेलना पड़ेगा। इसलिये यह पद या यह सौदा इस से दूर कर दिया जाये। चुनांचे बिल्कुल उस वक़्त जब कि वह सौदा होने वाला था, या वह पद मिलने ही वाला था कि अचानक कोई रुकावट खड़ी हो गई और वह सौदा नहीं हुआ, या वह पद नहीं मिला। अब यह शख़्स रो रहा है और यह शिकायत कर रहा है कि फ़लां शख़्स ने बीच में आकर मेरा काम बिगाड़ दिया। और अब उस बिगाड़ को दूसरों की तरफ़ मन्सूब कर रहा है, हालांकि उसको यह मालूम नहीं कि जो कुछ किया वह उसके ख़ालिक़ और मालिक ने किया है, और उसके फ़ायदे के किया। क्योंकि अगर यह पद मिल जाता तो जहन्नम के अज़ाब में मुब्तला होता। यह है तक़दीर और अल्लाह का फ़ैसला, जिस पर अक़्ली तौर पर इन्सान को राज़ी रहना चाहिये।

तक़दीर के अक़ीदे पर ईमान ला चुके हो

अक़ीदे के एतिबार से तो हर मोमिन का तक़दीर पर ईमान होता है। जब एक बन्दा ईमान लाता है तो अल्लाह और अल्लाह के रसूल पर ईमान लाने के साथ वह तक़दीर पर भी ईमान लाता है:

"آمَنْتُ بِاللّٰهِ وَمَلآ ئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْقَدْرِ خَيْرِهٖ وَشَرِّهٖ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ"

(ईमान लाया मैं अल्लाह पर और उसके फ़रिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर और आख़िरत के दिन पर और तक़दीर के अच्छा बुरा होने पर और मरने के बाद ज़िन्दा होने पर)

लेकिन इस ईमान का असर आम तौर पर उसकी ज़िन्दगी पर ज़ाहिर नहीं होता और इस अक़ीदे का ख़्याल नहीं रहता, और इसकी तरफ़ ध्यान नहीं रहता, जिसकी वजह से वह दुनिया में परेशान होता रहता है, इसलिये सूफ़िया-ए-किराम फ़रमाते हैं कि जब तुम इस अक़ीदे पर ईमान ले आये तो इस अक़ीदे को अपनी ज़िन्दगी का हिस्सा बनाओ, और इस अक़ीदे का ध्यान पैदा करो, और इसको याद रखो, और जो भी वाक़िआ पेश आये उस वक़्त इसको ताज़ा करो कि

मैं अल्लाह की तक़दीर पर ईमान लाया था, इसलिये मुझे इस पर राज़ी रहना चाहिये। यही फ़र्क़ है एक आम आदमी में और उस शख़्स में जिसने सूफ़िया–ए–किराम की तरबियत के तहत इस अक़ीदे को अपनी में अपनाने की कोशिश की हो। इसलिये इस अक़ीदे को इस तरह अपना हाल बना लें कि जब कभी कोई नागवार वाक़िआ पेश आये तो उस वक़्त "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन" पढ़े, और साथ में अल्लाह तआला के हवाले कर दे कि यह अल्लाह का फ़ैसला है। आगे हमें उसके अन्दर चूं व चरा की गुन्जाइश नहीं। इसकी मश्क़ करनी पड़ती है तब जाकर यह अक़ीदा हाल बन जाता है, और जब यह हाल बन जाता है तो फिर ऐसे शख़्स को दुनिया में कभी परेशानी नहीं होती, अल्लाह तआला इस अक़िदे को हम सब का हाल बना दे, आमीन।

यह परेशानी क्यों है?

देखिये, सदमा और ग़म चीज़ है यह तो हर शख़्स को पेश आती हैं। लेकिन एक है परेशानी, वह यह कि आदमी उस ग़म और सदमे की वजह से बेताब और बेचैन है। किसी करवट चैन नहीं आ रहा है यह परेशानी क्यों है? इसलिये कि वह शख़्स उस फ़ैसले पर अक़्ली तौर पर राज़ी नहीं है। ज़ाहिर है कि ऐसे आदमी को चैन और सुकून कैसे मयस्सर आये? और जिस शख़्स का इस बात पर ईमान है कि मेरे इख़्तियार में जो कुछ था वह मैंने कर लिया, अब आगे मेरे इख़्तियार से बाहर था, इसलिये मैं कुछ नहीं कर सकता था, और अल्लाह तआला ने जो फ़ैसला किया है वह बर्हक़ है, ऐसे शख़्स को कभी परेशानी लाहिक़ नहीं होगी। ग़म और सदमा ज़रूर होगा, लेकिन परेशानी नहीं होगी।

सोने के पानी से लिखने के क़ाबिल जुम्ला

मेरे वालिद माजिद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि का इन्तिक़ाल हुआ तो मुझे उस पर बहुत सख़्त

सदमा हुआ, ज़िन्दगी में इतना बड़ा सदमा कभी पेश नहीं आया था, और यह सदमा बेचैनी की हद तक पहुंचा हुआ था, किसी करवट किसी हाल क़रार नहीं आ रहा था, और उस सदमे पर रोना भी नहीं आ रहा था। इसलिये कि कई बार रोने से दिल की भड़ास निकल जाती है, उस वक़्त मैंने अपने शैख़ हज़रत डॉक्टर अ़ब्दुल हई साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि को अपनी यह कैफ़ियत लिखी तो उन्होंने जवाब में सिर्फ़ एक जुम्ला लिख दिया, और अल्हम्दु लिल्लाह आज तक वह जुम्ला दिल पर नक़्श है और उस एक जुम्ले ने इतना फ़ायदा पहुंचाया कि मैं बयान नहीं कर सकता, वह जुम्ला यह था:

"सदमा तो अपनी जगह पर है, लेकिन ग़ैर इख़्तियारी चीज़ों पर इतनी ज़्यादा परेशानी क़ाबिले इस्लाह है"

यानी सदमा तो अपनी जगह है, वह होना चाहिये, इसलिये कि अ़ज़ीम बाप से जुदाई हो गई, लेकिन यह एक ग़ैर इख़्तियारी वाक़िआ पेश आया, इसलिये कि तुम यह नहीं कर सकते थे कि मौत के वक़्त को टला देते, अब इस ग़ैर इख़्तियारी वाक़िए पर इतनी परेशानी क़ाबिले इस्लाह है। इसका मतलब यह है कि तक़दीर पर राज़ी रहने का जो हुक्म है, उस पर अ़मल नहीं हो रहा है, और उस पर अ़मल न होने की वजह से परेशानी हो रही है। यक़ीन जानिये कि इस एक जुम्ले के पढ़ने के बाद ऐसा महसूस हुआ जैसे किसी ने सीने पर बरफ़ रख दी और मेरी आंखें खोल दीं।

दिल पर यह "जुम्ला" लिख लें

एक और मौक़े पर अपने शैख़ हज़रत मौलाना मसीहुल्लाह ख़ान साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि को मैंने ख़त लिखा कि हज़रत! फ़लां बात की वजह से सख़्त परेशानी है। जवाब में हज़रते वाला ने यह जुम्ला लिखा कि:

"जिस शख़्स का अल्लाह जल्ल जलालुहू से ताल्लुक़ हो, उसका परेशानी से क्या ताल्लुक़?"

यानी परेशानी इस बात की दलील है कि अल्लाह तआला के साथ ताल्लुक़ मज़बूत नहीं, जब अल्लाह तआला के साथ ताल्लुक़ मज़बूत हो तो परेशानी आने की मजाल नहीं। इसलिये कि जो सदमा और ग़म हो रहा है उसके लिये अल्लाह तआला से कहो, या अल्लाह इसको दूर फ़रमा दे, और फिर अल्लाह तआला जो फ़ैसला फ़रमायें उस पर राज़ी रहो, लेकिन परेशानी किस बात की? लिहाज़ा अगर तक़दीर पर राज़ी रहना हाल बन जाये और जिस्म व जान के अन्दर दाख़िल हो जाये तो फिर परेशानी का गुज़र नहीं हो सकता।

हज़रत ज़ुन्नून मिसरी के राहत व सुकून का राज़

हज़रत ज़ुन्नून मिसरी रह्मतुल्लाहि अलैहि से किसी ने जाकर पूछा कि हज़रत क्या हाल है? फ़रमाया कि बड़े मज़े में हूं, और उस शख़्स के मज़े का क्या पूछते हो कि इस कायनात में कोई वाक़िआ उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ नहीं होता, बल्कि जो वाक़िआ भी पेश आता है वह उसकी मर्ज़ी के मुताबिक़ होता है, लिहाज़ा दुनिया के सारे काम मेरी मर्ज़ी के मुताबिक़ हो रहे हैं। सवाल करने वाले ने कहा कि हज़रत! यह बात तो अंबिया अलैहिमुस्सलाम को भी हासिल नहीं हुई कि दुनिया के तमाम काम उनकी मर्ज़ी के मुताबिक़ हो जायें, आपको यह कैसे हासिल हुई? जवाब में फ़रमाया कि मैंने अपनी मर्ज़ी को अल्लाह की मर्ज़ी में फ़ना कर दिया है, जो अल्लाह की मर्ज़ी, वह मेरी मर्ज़ी, और दुनिया के सारे काम अल्लाह तआला की मर्ज़ी से होते हैं, और मेरी भी वही मर्ज़ी है, और जब सारे काम मेरी मर्ज़ी से हो रहे हैं तो मेरे मज़े का क्या पूछना? परेशानी तो मेरे पास भी नहीं फटकती, परेशानी तो उस शख़्स को हो जिसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ काम होते हों।

तक्लीफ़ें भी हक़ीक़त में रहमत हैं

हक़ीक़त यह है कि अल्लाह तआला जिनको तक़दीर पर राज़ी रहने की दौलत अता फ़रमा देते हैं, उनके पास परेशानी का गुज़र

नहीं होता। उनको सदमा ज़रूर होता है, ग़म और तक्लीफ़ उनके पास ज़रूर आती है, लेकिन परेशानी नहीं होती, इस लिये कि वे जानते हैं कि जो कुछ ग़म या सदमा आ रहा है, वह मेरे मालिक की तरफ़ से आ रहा है, और मेरे मालिक की हिक्मत के मुताबिक़ आ रहा है, और मालिक की तक़दीर के मुताबिक़ मेरा फ़ायदा भी इसी में है। यहां तक कि बाज़ बुज़ुर्गों ने यहां तक कह दिया कि:

न शवद नसीबे दुश्मन कि शवद हलाके तेग़त
सरे दोस्तां सलामत कि तू ख़न्जर आज़माई

यानी यह बात तुम्हारे दुश्मन को नसीब न हो कि वह तेरी तलवार से हलाक हो, दोस्तों का सर सलामत रहे कि तू उस पर ख़न्जर आज़माये। यानी ये जो तक्लीफ़ें पहुंच रही हैं, ये भी उनकी रहमत का उन्वान है, और जब उनकी रहमत का उन्वान है तो दूसरों को क्यों पहुंचें, ये भी हमें पहुंचें।

एक मिसाल

हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि इसकी एक मिसाल देते हुए फ़रमाते हैं कि एक शख़्स आपका महबूब है, उस से आपको बहुत ज़्यादा मुहब्बत है और उस महबूब के दूर होने की वजह से बहुत मुद्दत से उस से मुलाक़ात नहीं हुई। अचानक वह महबूब आपके पास आता है और चुपके से आकर आपको पीछे से पकड़ कर ज़ोर से दबा लेता है, और आपको तक्लीफ़ होती है, जिसके नतीजे में आप चीख़ते हैं और अपने को छुड़ाने की कोशिश करते हैं, और पूछते हैं कि तुम कौन हो? वह जवाब देता है कि मैं तुम्हारा फ़लां महबूब हूं, अगर तुम्हें मेरा यह दबाना पसन्द नहीं तो मैं तुम्हें छोड़ देता हूं और तुम्हारे रक़ीब (यानी मुख़ालिफ़ और दूसरे चाहने वाले) को दबा लेता हूं। अगर तुम सच्चे आ़शिक़ हो तो यही जवाब दोगे कि मेरे मुख़ालिफ़ और दुश्मन को मत दबाना, बल्कि मुझे ही दबाओ, और ज़ोर से दबाओ, और यह शेर पढ़ोगे

न शवद नसीबे दुश्मन कि शवद हलाके तेग़त
सरे दोस्तां सलामत कि तू ख़न्जर आज़माई

अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल से हमें यह एहसास और ख़्याल अता फ़रमा दे कि ये तक्लीफ़ें भी अल्लाह तआला की रहमत का उन्वान हैं। लेकिन हम चूंकि कमज़ोर हैं इसलिये हम इन तक्लीफ़ों को मांगते नहीं, लेकिन जब वे तक्लीफ़ें आ गईं तो उनकी हिक्मत और फ़ैसले से आई हैं, इसलिये वे हमारे हक़ में बेहतर हैं।

तक्लीफ़ मत मांगो, लेकिन आए तो सब्र करो

हमारे बस का यह काम नहीं है कि हम इन तक्लीफ़ों को मांगें, लेकिन जिनको इन तक्लीफ़ों की हक़ीक़त का मालूम होता है, वे बाज़ मर्तबा मांग भी लेते हैं, चुंनानचे बाज़ सूफ़िया–ए–किराम से मांगना नक़ल किया गया है, ख़ास कर वह तक्लीफ़ जो दीन के रास्ते में पहुंचे उसको तो सच्चे आशिक़ों ने हज़ारों तक्लीफ़ों पर मुक़द्दम और अफ़ज़ल क़रार दिया है। इस बारे में यह शेर कहा कि:

बजुर्मे इश्क़े तू अम मी कुशंद अजब ग़ोग़ाईस्त
तू नीज़ बर सरे बाम आ कि ख़ुश तमाशाईस्त

यानी तेरे इश्क़ के जुर्म में लोग मुझे मार रहे हैं, और घसीट रहे हैं, और एक शोर बरपा है, आकर देख कि तमाशे का कैसा शनदार मन्ज़र है।

यह तो बड़े लोगों की बात है लेकिन हम लोग चूंकि कमज़ोर हैं, ताक़त और क़ुव्वत और सलाहियत नहीं है, इसलिये इन तक्लीफ़ों को अल्लाह तआला से मांगते नहीं हैं, बल्कि आफ़ियत मांगते हैं कि या अल्लाह आफ़ियत अता फ़रमाइये। और जब तक्लीफ़ आ जाती है तो उसके ख़त्म होने की भी दुआ करते हैं, कि या अल्लाह! यह तक्लीफ़ अगरचे आपकी नेमत है, लेकिन हमारी कमज़ोरी पर नज़र करते हुए इस नेमत को आफ़ियत की नेमत से बदल दीजिये। लेकिन परेशानी नहीं होनी चाहिये, इसका नाम "तक़दीर पर राज़ी रहना" है। तक़दीर

पर ईमान तो सब का होता है कि जो कुछ तक़दीर में लिखा था वह हो गया, लेकिन इस अ़क़ीदे को अपनी ज़िन्दगी का हाल बनाना चाहिये। "हाल" बनाने के बाद इन्शा अल्लाह परेशानी पास नहीं भटकेगी।

अल्लाह वालों का हाल

चुनांचे आपने अल्लाह वालों को देखा होगा कि उनको आप कभी बेताब और बेचैन और परेशान नहीं पायेंगे। उनके साथ कैसा ही बड़े से बड़ा नागवार वाक़िआ पेश आ जाये, उस पर उनको ग़म तो होगा, लेकिन बेताबी और बेचैनी और परेशानी उनके पास भी नहीं फटकती। इसलिये कि वे जानते हैं कि यह अल्लाह तआ़ला का फ़ैसला है, इस पर राज़ी रहना ज़रूरी है। लिहाज़ा इन्सान की ज़िन्दगी में जब भी कोई नागवार वाक़िआ पेश आ जाये तो उसको अल्लाह तआ़ला का फ़ैसला ख़्याल करते हुए उस पर राज़ी रहने की फ़िक्र करे। ग़म, सदमे और परेशानी का यही इलाज है। और ऐसा करने से उसको आला दर्जे का सब्र हासिल हो जायेगा और सब्र वह आला इबादत है जो सारी इबादतों से बढ़ कर है। क़ुरआने करीम में फ़रमायाः

"اِنَّمَا یُوَفَّی الصَّابِرُوْنَ اَجْرَھُمْ بِغَیْرِ حِسَابٍ"

यानी अल्लाह तआ़ला सब्र करने वालों को बेहिसाब अज्र अ़ता फ़रमायेंगे।

कोई शख़्स तक्लीफ़ से ख़ाली नहीं

हर तक्लीफ़ के मौक़े पर यह सोचना चाहिये कि इस कायनात में कोई ऐसा शख़्स हो नहीं सकता जिसको अपनी ज़िन्दगी में कभी कोई तक्लीफ़ न पहुंची हो, चाहे वह बड़े से बड़ा बादशाह हो, बड़े से बड़ा सरमायेदार और दौलत मन्द हो, बड़े से बड़ा ओ़हदे वाला हो, बड़े से बड़ा नेक अल्लाह का वली हो, बड़े से बड़ा नबी हो। इसलिये तक्लीफ़ तो तुम्हें ज़रूर पहुंचेगी, तुम चाहो तो भी पहुंचेगी और न

चाहो तो भी पहुंचेगी। इसलिये कि यह दुनिया ऐसी जगह है जहां राहत भी है, ग़म भी है, ख़ुशी भी है, परेशानी भी है। ख़ालिस राहत भी किसी को हासिल नहीं, ख़ालिस ग़म भी किसी को मयस्सर नहीं, यह तयशुदा बात है। यहां तक कि ख़ुदा का इन्कार करने वालों ने ख़ुदा के वजूद का इन्कार कर दिया, (अल्लाह अपनी पनाह में रखे) लेकिन इस बात से इन्कार नहीं कर सके कि इस दुनिया में कभी कोई तक्लीफ़ नहीं पहुंचेगी। जब यह बात तयशुदा है कि तक्लीफ़ पहुंचनी है तो अब सवाल यह है कि कौन सी तक्लीफ़ पहुंचे और कौन सी तक्लीफ़ न पहुंचे। इसका एक रास्ता तो यह है कि तुम ख़ुद फ़ैसला कर लो कि मुझे फ़लां तक्लीफ़ पहुंचे और फ़लां तक्लीफ़ न पहुंचे। क्या तुम्हारे अन्दर इस बात की ताक़त है कि तुम यह फ़ैसला करो कि फ़लां तक्लीफ़ मेरे हक़ में बेहतर है और फ़लां तक्लीफ़ बेहतर नहीं है? ज़ाहिर है कि तुम नहीं जानते कि कौन सी तक्लीफ़ का अन्जाम मेरे हक़ में बेहतर होगा, और कौन सी तक्लीफ़ का अन्जाम बेहतर नहीं होगा। इसलिये इसके अ़लावा कोई चारा नहीं कि इसका फ़ैसला अल्लाह तआ़ला के हवाले कर दो, और यह कह दो कि या अल्लाह! आप अपने फ़ैसले के मुताबिक़ जो तक्लीफ़ देना चाहें वह दे दीजिये, और फिर उसको बर्दाश्त करने की ताक़त भी दे दीजिए, और उस पर सब्र भी अ़ता फ़रमाइये।

छोटी तक्लीफ़ बड़ी तक्लीफ़ को टाल देती है

इन्सान बेचारा अपनी अ़क़्ल के दायरे में सीमित है, उसको यह पता नहीं कि जो तक्लीफ़ मुझे पहुंची है उसने मुझे किसी बड़ी तक्लीफ़ से बचा लिया है। जैसे किसी शख़्स को बुख़ार आ गया, तो अब उसको बुख़ार की तक्लीफ़ नज़र आ रही है, या कोई शख़्स किसी नौकरी के लिये कोशिश कर रहा था, लेकिन वह नौकरी उसको नहीं मिली, उसको यह तक्लीफ़ नज़र आ रही है, या घर में सामान की चोरी हो गयी, उसको यह तक्लीफ़ नज़र आ रही है,

लेकिन उसको यह मालूम नहीं कि अगर यह तक्लीफ़ न पहुंचती तो दूसरी कौन सी तक्लीफ़ पहुंचती? और वह तक्लीफ़ बड़ी थी या यह तक्लीफ़ बड़ी है। चूंकि उसको इसका इल्म नहीं है इसलिये जो तक्लीफ़ उसको पहुंची है, उसको लेकर बैठ जाता है, और उसका ज़िक्र और चर्चा करता रहता है कि हाय मुझे यह तक्लीफ़ पहुंच गयी। बल्कि उस मौके पर इन्सान यह सोचे कि अच्छा हुआ कि इस छोटी सी तक्लीफ़ पर बात टल गयी, वर्ना ख़ुदा जाने कितनी बड़ी मुसीबत आती, क्या बला नाज़िल होती। यह सोचने से इन्सान को तसल्ली हो जाती है। कभी कभी अल्लाह तआ़ला इन्सान को दिखा भी देते हैं कि जिस मुसीबत को तुम बड़ी तक्लीफ़ समझ रहे थे, दखो वह कैसी रहमत साबित हुई।

अल्लाह से मदद मांगो

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हमारी तसल्ली के लिये यह दुआ भी तल्क़ीन फ़रमा दी कि:

"لاملجأ ولامنجأ من اللّٰہ الاالیہ"

अल्लाह तआ़ला से बचाव का सिवाए इसके कोई रास्ता नहीं कि उसी की रहमत की गोद में पनाह लो। यानी उसके फ़ैसले पर राज़ी रहो, और फिर उसी से मदद मांगो। या अल्लाह! इसको दूर फ़रमा दीजिये। इसी बात को मौलाना रूमी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि एक मिसाल के ज़रिये समझाते हैं, कि एक तीर चलाने वाले का तसव्वुर करो, जिसके पास इतनी बड़ी तीर कमान है जिसने सारी कायनात को घेरे में लिया हुआ है, और उस कमान के हर हर हिस्से में तीर लगे हुए हैं, और दुनिया में कोई जगह ऐसी महफ़ूज़ नहीं है जिस जगह पर वे तीर न पहुंच सकते हों। पूरी दुनिया का चप्पा चप्पा उसके निशाने पर है। अब सवाल यह है कि ऐसे तीर चलाने वाले के तीरों से बचने की क्या सूरत है? कौन सी जगह ऐसी है जहां पर जाकर उन तीरों से बचा जा सके? इसका जवाब यह है कि अगर तुम तीरों से बचना

चाहते हो तो उस तीर चलाने वाले के पहलू में जाकर खड़े हो जाओ, इसके अ़लावा कोई और जगह बचाव की नहीं है। इसी तरह ये मुसीबतें, ये हादसे, ये परेशानियां अल्लाह तआ़ला की तक़दीर के फ़ैसलों के तीर हैं। इन तीरों से अगर बचाव की कोई जगह है तो वह अल्लाह तआ़ला ही की रहमत के दामन में है। उसके अ़लावा कोई जगह नहीं है। इसलिये अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करनी चाहिये कि या अल्लाह! ना क़ाबिले बर्दाश्त तक्लीफ़ मत दीजिये, और जब तक्लीफ़ दें तो उस पर सब्र भी अ़ता फ़रमा दें और उसको मेरी मग़फ़िरत और दर्जों की तरक़्क़ी का ज़रिया बनाइये, आमीन।

एक नादान बच्चे से सबक़ लें

आपने छोटे बच्चे को देखा होगा कि जब मां उसको मारती है, उस वक़्त भी वह मां ही की गोद में और ज़्यादा घुसता है, हालांकि जानता है कि मेरी मां मुझे मार रही है, क्यों? इसलिये कि वह बच्चा यह भी जानता है कि मां पिटाई तो कर रही है लेकिन इस पिटाई का इलाज भी उसी के पास है, और मुझे शफ़्क़त और मुहब्बत भी उसी की गोद में मिल सकती है। इसलिये जब कभी कोई नागवार बात या वाक़िआ़ पेश आ जाये तो यह सोचो कि यह अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से है, और उसी की रहमत के दामन में मुझे पनाह मिल सकती है। यह सोच कर फिर उसी से उसके दूर होने की और उस पर सब्र की दुआ़ करें, यह है "तक़दीर पर राज़ी रहना" अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से हम सब को अ़ता फ़रमा दें, आमीन।

अल्लाह के फ़ैसले पर रज़ामन्दी ख़ैर की दलील है

एक और हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः

"اذا اراد الله بعبد خيرا ارضاه قسم له وبارك له فيه، واذا لم يرد به خيراء لم يرضه بماقسم له ولم يبارك له فيه"

जब अल्लाह तआ़ला किसी बन्दे की भलाई और ख़ैर का इरादा

फ़रमाते हैं तो उसको अपनी क़िस्मत पर राज़ी कर देते हैं, और उस क़िस्मत में उसके लिये बरकत भी अ़ता फ़रमाते हैं। और जब किसी से भलाई का इरादा न फ़रमायें (अल्लाह हमें इस से अपनी पनाह में रखे) तो उसको उसकी क़िस्मत पर राज़ी नहीं करते। यानी उसके दिल में क़िस्मत पर इत्मीनान और रज़ामन्दी पैदा नहीं होती, और उसके नतीजे में यह होता है कि जो कुछ हासिल है उसमें भी बरकत नहीं होती। इस हदीस के ज़रिये यह बता दिया कि जब अल्लाह तआ़ला किसी बन्दे से ख़ैर का इरादा फ़रमाते हैं तो उसको क़िस्मत पर राज़ी कर देते हैं, और उसका नतीजा फिर यह होता है कि अगरचे उसको थोड़ा मिला हो, लेकिन उस थोड़े में ही अल्लाह तआ़ला बरकत अ़ता फ़रमा देते हैं।

बरकत का मतलब और मायने

आजकी दुनिया गिन्ती की दुनिया है, और हर चीज़ की गिन्ती गिनी जाती है। जैसे एक शख़्स कहता है कि मुझे एक हज़ार रुपये मिलते हैं, दूसरा कहता है कि मुझे दो हज़ार रुपये मिलते हैं, तीसरा कहता है कि मुझे दस हज़ार रुपये मिलते हैं, लेकिन कोई शख़्स यह नहीं कहता कि इस गिन्ती के नतीजे में मुझे कितनी राहत मिली? कितना आराम मिला? कितनी आ़फ़ियत हासिल हुई? अब जैसे एक शख़्स को पचास हज़ार रुपये मिल गये, लेकिन घर के अन्दर परेशानियां, बीमारियां हैं और सुकून हासिल नहीं है, और हर वक़्त परेशानी के अन्दर मुब्तला है, अब बताइये कि वे पचास हज़ार किस काम के? इस से पता चला कि वे पचास हज़ार रुपये बरकत वाले नहीं थे, बे बरकती वाले हैं। एक दूसरा शख़्स है जिसको एक हज़ार रुपये मिले, लेकिन उसको आराम और आ़फ़ियत मयस्सर है, तो अगरचे वे गिन्ती में एक हज़ार हैं, लेकिन अपने हासिल और परिणामों के एतिबार से यह एक हज़ार वाला पचास हज़ार वाले से आगे बढ़ गया। इसका मतलब यह है कि एक हज़ार बरकत वाले थे और उस

एक हज़ार से बेशुमार काम और फ़ायदे हासिल हो गये।

एक नवाब का वाक़िआ

हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी रह़्मतुल्लाहि अ़लैहि ने मवाइज़ में लिखा है कि लखनऊ में एक नवाब थे, उनकी बड़ी ज़मीनें, जायदादें, नौकर चाकर वग़ैरह सब कुछ था। एक मर्तबा मेरी उनसे मुलाक़ात हुई तो उन नवाब साहिब ने ख़ुद मुझे बताया कि "मैं अपने बारे में आपको क्या बताऊं कि मेरे पास ये सारी दौलतें हैं, जो आप देख रहें हैं, लेकिन मुझे एक ऐसी बीमारी लग गयी है कि उसकी वजह से कोई चीज़ नहीं खा सकता, और मेरे इलाज करने वाले ने मेरे लिये सिर्फ़ एक ग़िज़ा तजवीज़ की है, वह यह कि गोश्त का क़ीमा बनाओ और उस क़ीमे को एक कपड़े में बांध कर उसका रस निकालो और उसको चमचे के ज़रिये पियो। अब देखिये, दस्तरख़्वान पर दुनिया भर के, तरह तरह के खाने चुने हुए हैं, हज़ार क़िस्म की नेमतें हासिल हैं लेकिन साहब बहादुर नहीं खा सकते, इसलिये कि बीमार हैं, डॉक्टर ने मना कर दिया है। बताओ, वह दौलत किस काम की जिसको इन्सान अपनी मर्ज़ी से इस्तेमाल न कर सके। इसका मतलब यह है कि अल्लाह तआ़ला ने उस नेमत में बरकत नहीं डाली, उसका नतीजा यह है कि वह नेमत बेकार हो गयी। एक दूसरा आदमी है जो मेहनत मज़दूरी करता है, साग रोटी खाता है, लेकिन भरपूर भूख के साथ और पूरी लज़्ज़त के साथ खाता है, और वह खाना उसके जिस्म को जाकर लगता है, अब बताइए यह मज़दूर बेहतर है या वह नवाब बेहतर है? हालांकि गिन्ती उसकी ज़्यादा है, और मज़दूर की गिन्ती कम है, लेकिन राहत उस मज़दूर को नसीब है, उस नवाब को मयस्सर नहीं। इसका नाम है बरकत।

क़िस्मत पर राज़ी रहो

बहर हाल, अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि मेरा जो बन्दा क़िस्मत

पर राज़ी हो जाये और क़िस्मत पर राज़ी होने का यह मतलब नहीं कि तदबीर छोड़ दे, और हाथ पर हाथ रख कर बैठ जाये, बल्कि काम करता रहे, लेकिन साथ में इस पर राज़ी हो कि उस काम करने के नतीजे में जो कुछ मुझे मिल रहा है, वह मेरे लिये बेहतर है। तो फिर अल्लाह तआ़ला उसके लिये उसी में बरकत अ़ता फ़रमा देते हैं, उसी को राहत का सबब बना देते हैं। और अगर कोई शख़्स क़िस्मत पर राज़ी न हो, बल्कि हर वक़्त नाशुक्री करता रहे और यह कहता रहे कि मुझे तो मिला ही क्या है, मैं तो महरूम रह गया, मैं तो पीछे रह गया, तो इसका नतीजा फिर यह होता है कि जो कुछ थोड़ा बहुत मिला हुआ है, उसकी लज़्ज़त से भी महरूम हो जाता है और उसमें बरकत नहीं होती। अन्जाम तो वही होगा जो अल्लाह तआ़ला चाहेंगे, और उतना ही मिलेगा जितना अल्लाह तआ़ला चाहेंगे, तुम्हारे रोने से, नाशुक्री करने से तुम्हारी हालत नहीं बदल जायेगी। लेकिन नाशुक्री से नुक़सान यह होगा कि मौजूदा नेमत से जो नफ़ा हासिल हो सकता था वह भी हासिल न हुआ।

मेरे पैमाने में लेकिन हासिले मैख़ाना है

इसलिये अल्लाह तआ़ला की अ़ता की हुई नेमतों पर राज़ी रहो, चाहे वह माल व दौलत की नेमत हो, पेशे की नेमत हो, सेहत की नेमत हो, हुस्न व ख़ूबसूरती की नेमत हो, दुनिया की हर दौलत और हर नेमत पर राज़ी रहो। और यह सोचो कि अल्लाह तआ़ला ने जो नेमत जिस मिक़्दार (मात्रा) में मुझे अ़ता फ़रमाई है वह मेरे हक़ में बेहतर है। हमारे हज़रत डॉक्टर अ़ब्दुल हई रह्मतुल्लाहि अ़लैहि का एक शेर है जो याद रखने के क़ाबिल है, फ़रमायाः

मुझको इस से क्या ग़र्ज़ किस जाम में है कितनी मै
मेरे पैमाने में लेकिन हासिले मैख़ाना है

यानी दूसरों के प्यालों में कितनी शराब भरी है, मुझे इस से क्या ताल्लुक़, लेकिन मेरे मैख़ाने (शराब ख़ाने) में जो शराब है, वह मेरे

लिये काफ़ी है। इसलिये मुझे इस से क्या ग़र्ज़ कि किसी को हज़ार मिल गये, किसी को लाख मिले, कोई करोड़पती बन गया। लेकिन जो कुछ मुझे मिला है वह अल्लाह तआ़ला की अ़ता है, मैं उसी में मगन हूं, और उस पर ख़ुश हूं। बस यह फ़िक्र हासिल करने की ज़रूरत है, इसी फ़िक्र से क़नाअ़त हासिल होती है, इसी से तक़दीर पर राज़ी रहने की नेमत हासिल होती है, इसी से तक्लीफ़ें और सदमे दूर होते हैं। अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल से यह फ़िक्र अ़ता फ़रमा दे और इसको हमारा हाल बना दे, आमीन।

وآخردعوانا ان الحمد لله رب العالمين

फ़ितने के दौर की निशानियां

और मुसलमानों के लिए अ़मल का तरीक़ा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَاوَسَنَدَنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا، اَمَّا بَعْدُ:

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ.

يَآ اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ لَا يَضُرُّكُمْ مَنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ، اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (سورة المآئدة: ١٠٥)

وقال رسول اللّٰه صلى اللّٰه عليه وسلم: اذا رأيت شحا مطاعا وهوى متبعا و د بما مؤثرة واعجاب كل ذى رأى برأيه، فعليك يعنى نفسك ودع عنك العوام.

(ابوداؤد شريف)

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمُ وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ وَنَحْنُ عَلٰى ذٰلِكَ مِنَ الشَّاهِدِيْنَ وَالشَّاكِرِيْنَ. وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ.

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तमाम क़ौमों के लिए क़ियामत तक के लिए नबी हैं

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीमात के सिलसिले में आज एक ऐसे मौज़ू पर मुख़्तसर तौर पर अ़र्ज़ करना चाहता हूं जिसकी आज ज़रूरत भी है और आपके इर्शादात और तालीमात का यह पहलू बहुत कम बयान किया जाता है। अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को इस दुनिया में नबियों का ख़त्म करने वाला बनाकर भेजा, आप पर नुबुव्वत के सिलसिले की तकमील हो गई और आपको दूसरे अंबिया पर यह

इम्तियाज़ अता फ़रमाया कि पहले जो अंबिया तशरीफ़ लाते थे वे आम तौर पर किसी ख़ास क़ौम के लिए और ख़ास जगह के लिये और ख़ास ज़माने के लिए होते थे। उनकी तालीमात और दावत एक ख़ास इलाके तक सीमित होती थी। और एक ख़ास ज़माने तक सीमित होती थी। जैसे हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम मिस्र के इलाक़े में बनी इसराईल की तरफ़ भेजे गए। उसी क़ौम और उसी इलाक़े तक आपकी नुबुव्वत और रिसालत सीमित थी। लेकिन नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अल्लाह तआ़ला ने किसी ख़ास क़ौम, किसी ख़ास क़बीले और किसी ख़ास जगह के लिए नबी नहीं बनाया था, बल्कि पूरी दुनिया, पूरी इन्सानियत और क़ियामत तक तमाम ज़मानों के लिए नबी बनाया था। कुरआने करीम ने इर्शाद फ़रमायाः

"وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا" (سورة سبا:٢٨)

यानी ऐ नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हमने आपको तमाम इन्सानों के लिए ख़ुशख़बरी देने वाले और डराने वाला बनाकर भेजा है। तमाम इन्सानों से मुराद यह है कि वे जहां के भी बसने वाले हों और जिस ज़माने में भी आने वाले हों, उन सब की तरफ़ आपको भेजा। इस से मालूम हुआ कि आपकी रिसालत सिर्फ़ अ़रब तक मख़्सूस नहीं, और सिर्फ़ किसी एक ज़माने के साथ मख़्सूस नहीं, बल्कि क़ियामत तक जितने आने वाले ज़माने हैं, उन सब के लिए आपको रसूल बनाया।

आगे पेश आने वाले हालात की इत्तिला

इस से यह बात मालूम हुई कि आपकी तालीमात और आपके बताए हुए अहकाम क़ियामत तक लागू हैं और उन पर अ़मल करना वाजिब है। किसी ज़माने के साथ आपकी तालीमात मख़्सूस नहीं। इसीलिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हमें जो तालीमात अता फ़रमाईं वे ज़िन्दगी के हर शोबे पर हावी हैं, और फिर

उन तालीमात के दो पहलू हैं। एक पहलू में तो शरीअ़त का बयान है कि फ़लां चीज़ हलाल है और फ़लां हराम है, यह काम जायज़ है और यह काम ना जायज़ है। फ़लां अ़मल वाजिब है, फ़लां अ़मल सुन्नत है। फ़लां अ़मल मुस्तहब है, वग़ैरह। दूसरा पहलू यह है कि उम्मत को आगे आने वाले ज़मानों में क्या क्या हालात पेश आने वाले हैं, और उम्मत को किन किन मसाइल से झूझना है और उन हालात में उम्मत को क्या करना चाहिए?

यह दूसरा पहलू भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीमात का बहुत अहम हिस्सा है। चुनांचे आपने नुबुव्वत की निगाह से आगे पेश आने वाले अहम वाक़िआ़त को देखने के बाद उम्मत को ख़बर दी कि आईन्दा ज़माने में यह वाक़िआ पेश आने वाला है, और ये हालात पेश आने वाले हैं। और साथ में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उम्मत को यह भी बताया कि जब ऐसे हालात पेश आयें तो एक मोमिन को और सीधे रास्ते पर चलने वाले को क्या तरीक़ा इख़्तियार करना चाहिए? आज इस दूसरे पहलू पर थोड़ी से गुज़ारिशें अ़र्ज़ करना चाहता हूं।

उम्मत की नजात की फ़िक्र

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को अपनी उम्मत की ऐसी फ़िक्र थी कि उस फ़िक्र के अन्दर आप हर वक़्त परेशान रहते थे। चुनांचे एक हदीस में है कि:

"كان رسول الله صلى الله عليه وسلم دائم الفكرة متواصل الاحزان"

यानी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हमेशा फ़िक्र मन्द, सोच में डूबे हुए होते थे। और ऐसा मालूम होता था कि हर वक़्त आप पर कोई ग़म छाया हुआ है। क्या वह ग़म पैसे जमा करने का था? या वह ग़म अपनी शान व शौकत बढ़ाने का था? नहीं, बल्कि वह ग़म इस बात का था कि जिस क़ौम की तरफ़ मुझे भेजा गया है, मैं उसको किस तरह जहन्नम की आग से बचाऊं, और किस

तरह उनको गुमराही से निकाल कर सीधे रास्ते पर ले आऊं। और इस सख़्त ग़म में मुब्तला होने की वजह से कुरआने करीम में अल्लाह तआ़ला ने बार बार आयतें नाज़िल फ़रमाईं जिनमें आपको इस ग़म करने से रोका गया है। फ़रमायाः

"لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ أَلَّا يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ"

यानी आप अपनी जान को क्यों हलाक कर रहे हैं, इस वजह से कि ये लोग ईमान नहीं ला रहे हैं। एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मेरी मिसाल उस शख़्स जैसी है जिसने एक आग सुलगाई और आग को देख कर परवाने आग पर गिरने लगे। वह शख़्स उन परवानों को आग से दूर रखने की कोशिश कर रहा है ताकि वे आग में गिर कर जल न जायें। इसी तरह मैं भी तुम्हें जहन्नम की आग से बचाने की कोशिश कर रहा हूं। तुम्हारी कमरें पकड़ पकड़ कर तुम्हें रोक रहा हूं। मगर तुम जहन्नम की आग के अन्दर गिरे जा रहे हो। आपको अपनी उम्मत की इतनी फ़िक्र थी, और सिर्फ़ उस उम्मत की फ़िक्र नहीं थी जो आपके ज़माने में मौजूद थी बल्कि आईन्दा आने वाले ज़माने के लोगों की भी फ़िक्र थी।

आईन्दा क्या क्या फ़ितने आने वाले हैं

चुनांचे आपने आईन्दा आने वाले लोगों को बताया कि तुम्हारे ज़माने में क्या क्या हालात पेश आने वाले हैं? चुनांचे तक़रीबन हदीस की तमाम किताबों में एक मुस्तक़िल बाब "अबवाबुल फ़ितन" के नाम से मौजूद है। जिसमें उन हदीसों को जमा किया गया है जिनमें हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने आने वाले फ़ितनों के बारे में लोगों को बताया और उनको आगाह किया कि देखो! आने वाले ज़माने में ये ये फ़ितने आने वाले हैं। चुनांचे एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

"تقع الفتن فی بیوتکم کوقع المطر"

यानी आने वाले ज़माने में फ़ितने तुम्हारे घरों में इस तरह गिरेंगे जैसे बारिश की बूंदें गिरती हैं। बारिश की बूंदों से इसलिये तश्बीह दी कि जिस तरह बारिश का पानी कसरत से गिरता है, इसी तरह वे फ़ितने भी कसरत से आयेंगे और दूसरे यह कि बारिश का पानी जिस तरह लगातार गिरता है कि एक बूंद के बाद दूसरी बूंद, दूसरी के बाद फ़ौरन तीसरी बूंद। इसी तरह वे फ़ितने भी मुसलसल और लगातार आयेंगे कि अभी एक फ़ितना आकर ख़त्म नहीं होगा कि दूसरा फ़ितना खड़ा हो जायेगा। दूसरे के बाद तीसरा आयेगा और ये फ़ितने तुम्हारे घरों में आकर गिरेंगे।

एक दूसरी हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

"ستكون فتن كقطع الليل المظلم"

जल्द ही अन्धेरी रात की अन्धेरियों की तरह फ़ितने होंगे। यानी जिस तरह अन्धेरी रात में इन्सान को कुछ नज़र नहीं आता कि कहां जाए, रास्ता कहां है? इसी तरह उन फ़ितनों के ज़माने में यह समझ में नहीं आयेगा कि इन्सान क्या करे और क्या न करे? और वे फ़ितने तुम्हारे पूरे समाज और माहौल को घेर लेंगे, और बज़ाहिर तुम्हें उनसे कोई पनाह लेने की जगह नज़र नहीं आयेगी। और आपने फ़रमाया कि उन फ़ितनों से पनाह की दुआ भी मांगा करो, और यह दुआ किया करोः

"اللهم انا نعوذبك من الفتن ماظهر منها ومابطن"

ऐ अल्लाह! हम आने वाले फ़ितनों से आपकी पनाह चाहते हैं। ज़ाहिरी फ़ितनों से भी और छुपे फ़ितनों से भी पनाह चाहते हैं। दोनों क़िस्म के फ़ितनों से पनाह मांगा करो। और यह दुआ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मामूलात की दुआओं में शामिल थी। यानी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ख़ुद इसको पढ़ा करते थे।

फ़ितना क्या है?

अब इसको समझना चाहिए कि "फ़ितना" क्या चीज़ है? किसको

"फ़ितना" कहते हैं? और उस "फ़ितने" के दौर में हमारे और आपके लिए हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीमं क्या है? और उसमें हमें क्या करना चाहिए? अब यह लफ़्ज़ तो हम सुबह व शाम इस्तेमाल करते हैं कि बड़े फ़ितने का दौर है। कुरआने करीम में भी "फ़ितने" का लफ़्ज़ कई बार आया है। एक जगह फ़रमायाः

"وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ"

यानी अल्लाह तआला के नज़्दीक फ़ितना क़त्ल से भी ज़्यादा सख़्त चीज़ है।

"फ़ितने" के मायने और मतलब

"फ़ितना" अर्बी ज़बान का लफ़्ज़ है, लुग़त में इसके मायने हैं "सोने या चांदी वग़ैरह को आग पर पिघला कर उसका खरा खोटा होना मालूम करना" आग में तपा कर उसकी हक़ीक़त सामने आ जाती है कि यह ख़ालिस है या नहीं? इसी वजह से इस लफ़्ज़ को आज़माइश और इम्तिहान के मायने में भी इस्तेमाल किया जाने लगा। चुनांचे "फ़ितने" के दूसरे मायने हुए आज़माइश। इसलिये जब इंसान पर कोई तक्लीफ़ या मुसीबत या परेशानी आए और उसके नतीजे में इन्सान की अंदर की कैफ़ियत की आज़माइश हो जाए कि वह इन्सान ऐसी हालत में क्या अमल का तरीक़ा इख़्तियार करता है? आया उस वक़्त सब्र करता है या शोर मचाता है। फ़रमांबर्दार रहता है या नाफ़रमान हो जाता है। इस आज़माइश को भी "फ़ितना" कहा जाता है।

हदीस शरीफ़ में "फ़ितने" का लफ़्ज़

हदीस पाक में "फ़ितने" का लफ़्ज़ जिस चीज़ के लिए इस्तेमाल हुआ है वह यह है कि किसी भी वक़्त कोई ऐसी सूरते हाल पैदा हो जाए जिसमें हक़ मुश्तबह (संदिग्ध) हो जाए और हक़ व बातिल में फ़र्क़ करना मुश्किल हो जाए, सही और ग़लत में फ़र्क़ बाक़ी न रहे। यह पता न चले कि सच क्या है और झूठ क्या है? जब यह सूरते

हाल पैदा हो जाए तो यह कहा जायेगा कि यह फ़ितने का दौर है। इसी तरह समाज के अन्दर गुनाह, बुराइयां और ना फ़रमानियां आम हो जायें तो उसको भी फ़ितना कहा जाता है। इसी तरह जो चीज़ हक़ न हो उसको हक़ समझना, और जो चीज़ सुबूत की दलील न हो उसको सुबूत की दलील समझ लेना भी एक "फ़ितना" है। जैसे आजकल सूरते हाल है कि अगर किसी से दीन की बात कहो कि फ़लां काम गुनाह है, ना जायज़ है, बिदअ़त है। जवाब में वह शख़्स कहता है कि अरे! यह काम तो सब कर रहे हैं, अगर यह काम गुनाह और ना जायज़ है तो फिर सारी दुनिया यह काम क्यों कर रही है। यह काम तो सऊदी अ़रब में भी हो रहा है। आजके दौर में यह एक नई मुस्तक़िल दलील ईजाद हो चुकी है कि हमने यह काम सऊदी अ़रब में रहते हुए देखा है। इसका मतलब यह है कि जो काम सऊदी अ़रब में होता है वह यक़ीनी तौर पर हक़ और दुरुस्त है। यह भी एक "फ़ितना" है कि जो चीज़ हक़ की दलील नहीं थी उसको दलील समझ लिया गया है। इसी तरह शहर के अन्दर बहुत सारी जमाअ़तें खड़ी हो गयीं और यह पता नहीं चल रहा है कि कौन हक़ पर है और कौन बातिल पर, कौन सही कह रहा है और कौन ग़लत कह रहा है। और हक़ व बातिल के दरमियान फ़र्क़ करना मुश्किल हो गया है, यह भी "फ़ितना" है।

दो जमाअ़तों की लड़ाई "फ़ितना" है

इसी तरह जब दो मुसलमान या मुसलमानों की दो जमाअ़तें आपस में लड़ पड़ें, और एक दूसरे के ख़िलाफ़ मैदान में आ जाएं। और एक दूसरे के ख़ून के प्यासे हो जाएं, और यह पता चलाना मुश्किल हो जाए कि हक़ पर कौन है और बातिल पर कौन है, तो यह भी एक 'फ़ितना' है। एक हदीस शरीफ़ में हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

"اذا التقا المسلمان بسیفهما فالقاتل والمقتول کلاهما فی النار"

यानी जब दो मुसलमान तलवारें लेकर आपस में लड़ने लगें तो क़ातिल और जिसको क़त्ल किया जाए दोनों जहन्नम में जायेंगे। एक सहाबी ने सवाल किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! क़ातिल का जहन्नम में जाना तो ठीक है, इसलिये कि उसने एक मुसलमान को क़त्ल कर दिया, लेकिन जिसको क़त्ल किया गया वह जहन्नम में क्यों जायेगा? हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जवाब में फ़रमाया कि मक़्तूल (जिसको क़त्ल किया गया) इसलिये जहन्नम में जायेगा कि वह भी इसी इरादे से हथियार लेकर निकला था कि मैं दूसरे को क़त्ल कर दूं। इसका दाव चल जाता तो यह क़त्ल कर देता, लेकिन उसका दाव चल गया इसलिये उसने क़त्ल कर दिया। उनमें से कोई भी अल्लाह के लिए नहीं लड़ रहा था बल्कि दुनिया के लिए, दौलत के लिए और सियासी मक़ासिद के लिए लड़ रहे थे और दोनों एक दूसरे के ख़ून के प्यासे थे, इसलिये दोनों जहन्नम में जायेंगे।

क़त्ल व बर्बादी "फ़ितना" है

एक और हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

"ان من وارئكم اياما يرفع فيها العلم ويكثر فيها الهرج، قالو يا رسو ل الله ما الحرج ؟ قال: القتل" (ترمذی شریف)

यानी लोगों पर एक ऐसा ज़माना आयेगा कि जिसमें "हर्ज" बहुत ज़्यादा हो जायेगा। सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने पूछा कि यह हर्ज क्या चीज़ है? आपने फ़रमाया कि क़त्ल व ग़ारत गरी, यानी उस ज़माने में क़त्ल व ग़ारत गरी बेहद हो जायेगी और इन्सान की जान मच्छर मक्खी से ज़्यादा बेहक़ीक़त हो जायेगी। एक और हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

"يأتي على الناس يوم لا يدرى القاتل فيم قتل، ولا المقتول فيم قتل، فقيل: كيف يكون ذالك؟ قال: الهرج،القاتل والمقتول فى النار" (مسلم شريف)

यानी लोगों पर एक ऐसा ज़माना आयेगा कि जिसमें क़ातिल को यह मालूम नहीं होगा कि मैंने क्यों क़त्ल किया, और मक़्तूल को यह पता नहीं होगा कि मैं क्यों क़त्ल किया गया? आजके ज़माने के मौजूदा हालात पर नज़र डाल लो, और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इन अल्फ़ाज़ को पढ़ लो। ऐसा लगता है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस ज़माने को देख कर ये अल्फ़ाज़ इर्शाद फ़रमाये थे। पहले ज़माने में तो यह होता था कि यह मालूम नहीं होता था कि किसने मारा, लेकिन यह मालूम हो जाता था कि यह शख़्स क्यों मारा गया। जैसे माल छीनने की वजह से मारा गया, डाकूओं ने मार दिया, दुश्मनी की वजह से मार दिया गया, मारे जाने के कारण सामने आ जाते थे। लेकिन आज यह हाल है कि एक शख़्स है, किसी से न कुछ लेना न देना, न किसी सियासी जमाअ़त से ताल्लुक़, न किसी से कोई झगड़ा, बस बैठे बिठाए मारा गया। ये सारी बातें हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम साफ़ साफ़ बता गए।

मक्का मुकर्रमा के बारे में हदीस

एक हदीस जो हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत की गयी है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मक्का मुकर्रमा के बारे में फ़रमाया:

"اذا دعيت كظائم،وساوى ابنيتها رؤس الجبال فعند ذالك ازف الامر"

आज से चन्द साल पहले तक इस हदीस का सही मतलब लोगों की समझ में नहीं आ रहा था, लेकिन अब समझ में आ गया है। हदीस का तर्जुमा यह है कि आपने फ़रमाया कि जब मक्का मुकर्रमा का पेट चाक कर दिया जायेगा, और उसमें नहरों जैसे रास्ते निकाल दिए जायेंगे, और मक्का मुकर्रमा की इमारतें उसके पहाड़ों से ज़्यादा बुलन्द हो जायेंगी, जब ये चीज़ें नज़र आयेंगी तो समझ लो कि फ़ितने का वक़्त क़रीब आ गया।

मक्का मुकर्रमा का पेट चाक होना

यह हदीस चौदह सौ साल से हदीस की किताबों में लिखी चली आ रही है। और इस हदीस का ख़ुलासा करते वक़्त हदीस की शरह करने वाले हैरान थे कि मक्का मुकर्रमा का पेट किस तरह चाक होगा? और नहरों जैसे रास्ते बनने का क्या मतलब है? क्योंकि इस का तसव्वुर करना मुश्किल था। लेकिन आजके मक्का मुकर्रमा को देखा जाए तो ऐसा मालूम होता है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने आजके मक्का मुकर्रमा को देख कर ये बातें इर्शाद फ़रमाई थीं। आज मक्का मुकर्रमा को चाक करके उसमें बेशुमार सुरंगें निकाल दी गई हैं। आज से पहले हदीस की शरह करने वाले फ़रमाते थे कि इस वक़्त तो यह मक्का मुकर्रमा का इलाक़ा सूखा और पत्थरीला पहाड़ी इलाक़ा है, लेकिन आने वाले किसी ज़माने में अल्लाह तआ़ला उसमें नहरें और नदियां जारी कर देंगे। लेकिन आज उन सुरंगों को देख कर यह नज़र आ रहा है कि किस तरह मक्का मुकर्रमा का पेट चाक कर दिया गया।

इमारतों का पहाड़ों से बुलन्द होना

दूसरा जुम्ला आपने यह फ़रमाया था कि जब उसकी इमारतें पहाड़ों से भी बुलन्द हो जायेंगी। आज से चन्द साल पहले तक किसी के तसव्वुर में भी यह बात नहीं आ सकती थी कि मक्का मुकर्रमा में पहाड़ों से भी ज़्यादा बुलन्द इमारतें बन जायेंगी। क्योंकि सारा मक्का पहाड़ों के दरमियान घिरा हुआ है। लेकिन आज मक्का मुकर्रमा में जाकर देख लें कि किस तरह पहाड़ों से बुलन्द इमारतें बनी हुई हैं।

इस हदीस से मालूम हो रहा है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने चौदह सौ साल पहले आजके हालात गोया अपनी आंखों से देख कर बयान फ़रमा दिए थे। अल्लाह तआ़ला के अ़ता फ़रमाए हुए 'वही' और इल्म के ज़रिये ये सारी बातें रोशन दिन

की तरह ज़ाहिर कर दी गई थीं। आपने एक एक चीज़ खोल खोल कर बयान फ़रमा दी, कि आने वाले ज़माने में क्या होने वाला है। और आपने यह बताया कि उस ज़माने में मुसलमानों को क्या क्या मुश्किलात और फ़ितने पेश आने वाले हैं। और साथ में यह भी बता दिया कि उस वक़्त मैं एक मुसलमान को क्या अमल का रास्ता इख़्तियार करना चाहिए?

मौजूदा दौर हदीस की रोशनी में

जिन हदीसों में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आगे आने वाले फ़ितनों की निशान देही फ़रमाई है। हर मुसलमान को वे हदीसें याद रखनी चाहिएं। हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ लुधियानवी साहिब ने एक किताब "अस्रे हाज़िर हदीस के आईने में" के नाम से लिखी है। उस किताब में उन्होंने फ़ितनों से मुताल्लिक़ तमाम हदीसों को जमा करने की कोशिश फ़रमाई है। उसमें एक हदीस ऐसी लाए हैं जिसमें हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़ितने के दौर की ७२ बातें बयान फ़रमाई हैं। उनको आप सुनते जायें और अपने आस पास का जायज़ा लेते जायें कि ये सब बातें हमारे मौजूदा माहौल पर किस तरह फ़िट आ रही हैं।

फ़ितने की ७२ निशानियां

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के क़रीब ७२ बातें पेश आयेंगी।

१—लोग नामज़ें ग़ारत करने लगेंगे। यानी नमाज़ों का एहतिमाम और पाबन्दी रुख़्सत हो जायेगी। यह बात अगर इस ज़माने में कही जाए तो कोई ताज्जुब की बात नहीं समझी जायेगी। इसलिये कि आज मुसलमानों की अक्सरियत ऐसी है जो नमाज़ की पाबन्द नहीं है, अल्लाह तआला अपनी पनाह में रखे। लेकिन हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह बात उस वक़्त इर्शाद फ़रमाई थी

जब नमाज़ को कुफ़्र और ईमान के दरमियान फ़ासले की हद क़रार दिया गया था। उस ज़माने में मोमिन कितना ही बुरे से बुरा हो, गुनाहगार हो, बदकार हो, लेकिन नमाज़ नहीं छोड़ता था। उस ज़माने में आपने फ़रमाया कि लोग नमाज़ें ज़ाया करने लगेंगे।

२—अमानत ज़ाया करने लगेंगे। यानी जो अमानत उनके पास रखी जायेंगी, उनमें ख़ियानत करने लगेंगे।

३—सूद खाने लगेंगे।

४—झूठ को हलाल समझने लगेंगे। यानी झूठ एक फ़न और हुनर बन जायेगा।

५—मामूली मामूली बातों पर ख़ून बहाने लगेंगे। ज़रा सी बात पर दूसरे की जान ले लेंगे।

६—ऊंची ऊंची बिल्डिंगें बनायेंगे।

७—दीन बेच कर दुनिया जमा करेंगे।

८—क़ता रहमी, यानी रिश्तेदारों से बद सुलूकी होगी।

९—इन्साफ़ नायाब हो जायेगा।

१०—झूठ सच बन जायेगा।

११—लिबास रेशम का पहना जायेगा।

१२—ज़ुल्म आम हो जायेगा।

१३—तलाक़ों की कसरत होगी।

१४—अचानक मौत का आना आम हो जायेगा। यानी ऐसी मौत आम हो जायेगी जिसका पहले से पता नहीं होगा, बल्कि अचानक पता चलेगा कि फ़लां शख़्स अभी ज़िन्दा ठीक ठाक था और अब मर गया।

१५—ख़ियानत करने वाले को अमीन समझा जायेगा।

१६—अमानतदार को ख़ियनत करने वाला समझा जायेगा। यानी अमानतदार पर तोहमत लगाई जायेगी कि यह ख़ियानत करता है।

१७—झूठे को सच्चा समझा जायेगा।

१८—सच्चे को झूठा कहा जायेगा।

१६–तोहमत लगाना आम हो जायेगा। यानी लोग एक दूसरे पर झूठी तोहमतें लगायेंगे।

२०–बारिश के बावजूद गर्मी होगी।

२१–लोग औलाद की इच्छा करने के बजाए औलाद से नफ़रत करेंगे। यानी जिस तरह लोग औलाद होने की दुआएं करते हैं, इसके बजाये लोग ये दुआएं करेंगे कि औलाद न हो। चुनांचे आज देख लें कि ख़ानदानी मन्सूबा बन्दी हो रही है। और यह नारा लगा रहे हैं कि बच्चे दो ही अच्छे।

२२–कमीनों के ठाठ होंगे। यानी कमीने लोग बड़े ठाठ से ऐश व आराम के साथ ज़िन्दगी गुज़ारेंगे।

२३–शरीफ़ों का नाक में दम आ जायेगा। यानी शरीफ़ लोग शराफ़त को लेकर बैठेंगे तो दुनिया से कट जायेंगे।

२४–अमीर और वज़ीर झूठ के आदी हो जायेंगे। यानी हाकिम और उसके मददगार और सहयोगी और वज़ीर झूठ के आदी बन जायेंगे और सुबह शाम झूठ बोलेंगे।

२५–अमानतदार लोग ख़ियानत करने लगेंगे।

२६–सरदार ज़ुल्म पेशा होंगे।

२७–आलिम और क़ारी बदकार होंगे। यानी आलिम भी है और कुरआने करीम की तिलावत भी कर रहे हैं, मगर बदकार हैं, अल्लाह तआला अपनी पनाह में रखे।

२८–लोग जानवरों की खालों का लिबास पहनेंगे।

२६–मगर उनके दिल मुर्दार से ज़्यादा बदबूदार होंगे। यानी लोग जानवरों की खालों से बने हुए आला दर्जे के लिबास पहनेंगे, लेकिन उनके दिल मुर्दार से ज़्यादा बदबूदार होंगे।

३०–और एलवे से ज़्यादा कड़वे होंगे।

३१– सोना आम हो जायेगा।

३२–चांदी की मांग होगी।

३३–गुनाह ज़्यादा हो जायेंगे।

३४—अमन कम हो जायेगा।

३५—कुरआने करीम के नुस्ख़ों को सजाया जायेगा और उस पर नक़्श व निगार बनाया जायेगा।

३६—मस्जिदों में सजावट और नक़्क़ाशी की जाएगी।

३७—ऊंचे ऊंचे मीनार बनेंगे।

३८—लेकिन दिल वीरान होंगे।

३९—शरीबें पी जायेंगी।

४०—शरीअ़त की सज़ाओं को मुअ़त्तल कर दिया जायेगा।

४१—बांदी अपने आक़ा को जनेगी। यानी बेटी मां पर हुक्म चलाएगी, और उसके साथ ऐसा सुलूक करेगी जैसे आक़ा अपनी बांदी के साथ सुलूक करता है।

४२—जो लोग नंगे पांव, नंगे बदन, ग़ैर मुहज़्ज़ब होंगे वे बादशाह बन जायेंगे। कमीने और नीच ज़ात के लोग जो नसली और अख़्लाक़ के एतिबार से कमीने और नीचे दर्जे के समझे जाते हैं, वे सरदार बन कर हुकूमत करेंगे।

४३—तिजारत में औ़रत मर्द के साथ शिर्कत करेगी। जैसे आज कल हो रहा है कि औ़रतें ज़िन्दगी के हर काम में मर्दों के कंधे से कंधा मिलाकर चलने की कोशिश कर रही हैं।

४४—मर्द औ़रतों की नक़्क़ाली करेंगे।

४५—औ़रतें मर्दों की नक़्क़ाली करेंगी।

यानी मर्द औ़रतों जैसा हुलिया बनायेंगे और औ़रतें मर्दों जैसा हुलिया बनयेंगी। आज देख लें कि नये फ़ैशन ने यह हालत कर दी है कि दूर से देखो तो पता लगाना मुश्किल होता है कि यह मर्द है या औ़रत है।

४६—ग़ैरुल्लाह की क़स्में खाई जायेंगी। यानी क़सम तो सिर्फ़ अल्लाह की या अल्लाह की सिफ़त और कुरआन की खाना जायज़ है। दूसरी चीज़ों की क़सम खाना हराम है। लेकिन उस वक़्त लोग और चीज़ों की क़सम खायेंगे, जैसे तेरे सर की क़सम, वग़ैरह।

४७—मुसलमान भी बग़ैर कहे झूठी गवाही देने को तैयार होगा। लफ़्ज़ "भी" के ज़रिये यह बता दिया कि और लोग तो यह काम करते ही हैं, लेकिन उस वक़्त मुसलमान भी झूठी गवाही देने को तैयार हो जायेंगे।

४८—सिर्फ़ जान पहचान के लोगों को सलाम किया जायेगा। मतलब यह है कि अगर रास्ते में कहीं से गुज़र रहे हैं तो उन लोगों को सलाम नहीं किया जायेगा जिन से जान पहचान नहीं है। अगर जान पहचान है तो सलाम कर लेंगे, हालांकि हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का फ़रमान यह है कि:

"السلام على من عرفت ومن لم تعرف"

जिसको तुम जानते हो उसको भी सलाम करो और जिसको नहीं जानते उसको भी सलाम करो। ख़ास तौर पर उस वक़्त जब कि रास्ते में इक्का दुक्का आदमी गुज़र रहे हों तो उस वक़्त सब आने जाने वालों को सलाम करना चाहिए। लेकिन अगर आने जाने वालों की तायदाद बहुत ज़्यादा हो, और सलाम की वजह से अपने काम में ख़लल आने का अन्देशा हो तो फिर सलाम न करने की भी गुन्जाइश है। लेकिन एक ज़माना ऐसा आयेगा कि इक्का दुक्का आदमी गुज़र रहे होंगे तब भी सलाम नहीं करेंगे और सलाम का रिवाज ख़त्म हो जायेगा।

४९—ग़ैर दीन के लिए शरई इल्म पढ़ा जायेगा। यानी शरई इल्म दीन के लिए नहीं बल्कि दुनिया के लिए पढ़ा जायेगा। अल्लाह अपनी पनाह में रखे। और मक़सद यह होगा कि उसके ज़रिये हमें डिग्री मिल जायेगी, नौकरी मिल जायेगी, पैसे मिल जायेंगे, इज़्ज़त और शोहरत हासिल हो जायेगी। इन मक़ासिद के लिए दीन का इल्म पढ़ा जायेगा।

५०—आख़िरत के काम से दुनिया कमाई जायेगी।

५१—माले ग़नीमत को ज़ाती जागीर समझ लिया जायेगा। माले ग़नीमत से मुराद क़ौमी ख़ज़ाना है। यानी क़ौमी ख़ज़ाने को ज़ाती

जागीर और ज़ाती दौलत समझ कर मामला करेंगे।

५२—अमानत को लूट का माल समझा जायेगा। यानी अगर किसी ने अमानत रखवा दी तो समझेंगे कि यह लूट का माल हासिल हो गया।

५३—ज़कात को जुर्माना समझा जायेगा।

५४—सब से कमीना आदमी क़ौम का लीडर और रहनुमा बन जायेगा। यानी क़ौम में जो शख़्स सब से ज़्यादा नीचा और कमीना और बुरी आदत वाला इन्सान होगा, उसको क़ौम के लोग अपना लीडर, अपना हीरो और अपना सरदार बना लेंगे।

५५—आदमी अपने बाप की ना फ़रमानी करेगा।

५६—आदमी अपनी मां से बद सुलूकी करेगा।

५७—दोस्त को नुक़सान पहुंचाने से परहेज़ नहीं करेगा।

५८—बीवी की इताअत करेगा।

५९—बदकारों की आवाज़ें मस्जिदों में बुलन्द होंगी।

६०—गाने वाली औरतों की इज़्ज़त व सम्मान किया जायेगा। यानी जो औरतें गाने बजाने का पेशा करने वाली हैं उनका सम्मान और इज़्ज़त की जायेगी और उनको बुलन्द मर्तबा दिया जायेगा।

६१—गाने बजाने के और मौसीक़ी के आलात (यन्त्रों) को संभाल कर रखा जायेगा।

६२—रास्तों पर शराब पी जायेगी।

६३—ज़ुल्म को फ़ख़्र समझा जायेगा।

६४—इन्साफ़ बिकने लगेगा, यानी अदालतों में इन्साफ़ फ़रोख़्त होगा। लोग पैसे देकर उसको ख़रीदेंगे।

६५—पुलिस वालों की कसरत हो जायेगी।

६६—क़ुरआने करीम को गाने और तरन्नुम का ज़रिया बनाया लिया जायेगा। यानी मौसीक़ी के बदले में क़ुरआन की तिलावत की जायेगी, ताकि उसके ज़रिये तरन्नुम का लुत्फ़ और मज़ा हासिल हो। और क़ुरआन की दावत और उसको समझने या उसके ज़रिये अज्र व

सवाब हासिल करने के लिए तिलावत नहीं की जायेगी।

६७—दरिन्दों की खाल इस्तेमाल की जायेगी।

६८—उम्मत के आख़री लोग अपने से पहले लागों पर लान तान करेंगे। यानी उन पर तन्क़ीद करेंगे और उन पर एतिमाद नहीं करेंगे, और तन्क़ीद करते हुए यह कहेंगे कि उन्होंने यह बात ग़लत कही। और यह ग़लत तरीक़ा इख़्तियार किया। चुनांचे आज बहुत बड़ी मख़्लूक़ सहाबा—ए—किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की शान में गुस्ताख़ियां कर रही है, बहुत से लोग उन दीन के इमामों की शान में गुस्ताख़ियां कर रहे हैं जिनके ज़रिये यह दीन हम तक पहुंचा और उनको बेवकूफ़ बता रहे हैं, कि वे लोग कुरआन व हदीस को नहीं समझे, दीन को नहीं समझे, आज हमने दीन को सही समझा है।

फिर फ़रमाया कि जब ये निशानियां ज़ाहिर हों तो उस वक़्त इसका इन्तिज़ार करो कि:

६९—या तो तुम पर सुर्ख़ आंधी अल्लाह तआला की तरफ़ से आ जाए।

७०—या ज़लज़ले आ जायें।

७१—या लोगों की सूरतें बदल जायें।

७२—या आसमान से पत्थर बरसें। या अल्लाह तआला की तरफ़ से कोई और अज़ाब आ जाए। अल्लाह तआला अपनी पनाह में रखे। अब आप इन निशानियों में ज़रा ग़ौर करके देखें कि ये सब निशानियां एक एक करके किस तरह हमारे मुआशरे और समाज पर सादिक़ आ रही हैं। और इस वक़्त जो अज़ाब हम पर मुसल्लत है वह हक़ीक़त में इन्हीं बद आमालियों का नतीजा है। (दुर्रे मन्सूर)

मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ेगा

एक और हदीस में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि: जब मेरी उम्मत में पन्द्रह काम आम हो जायेंगे तो उन पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ेगा। सहाबा—ए—किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने सवाल

किया या रसूलल्लाह! सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! वे पन्द्रह काम कौन से हैं? जवाब में आपने फ़रमाया।

क़ौमी ख़ज़ाने के चोर कौन कौन

(१) जब सरकारी ख़ज़ाने को लूट का माल समझा जाने लगे। देख लीजिए कि आज किस तरह क़ौमी ख़ज़ाने को लूटा जा रहा है और फिर यह सिर्फ़ हाकिमों के साथ ख़ास नहीं, बल्कि जब हाकिम लूटते हैं तो अ़वाम में से जिसका भी दाव चल जाए वह भी लूटता है। चुनांचे बहुत से काम ऐसे हैं जिनमें हम और आप इस बात की परवाह नहीं करते कि इस काम की वजह से हमारी तरफ़ से क़ौमी ख़ज़ाने पर लूट हो रही है। जैसे बिजली की चोरी है कि कहीं से ख़िलाफ़े क़ानून कनेक्शन ले लिया और उसको इस्तेमाल करना शुरू कर दिया, यह क़ौमी ख़ज़ाने की चोरी है। या जैसे टेलीफ़ोन एक्सचेन्ज वाले से दोस्ती कर ली, और अब उसके ज़रिये लम्बी लम्बी कॉलें मुफ़्त की जा रही हैं, यह भी क़ौमी ख़ज़ाने की चोरी है। या जैसे रेल के ज़रिये बिला टिकट सफ़र कर लिया, यह भी क़ौमी ख़ज़ाने की चोरी है। या रेल में ऊंचे दर्जे का सफ़र कर लिया, जब कि टिकट नीचे दर्जे का ख़रीदा है। यह भी क़ौमी ख़ज़ाने की चोरी है।

यह ख़तरनाक चोरी है

और यह क़ौमी ख़ज़ाने की चोरी आ़म चोरी से बहुत ज़्यादा ख़तरनाक है। इसलिये कि अगर इन्सान किसी के घर पर चोरी करे और बाद में उसकी तलाफ़ी करना चाहे तो उसकी तलाफ़ी करना आसान है कि जितनी रक़म चोरी की है उतनी रक़म उसको लेजा कर वापस कर दे, या उस से जाकर माफ़ करा ले कि मुझसे ग़लती हो गई थी, मुझे माफ़ कर देना, और उसने माफ़ कर दिया तो इन्शा अल्लाह माफ़ हो जायेगा। लेकिन क़ौमी ख़ज़ाने के अन्दर लाखों इन्सानों का हिस्सा है। और हर इन्सान की उसमें मिल्कियत है।

अगर माल को चोरी कर लिया या ज़्यादती कर ली तो किस किस इन्सान से माफ़ कराओगे? और जब तक इन लाखों हक़दारों से माफ़ नहीं कराओगे उस वक़्त तक माफ़ी नहीं होगी। इसलिये माल की चोरी की माफ़ी आसान है लेकिन क़ौमी ख़ज़ाने की चोरी के बाद उसकी माफ़ी बहुत मुश्किल है। अल्लाह अपनी पनाह में रखे।

(२) जब अमानत को लोग लूट का माल समझने लगें और उसमें ख़ियानत करने लगें।

(३) और जब लोग ज़कात को तावान और जुर्माना समझने लगें।

(४) आदमी बीवी की इताअ़त करे और मां की ना फ़रमानी करने लगे। यानी आदमी बीवी की ख़ुशी की ख़ातिर मां की ना फ़रमानी करे। जैसे बीवी एक ऐसे ग़लत काम को करने के लिए कह रही है जिसमें मां की ना फ़रमानी हो रही है तो वह शख़्स मां की इज़्ज़त व एहतिराम को नज़र अन्दाज़ कर देता है और बीवी को राज़ी करने के लिए वह काम कर लेता है।

(५) और आदमी दोस्त के साथ अच्छा सुलूक करेगा और बाप के साथ बुरा सुलूक करेगा। यानी दोस्त के साथ दोस्ती का लिहाज़ करेगा लेकिन बाप के साथ सख़्ती और बदसुलूकी का मामला करेगा।

मस्जिदों में आवाज़ों का बुलन्द होना

(६) मस्जिदों में आवाज़ें बुलन्द होंगी। मस्जिदें तो इसलिये बनाई गई हैं कि उनमें अल्लाह का ज़िक्र किया जाए, और अल्लाह की इबादत और ज़िक्र करने वालों के ज़िक्र और इबादत में कोई ख़लल न डाला जाए। लेकिन लोग मस्जिदों में आवाज़ें बुलन्द करके ख़लल डालेंगे। चुनांचे आजकल अल्हम्दु लिल्लाह मस्जिदों में निकाह करने का रिवाज तो हो गया है, जो अच्छा रिवाज है। लेकिन निकाह के मौक़े पर मस्जिद के एहतिराम का ख़्याल नहीं किया जाता। और उस वक़्त शोर किया जाता है, आवाज़ें बुलन्द की जाती हैं, जो एक गुनाहे बेलज़्ज़त है। इसलिये कि बाज़ गुनाह वे होते हैं जिनके करने में कुछ

लज़्ज़त और मज़ा भी आता है, लेकिन यह गुनाह ऐसा है कि जिसके करने में कोई लज़्ज़त और मज़ा नहीं है बल्कि मस्जिद में आवाज़ बुलन्द करके बिला वजह अपने सर गुनाह ले लिया।

(७) क़ौम का लीडर उनका सब से ज़लील आदमी होगा।

(८) आदमी की इज़्ज़त उसके शर के ख़ौफ़ से की जाने लगे कि अगर इसकी इज़्ज़त नहीं करूंगा तो यह मुझे किसी न किसी मुसीबत में फंसा देगा।

(९) और शराबें पी जाने लगेंगी।

(१०) रेशम पहना जायेगा।

घरों में गाने वाली औ़रतें

(११) गाने बजाने वाली औ़रतें रखी जायेंगी और मौसीक़ी के आलात संभाल संभाल के रखे जायेंगे। यह उस वक़्त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमा रहे हैं जब इन बातों का तसव्वुर नहीं था। और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जो लफ़्ज़ इस्तेमाल फ़रमाया वह यह कि गाने बजाने वाली औ़रतें रखने लगेंगे। अब सवाल यह है कि हर शख़्स गाने बजाने वाली औ़रतें तो अपने पास कैसे रख सकता है, इसलिये कि हर शख़्स के अन्दर इतनी गुन्जाइश कहां कि वह गाने बजाने वाली औ़रत को अपने पास रखे, और जब चाहे उस से गाना सुने। लेकिन रेडियो, टेपरिकॉर्डर, टी० वी० और वी० सी० आर० ने इस मसले को आसान कर दिया। अब हर शख़्स के घर में रेडियो और टी० वी० मौजूद है। वीडियो कैसिट मौजूद है। जब चाहे गाना सुने और गाने वाली औ़रत को देख ले।

इसी तरह गाने बजाने के आलात हर शख़्स अपने पास नहीं रखता, लेकिन आजके रेडियो, टी० वी० और वी० सी० आर० ने यह बाजे घर घर पहुंचा दिए, और अब आलाते मौसीक़ी ख़रीद कर लाने की ज़रूरत नहीं। बस टी० वी० ऑन कर दो तो आलाते मौसीक़ी के

तमाम मक़ासिद उसके ज़रिये तुम्हें हासिल हो जायेंगे।

(१२) और इस उम्मत के आख़री लोग पहले लोगों पर लानत करने लगेंगे।

बहर हाल! आपने फ़रमाया कि जब ये बातें मेरी उम्मत में पैदा हो जायेंगी तो उन पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ेगा, अल्लाह तआला अपनी पनाह में रखे। इस हदीस में भी जितनी बातें हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बयान फ़रमाई हैं वे सब बातें आज हमारे समाज में मौजूद हैं।

शराब को शर्बत के नाम से पिया जायेगा

एक और हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब मेरी उम्मत के लोग शराब को शर्बत कह कर हलाल कहने लगें। जैसे शराब को कहें कि यह तो एक शर्बत है, इसके हराम होने का क्या मतलब? चुनांचे आज लोगों ने इस मौज़ू पर किताबें और मक़ाले लिख दिए कि मौजूदा शराब हराम नहीं। और क़ुरआने करीम में शराब के लिए कहीं हराम का लफ़्ज़ नहीं आया है, इसलिये शराब हराम नहीं। और यह जो बियर है यह जौ का पानी है। और जिस तरह दूसरे शर्बत होते हैं यह भी एक शर्बत है। इस तरह आज शराब को हलाल करने पर दलीलें पेश की जा रही हैं। यह वही बात है जिसकी ख़बर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने आज से चौदह सौ साल पहले दे दी थी।

सूद को तिजारत का नाम दिया जायेगा

और जब मेरी उम्मत के लोग सूद को तिजारत कह कर हलाल करने लगें कि यह सूद भी एक तिजारत है। जैसे आजकल कहा जा रहा है कि यह बैंकों में जो सूद का लेन देन हो रहा है यह तिजारत की ही एक शक्ल है, अगर इसको बन्द कर दिया तो हमारी तिजारत ख़त्म हो जायेगी।

रिश्वत को हदिया का नाम दिया जायेगा

और जब मेरी उम्मत के लोग रिश्वत को हदिया कह कर हलाल करने लगें। जैसे रिश्वत देने वाला यह कहे कि यह हमने आपको हदिया दिया है। और रिश्वत लेने वाल रिश्वत को हदिया कह कर अपने पास रख ले। हालांकि हक़ीक़त में वह रिश्वत है। चुनांचे आज कल यह सब कुछ हो रहा है। और ज़कात के माल को तिजारत का माल बना लें तो उस वक़्त इस उम्मत की हलाकत का वक़्त आ जायेगा। अल्लाह तआला अपनी पनाह में रखे। ये चारों बातें जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायीं, वे हमारे मौजूदा दौर में पूरी तरह सादिक़ आ रही हैं। (कन्ज़ुल उम्माल)

कश्नों पर सवार होकर मस्जिद में आना

एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि आख़री दौर में (फ़ितने के ज़माने में) लोग मयासरे पर सवार होकर आयेंगे, और मस्जिद के दरवाज़ों पर उतरेंगे। "मयासरे" अर्बी ज़बान में बड़े आलीशान रेशमी कपड़े को कहते हैं, जो उस ज़माने में बहुत शान व शौकत और दबदबे वाले लोग अपने घोड़े की ज़ीन पर डाला करते थे, और बतौर 'कश्न" के इस्तेमाल करते थे। गोया कि आपने फ़रमाया कि कश्नों पर सवारी करके मस्जिद के दरवाज़ों पर उतरेंगे। पहले ज़माने में इसका तसव्वुर मश्किल था कि लोग कश्नों पर सवारी करके किस तरह आकर मस्जिद के दरवाज़ों पर उतरेंगे। लेकिन अब कारें ईजाद हो गयीं तो देखें कि किस तरह लोग कारों में सवार होकर आ रहे हैं और मस्जिद के दरवाज़ों पर उतर रहे हैं।

औरतें लिबास पहनने के बावजूद नंगी होंगी

आगे फ़रमाया कि "उनकी औरतें लिबास पहनने के बावजूद नंगी होंगी" पहले ज़माने में इसका तसव्वुर भी मुश्किल था कि लिबास पहनने के बावजूद किस तरह नंगी होंगी, लेकिन आज आंखों से

नज़र आ रहा है कि लिबास पहनने के बावजूद औरतें किस तरह नंगी हैं। इसलिये कि या तो वह लिबास इतना बारीक है कि जिस्म उस से नज़र आ रहा है, या वह लिबास इतना मुख़्तसर और छोटा है कि लिबास पहनने के बावजूद जिस्म के हिस्से पूरे नहीं छुपे, या वह लिबास इतना चुस्त है कि उसकी वजह से सारे जिस्म के अंग नुमायां हो रहे हैं। (मुस्लिम शरीफ़)

औरतों के बाल ऊंट के कोहान की तरह

आगे फ़रमाया कि उन औरतों के सर पर ऊंटों के कोहान जैसे बाल होंगे। यह हदीस भी उन हदीसों में से है कि पिछले उलमा इसकी शरह के वक़्त हैरान होते थे कि ऊंटों के कोहान जैसे बाल कैसे होंगे। इसलिये कि ऊंटों का कोहान तो उठा हुआ ऊंचा होता है। बाल किस तरह ऊंचे हो जायेंगे। लेकिन आज इस दौर ने नाक़ाबिले तसव्वुर चीज़ को हक़ीक़त बनाकर आंखों के सामने दिखा दिया, और मौजूदा दौर की औरतों की जो तश्बीह आपने बयान फ़रमाई, इस से बेहतर तश्बीह कोई और नहीं हो सकती थी।

ये औरतें मलऊन हैं

आगे फ़रमाया कि "ऐसी औरतों पर लानत भेजो, इसलिये कि ऐसी औरतें मलऊन हैं" अल्लाह तआला ने औरत को एक ऐसी चीज़ बनाया है जो अपने दायरे के अन्दर सीमित रहे। और जब यह औरत बेपर्दा बाहर निकलती है तो हदीस शरीफ़ में है कि शैतान उसकी ताक झांक में लग जाता है। और फ़रमाया कि जब औरत ख़ुश्बू लगाकर बाज़ारों के अन्दर जाती है तो अल्लाह तआला की तरफ़ से उस पर लानत होती है। और फ़रिश्ते ऐसी औरत पर लानत भेजते हैं।

लिबास का असली मक़सद

लिबास का असल मक़सद यह है कि उसके ज़रिये छुपाने के क़ाबिल हिस्सों का छुपाना हासिल हो जाए। कुरआने करीम का

इर्शाद है कि:

"يَا بَنِىٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِىْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا"

यानी हमने लिबास इसलिये उतारा ताकि वह तुम्हारे सतर को छुपाए और ज़ीनत का सामान हो।

इसलिये जो लिबास सतर को न छुपाए तो इसका मतलब यह हुआ कि लिबास का जो असल मक़सद था वह फ़ौत कर दिया गया। और असल मक़सद फ़ौत हो गया तो लिबास पहनने के बावजूद वह लिबास पहनने वाला नंगा है। ख़ुदा के लिए इसका एहतिमाम करें कि लिबास हमारा दुरुस्त हो। आजकल अच्छे ख़ासे दीनदार, नमाज़ी परहेज़गार लोगों के अन्दर भी इसका एहतिमाम ख़त्म हो गया है। लिबास में इसकी परवाह नहीं कि उसमें पर्दा पूरा हो रहा है या नहीं? इन्हीं चीज़ों का वबाल आज हम लोग भुगत रहे हैं। इसलिये कम से कम अपने घरानों में और अपने ख़ानदानों में इसकी पाबन्दी कर लें कि लिबास शरीअत के मुताबिक़ हो, और उसमें पर्दे का लिहाज़ हो, और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की लानत की वईद से महफ़ूज़ हो।

दूसरी क़ौमें मुसलमानों को खायेंगी

एक हदीस में हज़रत सौबान रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः तुम पर एक ऐसा वक़्त आने वाला है कि दुनिया की दूसरी क़ौमें तुम्हें खाने के लिए एक दूसरे को दावत देंगी। जैसे लोग दस्तरख़्वान पर बैठ कर दूसरों को खाने की दावत देते हैं। जैसे दस्तरख़्वान बिछा हुआ है, उस पर खाने चुने हुए हैं। उस पर एक आदमी बैठा है। इतने में दूसरा शख़्स आ गया तो पहला उस से कहता है कि आओ खाना खा लो, और खाने में शरीक हो जाओ। इसी तरह एक वक़्त ऐसा आयेगा कि उस वक़्त मुसलमानों का दस्तरख़्वान बिछा होगा, और मुसलमान की हैसियत ऐसी होगी जैसे दस्तरख़्वान पर खाना

होता है, और बड़ी बड़ी क़ौमें और ताक़तें मुसलमानों को खा रही होंगी। और दूसरी क़ौमों को दावत दे रही होंगी कि आओ और मुसलमानों को खाओ। (अबू दाऊद शरीफ़)

जिन हज़रात को पिछले सौ साल की तारीख़ का इल्म है, यानी पहली जंगे अज़ीम (विश्व युद्ध) से लेकर आज तक ग़ैर मुस्लिम क़ौमों ने मुसलमानों के साथ कैसा सुलूक किया है, और वे किस तरह मुसलमान मुल्कों को आपस में बांटती रही हैं, कि अच्छा मिस्र तुम्हारा और शाम हमारा, अल–जज़ाइर तुम्हारा और मराकश हमारा, हिन्दुस्तान तुम्हारा और बर्मा हमारा वग़ैरह। गोया कि आपस में एक दूसरे की दावत हो रही है कि आओ उनको लेजा कर खा लो।

(अबू दाऊद शरीफ़)

मुसलमान तिनकों की तरह होंगे

जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुसलमानों की हालत सहाबा–ए–किराम के सामने बयान फ़रमाई तो किसी सहाबी ने सवाल किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! क्या उस वक़्त हमारी तायदाद बहुत कम रह जाएगी, जिस की वजह से दूसरे लोग मुसलमानों को खाने लगेंगे और दूसरों को भी खाने की दावत देने लगेंगे? जवाब में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः नहीं उस वक़्त तुम्हारी तायदाद बहुत ज़्यादा होगी। चुनांचे आज मुसलमानों की तायदाद एक अरब से ज़्यादा है। गोया कि दुनिया की एक तिहाई आबादी मुसलमानों की है, लेकिन तुम्हारी मिसाल ऐसी होगी जैसे सैलाब में बहते हुए बेशुमार तिनके होते हैं। यानी जैसे एक पानी का सैलाब जा रहा है और उसमें बेशुमार तिनके गिरे हुए हैं, जिनकी कोई गिन्ती नहीं हो सकती, लेकिन वे तिनके सैलाब में बहे चले जा रहे हैं। उन तिनकों की अपनी कोई ताक़त नहीं, अपना कोई फ़ैसला नहीं, अपना कोई इख़्तियार नहीं, पानी जहां बहा कर लेजा रहा है वहां जा रहे हैं।

मुसलमान डरपोक हो जायेंगे

आगे फ़रमाया कि "अल्लाह तआला तुम्हारे दुश्मनों के दिल से तुमारा रोब निकाल लेंगे और तुम्हारे दिलों में कमज़ोरी और बुज़दिली आ जायेगी।" एक सहाबी ने सवाल किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! यह कमज़ोरी और बुज़दिली क्या चीज़ है? गोया कि सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की समझ में यह बात नहीं आ रही है कि मुसलमान और बुज़दिल? मुसलमान और कमज़ोर? यह कैसे हो सकता है? जवाब में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि कमज़ोरी यह है कि दुनिया की मुहब्बत दिल में आ जायेगी और मौत से नफ़रत हो जायेगी। और मौत का मतलब है "अल्लाह तआला से मुलाक़ात" गोया कि अल्लाह तआला की मुलाक़ात से नफ़रत हो जायेगी। और उस वक़्त यह फ़िक्र होगी कि दुनिया हासिल हो, पैसे हासिल हों, शोहरत और इज़्ज़त हासिल हो, चाहे हलाल तरीक़े से हो या हराम तरीक़े से हो।

सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की बहादुरी

सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का हाल यह था कि एक जंग में एक सहाबी अकेले रह गए, सामने से तीन चार काफ़िर हथियार बन्द लड़ाके पहलवान क़िस्म के आ गए, यह सहाबी तन्हा थे। इन्होंने आगे बढ़ कर उनसे मुक़ाबला करना चाहा तो इतने में दूसरे सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम वहां पहुंच गए और उन्होंने कहा कि तुम अकेले हो और ये ज़्यादा हैं, और यह बड़े लड़ाके और पहलवान क़िस्म के लोग भी हैं। इसलिये इस वक़्त बेहतर यह है कि तरह दे जाओ और मुक़ाबला न करो, और हमारे लश्कर के आने का इन्तिज़ार कर लो। उन सहाबी ने बेसाख़्ता जवाब दिया कि मैं तुम्हें क़सम देता हूं कि तुम मेरे और जन्नत के दरमियान रोक होने की कोशिश मत करना, ये बड़े बड़े पहलवान तो मेरे जन्नत में पहुंचने का रास्ता हैं। और तुम मुझे लड़ने से रोक रहे हो

और मेरे और जन्नत के दरमियान रोक हो रहे हो। सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का यह हाल था जिसकी वजह से उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि बुज़दिली क्या चीज़ है? और कमज़ोरी क्या चीज़ है? हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सोहबत की बर्कत से अल्लाह तआ़ला ने उनके दिलों से दुनिया की मुहब्बत ख़त्म फ़रमा दी थी, और हर वक़्त आंखों से आख़िरत देख रहे थे। जन्नत और दोज़ख़ को देख रहे थे। इस वजह से मरने से नहीं डरते थे, बल्कि इस बात की ख़्वाहिश करते थे कि किसी तरह अल्लाह तआ़ला की बारगाह में पहुंच जाएं।

एक सहाबी का शहादत का शौक़

एक सहाबी एक मैदाने जंग में पहुंचे और देखा कि सामने कुफ़्फ़ार का लश्कर है। जो पूरे हथियारों और ताक़त के साथ हमलावर होगा, उस लश्कर को देख कर बेसाख़्ता ज़बान से यह शेर पढ़ाः

غدا نلقى الاحبة   محمدا وصحبه

वाह वाह क्या बेहतरीन नज़ारा है। कल को हम अपने दोस्तों से यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और सहाबा-ए-किराम से मुलाक़ात करेंगे।

एक सहाबी के तीर आकर लगा। सीने से ख़ून का फ़व्वारा उबल पड़ा, उस वक़्त बेसाख़्ता ज़बान से यह कलिमा निकलाः

"فزت ورب الكعبة"

काबे के रब की क़सम, आज मैं कामयाब हो गया।

ये हज़रात ईमान और यक़ीन वाले और अल्लाह की ज़ात पर भरोसा रखने वाले थे, दुनिया की मुहब्बत जिनको छूकर भी नहीं गुज़रती थी।

"फ़ितने" के दौर के लिए पहला हुक्म

ऐसी सूरत में एक मुसलमान को क्या अ़मल का तरीक़ा

इख़्तियार करना चाहिए? इसके बारे में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहला हुक्म यह दिया किः

"تلزم جماعة المسلمين وامامهم"

पहला काम यह करो कि जमहूर मुसलमान और इमाम के साथ हो जाओ। और जो लोग बग़ावत कर रहे हैं उनसे अलगाव इख़्तियार कर लो और उनको छोड़ दो। एक सहाबी ने सवाल किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! अगर मुसलमान की अक्सरियत वाली जमाअत और इमाम न हो तो फिर आदमी क्या करे? यानी आपने जो हुक्म दिया वह तो उस वक़्त है जब मुसलमानों की मुत्तफ़िक़ा जमाअत मौजूद हो। उनका एक सरदार और लीडर हो जिस पर सब मुत्तफ़िक़ हों और उस इमाम की दियानत और तक़्वा पर एतिमाद हो, तो उसके साथ चलेंगे। लेकिन अगर न जमाअत हो और न मुत्तफ़िक़ा इमाम हो तो उस सूरत में हम क्या करें? जवाब में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः ऐसी सूरत में हर जमाअत और हर पार्टी से अलग होकर ज़िन्दगी गुज़ारो और अपने घरों की टाट बन जाओ, टाट जिस से बोरियां बनती हैं, पहले ज़माने में उसको बतौर फ़र्श के बिछाया जाता था। आजकल उसकी जगह क़ालीन बिछाए जाते हैं। मक़सद यह है कि जिस तरह घर का क़ालीन और फ़र्श होता है, जब एक बार उसको बिछा दिया तो अब बार बार उसको उसकी जगह से नहीं उठाते, इसी तरह तुम भी अपने घरों के टाट और फ़र्श बन जाओ और बिला ज़रूरत घर से न निकलो, और उन जमाअतों के साथ शामिल मत हो, बल्कि उनसे अलग हो जाओ। किसी का साथ मत दो। इस से ज़्यादा वाज़ेह बात और क्या हो सकती है।

"फ़ितने" के दौर के लिए दूसरा हुक्म

एक हदीस में फ़रमाया कि जिस वक़्त तुम लोगों से अलग होकर ज़िन्दगी गुज़ार रहे हो, उस वक़्त अगर मुसलमान आपस में लड़ रहे हों और उनके दरमियान क़त्ल व ग़ारत गरी हो रही हो तो उनको

तमाशे के तौर पर भी मत देखो। इसलिये कि जो शख़्स तमाशे के तौर पर उन फ़ितनों को झांक कर देखेगा वह फ़ितना उसको भी अपनी तरफ़ खींच लेगा और उचक लेगाः

"من استشرف لها استشرفته"

इसलिये ऐसे वक़्त में तमाशा देखने के लिए भी घर से बाहर न निकलो और अपने घर में बैठे रहो।

"फ़ितने" के दौर के लिए तीसरा हुक्म

एक और हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि वे फ़ितने ऐसे होंगे कि उसमें:

"القائم فيها خير من الماشى، والقاعد فيها خير من القائم"

यानी खड़ा होने वाला चलने वाले से बेहतर होगा और बैठने वाला खड़े होने वाले से बेहतर होगा। मतलब यह है कि उस फ़ितने के अन्दर किसी क़िस्म का हिस्सा मत लो। उस फ़ितने की तरफ़ चलना भी ख़तरनाक है। चलने से बेहतर यह है कि खड़े हो जाओ, और खड़ा होना भी ख़तरनाक है, इस से बेहतर यह है कि बैठ जाओ, और बैठना भी ख़तरनाक है, इस से बेहतर यह है कि लेट जाओ। गोया कि अपने घर में बैठ कर अपनी ज़ाती ज़िन्दगी को दुरुस्त करने की फ़िक्र करो, और घर से बाहर निकल कर इज्तिमाई मुसीबत और इज्तिमाई फ़ितने को दावत मत दो।

फ़ितने के दौर का बेहतरीन माल

एक और हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि एक ज़माना ऐसा आयेगा कि उसमें आदमी का सब से बेहतर माल उसकी बकरियां होंगी। जिसको वह लेकर पहाड़ की चोटी पर चला जाए और शहरों की ज़िन्दगी छोड़ दे, और उन बकरियों पर इक्तिफ़ा करके अपनी ज़िन्दगी बसर करे। ऐसा शख़्स सब से ज़्यादा महफ़ूज़ होगा। क्योंकि शहरों में उसको ज़ाहिरी और बातिनी फ़ितने उचकने के लिए तैयार होंगे।

फ़ितने के दौर के लिए एक अहम हुक्म

इन तमाम हदीसों के ज़रिये हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह बतलाना चाहते हैं कि वह वक़्त इज्तिमाई और जमाअ़ती काम का नहीं होगा। क्योंकि जमाअ़तें सब की सब ग़ैर मोतबर होंगी। किसी भी जमाअ़त पर भरोसा करना मुश्किल होगा। हक़ और बातिल का पता नहीं चलेगा। इसलिये ऐसे वक़्त में अपनी ज़ात को उन फ़ितनों से बचा कर और अल्लाह तआ़ला की इताअ़त में लगाकर किसी तरह अपने ईमान को क़ब्र तक ले जाओ। उन फ़ितनों से बचाव का सिर्फ़ यही एक रास्ता है, जो आयत मैंने शुरू में तिलावत की है, वह भी इसी मज़मून में आई है। फ़रमाया कि ऐ ईमान वालो! अपनी ज़ात की ख़बर लो, अपने आपको दुरुस्त करने की फ़िक्र करो। अगर तुम हिदायत पर आ गए तो फिर जो लोग गुमराही की तरफ़ जा रहे हैं उनकी गुमराही तुमको कोई नुक़सान नहीं पहुंचायेगी। अगर तुमने अपनी इस्लाह की फ़िक्र कर ली। रिवायत में आता है कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने सवाल किया या रसूलल्लाह सल्ल.! यह आयत तो बता रही है कि बस इन्सान सिर्फ़ अपनी फ़िक्र करे और दूसरे की फ़िक्र न करे। और अगर कोई दूसरा शख़्स ग़लत रास्ते पर जा रहा है तो उसको जाने दो और उसको अच्छे कामों का हुक्म न करे और बुराइयों से मना न करे, उसको तब्लीग़ न करे, जब कि दूसरी तरफ़ यह हुक्म आया है कि अच्छे काम का हुक्म करे और बुरे काम से मना करना चाहिए, और दूसरों को नेकी की दावत और तब्लीग़ भी करनी चाहिए तो इन दोनों में मुताबक़त किस तरह हो?

फ़ितने के दौर की चार निशानियां

जवाब में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि वे आयतें भी अपनी जगह दुरुस्त हैं कि अच्छे काम का हुक्म और बुराई से रोकना चाहिए और दावत व तब्लीग़ करनी चाहिए लेकिन

एक ज़माना ऐसा आयेगा कि उस वक़्त इन्सान के ज़िम्मे सिर्फ़ अपनी इस्लाह की फ़िक्र बाक़ी रहेगी। और यह वह ज़माना होगा जिसमें चार निशानियां ज़ाहिर हो जायें।

१. पहली निशानी यह है कि उस ज़माने में इन्सान अपने माल की मुहब्बत के जज़्बे के पीछे लगा हुआ हो, और अपने बुख़्ल के जज़्बे की इताअत कर रहा हो। माल जमा करने में लगा हुआ हो। सुबह से लेकर शाम तक बस ज़ेहन पर एक ही धुन सवार हो कि जिस तरह भी हो पैसे ज़्यादा आ जायें, और मेरी दुनिया दुरुस्त हो जाए, और हर काम माल व दौलत की मुहब्बत में कर रहा हो।

२. दूसरी निशानी यह है कि लोग हर वक़्त नफ़्स की इच्छाओं की पैरवी में लगे हुए हों। जिस तरफ़ इन्सान की इच्छा उसको लेजा रही हो, वह जा रहा हो। यह न देख रहा हो कि काम हलाल है या हराम। और न यह देख रहा हो कि यह जन्नत का रास्ता है या जहन्नम का रास्ता है। यह अल्लाह तआला के राज़ी होने का रास्ता है या नाराज़गी का है। इन सब चीज़ों को भूल कर अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात के पीछे दौड़ा जा रहा हो। यह दूसरी निशानी है।

३. तीसरी निशानी यह है कि जब दुनिया को आख़िरत पर तरजीह दी जाने लगे। यानी आख़िरत की तो बिल्कुल फ़िक्र न हो लेकिन दुनिया की इतनी ज़्यादा फ़िक्र हो कि लाख समझाया जाए और बताया जाए कि आख़िरत आने वाली है, एक दिन मरना है और क़ब्र में जाना है, अल्लाह के सामने पेशी होगी। सारी बातें समझाने के जवाब में वह कहे कि क्या करें ज़माना ही ऐसा है, हमें आख़िर इस दुनिया में सब के साथ रहना है, इसलिये इस दुनिया की भी फ़िक्र करना चाहिए। गोया सारी नसीहतों और वाज़ों को हवा ही में उड़ा दे और उसकी तरफ़ कान न धरे और दुनिया कमाने में लग जाए।

४. चौथी निशानी यह है कि हर इन्सान अपनी राए पर घमन्ड में मुब्तला हो। दूसरे की सुनने को तैयार ही न हो। और हर इन्सान

ने अपना एक मौक़िफ़ इख़्तियार कर रखा हो, और उसी में इस तरह मगन हो कि जो मैं कह रहा हूं वह दुरुस्त है और जो बात दूसरा कह रहा है वह ग़लत है। जैसे आजकल यही मन्ज़र नज़र आता है कि हर इन्सान ने दीन के मामले में भी अपनी राय मुताय्यन कर ली है कि उसके नज़्दीक क्या हलाल है और क्या हराम है, क्या जायज़ है और क्या ना जायज़ है। हालांकि सारी उम्र में कभी एक दिन भी कुरआन व हदीस समझने के लिए ख़र्च नहीं किया, लेकिन जब उसके सामने शरीअ़त का कोई हुक्म बयान किया जाए तो फ़ौरन यह जवाब देता है कि मैं तो यह समझता हूं कि यह बात सही नहीं है। फ़ौरन अपनी राय पेश करनी शुरू कर देता है। इसी के बारे में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हर शख़्स अपनी राय पर घमन्ड में मुब्तला होगा।

बहर हाल जिस ज़माने में ये चार निशानियां ज़ाहिर हो जाएं यानी जब माल की मुहब्बत की इताअ़त होने लगे, लोग नफ़्स की इच्छाओं के पीछे पड़ जायें, दुनिया को आख़िरत पर तरजीह दी जा रही हो और हर शख़्स अपनी राए पर घमन्ड में मुब्तला हो, उस वक़्त अपनी ज़ात को बचाने की फ़िक्र करो और आ़म लोगों की फ़िक्र छोड़ दो कि आ़म लोग कहां जा रहे हैं। इसलिये कि वह एक फ़ितना है। अगर आ़म लोगों की फ़िक्र के लिए बाहर निकलोगे तो वे आ़म लोग तुम्हें पकड़ लेंगे और तुम्हें भी फ़ितने में मुब्तला कर देंगे। इसलिये अपनी ज़ात की फ़िक्र करो और अपने आपको इस्लाह के रास्ते पर लाने की कोशिश करो। घर से बाहर न निकलो, घर के दरवाज़े बन्द कर लो, घर की टाट बन जाओ और तमाशा देखने के लिए भी घर से बाहर मत झांको। फ़ितने के ज़माने में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की यही तालीम है।

इख़्तिलाफ़ात में सहाबा-ए-किराम रज़ि. का तर्ज़े अ़मल

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बाद जब सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम का ज़माना आया और

ख़िलाफ़ते राशिदा के आख़री दौर में बड़े ज़बरदस्त इख़्तिलाफ़ात हज़रत अ़ली और हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा के दरमियान पेश आए और जंग तक नौबत पहुंच गई और हज़रत अ़ली रज़ि. और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के दरमियान इख़्तिलाफ़ हुआ और उसमें जंग की नौबत पहुंची। उन इख़्तिलाफ़ों के ज़रिये अल्लाह तआ़ला ने सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के ज़माने में ही यह सब कुछ दिखा दिया, ताकि आने वाली उम्मत के लिए सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ही की ज़िन्दगी से रहनुमाई का एक रास्ता मिल जाए कि जब कभी आईन्दा इस क़िस्म के वाक़िआ़त पेश आयें तो क्या करना चाहिए। चुनांचे उस ज़माने में वे सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम और ताबिईन रह्मतुल्लाहि अ़लैहिम जो यह समझते थे कि हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु हक़ पर हैं, उन्होंने इस हदीस पर अमल किया जिसमें हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह फ़रमाया था कि:

"تلزم جماعة المسلمين وامامهم"

"यानी ऐसे वक़्त में जो मुसलमानों की बड़ी जमाअ़त हो और उसका इमाम भी हो, उसको लाज़िम पकड़ लो।"

इस हदीस पर अ़मल करते हुए हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु का साथ दिया और यह कहा कि हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु इस वक़्त इमाम हैं, हम उनका साथ देंगे, और वह जैसा कहेंग हम वैसा ही करेंगे। बाज़ सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम और ताबिईन रह्मतुल्लाहि अ़लैहिम ने हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु को बरहक़ समझा कि यह इमाम हैं और इनका साथ देना शुरू कर दिया। सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम का तीसरा फ़रीक़ वह था जिन्होंने यह कहा कि इस वक़्त हमारी समझ में नहीं आ रहा है कि हक़ क्या है? और बातिल क्या है? और ऐसे मौक़े के लिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का हुक्म यह है कि तमाम जमाअ़तों से अलग हो जायें। चुनांचे उन्होंने न तो हज़रत अ़ली

रज़ियल्लाहु अन्हु का साथ दिया और न हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु का साथ दिया, बल्कि अलग होकर अपने घरों में बैठ गए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. का तर्ज़े अमल

चुनांचे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के साहिबज़ादे हैं। बड़े ऊंचे दर्जे के सहाबी और फ़कीह थे। उस ज़माने में यह अपने घर में बैठे थे। एक शख़्स उनके पास आया और कहा कि आप यह क्या कर रहे हैं कि घर में बैठ गए, बाहर हक़ व बातिल का झगड़ा हो रहा है, हज़रत अली और हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के दरमियान लड़ाई हो रही है, उसमें हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का साथ देना चाहिए, इसलिये कि वह हक़ पर हैं, तो आप बाहर क्यों नहीं निकलते? जवाब में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैंने तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह हदीस सुनी है कि जब कभी ऐसा मौक़ा आए कि मुसलमान आपस में टकरा जाएं और हक़ व बातिल का पता न चले तो उस वक़्त अपने घर का दरवाज़ा बन्द करके बैठ जाओ, और अपने घर का टाट बन जाओ। और अपनी कमान की तांतें तोड़ डालो, यानी हथियार तोड़ डालो। चूंकि मुझे हक़ व बातिल का पता नहीं चल रहा है इसलिये मैं अपने हथियार तोड़ कर घर के अन्दर बैठ गया हूं और अल्लाह अल्लाह कर रहा हूं।

उस शख़्स ने कहा कि यह आप ग़लत कर रहे हैं, इसलिये कि कुरआने करीम का इर्शाद है कि:

"قٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ"

यानी उस वक़्त तक जिहाद करो जब तक फ़ितना बाक़ी है, और जब फ़ितना ख़त्म हो जाए, उस वक़्त जिहाद छोड़ देना।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इसका क्या अजीब जवाब इर्शाद फ़रमाया:

"قاتلنا حتی لم تکن فتنة، وقاتلتم حتی کانت الفتنة"

यानी हमने जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ मिलकर क़िताल किया था तो अल्लाह तआ़ला ने फ़ितना ख़त्म फ़रमा दिया था, और अब तुमने क़िताल किया तो फ़ितना ख़त्म नहीं किया, बल्कि फ़ितने को और बढ़ा दिया और उसे जगा दिया। इसलिये मैं तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इर्शाद पर अ़मल करते हुए घर में बैठा हूं।

अमन की हालत और फ़ितने की हालत में हमारे लिए तर्ज़े अ़मल

इसी बारे में एक मुहद्दिस का एक क़ौल मेरी नज़र से गुज़रा, जब मैंने उसको पढ़ा तो मैं झूम गया। वह क़ौल यह है:

"اقتدوا بعمر رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ فی الامن وبابنہ فی الفتنة"

यानी जब अमन की हालत हो तो उस वक़्त हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की पैरवी करो, और जब फ़ितने की हालत हो तो उनके बेटे यानी हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का तरीक़ा इख़्तियार करो।

यानी अमन की हालत में यह देखो कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु का क्या तर्ज़े अ़मल था। उनकी पैरवी करते हुए वह तर्ज़े अ़मल तुम भी इख़्तियार करो। और फ़ितने की हालत में यह देखो कि उनके बेटे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने क्या तर्ज़े अ़मल इख़्तियार किया था। वह यह कि तलवार तोड़ कर घर के अन्दर अलग होकर बैठ गए और किसी का साथ नहीं दिया। तुम भी फ़ितने की हालत में उनकी इत्तिबा करो।

इख़्तिलाफ़ात के बावजूद आपस के ताल्लुक़ात

अल्लाह तआ़ला ने सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ही के दौर में यह सारे मन्ज़र दिखा दिए। चुनांचे जिन सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु को हक़ पर

समझा, उन्होंने उनका साथ दिया। और जिन्होंने हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु को हक़ पर समझा, उन्होंने उनका साथ दिया। लेकिन साथ देने के बावजूद यह अजीब मन्ज़र दुनिया की आंखों ने देखा कि ऐसा मन्ज़र दुनिया ने पहले कभी नहीं देखा था। वह यह कि हज़रत अली और हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हुमा दोनों एक दूसरे के मुक़ाबले पर भी हैं, लेकिन जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर में से किसी का इन्तिक़ाल हो जाता तो हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर के लोग उसके जनाज़े में आकर शरीक होते, और जब हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर में किसी का इन्तिक़ाल हो जाता तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर के लोग उसके जनाज़े में शरीक होते। वजह इसकी यह थी कि यह लड़ाई हक़ीक़त में नफ़सानियत की बुनियाद पर नहीं थी, यह लड़ाई पद और माल के हासिल करने के लिए नहीं थी। बल्कि लड़ाई की वजह यह थी कि अल्लाह तआला के हुक्म का एक मतलब हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने समझा था, यह उस पर अमल कर रहे थे। और हुक्म का एक मतलब हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने समझा था, वह उस पर अमल कर रहे थे, और दोनों अपनी अपनी जगह पर अल्लाह के हुक्म की तामील में मश्गूल थे।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. का तर्ज़े अमल

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु जो पढ़ने पढ़ाने वाले सहाबी थी। मेरे वालिद साहिब रह्मतुल्लाहि अलैहि फ़रमाया करते थे कि यह मौलवी क़िस्म के सहाबी थी और हर वक़्त पढ़ने पढ़ाने के मश्ग़ले में रहते थे। इनका तर्ज़े अमल यह था कि यह दोनों लश्करों में दोनों के पास जाया करते थे, किसी एक का साथ नहीं देते थे। जब नमाज़ का वक़्त आता तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर में जाकर उनके पीछे नमाज़ पढ़ते, और जब खाने का वक़्त आता तो

हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर में जाकर उनके साथ खाना खाते, किसी ने उनसे सवाल किया कि हज़रत! आप नमाज़ तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पीछे पढ़ते हैं और खाना हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ खाते हैं। ऐसा क्यों करते हैं? जवाब में फ़रमाया कि नमाज़ वहां अच्छी होती है और खाना वहां अच्छा होता है। इसलिये नमाज़ के वक़्त वहां और खाने के वक़्त वहां चला जाता हूं। सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने हमें आपस के इख़्तिलाफ़ात करने का सलीक़ा भी सिखा दिया।

हज़रत अमीर मुआविया रज़ि. का क़ैसरे रूम को जवाब

इसी लड़ाई के ऐन दौरान जब एक दूसरे की फ़ौजें आमने सामने एक दूसरे के ख़िलाफ़ खड़ी हैं। उस वक़्त क़ैसरे रूम का यह पैग़ाम हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आता है कि मैंने सुना है कि तुम्हारे भाई हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने तुम्हारे साथ बड़ी ज़्यादती की है, और वह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ातिलों से बदला नहीं ले रहे हैं। अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारी मदद के लिए बहुत बड़ा लश्कर भेज दूं ताकि तुम उनसे मुक़ाबला करो। इस पैग़ाम का जो फ़ौरी जवाब हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिख कर भेजा, वह यह था कि:

"ऐ ईसाई बादशाह! तू यह समझता है कि हमारे आपस के इख़्तिलाफ़ के नतीजे में तू हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु पर हमलावर होगा? याद रख! अगर तूने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु पर बुरी निगाह डालने की जुर्रत की तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर से सामने आने वाला पहला शख़्स जो तेरी गर्दन उतारेगा वह मुआविया (रज़ियल्लाहु अन्हु) होगा"।

तमाम सहाबा-ए-किराम रज़ि. हमारे लिए सम्मानित और क़ाबिले एहतिराम हैं

आजकल लोग हज़राते सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के

बारे में कैसी कैसी ज़बान चलाते हैं। हलांकि सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की शान और मर्तबे को समझना कोई आसान काम नहीं है। उनके एहसासात और जज़्बे को हम नहीं पहुंच सकते। आज उनकी लड़ाइयों को हम अपनी लड़ाइयों पर क़्यास करना शुरू कर देते हैं कि जिस तरह हमारे दरमियान लड़ाई होती है, इसी तरह उनके दरमियान भी लड़ाई हुई। हालांकि उनकी सारी लड़ाइयां और सारे इख़्तिलाफ़ों के ज़रिये हक़ीक़त में अल्लाह तआ़ला आने वाली उम्मत के लिए रहनुमाई का रास्ता पैदा कर रहे थे कि आईन्दा ज़माने में जब कभी ऐसे हालात पैदा हो जायें तो उम्मत के लिए रास्ता क्या है? चाहे वह हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु हों, या हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु हों, या अलग बैठने वाले हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु हों। उनमें से हर एक ने हमारे लिये एक उम्दा नमूना छोड़ा है। इसलिये उन लोगों के धोखे में कभी मत आना जो सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के उन आपसी इख़्तिलाफ़ों की बुनियाद पर किसी एक सहाबी की शान में गुस्ताख़ी या ज़बान चलाते हैं। अरे उनके मक़ाम तक आज कोई पहुंच नहीं सकता।

हज़रत मुआ़विया रज़ि. की लिल्लाहियत और ख़ुलूस

हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने चूंकि अपने बेटे यज़ीद को अपना 'वली अ़हद' (उत्तराधिकारी) बना दिया था, जिसकी वजह से उनके बारे में लोग बहुत सी बातें करते हैं। हालांकि वाक़िआ़ लिखा है कि एक बार जुमा के ख़ुतबे में बिल्कुल जुमा के वक़्त मिम्बर पर खड़े होकर यह दुआ़ की कि या अल्लाह! मैंने अपने बेटे यज़ीद को जो अपना वली अ़हद बनाया है, मैं क़सम खाकर कहता हूं कि उसको वली अ़हद बनाते वक़्त मेरे ज़ेहन में सिवाए उम्मते मुहम्मदिया की फ़लाह के कोई और बात नहीं थी। और अगर मेरे ज़ेहन में कोई बात हो तो मैं यह दुआ़ करता हूं कि या अल्लाह! इस से पहले कि

मेरा यह हुक्म नाफ़िज़ हो, आप उसकी रूह क़ब्ज़ कर लें। देखिए! कोई बाप अपने बेटे के लिए ऐसी दुआ नहीं किया करता, लेकिन हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह दुआ फ़रमाई। इस से पता चलता है कि हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो कुछ किया वह ख़ुलूस के साथ किया। इन्सान से ग़लती हो सकती है, पैग़म्बरों के अलावा हर एक से ग़लती हो सकती है, ग़लत फ़ैसला हो सकता है। लेकिन आपने जो कुछ फ़ैसला किया वह इख़्लास के साथ अल्लाह के लिए किया।

अलग हो जाओ

बहर हाल! हज़राते सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने फ़ितनों की तमाम हदीसों पर अमल करके हमारे लिए नमूना पेश कर दिया कि फ़ितने में यह किया जाता है। इसलिये जब उस दौर में जहां मुक़ाबला हज़रत अली और हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हुमा का था, उस दौर में भी सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की एक बड़ी जमाअत अलग होकर बैठ गई थी। जिसमें हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे सहाबा–ए–किराम शामिल थे। तो इस दौर में भी हक़ व बातिल का यक़ीनी तौर पर पता नहीं है, बल्कि हक़ व बातिल मुश्तबह (संदिग्ध) है, इसके सिवा कोई रास्ता नहीं कि आदमी अलाहदगी इख़्तियार कर ले।

हक़ीक़त यह है कि तकवीनी तौर पर अल्लाह तआला को अजीब बात मन्ज़ूर थी कि जो हज़राते सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम उस ज़माने में अलग होकर बैठ गए थे, उनसे अल्लाह तआला ने दीन की बहुत बड़ी ख़िदमत लेली। वर्ना अगर सब के सब सहाबा जंग में शामिल हो जाते तो बहुत से सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम शहीद हो जाते और दीन की वह ख़िदमत न कर पाते। चुनांचे जो हज़रात सहाबा–ए–किराम अलग होकर बैठ गए थे उन्होंने हदीसों को तर्तीब देना शुरू कर दिया और इसके नतीजे में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु

अ़लैहि व सल्लम के इर्शादात और आपका लाया हुआ दीन आगे आने वाली नस्लों के लिए जमा और मुरत्तब हो गया और एक बहुत बड़ा ज़ख़ीरा छोड़ गए।

अपने सुधार की फ़िक्र करो

बहर हाल, फ़ितने के दौर में यह हुक्म दिया कि घर का दरवाज़ा बन्द करके बैठ जाओ और अल्लाह अल्लाह करो, और अपने सुधार की फ़िक्र करो कि मैं गुनाहों से बच जाऊं और अल्लाह तआ़ला का ताबेदार और फ़रमांबर्दार बन जाऊं, और मेरे बीवी बच्चे भी फ़रमांबर्दार बन जाएं। हक़ीक़त यह है कि एक पैग़म्बर ही ऐसा नुस्ख़ा बता सकता है, हर इन्सान के बस का काम नहीं कि वह ऐसा नुस्ख़ा बता सके। इसलिये इस नुस्ख़े पर अ़मल करते हुए हर इन्सान अपनी इस्लाह और सुधार की तरफ़ मुतज्जह हो जाए। मुआ़शरा और समाज तो इन्हीं अफ़राद के मजमूए का नाम है। जब एक फ़र्द की इस्लाह हो गई और वह दुरुस्त हो गया तो कम से कम समाज से एक बुराई तो दूर हो गयी, और जब दूसरा फ़र्द दुरुस्त हो गया तो दूसरी बुराई दुरुस्त हो गई। इसी तरह चिराग़ से चिराग़ जलता है। और अफ़राद से मुआ़शरा और समाज बनता है। धीरे धीरे सारा समाज दुरुस्त हो जायेगा।

अपने ऐबों को देखो

आज हम जिस दौर से गुज़र रहे हैं, यह सख़्त फ़ितने का दौर है, इसके लिये हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम चौदह सौ साल पहले यह नुस्ख़ा बता गए कि किसी पार्टी में शामिल मत होना, जहां तक मुम्किन हो घर में बैठो और तमाशा देखने के लिए भी घर से बाहर मत जाओ। और अपनी इस्लाह की फ़िक्र करो। और यह देखो कि मेरे अन्दर क्या बुराई है। और मैं किन बुराइयों के अन्दर मुब्तला हूं। हो सकता है कि पूरे समाज के अन्दर जो फ़ितना फैला हुआ है, वह मेरे गुनाहों की नहूसत हो। हर इन्सान को यह सोचना चाहिए कि यह जो कुछ हो रहा है शायद मेरे गुनाहों की वजह से हो

रहा है। हज़रत ज़ुन्नून मिसरी रहमतुल्लाहि अलैहि के पास लोग कहत साली (अकाल) की शिकायत करने गए तो उन्होंने कहा कि यह सब मेरे गुनाहों की वजह से हो रहा है, मैं यहां से चला जाता हूं, शायद अल्लाह तआला तुम पर रहमत नाज़िल फ़रमा दे। आज हम लोगों को दूसरों पर तब्सिरा करना आता है कि लोग यूं कर रहे हैं, लोगों के अन्दर ये ख़राबियां हैं, जिसकी वजह से फ़साद हो रहा है। लेकिन अपने गिरेबान में मुंह डाल कर देखने वाला शायद ही आज कोई मिलेगा। इसलिये दूसरों को छोड़ो और अपनी इस्लाह और सुधार की फ़िक्र करो।

गुनाहों से बचो

और अपनी इस्लाह की फ़िक्र का अदना दर्जा यह है कि सुबह से लेकर शाम तक जो गुनाह तुम से होते हैं, उनको एक एक करके छोड़ने की फ़िक्र करो। और हर दिन अल्लाह तआला के सामने तौबा और इस्तिग़फ़ार करो, और यह दुआ करो कि या अल्लाह! यह फ़ितने का ज़माना है। मुझे और मेरे घर वालों और मेरी औलाद को अपनी रहमत से इस फ़ितने से दूर रखिए।

"اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْفِتَنِ مَاظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ"

"ऐ अल्लाह! हम आपकी तमाम ज़ाहिरी और बातिनी फ़ितनों से पनाह मांगते हैं"।

दुआ करने के साथ साथ ग़ीबत से, निगाह के गुनाह से, फ़ुहाशी और नंगेपन के गुनाहों से, और दूसरों का दिल दुखाने के गुनाह से, रिश्वत के गुनाह से, सूद के गुनाह से, अपने आपको जितना हो सके इनसे बचाने की कोशिश करो। लेकिन अगर ग़फ़लत में यह ज़िन्दगी गुज़ार दी तो फिर अल्लाह तआला बचाए, अन्जाम बड़ा ख़राब नज़र आता है। अल्लाह तआला मुझे और आप सब को इन बातों पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

"واخر دعونا ان الحمد لله رب العالمين"

मरने से पहले

मौत की तैयारी कीजिए

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَاوَسَنَدَنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا، اَمَّا بَعْدُ:

"فقد قال النبى صلى الله عليه وسلم: موتوا قبل ان تموتوا وحاسبوا قبل ان تحاسبوا" (كشف الخفاء:٢:٤٢)

यह एक हदीस है जिसका लफ़्ज़ी तर्जुमा यह है कि मरने से पहले मरो, और क़ियामत के दिन जो हिसाब किताब होना है उस से पहले अपना हिसाब और अपना जायज़ा लो।

मौत यक़ीनी चीज़ है

मौत ज़रूर आने वाली है और उसमें कोई शक व शुबह नहीं। और मौत के मसले में आज तक किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं हुआ और न किसी ने उसके आने का इन्कार किया। इन्कार करने वालों ने नऊज़ुबिल्लाह ख़ुदा का इन्कार कर दिया कि हम अल्लाह को नहीं मानते, रसूलों का इन्कार कर दिया, मगर मौत का इन्कार नहीं कर सके। हर शख़्स यह बात मानता है कि जो शख़्स इस दुनिया में आया है वह एक न एक दिन ज़रूर मौत के मुंह में जायेगा। और इस बात पर भी सब का इत्तिफ़ाक़ है कि मौत का कोई वक़्त मुक़र्रर नहीं, हो सकता है कि अभी मौत आ जाए, एक मिनट के बाद आ

जाए, एक घन्टे के बाद आ जाए, एक दिन के बाद आ जाए, एक हफ़्ते के बाद आ जाए, एक महीने के बाद आ जाए, या एक साल के बाद आ जाए। कुछ पता नहीं। आज साईन्स की तहक़ीक़ात कहां से कहां बुलन्दियों तक पहुंच गयीं लेकिन साईन्स यह नहीं बता सकती कि कौन सा इन्सान कब मरेगा।

मौत से पहले मरने का मतलब

इसलिये यह यक़ीनी बात है कि मौत ज़रूर आयेगी। और यह बात भी यक़ीनी है कि मौत का वक़्त मुतअय्यन नहीं। अब अगर इन्सान ग़फ़लत की हालत में दुनिया से चला जाए तो वहां पहुंच कर ख़ुदा जाने क्या हालात पेश आयें। कहीं ऐसा न हो कि वहां पहुंच कर अल्लाह के ग़ज़ब और उसके अ़ज़ाब का सामना करना पड़े, इसलिये हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमा रहे हैं कि उस हक़ीक़ी मौत के आने से पहले मरो। किस तरह मरो? मौत से पहले मरने का क्या मतलब? उलमा–ए–किराम ने इसके दो मतलब बयान फ़रमाए हैं। एक मतलब यह है कि हक़ीक़ी मौत के आने से पहले तुम अपनी वे नफ़सानी ख़्वाहिशें जो अल्लाह तआ़ला के हुक्म के ख़िलाफ़ और मुक़ाबिल हैं और तुम्हारे दिल में गुनाह करने के और ना जायज़ काम करने के और अल्लाह तआ़ला की ना फ़रमानी करने के जो जज़्बे और तक़ाज़े दिल में पैदा होते रहते हैं उनको कुचल दो और फ़ना कर दो और मार दो।

मुझे एक दिन मरना है

दूसरा मतलब उलमा ने यह बताया कि मरने से पहले अपने मरने का ध्यान कर लो। कभी कभी यह सोचा करो कि एक दिन मुझे इस दुनिया से जाना है और इस दुनिया से ख़ाली हाथ जाऊंगा, न पैसे साथ जायेंगे, न औलाद साथ जायेगी, न कोठी बंगले साथ जायेंगे, न दोस्त व अहबाब साथ जायेंगे, बल्कि अकेला ख़ाली हाथ जाऊंगा, इसको ज़रा सोचा करो। वाक़िआ यह है कि इस दुनिया में

हम से जो ज़ुल्म, ना फ़रमानियां, जुर्म और गुनाह होते हैं, उनका सब से बड़ा सबब यह है कि इन्सान ने अपनी मौत को भुला दिया है। जब तक जिस्म में सेहत और कुव्वत है और ये हाथ पांव चल रहे हैं, उस वक़्त तक इन्सान यह सोचता है कि "हम चूं मा दीगरे नेस्त" यानी हमसे बड़ा कोई नहीं। और शैख़ी और डींगें मरता है। उस वक़्त तकब्बुर भी करता है, शैख़ी भघारता है, दूसरों पर ज़ुल्म भी करता रहता है, और यह ध्यान और ख़्याल भी नहीं आता कि एक दिन मुझे भी इस दुनिया से जाना है। अपने हाथों से अपने प्यारों को मिट्टी देकर आता है, अपने प्यारों का जनाज़ा उठाता है, लेकिन इसके बावजूद यह सोचता है कि मौत का वाक़िआ उसके साथ पेश आया है, मेरे साथ तो पेश नहीं आया। इस तरह ग़फ़लत के आलम में ज़िन्दगी गुज़ारता है और मौत की तैयारी नहीं करता।

दो अज़ीम नेमतें और उनसे ग़फ़लत

एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कितना ख़ूबसूरत जुम्ला इर्शाद फ़रमाया:

"نعمتان مغبون فيها كثير من الناس الصحة والفراغ" (بخاری شریف)

यानी अल्लाह तआला की दो नेमतें ऐसी हैं जिनकी तरफ़ से बहुत से इन्सान धोखे में पड़े हुए हैं, एक सेहत की नेमत और एक फ़रागत की नेमत। यानी जब तक "सेहत" की नेमत हासिल है उस वक़्त तक इस धोखे में पड़े हुए हैं कि यह सेहत की नेमत हमेशा बाक़ी रहेगी, और सेहत की हालत में अच्छे और नेक कामों को टलाते रहते हैं कि चलो यह काम कल कर लेंगे। कल नहीं परसों कर लेंगे। लेकिन एक ज़माना ऐसा आता है कि सेहत का वक़्त गुज़र जाता है। दूसरी नेमत है "फ़रागत" यानी इस वक़्त अच्छे काम करने की फ़ुर्सत है, वक़्त मिलता है, लेकिन इन्सान अच्छे काम को यह सोच कर टाल देता है कि अभी तो वक़्त है, बाद में कर लेंगे। अभी जवानी है और वह इस जवानी के आलम में बड़े बड़े पहाड़ ढो

सकता है, बड़े बड़े मशक़्क़त के काम अन्जाम दे सकता है, अगर चाहे तो जवानी के आलम में ख़ूब इबादत कर सकता है, रियाज़तें और मुजाहदात कर सकता है। मख़्लूक़ की ख़िदमत कर सकता है। अल्लाह तआ़ला को राज़ी करने के लिए अपने नामा–ए–आमाल में नेकियों का ढेर लगा सकता है। लेकिन दिमाग़ में यह बात बैठी है कि अभी तो मैं जवान हूं, ज़रा ज़िन्दगी का मज़ा ले लूं। इबादत करने और नेक काम करने के लिए बहुत उम्र पड़ी है, बाद में कर लूंगा। इस तरह वह नेक कामों को टलाता रहता है, यहां तक कि जवानी ढल जाती है और उसको पता भी नहीं चलता। यहां तक कि सेहत ख़राब हो जाती है और उसको पता भी नहीं चलता। इसका नतीजा यह होता है कि अब जवानी जाने के बाद इबादत और नेक काम करना भी चाहता है तो जिस्म में ताक़त और कुव्वत नहीं है, या फ़ुर्सत नहीं है, इसलिये कि अब मसरूफ़ियत इतनी हो गई हैं कि वक़्त नहीं मिलता।

ये सब बातें इसलिये पैदा हुईं कि इन्सान मौत से ग़ाफ़िल है। मौत ध्यान नहीं। अगर रोज़ाना सुबह व शाम मौत को याद करता कि एक दिन मुझे मरना है और मरने से पहले मुझे यह काम करना है तो फिर मौत की याद और उसका ध्यान इन्सान को गुनाहों से बचाता है और नेकी के रास्ते पर चलाता है। इसी लिये हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह इर्शाद फ़रमा रहे हैं कि मरने से पहले मरो।

हज़रत बहलूल रह. का नसीहत भरा वाक़िआ

एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं हज़रत बहलूल मज्ज़ूब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि, यह मज्ज़ूब क़िस्म के बुज़ुर्ग थे, बादशाह हारून रशीद का ज़माना था। हारून रशीद उन मज्ज़ूब से हंसी मज़ाक़ करता रहता था। अगरचे मज्ज़ूब थे लेकिन बड़ी समझदारी की बातें किया करते थे। हारून रशीद ने अपने दरबानों से कह दिया था कि जब यह मज्ज़ूब

मेरे पास मुलाक़ात के लिए आना चाहें तो इनको आने दिया जाए। इनको रोका न जाए। चुनांचे जब उनका दिल चाहता दरबार में पहुंच जाते। एक दिन यह दरबार में आए तो उस वक़्त हारून रशीद के हाथ में एक छड़ी थी, हारून रशीद ने उन मज्ज़ूब को छेड़ते हुए कहा कि: बहलूल साहिब! आप से मेरी एक गुज़ारिश है। बहलूल ने पूछा क्या है? हारून रशीद ने कहा कि मैं यह छड़ी आपको अमानत के तौर पर देता हूं और दुनिया के अन्दर आपको अपने से ज़्यादा कोई बेवकूफ़ आदमी मिले तो उसको यह छड़ी मेरी तरफ़ से हदिये में दे देना। बहलूल ने कहा बहुत अच्छा, यह कह कर छड़ी रख ली।

बादशाह ने तो बतौर मज़ाक़ छेड़ छाड़ की थी, और यह बताना मक़सूद था कि दुनिया में तुम सब से ज़्यादा बेवकूफ़ हो। तुम से ज़्यादा बेवकूफ़ कोई नहीं है। बहर हाल, बहलूल वह छड़ी लेकर चले गए।

इस वाक़िए को कई साल गुज़र गए, एक रोज़ पता चला कि हारून रशीद बहुत सख़्त बीमार हैं और बिस्तर से लगे हुए हैं, और इलाज हो रहा है लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हो रहा है। यह बहलूल मज्ज़ूब बादशाह की ख़ैरियत पूछने के लिए पहुंच गए और पूछा कि अमीरुल मोमिनीन! क्या हाल है? बादशाह ने जवाब दिया कि हाल क्या पूछते हो, सफ़र सामने है। बहलूल ने पूछाः कहां का सफ़र पेश आ गया है? बादशाह ने जवाब दिया कि आख़िरत का सफ़र सामने है, दुनिया से अब जा रहा हूं। बहलूल ने सवाल कियाः कितने दिन में वापस आयेंगे? हारून ने कहाः भाई यह आख़िरत का सफ़र है, इस से कोई वापस नहीं आया करता। बहलूल ने कहा अच्छा आप वापस नहीं आयेंगे? तो आपने सफ़र के राहत और आराम के इन्तिज़ामात के लिए कितने लश्कर और फ़ौजी आगे भेजे हैं? बादशाह ने जवाब में कहाः तुम फिर बेवकूफ़ों जैसी बातें कर रहे हो। आख़िरत के सफ़र में कोई साथ नहीं जाया करता। न बॉडी गार्ड जाता है, न लश्कर, न फ़ौज और न सिपाही जाता है। वहां तो इन्सान तन्हा ही जाता है।

बहलूल ने कहा कि इतना लम्बा सफ़र कि वहां से वापस नहीं आना है, लेकिन आपने कोई फ़ौज और लश्कर नहीं भेजा। हालांकि इस से पहले आपके जितने सफ़र होते थे उनमें इन्तिज़ामत के लिए आगे सफ़र का सामान और लश्कर जाया करता था, इस सफ़र में क्यों नहीं भेजा? बादशाह ने कहा कि नहीं, यह सफ़र ऐसा है कि इसमें कोई लाव लश्कर और फ़ौज नहीं भेजी जाती। बहलूल ने कहाः बादशाह सलामत! आपकी एक अमानत बहुत अ़र्से से मेरे पास रखी है, वह एक छड़ी है, आपने फ़रमाया था कि मुझसे ज़्यादा कोई बेवकूफ़ तुम्हें मिले तो उसको दे देना, मैंने बहुत तलाश किया लेकिन मुझे अपने से ज़्यादा बेवकूफ़ आपके अ़लावा कोई नहीं मिला, इसलिये कि मैं यह देखा करता था कि अगर आपका छोटा सा भी सफ़र होता था तो महीनों पहले से उसकी तैयारी हुआ करती थी। खाने पीने का सामान, ख़ेमे, लाव लश्कर, बॉडी गार्ड सब से पहले भेजे जाते थे। और अब यह इतना लम्बा सफ़र जहां से वापस भी नहीं आना है, इसके लिए कोई तैयारी नहीं है। आप से ज़्यादा दुनिया में मुझे कोई बेवकूफ़ नहीं मिला। इसलिये आपकी यह अमानत आपको वापस करता हूं।

यह सुन कर हारून रशीद रो पड़ा और कहाः बहलूल! तुमने सच्ची बात कही। सारी उम्र हम तुमको बेवकूफ़ समझते रहे, लेकिन हक़ीक़त यह है कि समझदारी की बात तुमने ही कही। हक़ीक़त यह है कि हमने अपनी उम्र ज़ाया कर दी और इस आख़िरत के सफ़र की कोई तैयारी नहीं की।

अ़क़्ल वाला कौन है?

हक़ीक़त में हज़रत बहलूल ने जो बात की वह हदीस ही की बात है। हदीस शरीफ़ में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया किः

"الكيس من دان نفسه وعمل لما بعد الموت" (ترمذی شریف)

इस हदीस में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बता दिया कि अक़्ल वाला कौन होता है? आजकी दुनिया में अक़्ल मन्द उस शख़्स को कहा जाता है जो माल कमाना ख़ूब जानता हो। दौलत कमाना और पैसे से पैसे बनाना ख़ूब जानता हो, दुनिया को बेवकूफ़ बनाना ख़ूब जानता हो। लेकिन इस हदीस में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अक़्ल मन्द इन्सान वह है जो अपने नफ़्स को क़ाबू करे और नफ़्स की हर ख़्वाहिश के पीछे न चले। बल्कि इस नफ़्स को अल्लाह की मर्ज़ी के ताबे बनाए, और मरने के बाद के लिए तैयारी करे, ऐसा शख़्स अक़्ल मन्द है। अगर ये काम नहीं करता तो वह बेवकूफ़ है कि सारी उम्र फुज़ूल चीज़ों और बेकार कामों में गंवा दी। जिस जगह हमेशा रहना है वहां की कुछ तैयारी न की।

हम सब बेवकूफ़ हैं

जो बात बहलूल ने हारून रशीद के लिए कही, अगर ग़ौर करोगे तो यह बात हम में से हर शख़्स पर फ़िट आ रही है। इसलिये कि हम में से हर शख़्स को दुनिया में रहने के लिए हर वक़्त यह फ़िक्र सवार रहती है कि मकान कहां बनाऊं? किस तरह का बनाऊं? उसमें क्या क्या राहत व आराम की चीज़ें जमा करूं? अगर दुनिया में कहीं सफ़र पर जाते हैं तो कई दिन पहले से बुकिंग कराते हैं कि कहीं ऐसा न हो कि बाद में सीट न मिले। कई दिन पहले से उस सफ़र की तैयारी शुरू हो जाती है। जिस जगह पहुंचना है वहां पर पहले से इत्तिला दी जाती है, होटल की बुकिंग कराई जाती है, पहले से ये सब काम किए जाते हैं। और सफ़र सिर्फ़ तीन दिन का है। लेकिन जिस जगह हमेशा हमेशा रहना है, जहां की ज़िन्दगी की कोई इन्तिहा नहीं है, उसके लिये यह फ़िक्र नहीं कि वहां का मकान कैसे बनाऊं? वहां के लिए किस तरह बुकिंग कराऊं? हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमा रहे हैं कि अक़्ल मन्द शख़्स वह है जो मरने

के बाद के लिए तैयारी करे, वर्ना वह बेवकूफ़ है, चाहे वह कितना ही बड़ा मालदार और सरमायेदार क्यों न बन जाए। और आख़िरत की तैयारी का रास्ता यह है कि मौत से पहले मौत का ध्यान करो कि एक दिन मुझे इस दुनिया से जाना है।

मौत और आख़िरत का तसव्वुर करने का तरीक़ा

हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि दिन में कोई वक़्त तन्हाई का निकालो, फिर उस वक़्त में ज़रा सा इस बात का तसव्वुर किया करो कि मेरा आख़री वक़्त आ गया है, फ़रिश्ता रूह क़ब्ज़ करने के लिए पहुंच गया, उसने मेरी रूह क़ब्ज़ कर ली, मेरे अ़ज़ीज़ व क़रीबी लोगों ने मेरे नहलाने और कफ़न दफ़न का इन्तिज़ाम शुरू कर दिया। आख़िरकार मुझे ग़ुस्ल देकर कफ़न पहना कर उठा कर क़ब्रिस्तान ले गए। नमाज़े जंनाज़ा पढ़ कर मुझे एक क़ब्र में रखा है, अब अन्धेरी क़ब्र में अकेला हूं, इतने में सवाल व जवाब के लिए फ़रिश्ते आ गए, वे मुझसे सवाल व जवाब कर रहे हैं।

उसके बाद आख़िरत का तसव्वुर करो कि मुझे दोबारा क़ब्र से उठाया गया, अब मैदाने हश्र क़ायम है, तमाम इन्सान मैदाने हश्र के अन्दर जमा हैं, वहां सख़्त गर्मी लग रही है, पसीना बह रहा है, सूरज बिल्कुल क़रीब है, हर शख़्स परेशानी के आ़लम में है, और लोग जाकर अंबिया अ़लैमुस्सलाम से सिफ़ारिश करा रहे हैं कि अल्लाह तआ़ला से दरख़्वास्त करें कि हिसाब किताब शुरू हो। फिर इसी तरह हिसाब किताब, पुल सिरात और जन्नत और जहन्नम का तसव्वुर करे। रोज़ाना फ़जर की नमाज़ के बाद कुरआन पाक की तिलावत, मुनाजाते मक़बूल और अपने ज़िक्र व तसबीहों से फ़ारिग़ होने के बाद थोड़ा सा तसव्वुर कर लिया करो कि यह वक़्त आने वाला है और कुछ पता नहीं कब आ जाए। क्या पता आज ही आ जाए। यह तसव्वुर करने के बाद दुआ करो कि या अल्लाह! मैं

दुनिया के कारोबार और काम काज के लिए निकल रहा हूं, कहीं ऐसा न हो कि ऐसा काम कर गुज़रूं जो मेरी आख़िरत के एतिबार से मेरे लिए बर्बादी का सबब हो। रोज़ाना यह तसव्वुर कर लिया करो, जब एक मर्तबा मौत का ध्यान और तसव्वुर दिल में बैठ जायेगा तो इन्शा अल्लाह अपनी इस्लाह करने की तरफ़ तवज्जोह और फ़िक्र हो जायेगी।

हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी नुअम रह्मतुल्लाहि अ़लैहि

एक बहुत बड़े बुज़ुर्ग और मुहद्दिस गुज़रे हैं, हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी नुअम रह्मतुल्लाहि अ़लैहि, उनके ज़माने में एक शख़्स के दिल में यह ख़्याल आया कि मैं मुख़्तलिफ़ मुहद्दसीन, उलमा और फ़ुक़हा और बुज़ुर्गाने दीन से यह सवाल करूं कि अगर आपको यह पता चल जाए कि कल आपकी मौत आने वाली है, और आपकी ज़िन्दगी का सिर्फ़ एक दिन बाक़ी है तो आप वह एक दिन किस तरह गुज़ारेंगे, और किन कामों में यह दिन गुज़ारेंगे? सवाल करने का मक़सद यह था कि इस सवाल के जवाब में ये बड़े बड़े मुहद्दिसीन, उलमा, बुज़ुर्गाने दीन बेहतरीन कामों का ज़िक्र करेंगे, और उस दिन को बेहतरीन कामों में ख़र्च करेंगे, इस तरह मुझे बेहतरीन कामों का पता चल जायेगा और मैं आईन्दा अपनी ज़िन्दगी में वे बेहतरीन काम अन्जाम दूंगा। इस ख़्याल से उन्होंने बहुत से बुज़ुर्गों से यह सवाल किया। अब सवाल के जवाब में किसी ने कुछ कहा, और किसी ने कुछ कहा, लेकिन वह शख़्स जब हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी नुअम रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के पास आया, और यह सवाल किया तो आपने जवाब में फ़रमाया कि मैं वही काम करूंगा जो रोज़ाना करता हूं। इसलिये कि मैंने पहले दिन से अपना निज़ामुल औक़ात (समय का निज़ाम) और अपने मामूलात इस ख़्याल को सामने रख कर बनाया है कि शायद यह दिन मेरी ज़िन्दगी का आख़री दिन हो, और आज मुझे मौत आ जाए। इस निज़ामुल औक़ात के अन्दर इतनी गुन्जाइश नहीं है कि मैं किसी और अ़मल का इज़ाफ़ा कर

सकूं। जो अ़मल रोज़ाना करता हूं आख़री दिन भी वही अ़मल करूंगा, यह है इस हदीस का मिस्दाक़ कि:

"موتوا قبل ان تموتوا"

उन्होंने मौत का ध्यान और उसको ज़ेहन में रख कर अपनी ज़िन्दगी को इस तरह ढाल लिया कि हर वक़्त मरने के लिए तैयार बैठे हैं। मौत जब आना चाहे आ जाए।

अल्लाह तआ़ला से मुलाक़ात का शौक़

इसी के बारे में हदीस शरीफ़ में फ़रमाया कि:

"من احب لقاء اللّٰه احب اللّٰه لقاء ه" (بخاری شریف)

यानी जो अल्लाह तआ़ला से मिलना पसन्द करता है, और उसको अल्लाह तआ़ला से मिलने का शौक़ होता है तो अल्लाह तआ़ला को भी उस से मिलने का शौक़ होता है। ऐसे लोग तो हर वक़्त मौत के इन्तिज़ार में बैठे हैं। और ज़बाने हाल से यह कह रहे हैं कि:

غدًا تلقی الاحبة محمدًا وحزبه

कल को अपने दोस्तों से यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और आपके सहाबा से मुलाक़ात होगी। इसी मौत के ध्यान के नतीजे में ज़िन्दगी शरीअ़त और इत्तिबा–ए–सुन्नत के अन्दर ढल जाती है, और हर वक़्त मौत के लिए तैयार हो जाते हैं। बहर हाल, थोड़ा सा वक़्त निकाल कर मौत का तसव्वुर किया करो कि मौत आने वाली है, इसलिये मैंने क्या तैयारी की है।

आज ही अपना मुहासबा कर लो

इस हदीस के दूसरे जुम्ले में इर्शाद फ़रमाया:

"حاسبوا قبل ان تحاسبوا"

अपना हिसाब लिया करो इस से पहले कि तुम्हारा हिसाब लिया जाए। आख़िरत में तुम्हारे एक एक अ़मल का हिसाब लिया जायेगा।

"فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ، وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ" (سورة الزلزال)

यानी तुमने जो अच्छा काम किया होगा वह भी सामने आ जायेगा और जो बुरा काम किया होगा वह भी सामने आ जायेगा। किसी ने ख़ूब कहा है:

तुम आज हुआ समझो जो रोज़े जज़ा होगा

क़ियामत के दिन जो हिसाब लिया जायेगा तुम उस से पहले ही अपना हिसाब लेना शुरू कर दो। यानी रोज़ाना रात को हिसाब लो कि आज मेरा सारा दिन गुज़रा, इसमें कौन सा अ़मल ऐसा है कि अगर उस अ़मल के बारे में क़ियामत के रोज़ मुझ से पूछा गया कि यह अ़मल क्यों किया था? तो उसका क्या जवाब दूंगा। रोज़ाना इस तरह कर लिया करो।

सुबह के वक़्त नफ़्स से "मुआ़हदा"

इमाम ग़ज़ाली रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने इस्लाह का एक अ़जीब व ग़रीब तरीक़ा तज्वीज़ फ़रमाया है। अगर हम लोग उस तरीक़े पर अ़मल कर लें तो वह इस्लाह के लिए नुस्ख़ा-ए-अक्सीर है। इस से बेहतर कोई नुस्ख़ा मिलना मुश्किल है। फ़रमाते हैं कि रोज़ाना चन्द काम कर लिया करो। एक यह कि जब तुम सुबह को जागो तो अपने नफ़्स से एक मुआ़हदा कर लिया करो कि आजके दिन मैं सुबह से लेकर रात को सोने तक कोई गुनाह नहीं करूंगा। और मेरे ज़िम्मे जितने फ़राइज़ व वाजिबात और सुन्नतें हैं उनको अदा करूंगा। और जो मेरे ज़िम्मे अल्लाह के हुक़ूक़ और बन्दों के हुक़ूक़ हैं, उनको पूरे तरीक़े से अदा करूंगा। अगर ग़लती से इस मुआ़हदे के ख़िलाफ़ कोई अ़मल हुआ तो ऐ नफ़्स! उस अ़मल पर तुझे सज़ा दूंगा। यह मुआ़हदा एक काम हुआ, जिसका नाम है "मुशारता" यानी आपस में शर्त लगाना।

मुआ़हदे के बाद दुआ़

हमारे हज़रत डॉ. अ़ब्दुल हई साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि इमाम ग़ज़ाली रह्मतुल्लाहि अ़लैहि की इस पहली बात पर थोड़ा इज़ाफ़ा

फ़रमाते हुए फ़रमाया करते थे कि यह मुआहदा करने के बाद अल्लाह तआला से कहो कि या अल्लाह! मैंने यह मुआहदा कर लिया है कि आजके दिन गुनाह नहीं करूंगा, और फ़राइज़ व वाजिबात सब अदा करूंगा, शरीअत के मुताबिक़ चलूंगा। अल्लाह के हुकूक़ और बन्दों के हुकूक़ की पाबन्दी करूंगा। लेकिन या अल्लाह! आपकी तौफ़ीक़ के बग़ैर मैं इस मुआहदे पर क़ायम नहीं रह सकता, इसलिये जब मैंने यह मुआहदा कर लिया है तो आप मेरे इस मुआहदे की लाज रख लीजिए, और मुझे इस मुआहदे पर साबित क़दम रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाइये, और मुझे अहद तोड़ने से बचा लीजिए, और मुझे इस मुआहदे पर पूरी तरह अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दीजिए। यह दुआ कर लो।

पूरे दिन अपने आमाल का "मुराक़बा"

दुआ करने के बाद ज़िन्दगी के कारोबार के लिए निकल जाओ। अगर नौकरी करते हो तो नौकरी पर चले जाओ, अगर तिजारत करते हो तो तिजारत के लिए निकल जाओ, अगर दुकान पर बैठते हो तो वहां चले जाओ, वहां जाकर यह करो कि हर काम शुरू करने से पहले ज़रा यह सोच लिया करो कि यह काम मेरे उस मुआहदे के ख़िलाफ़ तो नहीं है, यह लफ़्ज़ जो ज़बान से निकाल रहा हूं, यह उस मुआहदे के ख़िलाफ़ तो नहीं है? अगर ख़िलाफ़ नज़र आए तो उस से बचने की कोशिश करो। इसको "मुराक़बा" कहा जाता है, यह दूसरा काम है।

सोने से पहले "मुहासबा"

तीसरा काम रात को सोने से पहले किया करो, वह है "मुहासबा" अपने नफ़्स से कहो कि तुमने सुबह यह मुआहदा किया था कि कोई गुनाह का काम नहीं करूंगा, और हर काम शरीअत के मुताबिक़ करूंगा। अल्लाह के और बन्दों के तमाम हुकूक़ की अदाएगी करूंगा। अब बताओ कि तुमने कौन सा काम उस मुआहदे के

मुताबिक़ किया और कौन सा काम उस मुआ़हदे के ख़िलाफ़ किया? इस तरह अपने पूरे दिन के तमाम आमाल का जायज़ा लो। सुबह जब मैं घर से बाहर निकला था, तो फ़लां आदमी से क्या बात कही थी? जब मैं नौकरी पर गया तो वहां अपने फ़राइज़ मैंने किस तरह अदा किए? तिजारत मैंने किस तरह की? हलाल तरीक़े से की या हराम तरीक़े से की? और जितने लोगों से मुलाक़ात की उनके हुक़ूक़ किस तरह अदा किए? बीवी बच्चों के हुक़ूक़ किस तरह अदा किए? इन सब मामलात का जायज़ा लो, इसका नाम है "मुहासबा"।

फिर शुक्र अदा करो

इस "मुहासबे" के नतीजे में अगर यह बात सामने आए कि तुमने सुबह जो मुआ़हदा किया था उसमें कामयाब हो गए तो उस पर अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा किया करो कि या अल्लाह! तेरा शुक्र है कि तूने इस मुआ़हदे पर क़ायम रहने की तौफ़ीक़ दी:

"اللّٰهم لك الحمد ولك الشكر"

(ऐ अल्लाह! तेरे ही लिये तमाम तारीफ़ है और तेरा शुक्र है)

इस शुक्र का नतीजा वह होगा जिसका अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में वायदा फ़रमाया कि:

"لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ"

अगर तुम नेमत पर शुक्र अदा करोगे तो अल्लाह तआ़ला वह नेमत और ज़्यादा देंगे। इसलिये जब तुमने उस मुआ़हदे पर क़ायम रहने की नेमत पर शुक्र अदा किया तो आईन्दा इस नेमत में और इज़ाफ़ा होगा और उस पर सवाब मिलेगा।

वर्ना तौबा करो

और अगर इस "मुहासबे" के नतीजे में यह बात सामने आए कि फ़लां मौक़े पर इस मुआ़हदे के ख़िलाफ़ हो गया, फ़लां मौक़े पर मैं भटक गया और फिसल गया और अपने इस अ़हद पर क़ायम न रह सका, तो उस वक़्त फ़ौरन तौबा करो, और यह कहो कि या अल्लाह!

मैंने यह मुआ़हदा तो किया था लेकिन नफ़्स और शैतान के जाल में आकर उस मुआ़हदे पर क़ायम न रह सका, या अल्लाह मैं आप से माफ़ी मांगता हूं और तौबा करता हूं। आप मुझे माफ़ फ़रमा दीजिए।

अपने नफ़्स पर सज़ा जारी करो

तौबा करने के साथ अपने नफ़्स को कुछ सज़ा भी दो, और अपने नफ़्स से कहो कि तुमने उस मुआ़हदे की ख़िलाफ़ वर्ज़ी की है, इसलिये तुम्हें अब आठ रक्अ़त नफ़िल पढ़नी होंगी। यह सज़ा सुबह को मुआ़हदा करते वक़्त ही तज्वीज़ कर लो। इसलिये रात को अपने नफ़्स से कहो कि तुमने राहत और आराम की ख़ातिर और थोड़ी सी लज़्ज़त हासिल करने की ख़ातिर मुझे इस अ़हद तोड़ने के अन्दर मुब्तला किया इसलिये अब तुम्हें थोड़ी सी सज़ा मिलनी चाहिए, इसलिये तुम्हारी सज़ा यह है कि अब सोने से पहले आठ रक्अ़त नफ़िल अदा करो। उसके बाद सोने के लिए बिस्तर पर जाओ, उस से पहले सोना बन्द।

सज़ा मुनासिब और दरमियानी हो

हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि ऐसी सज़ा मुक़र्रर करो जिसमें नफ़्स पर थोड़ी मशक़्क़त भी हो, न बहुत ज़्यादा हो कि नफ़्स बिदक जाए, और न इतनी कम हो कि नफ़्स को उस से मशक़्क़त ही न हो। जैसे हिन्दुस्तान में जब सर सैयद मरहूम ने अ़लीगढ़ कालिज क़ायम किया, उस वक़्त तलबा पर यह लाज़िम कर दिया था कि तमाम तलबा पांचों वक़्त की नमाज़ें मस्जिद में जमाअ़त के साथ अदा करेंगे, और जो तालिब इल्म नमाज़ से ग़ैर हाज़िर होगा उसको जुर्माना अदा करना पड़ेगा, और एक नमाज़ का जुर्माना शायद एक आना मुक़र्रर कर दिया। इसका नतीजा यह हुआ कि जो तलबा मालदार थे वे पूरे महीने की तमाम नमाज़ों का जुर्माना इकट्ठा पहले ही जमा करा दिया करते थे कि यह जुर्माना हम से वुसूल कर लो, और नमाज़ की छुट्टी। हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं

कि इतना कम और मामूली जुर्माना भी न हो कि आदमी इकट्ठा जमा करा दे और न इतना ज़्यादा हो कि आदमी भाग जाए, बल्कि दरमियाना जुर्माना मुक़र्रर करना चाहिए। जैसे आठ रक्अ़त नफ़िल पढ़ने की सज़ा मुक़र्रर करना एक मुनासिब सज़ा है।

कुछ हिम्मत करनी पड़ेगी

बहर हाल, अगर नफ़्स की इस्लाह करनी है तो थोड़े बहुत हाथ पांव हिलाने पड़ेंगे, कुछ न कुछ मशक़्क़त बर्दाश्त करनी पड़ेगी, कुछ न कुछ हिम्मत तो करनी होगी। और उसके लिए अ़ज़्म और इरादा करना होगा, वैसे ही बैठे बैठे तो नफ़्स की इस्लाह नहीं हो जाएगी। इसलिये यह तय कर लो कि कि जब कभी नफ़्स ग़लत रास्ते पर जायेगा तो उस वक़्त आठ रक्अ़त नफ़िल ज़रूर पढूंगा। जब नफ़्स को पता चलेगा कि यह आठ रक्अ़त पढ़ने की एक नई मुसीबत खड़ी हो गई तो आईन्दा वह नफ़्स तुम्हें गुनाह से बचाने की कोशिश करेगा, ताकि इस आठ रक्अ़त से जान छुट जाए, इस तरह वह नफ़्स आहिस्ता आहिस्ता इन्शा अल्लाह सीधे रास्ते पर आ जायेगा और फिर तुम्हें नहीं बहकाएगा।

ये चार काम कर लो

इमाम ग़ज़ाली रह्मतुल्लाहि अ़लैहि की नसीहत का ख़ुलासा यह है कि ये चार काम कर लो:

१. सुबह के वक़्त मुशारता यानी मुआ़हदा।

२. हर अ़मल के वक़्त मुराक़बा यानी सोच विचार और ध्यान।

३. रात को सोने से पहले मुहासबा।

४. अगर नफ़्स बहक जाए तो सोने से पहले मुआ़क़बा यानी उसको सज़ा देना।

यह अ़मल लगातार करना होगा

एक बात और याद रखनी चाहिए कि दो चार दिन यह अ़मल करने के बाद यह मत समझ लेना कि बस अब हम पहुंच गये और

बुज़ुर्ग बन गए, बल्कि यह अमल तो बराबर और लगातार करना होगा, और इसमें यह होगा कि किसी दिन तुम ग़ालिब आ जाओगे और किसी दिन शैतान ग़ालिब आ जायेगा। लेकिन ऐसा न हो कि उसके ग़ालिब आने से तुम घबरा जाओ और यह अमल छोड़ बैठो, इसलिये कि इसमें भी अल्लाह तआला की हिक्मत और मस्लिहत है। इन्शा अल्लाह इस तरह गिरते पड़ते एक दिन मन्ज़िले मक़सूद तक पहुंच जाओगे। और यह अमल करने के बाद पहले दिन ही मन्ज़िले मक़सूद पर पहुंच जाओगे तो इसका नतीजा यह होगा कि दिमाग़ में यह ख़न्नास सवार हो जायेगा कि मैं तो जुनैद और शिबली बन गया। इसलिये कभी इस अमल के ज़रिये कामयाबी हासिल होगी और कभी नाकामी होगी। जिस दिन कामयाबी हो जाए तो उस पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करो, और जिस दिन नाकामी हो जाए उस दिन तौबा व इस्तिग़फ़ार करो, और अपने नफ़्स पर सज़ा जारी करो, और अपने बुरे फ़ेल पर शर्मिन्दगी और शिकस्तगी का इज़हार करो। यह शर्मिन्दगी और शिकस्तगी इन्सान को कहां से कहां पहुंचा देती है।

हज़रत मुआविया रज़ि. का एक वाक़िआ

हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने हज़रत मुआविया का क़िस्सा लिखा है कि आप रोज़ाना तहज्जुद के लिए बेदार हुआ करते थे। एक दिन आपकी आंख लग गई और तहज्जुद क़ज़ा हो गई, सारा दिन रोते रोते गुज़ार दिया और तौबा व इस्तिग़फ़ार की कि या अल्लाह! आज मेरी तहज्जुद का नाग़ा हो गया। अगली रात जब सोए तो तहज्जुद के वक़्त एक शख़्स आया और आपको तहज्जुद के लिए जगाया, आपने बेदार होकर देखा कि यह जगाने वाला कोई शख़्स अजनबी मालूम होता है। आपने पूछा कि तुम कौन हो? उसने कहा मैं शैतान हूं। आपने फ़रमाया कि अगर तू शैतान है तो तहज्जुद की नमाज़ के लिए उठाने से तुझे क्या ग़र्ज़? वह शैतान कहने लगा कि: बस आप उठ जाइये और तहज्जुद पढ़ लीजिए। हज़रत मुआविया

रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि तुम तो तहज्जुद से रोकने वाले हो, तुम उठाने वाले कैसे बन गए? शैतान ने जवाब दिया कि बात असल में यह है कि कल रात मैंने आपको तहज्जुद के वक़्त सुला दिया और आपकी तहज्जुद का नाग़ा करा दिया। लेकिन सारा दिन आप तहज्जुद छूटने पर रोते रहे, और इस्तिग़फ़ार करते रहे, जिसके नतीजे में आपका दर्जा इतना बुलन्द हो गया कि तहज्जुद पढ़ने से भी इतना बुलन्द न होता। इस से तो अच्छा यह था कि आप तहज्जुद ही पढ़ लेते, इसलिये आज मैं ख़ुद आपको तहज्जुद के लिए उठाने आया हूं, ताकि आपका दर्जा और ज़्यादा बुलन्द न हो जाए।

शर्मिन्दगी और तौबा के ज़रिये दर्जे का बुलन्द होना

बहर हाल, अगर इन्सान को अपनी पिछली ग़लती पर सच्चे दिल से शर्मिन्दगी हो और आईन्दा उसकी तरफ़ न लौटने का पक्का इरादा हो तो इसके ज़रिये अल्लाह तआला उस बन्दे के दर्जों को बुलन्द फ़रमा कर उसको कहां से कहां पहुंचा देते हैं। हमारे हज़रत डॉ. अ़ब्दुल हई साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि जब कोई बन्दा ग़लती के बाद अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजू करता है और माफ़ी मांगता है तो अल्लाह तआ़ला उस बन्दे से फ़रमाते हैं कि तुझ से जो यह ग़लती हुई, इस ग़लती ने तुम्हें हमारी सत्तारी हमारी ग़फ़्फ़ारी और हमारी रहमत के उतरने का मक़ाम बना दिया, और यह ग़लती भी तुम्हारे हक़ में फ़ायदे मन्द बन गई।

हदीस शरीफ़ में आता है कि जब ईदुल फ़ितर का दिन आता है तो अल्लाह तआ़ला अपनी इज़्ज़त और जलाल की क़सम खाकर फ़रिश्तों से फ़रमाते हैं कि आज ये लोग यहां जमा होकर फ़रीज़ा अदा कर रहे हैं और मुझे पुकार रहे हैं। मुझ से मग़फ़िरत तलब कर रहे हैं और अपने मक़ासिद मांग रहे हैं। मेरी इज़्ज़त और मेरे जलाल की क़सम मैं ज़रूर आज उनकी दुआएं क़ुबूल करूंगा और उनकी बुराइयों और गुनाहों को भी अच्छाइयों और नेकियों में तब्दील कर दूंगा। अब सवाल यह पैदा होता है कि ये गुनाह और ये बुराइयां

किस तरह नेकियों में बदल जाएंगे? इसका जवाब यह है कि जब किसी इन्सान से ग़फ़लत और नादानी से एक गुनाह हो गया, और उसके बाद वह शर्मिन्दगी और अफ़सोस के साथ अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू करता है, और अल्लाह तआला उसकी शर्मिन्दगी की वजह से न सिर्फ़ यह कि गुनाह माफ़ फ़रमा देते हैं बल्कि उसकी बदौलत उसके दर्जों को भी बुलन्द फ़रमा देते हैं, और इस तरह वह गुनाह भी दर्जों की बुलन्दी का सबब बन जाता है। और उसके हक़ में ख़ैर बन जाता है, जैसा कि कुरआने करीम में फ़रमायाः

"فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ" (الفرقان:۷۰)

यानी अल्लाह तआला उनकी बुराइयों को नेकियों में तब्दील फ़रमा देते हैं।

ऐसी तैसी मेरे गुनाहों की

हमारे एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं हज़रत बाबा नजम अहसन साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि, हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि के ख़लीफ़ा थे, बहुत ऊंचे मक़ाम के बुज़ुर्ग थे, वह शेर भी कहा करते थे। उनका एक शेर मुझे पसन्द है और बार बार याद आता है, वह यह किः

दौलतें मिल गयी हैं आहों की
ऐसी तैसी मेरे गुनाहों की

यानी जब अल्लाह तआला हमें गुनाहों पर शर्मिन्दगी और आजज़ी और रोना व फ़रियाद करना अ़ता फ़रमा दिया, और हम दुआ भी कर रहे हैं कि या अल्लाह! मेरे इस गुनाह को माफ़ फ़रमा दीजिए, मुझ से ग़लती हो गई। तो अब गुनाह कुछ नुक़सान नहीं पहुंचा सकते। ये गुनाह भी अल्लाह तआला के पैदा किये हुए हैं, और अल्लाह तआला ने कोई चीज़ हिक्मत से ख़ाली पैदा नहीं की। इसलिये गुनाह के पैदा करने में भी हिक्मत और मस्लिहत है, वह यह कि गुनाह हो जाने के बाद जब तौबा करोगे और शर्मिन्दगी के साथ रोना व फ़रियाद करोगे और आईन्दा गुनाह न करने का पक्का इरादा

करोगे तो उस तौबा के नतीजे में अल्लाह तआला तुम्हें कहां से कहां पहुंचा देंगे।

नफ़्स से ज़िन्दगी भर की लड़ाई है

इसलिए रात को जब पूरे दिन के आमाल का मुहासबा करते वक़्त पता चले कि आज गुनाह हो गए हैं तो अब तौबा व इस्तिग़फ़ार करो और अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू करो और मायूस मत हो जाओ। इसलिये कि यह ज़िन्दगी एक जिहाद और लड़ाई है, जिसमें मरते दम तक नफ़्स और शैतान से लड़ाई और मुक़ाबला करना है, और मुक़ाबले के अन्दर यह तो होता है कि कभी तुमने गिरा दिया, कभी दूसरे ने गिरा दिया, इसलिये अगर शैतान तुम्हें गिरा दे तो उस वक़्त हिम्मत हार कर पड़े मत रहना, बल्कि दोबारा नये इरादे और जोश के साथ खड़े हो जाओ और फिर शैतान के मुक़ाबले के लिए तैयार हो जाओ। और यह तुम्हारे साथ अल्लाह तआला का वायदा है, अगर तुम हिम्मत नहीं हारोगे, बल्कि दोबारा मुक़ाबले के लिए खड़े हो जाओगे और अल्लाह तआला से मदद मांगते रहोगे तो इन्शा अल्लाह आख़िरकार जीत तुम्हारी होगी। अल्लाह तआला का वायदा है:

"وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ" (القصص:٨٣)

अन्जाम मुत्तक़ियों के हाथ में है, फ़तह तुम्हारी होगी।

तुम क़दम बढ़ाओ, अल्लाह तआला थाम लेंगे

एक और जगह पर इर्शाद फ़रमायाः

"وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا" (العنكبوت:٦٩)

जिन लोगों ने हमारे रास्ते में जिहाद किया। यानी नफ़्स व शैतान के साथ तुमने इस तरह लड़ाई की कि वह शैतान तुम्हें ग़लत रास्ते पर लेजा रहा है और तुम उस से मुक़ाबला कर रहे हो और कोशिश करके ग़लत रास्ते से बच रहे हो तो फिर हमारा वायदा है कि हम ज़रूर लाज़मी तौर पर मुक़ाबला करने और कोशिश करने वालों को अपने रास्ते की हिदायत देंगे। हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि

अलैहि फ़रमाया करते थे कि मैं इस आयत का तर्जुमा यह करता हूं कि जो लोग हमारे रास्ते में कोशिश करते हैं तो हम उनका हाथ पकड़ कर अपने रास्ते पर ले चलते हैं।

फिर एक मिसाल के ज़रिये इस आयत को समझाते हुए फ़रमाते कि जब बच्चा चलने के क़ाबिल हो जाता है तो उस वक़्त मां बाप की ख़्वाहिश यह होती है कि वह बच्चा चले, चुनांचे उसको चलना सिखाते हैं और उसको थोड़ी दूर खड़ा कर देते हैं, और फिर उस बच्चे को अपने पास बुलाते हैं कि बेटा हमारे पास आओ। अगर बच्चा वहीं खड़ा रहे और क़दम आगे न बढ़ाए तो मां बाप भी दूर खड़े रहेंगे और उसको गोद में नहीं उठायेंगे। लेकिन अगर बच्चे ने एक क़दम बढ़ाया और दूसरे क़दम पर वह गिरने लगा तो अब मां बाप उसको गिरने नहीं देते, बल्कि आगे बढ़कर उसको थाम लेते हैं और गोद में उठा लेते हैं। इसलिये कि बच्चे ने क़दम बढ़ा कर अपनी सी कोशिश कर ली। इसी तरह जब इन्सान अल्लाह तआ़ला के रास्ते में चलता है तो क्या अल्लाह तआ़ला उसको बे सहारा छोड़ देंगे, और उसको नहीं थामेंगे? ऐसा नहीं करेंगे। बल्कि इस आयत में वायदा है कि जब तुम चलने की कोशिश करोगे तो हम आगे बढ़ कर तुम्हें गोद में उठा कर ले जायेंगे। इसलिये आगे क़दम बढ़ाओ, हिम्मत करो, कोशिश करो, मायूस होकर मत बैठ जाओ:

सूए मायूसी मरौ उम्मीदहा अस्त
सूए तारीकी मरौ ख़ुर्शीदहा अस्त

उनके दरबार में मायूसी और अंधेरी का गुज़र नहीं है, इसलिये नफ़्स और शैतान से मुक़ाबला करते रहो, अगर ग़लती हो जाए तो फिर उम्मीद का दामन मत छोड़ो, मायूस मत हो जाओ, बल्कि कोशिश जारी रखो, इन्शा अल्लाह तुम एक दिन ज़रूर कामयाब हो जाओगे।

ख़ुलासा यह है कि अपने हिस्से का काम कर लो, अल्लाह तआ़ला अपने हिस्से का काम ज़रूर करेंगे। याद रखो तुम्हारे हिस्से

में जो काम है उसमें नुक़्स और कमी हो सकती है, अल्लाह तआ़ला के काम में नुक़्स और कमी नहीं हो सकती। इसलिये जब तुम क़दम बढ़ाओगे तो तुम्हारे लिए रास्ते खुलेंगे इन्शा अल्लाह। इसी की तरफ़ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस हदीस में इशारा फ़रमाया कि:

"موتوا قبل ان تموتوا وحاسبوا قبل ان تحاسبوا"

यानी मरने से पहले मरो और आख़िरत के हिसाब से पहले अपना मुहासबा कर लो।

अल्लाह तआ़ला के सामने क्या जवाब दोगे?

हमारे हज़रत डॉ. अ़ब्दुल हई साहिब रह. फ़रमाया करते थे कि मुहासबे का एक तरीक़ा यह है कि यह तसव्वुर करो कि आज तुम मैदाने हश्र के अन्दर खड़े हो और तुम्हारा हिसाब किताब हो रहा है। नामा-ए-आमल पेश हो रहे हैं। तुम्हारे नामा-ए-आमाल के अन्दर जो तुम्हारे बुरे आमाल दर्ज हैं, वे सब सामने आ रहे हैं और अल्लाह तआ़ला तुम से सवाल कर रहे हैं कि तुमने ये बुरे आमाल और गुनाह क्यों किए थे? क्या उस वक़्त अल्लाह तआ़ला को वही जवाब दोगे जो आज तुम मौलवियों को देते हो? आज जब तुम से कोई मौलवी या इस्लाह करने वाला यह कहता है कि फ़लां काम मत करो, निगाह की हिफ़ाज़त करो, सूद से बचो, ग़ीबत और झूठ से बचो, टी. वी. के अन्दर जो बुराई और नंगेपन के प्रोगराम आ रहे हैं उनको मत देखो, शादी विवाह की तक़रीबात में बेपर्दगी से बचो, तो इन बातों के जवाब में तुम मौलवी साहिब को यह जवाब देते हो कि हम क्या करें, ज़माना ही ऐसा ख़राब है, सारी दुनिया तरक़्क़ी कर रही है, चांद पर पहुंच गई है, क्या हम उनसे पीछे रह जायें और दुनिया से कट कर बैठ जायें। और आजके इस समाज में ये सब काम किए बग़ैर आदमी का गुज़ारा नहीं है। यह वह जवाब है जो आज तुम मौलवियों के सामने देते हो, क्या अल्लाह तआ़ला के सामने भी यही जवाब दोगे?

क्या यह जवाब वहां अल्लाह तआ़ला के सामने काफ़ी होगा? ज़रा दिल पर हाथ रख कर सोच कर बताओ, अगर यह जवाब वहां नहीं चलेगा तो फिर आज दुनिया में भी यह जवाब काफ़ी नहीं हो सकता।

हिम्मत और हौसला भी अल्लाह तआ़ला से मांगो

और अगर तुम अल्लाह तआ़ला के समाने यह जवाब दोगे कि या अल्लाह! माहौल और समाज की वजह से मैं गुनाह करने पर मजबूर था, तो अल्लाह तआ़ला यह सवाल करेंगे कि अच्छा यह बताओ कि तुम मजबूर थे या मैं मजबूर था? तुम यह जवाब दोगे कि या अल्लाह! मैं ही मजबूर था, आप मजबूर नहीं थे। अल्लाह तआ़ला फ़रमायेंगे कि जब मैं मजबूर नहीं था तो तुमने मुझ से अपनी इस मजबूरी को दूर करने की दुआ़ क्यों नहीं की? और क्या मैं तुम्हारी इस मजबूरी दूर करने पर क़ादिर नहीं था? अगर मैं क़ादिर था तो मुझ से मांगते और यह कहते कि या अल्लाह! यह मजबूरी पेश आ गई है, या तो आप इस मजबूरी को दूर फ़रमा दीजिए, या फिर पकड़ मत फ़रमाइयेगा, और मुझे इस पर सज़ा मत दीजियेगा। क्या तुम्हारे पास अल्लाह तआ़ला के इस सवाल का जवाब है? अगर जवाब नहीं है तो फिर आज ज़िन्दगी के अन्दर यह काम कर लो, कि जिन कामों के करने पर तुम अपने को मजबूर पा रहे हो, चाहे हक़ीक़त में मजबूर हो या समाज की वजह से मजबूर हो, उसके बारे में अल्लाह तआ़ला से रोज़ाना दुआ़ कर लो कि या अल्लाह! यह मजबूरी पेश आ गई है इसकी वजह से मेरे अन्दर इस गुनाह से बचने की हिम्मत नहीं हो रही है, आप क़ादिरे मुतलक़ हैं, इस मजबूरी को भी दूर कर सकते हैं और इस बे हिम्मती को भी दूर कर सकते हैं, इस मजबूरी को दूर कर दीजिए और इस गुनाह से बचने की हिम्मत और हौसला अ़ता फ़रमा दीजिए।

उनके नवाज़ने में तो कोई कमी नहीं है

बहर हाल, अल्लाह तआ़ला से मांगो, यह तजुर्बा है कि जब कोई

बन्दा अल्लाह तआ़ला से इस तरह मांगता है तो अल्लाह तआ़ला ज़रूर अ़ता फ़रमा देते हैं। अगर कोई मांगे ही नहीं तो उसका कोई इलाज नहीं। हमारे हज़रते वाला रह्मतुल्लाहि अ़लैहि यह शेर पढ़ा करते थे कि:

कोई हुस्न शनास अदा न हो तो क्या इलाज
उनकी नवाज़िशों में तो कोई कमी नहीं

इसलिये मांगने वाला ही न हो तो इसका कोई इलाज नहीं। उनका रहमत का दामन तो खुला है। बहर हाल, आज हमने सुबह व शाम चार काम करने का जो नुस्ख़ा पढ़ा है अगर हम इस पर कार बन्द हो जाएं तो इन्शा अल्लाह इस हदीस पर अ़मल करने वाले बन जायेंगे। अल्लाह तआ़ला हम सब की मग़फ़िरत फ़रमाए और इन बातों पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, आमीन।

وآخر دعوانا ان الحمد للّٰہ رب العالمين

ग़ैर ज़रूरी सवालों से बचें

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَاوَسَنَدَنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا، اَمَّا بَعْدُ:

عن ابی هريرة رضی الله عنه عن النبی صلی الله عليه وسلم قال: دعونی ماترکتم انما اهلك من كان قبلكم كثرة سئولهم واختلافهم علی انبياء هم، فاذا نهيتكم عن شئ فاجتنبوه، واذا امرتكم بامر فأتوا منه ما استطعتم۔

ज़्यादा सवाल करने का नतीजा

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि. फ़रमाते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः जब तक किसी ख़ास मसले के बारे में मैं कोई ख़ास बात न बताऊं उस वक़्त तक तुम मुझे छोड़े रखो और मुझ से सवाल न करो। यानी जिस काम के बारे में मैंने यह नहीं कहा कि यह करना फ़र्ज़ है, या यह काम करना हराम और ना जायज़ है, उस काम के बारे में बिला वजह और बिला ज़रूरत सवाल करने की ज़रूरत नहीं, इसलिये कि तुम से पहले अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम की जो उम्मतें हलाक हुईं उनकी हलाकत का एक सबब उनका कसरत से सवाल करना भी था, और दूसरा सबब अपने अंबिया के बताए हुए अहकाम की ख़िलाफ़ वर्ज़ी थी। इसलिये जब मैं तुमको किसी चीज़ से रोकूं तो तुम उस से रुक जाओ। उसमें कहा सुनी मत करो और चूं व चरा न करो, और जिस चीज़ का मैं तुमको हुक्म दूं तो उसको अपनी हिम्मत के मुताबिक़ बजा लाओ। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की हम पर शफ़्क़त देखिए कि हिम्मत व ताक़त की क़ैद लगा दी, अपनी हिम्मत व ताक़त के

मुताबिक़ बजा लाओ, गोया हिम्मत व ताक़त से ज़्यादा का हमें मुकल्लफ़ नहीं बनाया।

किस क़िस्म के सवालों से प्रहेज़ किया जाए

इस हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सवाल करने की कसरत का बुरा होना बयान फ़रमाया है, लेकिन बाज़ दूसरी हदीसों में सवाल करने की फ़ज़ीलत भी आई है, चुनांचे एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

"انما شفاء العی السؤال"

यानी प्यासे की तशफ़्फ़ी सवाल से होती है। दोनों क़िस्म की हदीसें अपनी अपनी जगह दुरुस्त हैं, दोनों में जोड़ यह है कि जिस मामले में ख़ुद इन्सान को हुक्मे शरई मालूम करने की ज़रूरत पेश आए कि यह मामला जो मैं कर रहा हूं, शरीअ़त के एतिबार से जायज़ है या नहीं, ऐसे मौक़े पर सवाल न सिर्फ़ यह कि जायज़ है बल्कि ज़रूरी है, लेकिन अगर सवाल करने का मन्शा या तो महज़ वक़्त गुज़ारी है या उस सवाल का उसकी ज़ात से कोई ताल्लुक़ नहीं है, इसलिये कि वह मसला उसको पेश नहीं आया या वह ऐसा मसला है जिसकी दीन में कोई अहमियत नहीं और अ़मली ज़िन्दगी से उसका कोई ताल्लुक़ नहीं और न क़ब्र में उसके बारे में सवाल होगा और न आख़िरत में सवाल होगा और उसके मालूम न होने में कोई हर्ज भी नहीं है, तो ऐसे मसाइल के बारे में सवाल करने की इस हदीस में मुमानअ़त (मनाही) आई है।

फ़ुज़ूल सवालों में लगाना शैतान का काम है

जैसे एक साहिब ने मुझ से सवाल किया कि हज़रत आ़दम अ़लैहिस्सलाम के जो दो बेटे थे, हाबील और क़ाबील, उन दोनों के दरमियान लड़ाई हुई, जिसके नतीजे में क़ाबील ने हाबील को क़त्ल कर दिया, उस लड़ाई का सबब एक लड़की थी, उस लड़की का नाम

क्या था। अब उस लड़की का नाम अगर मालूम हो जाए तो उस से क्या फ़ायदा होगा? और अगर मालूम न हो तो उस से क्या नुक़सान होगा? क्या क़ब्र में मुन्किर नकीर पूछेंगे कि उस लड़की का नाम बताओ वर्ना तुम्हें जन्नत नहीं मिलेगी, या मैदाने हश्र में अल्लाह तआ़ला उसके बारे में तुम से सवाल करेंगे। इसलिये इस क़िस्म के मसाइल जिनका क़ब्र में, हश्र में, आख़िरत में भी वास्ता पेश नहीं आयेगा, उनके बारे में सवाल करना दुरुस्त नहीं है। बात असल में यह है कि इन्सान को सही रास्ते से हटाने के लिए शैतान के पास मुख़्तलिफ़ हर्बे हैं, उनमें से एक हर्बा यह है कि वह शैतान इन्सान को ऐसे काम में लगा देता है जिसका कोई हासिल नहीं, जिसका नतीजा यह होता है कि अ़मली कामों से इन्सान ग़ाफ़िल हो जाता है और इन फ़ुज़ूल सवालों के चक्कर में लग जाता है।

हुक्मे शरई की वजह और सबब के बारे में सवाल

इसी तरह आजकल लोगों में यह बीमारी बहुत आ़म है कि जब किसी अ़मल के बारे में बताओ कि शरीअ़त में यह हुक्म मौजूद है कि यह काम करो, या यह हुक्म है कि फ़लां काम मत करो, तो लोग यह सवाल करते हैं कि फ़लां चीज़ को जो हराम क़रार दिया गया है, यह हराम होने का हुक्म क्यों दिया गया है? इसकी क्या वजह है? और सवाल करने वाले का अन्दाज़ यह बताता है कि अगर हमारे इस सवाल का माकूल जवाब हमें मिल गया और हमारी अ़क्ल ने उस जवाब को सही मान लिया तब तो हम इस हुक्मे शरई को मानेंगे वर्ना नहीं मानेंगे। हालांकि इस हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने साफ़ साफ़ फ़रमा दिया कि जब मैंने तुमको किसी चीज़ से रोक दिया तो तुम्हारा काम यह है कि रुक जाओ और इस तहक़ीक़ में पड़ना तुम्हारा काम नहीं कि इस रोकने में क्या हिक्मत है? क्या मस्लिहत और क्या फ़ायदा है?

वजह और सबब के बारे में सवाल का बेहतरीन जवाब

एक साहिब हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के पास आए और किसी शरई मसले के बारे में पूछने लगे कि अल्लाह तआ़ला ने फ़लां चीज़ को क्यों हराम कर दिया? इसकी क्या वजह है? क्या हिक्मत और मस्लिहत है? हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाया कि एक बात का आप जवाब दे दें तो मैं इसका जवाब दे दूंगा, उन्होंने फ़रमाया कि वह क्या बात है? हज़रत ने फ़रमाया कि आपकी नाक सामने क्यों लगी है, पीछे क्यों नहीं लगी? मतलब यह था कि अल्लाह तआ़ला अपनी हिक्मत और मस्लिहत से इस दुनिया के कारख़ाने का निज़ाम चला रहे हैं, तुम यह चाहते हो कि तुम्हारा यह छोटा सा दिमाग़ जो तुम्हारे सर में है, उसकी सारी हिक्मतों और मस्लिहतों का इहाता कर ले। हालांकि आजके दौर में साईन्स इतनी तरक़्क़ी के बावजूद इस छोटे से दिमाग़ की भी पूरी तहक़ीक़ नहीं कर सकी, और यह कहती है कि इस दिमाग़ का अक्सर हिस्सा ऐसा है जिसके बारे में अब तक पता नहीं चल सका कि उसका काम क्या है? ऐसे दिमाग़ के ज़रिये तुम यह चाहते हो कि अल्लाह तआ़ला की सारी हिक्मतों का इहाता कर लो कि फ़लां चीज़ को क्यों हराम किया? और फ़लां चीज़ को क्यों हलाल किया? बात यह है कि अपनी हक़ीक़त से ना वाक़फ़ियत (अज्ञानता) और दिल में अल्लाह तआ़ला की अ़ज़्मत की कमी के नतीजे में इस क़िस्म के सवाल ज़ेहन में आते हैं।

अल्लाह तआ़ला की हिक्मतों और मस्लिहतों में दख़ल मत दो

अब जैसे कोई शख़्स यह सवाल करे कि अल्लाह तआ़ला ने फ़जर की नमाज़ में दो रक्अ़त फ़र्ज़ फ़रमाई हैं, ज़ुहर की नमाज़ में चार, अ़सर की नमाज़ में चार, मग़रिब की नमाज़ में तीन रक्अ़त फ़र्ज़ फ़रमाई हैं, इस फ़र्क़ करने में क्या हिक्मत है? और क्या वजह है?

अब अगर कोई शख़्स अपने से सोच कर यह कहे कि फ़जर की नमाज़ का वक़्त चूंकि फ़ुर्सत का वक़्त होता है तो उस वक़्त चार रक्अत फ़र्ज़ होनी चाहिएं और चूंकि अ़सर का वक़्त मश्ग़ूलियत का होता है तो उस वक़्त दो रक्अत फ़र्ज़ होनी चाहिएं। अरे तुम अपनी छोटी सी अ़क्ल के ज़रिये अल्लाह तआ़ला की हिक्मतों और मस्लिहतों के अन्दर दख़ल देना चाहते हो? और यह फ़ैसला करते हो कि फ़लां वक़्त इतनी रक्अ़त फ़र्ज़ होनी चाहिएं। इसलिये शरीअ़त के किसी हुक्म के बारे में यह सवाल करना कि यह हुक्म क्यों दिया गया, यह ग़लत सवाल है। ऐसे सवाल से आपने मना फ़रमाया।

सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम "क्यों" से सवाल नहीं किया करते थे

हज़राते सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के हालात पढ़ कर देखिए तो आपको पूरे हदीस के ज़ख़ीरे में यह कहीं नज़र नहीं आयेगा कि किसी सहाबी ने किसी हुक्मे शरई के बारे में यह सवाल किया हो कि यह हुक्म क्यों दिया गया? एक मिसाल नहीं मिलेगी। लेकिन यह सवाल मिलेगा कि फ़लां चीज़ के बारे में हुक्मे शरई क्या है? लफ़्ज़ "क्यों" से सवाल नहीं करते थे। सवाल न करने की वजह क्या थी? क्या उनके अन्दर अ़क्ल और समझ नहीं थी? क्या वे इन शरई हुक्मों की हिक्मतें और मस्लिहतें नहीं पहचान सकते थे? ऐसा नहीं था, क्योंकि उनकी अ़क्ल इतनी थी कि आजके दौर का बड़े से बड़ा अ़क्ल मन्द उनकी अ़क्ल की गर्द को नहीं पहुंच सकता, फिर सवाल न करने की क्या वजह थी? वजह यह थी कि इस अ़क्ल ही का तक़ाज़ा यह था कि जब अल्लाह को अपना ख़ालिक़ और मालिक मान लिया और नबी करीम सरवरे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को उनका रसूल मान लिया तो अब जो बात और जो हुक्म भी उनकी तरफ़ से आयेगा वह हक़ होगा, उसमें हमारे लिए चूं व चरा की मजाल और गुन्जाइश नहीं। इसलिये लफ़्ज़ "क्यों" से सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम सवाल नहीं करते थे।

यह अल्लाह की मुहब्बत और बड़ाई की कमी की दलील है

मेरे वालिद माजिद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रह. फ़रमाया करते थे कि शरीअ़त के अहकाम के सिलसिले में जिन लोगों के दिलों में बहुत ज़्यादा शुकूक व शुबहात होते हैं उसकी असल वजह हक़ीक़त में अल्लाह तआ़ला की बड़ाई और मुहब्बत की कमी है। इसलिये कि जिस ज़ात की बड़ाई और मुहब्बत दिल में होगी उसकी तरफ़ से दिए गए हुक्म में शुकूक व शुबहात पैदा नहीं होंगे। दुनिया के अन्दर देख लें कि जिस से मुहब्बत और अ़क़ीदत होती है वह अगर किसी बात का हुक्म दे तो चाहे वह हुक्म समझ में न आ रहा हो, लेकिन हम यह कहते हैं कि यह शख़्स इतना बड़ा आदमी है कि इसके हुक्म के पीछे कोई न कोई मस्लिहत ज़रूर होगी। तो वह ज़ात जिसकी क़ुदरत, जिसका इल्म और जिसकी रहमत सारी कायनात को घेरे हुए है, वह ज़ात अगर यह हुक्म दे कि यह अ़मल करो और यह अ़मल मत करो तो उसकी बड़ाई और मुहब्बत का तक़ाज़ा यह है कि आदमी यह न सोचे कि मुझे यह हुक्म क्यों दिया जा रहा है, और इस हुक्म में क्या फ़ायदा और मस्लिहत है? दीन नाम ही इसका है कि अपने आपको उनके हवाले कर दो और चूं चरा को दरमियान से निकाल दो। आजकी गुमराहियों का सब से बड़ा सर चश्मा और बुनियादी सबब यह है कि अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बातए हुए अहकाम को अपनी अ़क्ल से परखने की कोशिश की जा रही है, और अगर किसी हुक्म की हिक्मत अ़क्ल में नहीं आ रही है तो उसको शरीअ़त का हुक्म मानने से इन्कार किया जा रहा है।

बच्चे और नौकर की मिसालें

छोटा बच्चा जो अभी बिल्कुल नादान है, बाप उसको किसी काम का हुक्म देता है या मां उसको हुक्म देती है, अगर वह बच्चा यह

कहे कि मुझे यह हुक्म क्यों दिया जा रहा है? जब तक आप मुझे इसकी हिक्मत नहीं समझायेंगे उस वक़्त तक मैं यह काम नहीं करूंगा तो ऐसा बच्चा कभी सही तर्बियत नहीं पा सकेगा। बच्चे को छोड़िए, एक आदमी जो आक़िल बालिग़ है और उसको आपने अपना नौकर रखा हुआ है, आपने उस से कहा कि बाज़ार जाकर फ़लां सौदा ले आओ, वह नौकर पलट कर यह पूछता है कि पहले आप मुझे इसकी हिक्मत और वजह बताइये कि आप यह चीज़ बाज़ार से क्यों मंगा रहे हैं? पहले आप हिक्मत बताइये फिर मैं बाज़ार से यह चीज़ लाऊंगा। ऐसा नौकर कान पकड़ कर घर से बाहर निकाल देने के लायक़ है। इसलिये कि नौकर को यह हक़ नहीं पहुंचता कि वह यह पूछे कि आप यह चीज़ क्यों मंगा रहे हैं? वह नौकर है और नौकर का काम यह है कि जो हुक्म दिया जा रहा है, वह उसको बजा लाए, वह यह न पूछे कि यह हुक्म क्यों दिया जा रहा है। जब नौकरों के साथ तुम्हारा यह मामला है, हालांकि नौकर भी इन्सान है और तुम भी इन्सान हो, तो अल्लाह तआला तो ख़ालिक़ और माबूद है, और तुम उसके बन्दे हो, नौकर और आक़ा में तो फिर भी मुनासबत है, इसलिये कि दोनों की अक़्ल सीमित है, लेकिन बन्दे और अल्लाह में तो कोई मुनासबत ही नहीं, इसलिये कि तुम्हारी अक़्ल सीमित और अल्लाह जल्ल शानुहू की हिक्मतें अपार और बेशुमार। इसलिये अल्लाह के हुक्म की हिक्मत के बारे में सवाल करना किसी तरह भी मुनासिब नहीं।

ख़ुलासा

बहर हाल, इस हदीस में नबी—ए—करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तीन क़िस्म के सवालों से मना फ़रमाया है, एक बे फ़ायदा सवाल करना, जिसका अ़मली ज़िन्दगी से ताल्लुक़ न हो। दूसरे ऐसे मामले या ऐसी सूरते हाल के बारे में सवाल करना जो अपनी ज़ात को अभी पेश न आया हो। तीसरे अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के किसी हुक्म की हिक्मत मालूम करने

के लिए सवाल करना, और मक़सद सवाल करने का यह हो कि अगर इस हुक्म की हिक्मत मालूम होगी तो अ़मल करूंगा वर्ना नहीं करूंगा। और फ़रमाया कि पिछली उम्मतें इन तीन चीज़ों के बारे में सवालात करने की वजह से हलाक हुईं, तुम इन तीन चीज़ों के बारे सवाल करने से परहेज़ करो, और जब मैं तुमको किसी चीज़ से रोक दूं तो तुम रुक जाओ, उसकी हिक्मत तलाश करने के पीछे मत पड़ो। अल्लाह तआ़ला हम सब को इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, आमीन।

واٰخردعوانا ان الحمد للّٰه رب العالمين

अर्ज़े नाशिर

जमादिउल अव्वल १४१४ हिज्री मुताबिक़ १९९३ ईसवी में दारुल उलूम कराची में "अद्दौरतुत—तालीमिया हौलल इक़्तिसादिल मुआसिर फ़ी ज़ूइश्शरीअतिल इस्लामिया" के उन्वान से नये मामलात और उनकी फ़िक़ही हैसियत से मुताल्लिक़ पंद्रह दिवसिए तालीमी कोर्स आयोजित किया गया था, जिसमें मुल्क के मुख़्तलिफ़ हिस्सों से उलमा ने शिर्कत फ़रमाई थी। उस दौरान हज़रत मौलाना मुहम्मद तक़ी उस्मानी साहिब दामत ब—रकातहुम ने उलमा को मौजूदा ज़माने के इक्नॉमिक मसाइल से मुताल्लिक़ ज़रूरी मालूमात पर मुश्तमिल रोज़ाना तक़रीबन तीन घन्टे का दर्स दिया, यह दौरा बर्रे—सग़ीर पाक व हिन्द में अपनी तरह का पहला दौरा था?। यह मज़मून हज़रत मौलाना का शुरूआती ख़िताब है, जिसमें उस कोर्स के पसे मन्ज़र पर तफ़सील से रोशनी डाली गई है।

मौलाना सफ़ीर अहमद अब्बासी साहिब ने पाठकों के लिए टेपरिकॉर्डर की मदद से नक़ल किया है और हम इसको रिसाला 'अल—बलाग़' के शुक्रिये के साथ शाया कर रहे हैं, अल्लाह तआला इस कोशिश और मेहनत को कुबूल फ़रमाए, आमीन।

नाशिर

नये मामलात

और

उलमा की ज़िम्मेदारियां

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَنَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَنَشْھَدُ اَنَّ سَیِّدَنَاوَسَنَدَنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَعَلٰی اٰلِہٖ وَ اَصْحَابِہٖ وَبَارَکَ وَسَلَّمَ تَسْلِیْمًا کَثِیْرًا کَثِیْرًا، اَمَّا بَعْدُ:

हज़राते उलमा–ए–किराम! मैं आप हज़रात का शुक्रगुज़ार हूं कि आपने हमारी दावत को कुबूल फ़रमाया, लम्बे सफ़र की परेशानी गवारा की और इस दौरा–ए–तालीमिया के लिए तशरीफ़ लाए। अल्लाह तआ़ला आपकी इस मेहनत को अपनी बारगाह में कुबूलियत से नवाज़े, आमीन।

इस दौरा-ए-तालीमिया की ज़रूरत

आज हम इस दौरा–ए–तालीमिया की शुरूआत कर रहे हैं और आजकी इस महफ़िल में मैं मुख़्तसर तौर पर यह अ़र्ज़ कर देना चाहता हूं कि इसकी ज़रूरत क्यों पेश आई, और इसकी अहमियत क्या है?

यह बात हर मुसलमान को महसूस हो रही है और ख़ास तौर से अहले इल्म को इसका एहसास है कि जब से पश्चिमी क़ब्ज़े (यानी दूसरी क़ौमों को ग़ुलाम बनाने की उनकी पॉलीसी) का दुनिया पर ग़ल्बा हुआ, उस वक़्त से दीन को एक मुनज़्ज़म साज़िश के तहत

सिर्फ़ इबादत गाहों, तालीम गाहों और ज़ाती घरों तक सीमित कर दिया गया है, सियासी और इक्नॉमिक सतह पर दीन की गिरफ़्त न सिर्फ़ यह कि ढीली पड़ गई बल्कि रफ़्ता रफ़्ता ख़त्म हो चुकी है। यह बुनियादी तौर पर तो इस्लाम के दुश्मनों की बहुत बड़ी साज़िश थी जिसके तहत मज़हब का वह तसव्वुर उजागर किया गया जो पश्चिम में है। पश्चिम में मज़हब का तसव्वुर यह है कि यह इन्सान का एक ज़ाती और प्राईवेट मामला है कि वह अपनी ज़िन्दगी में किसी मज़हब पर कारबन्द हो, या न हो। एक मज़हब इख़्तियार करे या दूसरा मज़हब इख़्तियार करे, इस से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, बल्कि इस वक़्त तो पश्चिम में मज़हब के बारे में यह तसव्वुर है कि मज़हब का हक़ व बातिल से कोई ताल्लुक़ नहीं है, यह तो हक़ीक़त में इन्सान की रूहानी तस्कीन का एक ज़रिया है। रूहानी तस्कीन के लिए इन्सान जिस मज़हब को बेहतर समझे उसको इख़्तियार कर ले। किसी को बुत पूजने में ज़्यादा मज़ा आता है और उसी में उसको ज़्यादा सुकून मिलता है, वह उसको इख़्तियार कर ले। और अगर किसी को अल्लाह को एक मानने में ज़्यादा सुकून मिलता है तो वह उसको इख़्तियार कर ले। सवाल हक़ व बातिल का नहीं कि कौन सा मज़हब हक़ है और कौन सा बातिल है, बल्कि सवाल यह है कि किस मज़हब में इस शख़्स को ज़्यादा रूहानी सुकून महसूस होता है। इस लिहाज़ से जो शख़्स भी जो मज़हब इख़्तियार कर लेता है वह क़ाबिले एहतिराम है, और उसमें किसी दूसरे को दख़ल अन्दाज़ी की ज़रूरत नहीं है। और यह चूंकि ज़ाती और प्राईवेट ज़िन्दगी का मामला है, इसलिये ज़िन्दगी के दूसरे शोबों में इसके अमल दख़ल का सवाल ही पैदा नहीं होता।

बेदीनी जमहूरियत का नज़रिया

यहीं से यह नज़रिया वजूद में आया जिसको आजकी इस्तिलाह में सैकूलरिज़म कहते हैं। ज़िन्दगी के इस नज़रिये का ख़ुलासा यह है

कि जहां तक ज़िन्दगी के इज्तिमाई काम हैं जैसे रोज़ी रोज़गार और सियासत वग़ैरह ये हर मज़हब से आज़ाद हैं, और इन्सान अपनी अक़्ल, तजुर्बे, मुशाहदे के ज़रिये जिस तरीक़े को पसन्द कर ले वह तरीक़ा इख़्तियार करना चाहिए। मज़हब की उनके ऊपर कोई हाकमियत और बरतरी नहीं होना चाहिए, और जहां ज़ाती ज़िन्दगी का सवाल है तो जो शख़्स जिस मज़हब में सुकून पाए वह मज़हब इख़्तियार कर ले, किसी दूसरे को यह कहने का हक़ नहीं कि तुम्हारा यह मज़हब बातिल है, हर शख़्स अपने मज़हब पर अ़मल करने में आज़ाद है। इस वजह से नहीं कि वह हक़ है, बल्कि इस वजह से कि उसमें उसको राहत और सुकून मयस्सर आता है। दूसरे अल्फ़ाज़ में यों कह सकते हैं कि मज़हब का तसव्वुर आज पश्चिमी नज़रियात के तहत यह है कि "मज़हब की कोई हक़ीक़त नहीं, बल्कि लुत्फ़ व सुकून के हासिल करने का एक ज़रिया है"। इसलिये एक शख़्स को अगर अपने दुनियावी मशाग़िल से फ़ुर्सत के वक़्त बन्दरों के तमाशे को देख कर ज़ेहनी सुकून मिलता है तो उसके लिए बन्दरों का तमाशा अच्छी चीज़ है, और जिस तरह बन्दरों के तमाशे का हक़ीक़ी ज़िन्दगी से कोई ताल्लुक़ नहीं, इसी तरह अगर किसी मस्जिद में जाकर नमाज़ पढ़ने में लुत्फ़ आता है और सुकून मिलता है तो उसके लिये यही तरीक़ा मुनासिब है, लेकिन उसका हक़ीक़ी ज़िन्दगी से कोई ताल्लुक़ नहीं। यानी इस से बहस नहीं कि मस्जिद में ज़ाकर नमाज़ पढ़ना अपने आप में हक़ है या बातिल? (अल्लाह अपनी पनाह में रखे) यह वह तसव्वुर है जो इस वक़्त पूरी पश्चिमी दुनिया के ऊपर छाया हुआ है, और इसका दूसरा नाम "सैकूलर डेमूकरेसी" यानी बेदीनी जमहूरियत है।

आख़री नज़रिया

और अब तो यह कहा जा रहा है कि दुनिया के अन्दर हर निज़ाम फ़ेल हो गया, हर नज़रिया नाकाम हो गया है, अब सिर्फ़

आख़री नज़रिया जो कभी फ़ेल होने वाला नहीं है वह यही है कि सैकूलर डेमूकरेसी है। जब सोवियत यूनियन का पतन हुआ तो उस वक़्त पश्चिम में बहुत ख़ुशी के शादयाने बजाए गए, और बाक़ायदा एक किताब शाया की गई जो सारी दुनिया के अन्दर बड़ी दिलचस्पी के साथ पढ़ी जाती है, लाखों की तायदाद में उसके नुस्ख़े (कापियां) फ़रोख़्त हो चुके हैं। और उसको उस दौर की अज़ीम तरीन किताब की हैसियत से परिचित कराया जा रहा है। यह किताब अमेरिकी विदेश मन्त्रालए के एक तर्जुमान ने एक तहक़ीक़ी मक़ाले की शक्ल में लिखी है, जिसका नाम है:

(The End of the History and the Last Man)

यानी तारीख़ का ख़ात्मा और आख़री आदमी। इस किताब का ख़ुलासा यह है कि सोवियत यूनियन के ख़ात्मे पर एक तारीख़ का ख़ात्मा हो गया है और आख़री इन्सान जो हर लिहाज़ से मुकम्मल है वह वजूद में आ गया है, यानी सैकूलर डेमूकरेसी का नज़रिया साबित हो गया है, और अब रहती दुनिया तक इस से बेहतर कोई निज़ाम नहीं, या नज़रिया वजूद में नहीं आयेगा।

तोप से क्या फैला?

जब पश्चिमी इक़्तिदार नें इस्लामी मुल्कों पर अपना क़ब्ज़ा जमाया तो उसने इस बेदीनी जमहूरियत का तसव्वुर भी फैला दिया, और ताक़त के ज़ोर पर फैलाया। मुसलमानों पर यह इल्ज़ाम था कि उन्होंने इस्लाम तलवार के ज़ोर फैलाया, हालांकि ख़ुद पश्चिम ने अपना डेमूकरेसी का निज़ाम ज़बरदस्ती और तलवार के ज़ोर पर फैलाया है, इसकी तरफ़ अकबर मरहूम ने अपने मशहूर शेरी बन्द में इशारा किया था कि:

अपने ऐबों की कहां आपको कुछ परवाह
ग़लत इल्ज़ाम भी औरों पे लगा रखा है
यही फ़रमाते रहे तेग़ से फैला इस्लाम
यह न इर्शाद हुआ तोप से क्या फैला है

तोप व तुफ़ंग के बल बूते पर उन्होंने पहले सियासी क़ब्ज़ा क़ायम किया, उसके बाद रफ़्ता रफ़्ता सियासी और इक्नॉमिक इदारों से दीन का संपर्क तोड़ा, और इस संपर्क को तोड़ने के लिए ऐसा तालीमी निज़ाम वजूद में लाए जो हिन्दुस्तान में लार्ड मीकाले ने परिचित कराया, और खुल्लम खुल्ला यह कह कर परिचित कराया कि हम एक ऐसा निज़ामे तालीम अमल में लाना चाहते हैं जिस से ऐसी नस्ल पैदा हो जो रंग व ज़बान से तो हिन्दुस्तानी हो, लेकिन फ़िक्र और मिज़ाज के एतिबार से ख़ालिस अंग्रेज़ हो। आख़िरकार वह उस तालीमी निज़ाम को राइज करने में कामयाब हो गए जिसने दीन का रिश्ता, सियासत, रोज़ी रोज़गार, अर्थ व्यवस्था और ज़िन्दगी के दूसरे शोबों से काट दिया, और मज़हब को सीमित कर दिया।

कुछ दुश्मन की साज़िश और कुछ अपनी कोताही

एक तरफ़ इस्लाम के दुश्मनों की यह साज़िश थी, दूसरी तरफ़ इस साज़िश के कामयाब होने में कुछ हिस्सा हमारे अपने तर्ज़े अमल का भी है कि हमने अपनी ज़िन्दगी में जितना ज़ोर और जितनी तवज्जोह इबादात के ऊपर ख़र्च की, उतनी तवज्जोह ज़िन्दगी के दूसरे शोबों की तरफ़ नहीं दी, हालांकि इस्लाम पांच शोबों का नाम है, अक़ायद, इबादात, मामलात, समाजी ज़िन्दगी और अख़्लाक़। अक़ायद की अहमियत हमारी नज़र में बर्क़रार रही, लेकिन दूसरे शोबों को हमने इतनी अहमियत नहीं दी जितनी अहमियत देनी चाहिए थी, और अहमियत न देने की दो वजह हैं:

१. एक वजह तो यह है कि ख़ुद हमारे अपने अमल के अन्दर जितना एहतिमाम अक़ायद व इबादात की दुरुस्तगी का था उतना एहतिमाम मामलात, समाजी ज़िन्दगी और अख़्लाक़ की दुरुस्तगी का नहीं था, जिसका नतीजा यह हुआ कि अगर एक शख़्स (अल्लाह की पनाह) नमाज़ छोड़ता है तो दीनदारों के माहौल व समाज में वह बड़ा ज़बरदस्त बुरा समझा जाता है, और बुरा समझा जाना भी

चाहिए, क्योंकि उसने अल्लाह के फ़रीज़े को अदा करना छोड़ दिया, और दीन के सतून को गिरा दिया। लेकिन अगर कोई शख़्स अपने मामलात में हराम हलाल की परवाह नहीं करता, या जिन बुरे अख़्लाक़ सें बचने का हुक्म दिया गया है उनसे परहेज़ नहीं करता तो समाज में उसको इतना बुरा और नफ़रत के क़ाबिल नहीं समझा जाता।

२. दूसरी वजह यह है कि हमने दीनी मदरसों की तालीम में जितनी अहमियत इबादात के अबवाब (अध्याय) को दी है, मामलात और समाजी ज़िन्दगी और अख़्लाक़ वाले हिस्से को इतनी अहमियत नहीं दी, फ़िक़ा हो या हदीस हो, तहक़ीक़ व जुस्तजू का सारा ज़ोर आकर किताबुल हज पर ख़त्म हो जाता है, बहुत चला तो निकाह और तलाक़ तक चल गया, इस से आगे ख़रीद बेच के मामलात और उनके मुताल्लिक़ मबाहिस का तर्जुमा भी नहीं होता, या अगर तर्जुमा भी हो गया तो मुताल्लिक़ा मबाहिस को इस एहतिमाम से बयान नहीं किया जाता जिस एहतिमाम से इबादात के छोटे बड़े मसाइल को बयान किया जाता है, जैसे 'रफ़-ए-यदैन का मसला बेहतर और ग़ैर बेहतर ही का तो है, लेकिन इसके अन्दर तो तीन दिन तक लग जाते हैं, मगर मामलात और अख़्लाक़ के मुताल्लिक़ जो हिस्से हैं, उनसे मुताल्लिक़ मबाहिस को जैसा कि उनका हक़ है, बयान नहीं किया जाता।

तालीम के तरीक़े का तालिब पर असर

हमारे तालीम के इस तरीक़े ने यह बता दिया कि यह इतनी अहम चीज़ नहीं है। चुनांचे इन मदरसों से जो तालिब इल्म फ़ारिग़ होकर गया, उसने जब यह देखा कि तालीम के दस महीनों में से आठ महीने तो अक़ायद और इबादात पर बहस होती रही, और बाक़ी सारा दीन सिर्फ़ दो महीने में गुज़ार दिया गया है तो उसने यह असर लिया कि अक़ायद के अलावा बाक़ी सारा दीन दूसरे दर्जे की हैसियत

रखता है, उसकी इतनी अहमियत नहीं है।

इसमें एक मजबूरी भी थी और वह यह कि इस्लाम के दुश्मनों की साज़िश के नतीजे में अ़मली तौर पर बाज़ार में, सियासत में, दीन की पकड़ नहीं रही थी, इस पर चूंकि अ़मल नहीं हो रहा था, इस लिये वे मसाइल जिनका ताल्लुक़ तिजारत, सियासत और दूसरे इज्तिमाई मामलात से था, वे नज़रियाती हैसियत इख़्तियार कर गए, और नज़रियाती चीज़ की तरफ़ तबई तौर पर इतनी तवज्जोह नहीं होती, जितनी कि उस चीज़ की तरफ़ होती है जो अ़मली ज़िन्दगी में पाई जा रही हो।

यह उज़्र अपनी जगह था लेकिन हक़ीक़त यही है कि हमारे पढ़ने पढ़ाने के निज़ाम में भी मामलात, अख़्लाक़ और समाजी ज़िन्दगी से मुताल्लिक़ अबवाब बहुत पीछे चले गए, यहां तक कि उसकी बुनियादी बातें भी लोगों को मालूम नहीं। अच्छे ख़ासे पढ़े लिखे लोग, अच्छा इल्म रखने वाले भी कई बार बुनियादी चीज़ों तक से ना वाक़िफ़ होते हैं। यह तो हमारा हाल है, और जहां तक हुकूमत का मामला है चाहे अंग्रेज़ की हो या अंग्रेज़ के ज़रिये पाले जाने वालों की हो, परिणाम के एतिबार से अभी तक दोनों में कोई फ़र्क़ वाज़ेह नहीं हुआ। जो ज़हनियत वहां थी वही ज़हनियत यहां भी है।

आ़म मुसलमानों में दो तबक़े हैं। एक तबक़ा वह है जो अंग्रेज़ के निज़ामे तालीम और उसकी साज़िशों के नतीजे में उसी के सोचने के तरीक़े में बह गया है, और अ़मली तौर पर दीन से उसने रिश्ता तोड़ दिया है, चाहे उसने नाम मुसलमानों जैसा रखा है, लेकिन अ़मली तौर पर उसका इस्लाम से कोई ताल्लुक़ नहीं रहा है। उसने यह सोचा कि मर्दुम शुमारी के रजिस्टर में मेरा नाम मुसलमान रहता है तो रहे, मेरा कोई नुक़सान नहीं, मगर करना मुझे वह है जो दुनिया कर रही है। यहां तक कि उसको फ़िक्र नहीं कि उसके अ़क़ायद, इबादात और मामलात दुरुस्त हैं या नहीं। गोया कि अ़मली तौर पर उसने मज़हब को एक ढकोसला समझा। (अल्लाह अपनी

पनाह में रखे)

दूसरा तबक़ा अवाम का वह है जो मुसलमान रहना चाहता है, इस्लाम से उसको मुहब्बत है, दीन से उसको ताल्लुक़ है, और वह इस बात का तसव्वुर भी नहीं कर सकता कि दीन से अपना रिश्ता तोड़ दे। ऐसा तबक़ा अहले इल्म से भी किसी न किसी दर्जे में जुड़ा रहा, लेकिन वह जोड़ ज़्यादा तर इबादात और अक़ायद की हद तक ही सीमित रहा। अगर और बढ़ा तो निकाह तलाक़ तक पहुंच गया, उस से आगे नहीं बढ़ सका। चुनांचे अगर तमाम दारुल इफ़्ताओं में आने वाले इस्तिफ़्ताओं के आदाद व शुमार जमा किए जाएं तो मालूम होगा कि वहां ज़्यादा तर आने वाले सवालात इबादात, अक़ायद, निकाह और तलाक़ से मुताल्लिक़ होते हैं। ख़रीद व बेच और दूसरे मामलात के मुताल्लिक़ सवालात नहीं आते, या बहुत कम आते हैं।

इसकी क्या वजह है? हालांकि यही वे लोग हैं जो हम से इबादात के मुताल्लिक़ सवाल करते हैं, निकाह और तलाक़ के मुताल्लिक़ पूछते हैं। ये लोग तिजारत, मामलात और अपने ज़ाती लेन देन के बारे में क्यों नहीं दरियाफ़्त करते?

सैकूलर निज़ाम का प्रोपैगन्डा

इसकी एक वजह सैकूलरिज़म का प्रोपैगन्डा है, कि दीन तो इबादात वग़ैरह का नाम है, इस से आगे दीन का कोई अमल दख़ल नहीं है। इस प्रोपैगन्डे का यह असर है कि बहुत से लोगों को ख़्याल ही नहीं होता कि हम जो काम कर रहे हैं, आया जायज़ कर रहे हैं या ना जायज़ कर रहे हैं।

मैं आप से एक बिल्कुल सच्चा वाक़िआ अर्ज़ करता हूं कि एक साहिब मेरे वालिद माजिद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि की ख़िदमत में आया करते थे। बड़े ताजिर थे, हर वक़्त उनके हाथ में तस्बीह रहती थी, वालिद साहिब से वज़ाइफ़ वग़ैरह पूछते रहते थे, और यह भी मालूम था कि तहज्जुद गुज़ार हैं।

एक लम्बी मुद्दत के बाद जाकर यह बात खुली कि उनका सारा कारोबार सट्टे का है। सट्टे की भी दो क़िस्में होती हैं। एक छुपा हुआ जुआ होता है, और दूसरा खुला हुआ जुआ होता है, उनका यही कारोबार था। वज़ाइफ़ वग़ैरह जो पढ़ते थे वह उसके नतीजे में यह जानने की कोशिश करते थे कि किस सट्टे में कौन सा नम्बर आयेगा।

इस सैकूलर प्रोपैगन्डे का असर यह हुआ कि वे लोग जो अगरचे यह समझते हैं कि मामलात का भी हराम व हालाल से ताल्लुक़ है, लेकिन इस पूरी मुद्दत में उलमा और उनके दरमियान इतनी बड़ी ख़लीज रोक हो गई है कि एक तबक़ा दूसरे तबक़े की बात नहीं समझता। उनके विचार का तरीक़ा और, उनका सोचने का अन्दाज़ और, उनकी ज़बान और, इनकी ज़बान और, जिसका नतीजा यह हुआ कि आज एक तबक़ा दूसरे तबक़े को बात समझाने पर क़ादिर नहीं।

हमारे तालीमी निज़ाम में मामलात को पीठ पीछे डालने की वजह से उलमा–ए–किराम में भी एक बड़ी तायदाद ऐसे हज़रात की है, जिनको नमाज़, रोज़ा, निकाह और तलाक़ के मसाइल तो याद होते हैं, लेकिन मामलात के मसाइल ज़ेहन में हाज़िर नहीं होते। ख़ास तौर पर जो नये से नये मामलात पैदा हो रहे हैं, उनके अहकाम को निकालने का सलीक़ा नहीं है। इसलिये एक तरफ़ तो ताजिर लोग एक आलिमे दीन को अपनी बात नहीं समझा सकते, और अगर समझाने की कोशिश की जाती है तो कई घन्टे ख़र्च होते हैं। दूसरी तरफ़ आलिम ने भी इस से पहले उस मसले पर ग़ौर नहीं किया और न ही उस मसले से कभी साबक़ा पड़ा, और जिन फ़िक़ही उसूलों की बुनियाद पर उस मसले का हल निकाला जा सकता है वे याद नहीं, जिसकी वजह एक आलिम ताजिर को सन्तुष्ट नहीं कर पाता, इसका नतीजा आख़िरकार यह हुआ कि उन ताजिरों ने अपने ज़ेहनों में यह बात बिठा दी कि इन मसाइल के बारे में उलमा के पास कोई हल नहीं है, और इस सिलसिले में उनके पास जाना फ़ुज़ूल है। इसलिये

जो समझ में आता है करो। जिसका नतीजा यह निकला कि आज हमारी तिजारत, रोज़गार के मसाइल और सियासत सब सैकूलर डेमूकरेसी के उसूलों पर चल रही हैं और इनमें इस्लाम के लिए कोई गुन्जाइश नहीं है।

अ़वाम और उलमा के दरमियान बहुत दूरी बढ़ चुकी है

और अब तो यह बात बिल्कुल साफ़ ज़ाहिर हो चुकी है कि इन मसाइल में अ़वाम के ऊपर से उलमा की गिरफ़्त ख़त्म हो चुकी है। जो अ़वाम सुबह व शाम हमारे और आपके हाथ चूमते हैं, अपनी दुकानों का उद्घाटन, बेटों के निकाह और अपने मक़ासिद के लिए हम से दुआ करवाते हैं, उन्हीं अ़वाम से अगर उलमा यह कह दें कि तिजारत इस तरह नहीं करो, बल्कि इस तरह करो, या यों कहा जाए कि वोट मौलवी को दो, तो यह अ़वाम उलमा की बात मानने के लिए तैयार नहीं होते, क्योंकि दिमाग़ में यह बात बैठ गई है कि दुनिया में ज़िन्दा रहने के लिए इन उलमा से मुकम्मल रहनुमाई नहीं मिलेगी। यह बहुत बड़ी ख़लीज है जो बीच में आ गई है और इस ख़लीज को जब तक पाटा और भरा नहीं जायेगा उस वक़्त तक समाज की ख़राबी दूर नहीं हो सकती। इस ख़लीज को पाटने के लिए बहुत सी सिमतों से काम करने की ज़रूरत है, लेकिन इस वक़्त यह मेरा मौज़ू नहीं है।

यहां यह भी अर्ज़ कर दूं कि ख़लीज पाटने का इज़हार बहुत से हल्क़ों की तरफ़ से किया जाता है, यहां तक कि नये तालीम याफ़्ता हल्क़ों की तरफ़ से भी किया जाता है, लेकिन मौलाना एहतिशामुल हक़ थानवी के बक़ौल " ये नये तालीम याफ़्ता हल्क़ों और नये ज़माने के दिलदादा हल्क़े जो कहते हैं कि इस ख़लीज को पाटो, इसका मतलब यह है कि इस ख़लीज में मौलवी को दफ़न कर दो।" तो ख़लीज पट जाएगी।

जो ज़माने वालों से वाक़िफ़ नहीं वह जाहिल है

हमें ज़रूरत इस बात की है कि हम मौजूदा हालात को समझें

कि हो क्या रहा है? हज़राते फ़ुक़हा—ए—किराम रहमतुल्लाहि अ़लैहिम की समझ और उसूल बड़े अ़ज़ीम हैं। उन्होंने इसी लिए फ़रमाया है:

"من لم يعرف اهل زمانه فهو جاهل"

कि जो अपने ज़माने वालों से वाक़िफ़ न हो, वह आ़लिम नहीं बल्कि वह जाहिल है। इसलिये कि किसी भी मसले का सब से अहम हिस्सा उसकी असल सूरत है, इसी लिए लोगों ने कहा:

"ان تصوير المسئلة نصف العلم"

जब तक मसले की सूरत वाज़ेह नहीं हो जाती, उस वक़्त तक जवाब सही नहीं हो सकता, और मसले की सही सूरत समझने के लिए मौजूदा हालात और नये मामलात से वाक़फ़ियत ज़रूरी है। ग़ालिबन मैंने इमाम सरख़्सी रहमतुल्लाहि अ़लैहि की किताब मब्सूत में पढ़ा कि इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाहि अ़लैहि का मामूल था कि वह ताजिरों के पास बाज़ारों में जाते और यह देखते कि ताजिर आपस में किस तरह मामलात करते हैं। किसी ने उनको बाज़ार में देखा तो पूछा कि आप किताब के पढ़ने पढ़ाने वाले आदमी हैं, यहां कैसे? फ़रमाया कि मैं यहां इसलिये आया हूं ताकि मालूम कर सकूं कि ताजिरों का उर्फ़ क्या है, वर्ना मैं सही मसला नहीं बता सकता।

इमाम मुहम्मद रह. की तीन अ़जीब बातें

तीन बातें इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाहि अ़लैहि की इमाम सरख़्सी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने थोड़े बहुत वक़्फ़े से आगे पीछे ज़िक्र की हैं, तीनों बहुत अ़जीब व ग़रीब हैं। एक तो यही जिसका ऊपर ज़िक्र हुआ, दूसरी यह कि किसी ने इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाहि अ़लैहि से पूछा कि आपने इतनी किताबें लिख दीं:

"لم لم تحررفی الزهد شيئا"

लेकिन ज़ुहद व तसव्वुफ़ में कोई किताब क्यों नहीं लिखी? जवाब में आपने फ़रमाया कि मैंने 'किताबुल बुयू' जो लिखी है, वह 'किताबुज़्ज़ुहद' है। तीसरी बात यह कि किसी ने उनसे पूछा कि हम

अक्सर व बेशतर आपको देखते हैं कि हंसी आपके चेहरे पर नहीं आती। हर वक़्त ग़मगीन रहते हैं। जैसे आपको कोई तश्वीश और परेशानी हो। जवाब में आपने फ़रमायाः

"उस शख़्स का क्या हाल पूछते हो जिसकी गर्दन को लोगों ने पुल बनाया हो, और वे उस पर से गुज़रते हों।

हमने साज़िश को क़बूल कर लिया

बहर हाल, ये हज़रात अहले ज़माना का उर्फ़, मामलात और दूसरी चीज़ें मालूम करने का इतना एहतिमाम फ़रमाया करते थे ताकि मसले की सही शक्ल मालूम हो। जब हम लोग साज़िश के तहत बाज़ारों और ऐवानों से अलग कर दिए गए तो बजाए इसके कि हम इस साज़िश को नाकाम बनाने की फ़िक्र करते, हमने ख़ुद इस सूरते हाल को क़बूल कर लिया, वह इस तरह कि हमने अपनी मालूमात, अपनी सोच व फ़िक्र के दायरे को सीमित कर दिया, जिसने हमको समेट लिया, फिर उस से बाहर निकलने की हमने फ़िक्र नहीं की। इस सूरते हाल को ख़त्म किए बग़ैर हम अपने दीन को ज़िन्दगी के शोबों में जारी करने में कामयाब नहीं हो सकते। यानी जब तक हम एक तरफ़ यह कोशिश न कर लें कि उन मामलात का सही इल्म हो जाए, और उनका सही हुक्म मालूम हो जाए, फिर ज़िन्दगी के तमाम शोबों में अ़मली इन्क़िलाब बर्पा करने की कोशिश की जाए। उस वक़्त तक हम इन्क़िलाब लाने में कामयाब नहीं हो सकते।

तहक़ीक़ के मैदान में अहले इल्म की ज़िम्मेदारी

शायद यह कहने में मुबालग़ा न हो कि हमारा काम इस सिलसिले में इतना अधूरा और नाक़िस है कि आज अगर फ़र्ज़ कर लो यह कह दिया जाए कि सारी हुकूमत तुम्हारे हवाले, तुम हुकूमत चलाओ, यानी प्रधान मन्त्री से लेकर मामूली वज़ीर तक और तमाम महकमों की आला अफ़सर से लेकर चपरासी तक तुम आदमी मुक़र्रर करो तो हम इस पोज़ीशन में नहीं हैं कि एक दो दिन में नहीं, एक

दो हफ़्तों में नहीं, एक दो महीनों में या एक साल में सूरते हाल बदल दें। हमें मसाइल का इल्म और उनकी तहक़ीक़ नहीं, और जब तक मसाइल की तहक़ीक़ न हो उस वक़्त तक उनको नाफ़िज़ कैसे किया जायेगा। इसलिये ज़रूरी है कि अहले इल्म इस तरफ़ मुतवज्जह हों, यह उनकी ज़िम्मेदारी और वक़्त की अहम ज़रूरत है। लेकिन (अल्लाह अपनी पनाह में रखे) इस तवज्जोह के यह मायने नहीं कि कोई रद्दोबदल का काम शुरू कर दें, बल्कि मक़सद यह है कि सही सूरते हाल मालूम करें और उसके ऊपर सही फ़िक़ही उसूलों को फ़िट करके उसका हुक्म मालूम करके लोगों के सामने पेश किया जाये।

फ़क़ीह की ज़िम्मेदारी है कि वह वैकल्पिक रास्ता निकाले

एक फ़क़ीह की सिर्फ़ इतनी ही ज़िम्मेदारी नहीं है कि यह कह दे कि फ़लां चीज़ हराम है, बल्कि हमारे फ़ुक़हा के कलाम में यह नज़र आता है कि जहां कह दिया "हराम है" फिर यह कहते हैं कि इसका मुतबादिल (वैकल्पिक) रास्ता यह है। मैं अ़र्ज़ किया करता हूं कि कुरआने करीम ने हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के वाक़िए को बयान किया है, उनसे ख़्वाब की ताबीर पूछी गई थी।

"اِنِّیٓ اَرٰی سَبۡعَ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ یَّاۡکُلُهُنَّ سَبۡعٌ عِجَافٌ" (سورة: يوسف:٤٣)

(यानी मैं देखता हूं कि सात मोटी ताज़ी गाय हैं जिनको सात कमज़ोर और दुबली पतली गाय खा रही हैं।)

तो हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने ख़्वाब की ताबीर बाद में बतलाई, और ताबीर में जिस नुक़सान की इत्तिला दी गई थी, उस से बचने का तरीक़ा पहले बतला दिया। चुनांचे फ़रमायाः

"قَالَ تَزۡرَعُوۡنَ سَبۡعَ سِنِیۡنَ دَاَبًا فَمَا حَصَدۡتُّمۡ فَذَرُوۡهُ فِیۡ سُنۡۢبُلِهٖ"

(سورة يوسف :٤٧)

(फ़रमाया कि तुम सात साल लगातार अनाज बोना, फिर जो

फ़सल काटो उसको बालों ही में रहने देना, ताकि उसमें घुन न लग जाए)

फ़क़ीह दाई भी होता है

फ़क़ीह महज़ फ़क़ीह नहीं होता, बल्कि वह दाई भी होता है, और दाई का काम महज़ ख़ुश्क क़ानूनी काम नहीं होता कि वह यह कह दे कि यह हलाल और यह हराम है, बल्कि दाई का काम यह भी है कि वह बताए कि यह हराम है और तुम्हारे लिए हलाल रास्ता यह है।

हमारी छोटी सी कोशिश का मक़सद

हलाल व हराम का फ़ैसला करके हराम के मुक़ाबले में लोगों को जायज़ और हलाल रास्ता बताना, दाई की हैसियत से फ़क़ीह के फ़राइज़ में दाख़िल है, और जब तक मौजूदा हालात और नये मामलात का इल्म न हो, उस वक़्त तक यह फ़रीज़ा अदा नहीं हो सकता, इसलिये मैंने यह एक छोटी सी कोशिश की है कि अपने उलमा–ए–किराम की ख़िदमत में नये मामलात की हक़ीक़त और सूरत बयान की जाए, इस दौर में क्या क्या मामलात किस तरह अन्जाम दिए जा रहे हैं, यह बयान किया जाए, इसका मक़सद इसके अ़लावा कुछ नहीं कि यह फ़िक्र आ़म हो जाए, और हमारे हल्क़े में इसके बारे में गुफ़्तगू शुरू हो जाए, और इन अहम मसाइल की तरफ़ ज़ेहन मुन्तक़िल हो जाए।

मैंने इस कूचे में बहुत गर्द खाई है

मैंने इस कूचे में बहुत गर्द खाई है। इसलिये कि मैं इस कूचे में उस वक़्त दाख़िल हो गया था जब कोई और आ़लिम इस कूचे में दाख़िल नहीं हुआ था; और मैं इसी परेशानी का शिकार रहा जिसका शिकार होना चाहिए था। इसलिये कि इस्तिलाहात अजनबी, अन्दाज़ मुख़्तलिफ़ और गुफ़्तगू का अन्दाज़ नया, किताबें अगर पढ़ें तो उनके अन्दर किसी बात का सर पैर समझ में नहीं आता। लेकिन इस सब

के बावजूद जो दिमाग़ में शुरू से एक धुन थी, उसी धुन की वजह से बहुत किताबें पढ़ीं, बहुत लोगों से रुजू करना पड़ा, कई सालों के बाद जाकर मरबूत अन्दाज़ में कुछ बातें समझ में आयीं और एक ख़ुलासा ज़ेहन में हासिल हुआ, वह ख़ुलासा तालिब इल्मों के काम की चीज़ है।

इस कोर्स की अहमियत की ताज़ा मिसाल

एक ताज़ा मिसाल मैं आपको बताता हूं जिस से आपको इस काम की अहमियत, फ़ायदा और ज़रूरत का अन्दाज़ा होगा। जिस तरह हमने यह छोटा सा कोर्स तरतीब दिया है, इसी तरह हमने एक छोटा सा मर्कज़ "मर्कज़ अलइक्तिसादुल इस्लामी" के नाम से क़ायम किया है। उसके तहत ताजिरों के लिए एक कोर्स हाल ही में मस्जिदे बैतुल मुकर्रम (गुलशन इक़बाल) में हमने आयोजित किया, मक़सद यह था कि हलाल व हराम से मुताल्लिक़ जितनी लाज़मी मालूमात हैं वे ताजिरों को बताई जाएं और मौजूदा दौर के जो मामलात चल रहे हैं, उनमें उनको शरई अहकाम के अन्दर रह कर क्या करना चाहिए? उसकी निशान देही की जाए। जब पहली बार हम यह कोर्स कर रहे थे तो लोगों ने कहा कि आप क्या करने जा रहे हो? अपनी दुकान और कारोबार छोड़ कर आपके पास कौन आयेगा? हमने कहा कि जितने भी आ जाएं। चूंकि लोगों के लिए मुनासिब इन्तिज़ामात और खाने पीने का बन्दोबस्त भी करना था इसलिए चार सौ रुपये फ़ी आदमी फ़ीस मुक़र्रर की।

लोगों का जज़्बा

हमारे पास सिर्फ़ सौ आदमियों की गुन्जाइश थी, और इत्तिला के लिए हमने कोई इश्तिहार या अख़्बार में ख़बर नहीं दी, ज़बानी लोगों को बता दिया कि ऐसा कोर्स आयोजित हो रहा है, इसके बावजूद पहली मर्तबा एक सौ सात अफ़राद ने पैसे जमा करा कर उसमें दाख़िला लिया। और सब ने बाक़ायदा शिफ़ारिश करायीं कि हमें भी

दाख़िला दे दिया जाए। यहां तक कि बाज़ लोग जो अमेरिका जा रहे थे और टिकट करवा चुके थे उन्होंने अपनी सीटें रद्द करवायीं और उस कोर्स में शरीक हुए।

मुसलमान के दिल में अभी चिंगारी बाक़ी है

मैं दुनिया में बहुत सैमिनारों, मुज़ाकरों और जलसों में शिर्कत करता रहता हूं। मुझे इल्म है कि लोग सैमिनारों में कितने शौक़ और दिलचस्पी का मुज़ाहरा करते हैं। आम तौर पर यों होता है कि पहले घन्टे में १०० फ़ीसद हाज़री रहेगी, दूसरे घन्टे में ६० फ़ीसद हो जायेगी और तीसरे घन्टे में ७० फ़ीसद हो जायेगी और आख़िर में लोग इस तरह नज़र आते हैं कि जैसे भुट्टे में कहीं कहीं कोई दाना नज़र आता है। लेकिन हमने जो सैमिनार आयोजित किया, वहां लोगों की दिलचस्पी का यह आलम था कि सुबह नौ बजे से लेकर पहले दिन असर तक, और दूसरे दिन मग़रिब तक बराबर बैठे रहे, सिवाए नमाज़ और खाने के इन्टर वल के पूरी तरह शौक़ और पूरी दिलचस्पी से हिस्सा लिया, इस से यह अन्दाज़ा होता है कि मुसलमान के दिल में अभी चिंगारी ख़त्म नहीं हुई, उसको थोड़ी सी उभारने की ज़रूरत है। अगर उसको सही रहनुमाई सही तरीक़े से मयस्सर आ जाए और उसको यह पता चल जाए कि मुझे यहां से सही रहनुमाई मिल जायेगी तो आज भी वह आने को तैयार है। किसी शायर ने बड़ी अच्छी बात कही है:

मेरे ताइरे क़फ़स को नहीं बाग़बां से रन्जिश
मिले घर में आबो दाना तो यह दाम तक न पहुंचे

अल्लाह तआला के सामने जवाब देने का ख़ौफ़

डर लगता है कि कहीं अल्लाह तबारक व तआला के सामने हमारी पूछ न हो जाए कि यह क़ौम शिकारियों के जाल में जा रही थी, तुमने उनकी फ़िक्र क्यों नहीं की? मुझे अल्लाह तबारक व तआला की रहमत से उम्मीद है कि इन्शा अल्लाह यह सूरते हाल बदलेगी,

यह साज़िश की पैदावार और मसनूई सूरते हाल है, हक़ीक़ी सूरते हाल नहीं है। हमारी तारीख़ की चौदह सदियां इस सूरत की नफ़ी करती हैं। इस वास्ते कि इस पूरे अ़र्से में ज़िन्दगी के हर गोशे में उलमा का क़िरदार रहनुमाई का क़िरदार रहा है। हो सकता है कि हम अपनी ज़िन्दगी में यह तब्दीली न देख सकें, हमारी औलादें, औलाद की औलादें देखें, लेकिन मुबारक हैं वे जानें जो इस कोशिश में ख़र्च हों। अल्लाह तबारक व तआ़ला अपनी रहमत से हमारी जानों को इस काम के लिए क़ुबूल फ़रमाए, आमीन।

इन्क़िलाब की राह हमवार करने में हम हिस्सेदार बन जाएं

इन्क़िलाब आयेगा इसमें कोई शक नहीं, नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद है:

"مثل امتی مثل المطر لا یدری آخره خیرام اوله" (ترمذی شریف)

यानी मेरी उम्मत की मिसाल बारिश के जैसी है। नहीं मालूम कि उसका पहला हिस्सा ज़्यादा बेहतर है या आख़री हिस्सा ज़्यादा बेहतर है।

लेकिन इसमें हम हिस्सेदार बन जाएं, हमारे ज़रिये से भी अल्लाह तआ़ला कोई ईंट रखवा दे तो हमारी सआ़दत है। अगर हम पीछे हट जायेंगे तो अल्लाह तआ़ला किसी और को खड़ा कर देंगे। अल्लाह तआ़ला हमारा मोहताज नहीं है।

"اِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْا اَمْثَالَكُمْ" (سورۃ محمد:۳۸)

अगर तुम पीछे हट गए तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारी जगह दूसरी क़ौम ले आयेंगे, जो तुम्हारी तरह नहीं होगी।

और एक वक़्त आयेगा कि ये मज़ाक़ उड़ाने वाले और नारे लगाने वाले, उनकी आवाज़ें बैठ जायेंगी, हलक़ सूख जायेंगे और इन्शा अल्लाह दीन का कलिमा सर बुलन्द होगा।

नये मक़ालात की जानकारी ज़रूरी है

इस दर्स में हमारी तमाम गुफ़्तगू मामलात के फ़िक़्ह पर होगी, हमारे यहां हिन्द व पाकिस्तान में मामलात के फ़िक़्ह पर फ़तावा तो हैं, लेकिन किताबें नहीं हैं। अरब मुल्कों में उलमा ने इस मौज़ू पर बहुत काम किया है, उनमें हर तरह के लोग हैं। जिद्दत पसन्द भी हैं और आज़ाद भी हैं और बाज़ सही फ़िक्र रखने वाले और सख़्त क़िस्म के भी हैं। मैंने उन हज़रात की किताबें दारुल उलूम के कुतुब ख़ाने में लाकर रखने की कोशिश की है और अल्हम्दु लिल्लाह, अब काफ़ी ज़ख़ीरा हो गया है। मेरी गुज़ारिश यह है कि अहले इल्म को इस काम से वाक़फ़ियत होनी चाहिए, और उनकी किताबों को देखा जाए और उनका मुताला किया जाए।

अरब वालों के काम करने का तरीक़ा यह है कि एक मौज़ू को लेकर उस पर पूरी किताब लिख देते हैं। जैसे "अलख़ियार" के नाम से एक किताब लिखी, उसमें 'ख़ियारे ऐब, ख़ियारे शर्त, ख़ियारे रूयत, और ख़ियारे ताय्युन वग़ैरह तमाम ख़ियारात से मुताल्लिक़ मबाहिस ज़िक्र कर दिए, और उसके तहत जितने नये मसाइल आते हैं, उन पर भी कलाम करते हैं, इसी तरह किसी ने "अल्ग़बन" के ऊपर किताब लिखी कि वह क्या चीज़ होती है? उसकी क्या हक़ीक़त है, और किसी ने "अत्तामीन" के ऊपर किताब लिख दी, वग़ैरह वग़ैरह।

अल्लाह तआला हमारे लिए इस काम को दुनिया व आख़िरत की सआदतों का ज़रिया बनाए और हमारी इस कोशिश को क़ुबूल फ़रमाए, आमीन।

واخردعوانا ان الحمد لله رب العالمين